विधान संग्रह

(प्रथम भाग)

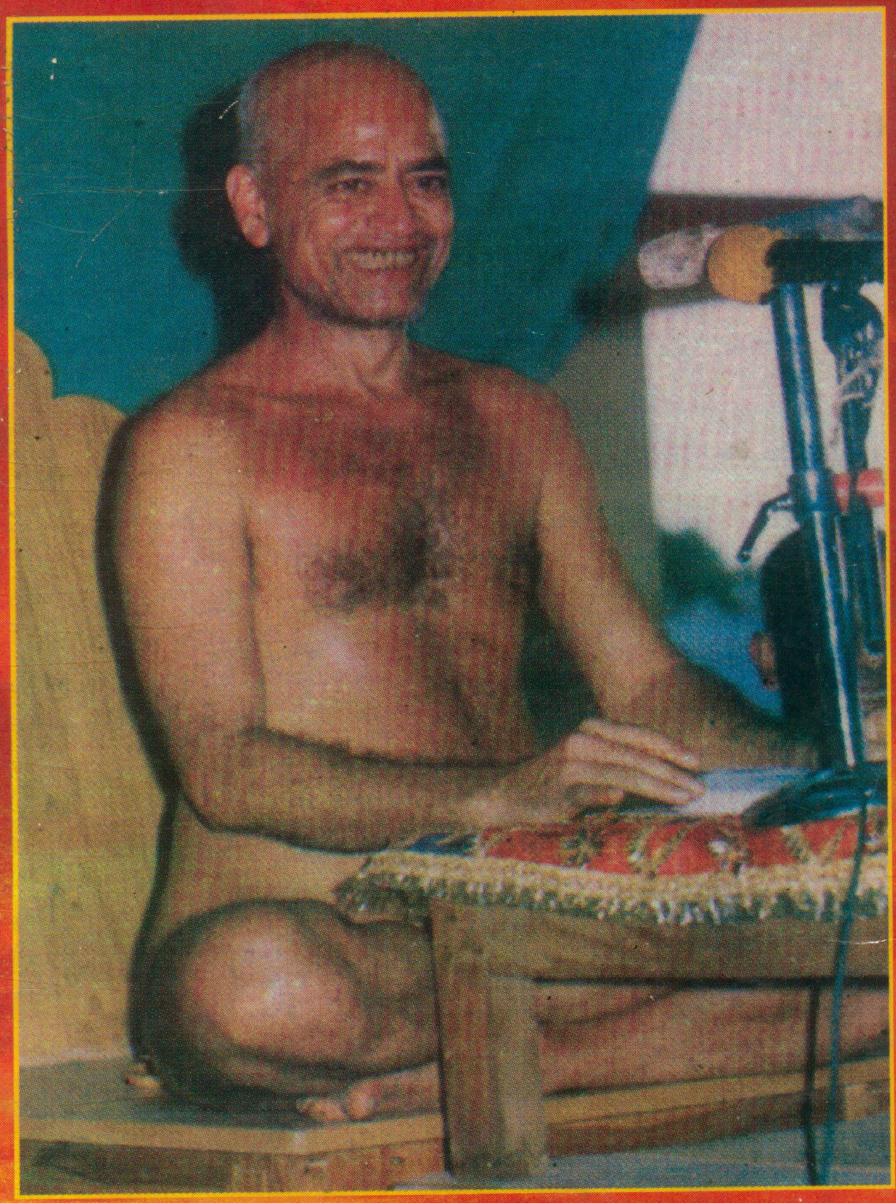

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संपादन

प्रतिष्ठाचार्य पं. वर्द्धमान कुमार जैन सोंरया

विधान संग्रह

(प्रथम भाग)

❋ सम्पादन ❋

प्रतिष्ठाचार्य पं० बर्द्धमानकुमार जैन सोंरया

एम. एस-सी, एम. एड.

सम्पादक-वीतराग वाणी 'मासिक' टीकमगढ़ (म.प्र.)

❋ प्रकाशक ❋

वीतराग वाणी ट्रस्ट (रजि.)

सैलसागर, टीकमगढ़ (म.प्र.)

चतुर्थ आवृत्ति	दीप मालिका	मूल्य
१०००	नवम्बर, २००२	६५.०० रुपए

विधान संग्रह

(प्रथम भाग)

सम्पादन :-
प्रतिष्ठाचार्य पं० बर्द्धमानकुमार जैन सोंरया
सम्पादक-वीतराग वाणी मासिक पत्रिका,
टीकमगढ़ (म०प्र०)

चतुर्थ आवृत्ति : १०००

दीप मालिका : नवम्बर २००२

मूल्य : ६५.०० रुपए

प्रकाशक :-
वीतराग वाणी ट्रस्ट (रजि.)
सैलसागर, टीकमगढ़ (म०प्र०)

ISBN No. 81-88313-20-3

मुद्रक :-
अरिहंत ऑफसेट प्रिंटर्स
सैलसागर, टीकमगढ़ (म.प्र.) ४७२००१
फोन- (07683) 42592

विधान संग्रह

(प्रथम भाग)

विषय सूची

क्रम	विधान का नाम	लेखक	पृष्ठ
1.	प्राक्कथन		1
2.	सम्पादक की कलम से		5
	(i) मण्डल विधान आरम्भ करने की विधि		5
	(ii) आवश्यक मंत्र, सकलीकरण, मण्डप प्रतिष्ठा विधि		6
	(iii) मंगलाष्टक		7
	(iv) अभिषेक पाठ		11
	(v) पूजा प्रारम्भ विधि एवं आवश्यक पूजा अर्घ		17
	(vi) विनायक यंत्र पूजा		31
	(vii) सामग्री सूची		36
	(viii) मण्डल विधान एवं उनके मांडने		37
	(ix) पूजन करने की विधि एवं बीजाक्षर अंकन		45
3.	श्रुतस्कंध विधान	आचार्य श्री श्रुतसागर जी	1
4.	श्री भक्तामर विधान	आचार्य श्री सोमसेन स्वामी	29
5.	श्री शान्तिनाथ–विधान	श्री पं. ताराचंद जी रिवाड़ी	54
6.	बृहद निर्वाण विधान	कवि श्री जगतराम जी जैन	90
7.	सम्मेदशिखर विधान	श्री कवि जवाहर लाल जी	121
8.	पंचमेरु पूजन विधान	श्री कवि टेकचंद जी	143
9.	कर्म दहन विधान	श्री कवि श्रीचंद्र जी जैन	182
10.	नंदीश्वर द्वीप विधान	श्री कवि रविलाल जी	193
11.	नवग्रह अरिष्ट निवारक विधान	श्री मनसुख सागर जी	211
12.	रत्नात्रय विधान	श्री कवि टेकचंद जी	244
13.	महामृत्युंजय विधान	पं. श्री आशाधर जी	315
14.	हवन एवं विधि	प्रतिष्ठा ग्रंथ से संकलन	385

******

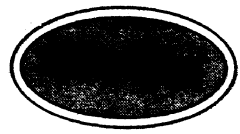

जो हमारी कुल परम्परा के
सम्यक्ज्ञान, सदाचरण और धार्मिक आस्था के शीर्षस्थ
विद्वान के साथ प्रथम पुण्य पुरुष के रूप में
ज्यातिर्मय दिवाकर रहे ।

जो महामानवीयता के साकार
लौह पुरुष थे ।
जिनका महान व्यक्तित्व एवं अपार कृतित्व
हमारी पीढ़ी दर पीढ़ी स्मरणीय
बना हुआ है ।

जिनकी गुणवत्ता, सदाचरणता, धार्मिकता
तथा प्रभुता का प्रभाव हमारी
कुलपीढ़ी पर परम्परागत
से चला आ रहा
है ।

उन महामना बाबाजी स्वर्गीय
श्रीमान् पं० गुलजारीलाल जी जैन सोंरया
की पावन पुनीत स्मृति में
उनके लिए ही यह कृति
सादर समर्पित
है ।

-वर्द्धमानकुमार जैन सोंरया

प्राक्कथन

प्रातः स्मरणीय परम पूज्य श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी महाराज के समकालीन शीर्षस्थ शास्त्रीय विद्वान, वाणी और विनय के उत्तुंग हिमालय तथा सहजता सौम्यता और विद्वत्ता के अगाध सागर मडावरा जिला-ललितपुर निवासी स्वर्गीय पूज्य पिता श्री पं. गुलजारीलाल जी जैन सोंरया एवं ममता और वात्सल्यता की प्रतिमूर्ति स्वनाम धन्य नारीरत्न देवशास्त्र गुरु की परम आराधक जन्म दामिनी पूज्य **स्वर्गीय माँ श्रीमती काशीबाई जी की पावन पुनीत स्मृति में** उनकी आंशिक चल अचल सम्पत्ति तथा वीतराग वाणी मासिक की ध्रौव फण्ड राशि से वीतराग वाणी ट्रस्ट की जून सन् १९९१ में जन-जन के हितार्थ स्थापना की गई थी। दिसम्बर १९९९ में मध्यप्रदेश शासन द्वारा विधिवत् रजिस्ट्रेशन हो जाने के बाद से इस ट्रस्ट द्वारा वीतराग वाणी मासिक पत्रिका के प्रकाशन के साथ-साथ जैन वांगमय के परम्पराचार्यों द्वारा लिखित आगम ग्रंथों के साथ जिनागम परम्परा पोषक जैन सिद्धान्त ग्रंथों के प्रकाशन का कार्य आरंभ किया। प्रकाशित ग्रंथों की लोकप्रियता ने प्रोत्साहित किया और निरन्तर बिक्री से प्राप्त राशि से नए-नए ग्रंथों का शुद्धिता, सुन्दरता, प्रभावक एवं आकर्षक मुद्रण में प्रकाशन बढ़ाते गए। देश के कौने-कौने से हमारे ट्रस्ट के प्रकाशित साहित्य को विद्वानों ऋषियों एवं समाजसेवी जनों ने मुक्त कंठ से सराहा। उन सबकी प्रेरणाओं से मुझे जैन आगम के निरन्तर प्रकाशन का बल मिला और दीपावलि नवम्बर २००२ तक मात्र तीन वर्ष में लगभग ५५ विशाल जैनागम ग्रंथों का प्रकाशन इस ट्रस्ट से साकार करने में समर्थ हो सके। जिसकी सूची ग्रंथ के अंत में समाहार की गई है। अनेक ग्रंथ तो २ और ३ संस्करणों में इतनी अल्प अवधि में प्रकाशित हो गए।

आज से २६०० वर्ष पूर्व इस भूमण्डल पर तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का अवतरण हुआ था। वह तन और मन दोनों से अद्भुत सुन्दर थे। उनका उन्नत व्यक्तित्व लोक कल्याण की भावना से युक्त था। उन्होंने कामनाओं और वासनाओं पर विजय पाकर प्राणीमात्र के कल्याण के लिए उज्जवल मार्ग प्रशस्त किया। वह कर्मयोग की साधना के शिखर थे। उनके व्यक्तित्व में साहस सहिष्णुता का अपूर्व समावेश था। उन्होंने मानवीय मूल्यों को स्थिरता प्रदान करते हुए, प्राणियों में निहित शक्ति का उदघाटन कर उन्हें निर्भय बनाया। तथा अज्ञानांधकार को दूर कर सत्य और अनेकान्त के आलोक से जन नेतृत्व किया। उनका संवेदनशील हृदय करुणा से सदा द्रवित रहता था। हिंसा, असत्य, शोषण,

संचय और कुशील से संत्रस्त मानवता की रक्षा की, तथा वर्वर्तापूर्वक किए जाने वाले जीवों के अत्याचारों को दूर कर अहिंसा मैत्री भावना का प्रचार किया ।

उनकी तपः साधना विवेक की सीमा में समाहित थी । अतः सच्चे अर्थों में वह दिव्य तपस्वी थे । वह प्राणीमात्र का उदय चाहते थे । तथा उनका सिद्धान्त था, कि दूसरों का बुरा चाहकर कोई अपना भला नहीं कर सकता है । कार्य, गुण, परिश्रम, त्याग, संयम ऐसे गुण हैं जिनकी उपलब्धि से कोई भी व्यक्ति महान बन सकता है । उनका जीवन आत्म कल्याण और लोकहित के लिए बीता। लोक कल्याण ही उनकी दृष्टि और लक्ष्य था । उनका संघर्ष बाह्य शत्रुओं से नहीं अन्तरंग काम क्रोध वासनाओं से था । वह तात्कालीन समाज की कायरता, कदाचार, और पापाचार को दूर करने के लिए कटिवद्ध रहते थे । उनके अपार व्यक्तित्व में स्वावलम्बन की वृत्ति तथा स्वतंत्रता की भावना पूर्णतः थी । उन्होंने अपने ही पुरुषार्थ से कर्मों का नाश किया । उनका सन्देश था कि जीवन का वास्तविक विकास अहिंसा के आलोक में ही होता है । यह कथन अपने जीवन में चरितार्थ कर साकार किया । दया प्रेम और विनम्रता ने महावीर की अहिंसक साधना को सुसंस्कृत किया । उनके क्रान्तिकारी व्यक्तित्व से कोटि कोटि मानव कृतार्थ हो गए ।

भगवान महावीर में बाह्य और आभ्यांतर दोनों ही प्रकार के व्यक्तित्वों का अलौकिक गुण समाविष्ट था । उनके अनन्त ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख और अनंत वीर्य गुणों के समावेश ने उनके आत्म तेज को अलौकिक बना दिया था । उनके व्यक्तित्व में निःस्वार्थ साधक के समस्त गुण समवेत थे। अहिंसा ही उनका साधना सूत्र था । अनंत अन्तरंग गुण उनके आभ्यांतर व्यक्तित्व को आलोकित करते थे । वह विश्व के अद्वितीय क्रान्तिकारी तत्वोपदेशक और जन नेता थे । उनका व्यक्तित्व आद्यन्त क्रान्तिकारी त्याग तपस्या संयम अहिंसा आदि से अनुप्रमाणित रहा ।

भगवान महावीर स्वामी द्वारा प्रवोधित द्वादशांग वाणी ही जैनागम है समस्त जैनागम को चार भागों में विभक्त किया गया है जिन्हें चार अनुयोग भी कहते हैं इनसे सम्पूर्ण श्रुत का ज्ञान जानना चाहिए । जन जन के हितार्थ तथा भव्यों की आत्मा के कल्याणार्थ भगवान महावीर स्वामी के दिव्य २६ सौ वें जन्मोत्सव के पावन प्रसंग पर वीतराग वाणी ट्रस्ट द्वारा छब्बीस ग्रंथों को प्रकाशित करते हुए अपने आपको गौरवशाली अनुभव करता हूँ ।

हम सब अहोभाग्यशाली हैं कि हम सब के जीवन में अपने आराध्य परमपिता देवाधिदेव अंतिम तीर्थेश भगवान महावीर स्वामी का सन् १९७३ में

पच्चीस सौ वां निर्वाण महोत्सव मनाने का परम संयोग मिला था । और सन् २००१ में छब्बीस सौ वां जन्मोत्सव अहिंसा वर्ष के रूप में मनाने का सुयोग साकार हुआ । इस महामानव के सम्मान में भारत सरकार ने भी इसे विश्व स्तर पर अहिंसा वर्ष के रूप में चरितार्थ करने का विश्व स्तर पर जो आयोजन साकार किया है वह विश्व जन मानुष को अवश्य अहिंसा, सत्य के सिद्धान्त का परिज्ञान तो देगा ही उसकी महत्ता को प्रतिपादित करने तथा भगवान महावीर के पवित्र आदर्शों पर चलने की प्रेरणाऐं भी प्रदान करेगा । जहाँ संपादक ने सन् १९७३ में भगवान महावीर स्वामी के २५ सौ वें निर्वाण महोत्सव पर एक सौ वर्ष में देश में हुए दिगम्बर जैन विद्वानों, साहित्यकारों, कविगणों, पण्डितों के अलावा समस्त दिगम्बर जैन महाव्रती जनों के सचित्र जीवन वृत्त उनके उन्नत कृतित्व और अपार व्यक्तित्व के साथ लिखकर विद्वत् अभिनंदन ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया था। आज उन्हीं तीर्थेश भगवान महावीर स्वामी के छब्बीस सौ वें जन्मोत्सव पर उनकी पावन स्मृति में भगवान महावीर स्वामी की परम्परा में जन्मे हमारे परमाराध्य परम्पराचार्यों तथा उनके ही आधार पर लिखित मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रणीत २६ प्रकार के आगम ग्रंथों के मात्र हिन्दी रूपान्तर प्रकाशन के संकल्प को साकार किया है ।

प्रस्तुत विधान संग्रह प्रथम भाग में श्री यागमण्डल, पंचकल्याणक, चौंसठऋद्धि, दशलक्षण, लब्धि, णमोकार पैंतीसी, ऋषिमण्डल, रविव्रत, जिनगुणसम्पत्ति, णमोकार महामंत्र एवं गणधरवलय जैसे कल्याणकारी ग्यारह विधानों का शास्त्रोक्त साविधि विधानों का संग्रह किया गया है । विधान संग्रह ग्रंथ के भाग दो में भी शास्त्रोक्त विधि पूर्वक ११ प्रकार के विधानों का संग्रह किया गया है । वह हैं श्री श्रुतस्कंध, श्री भक्तामर, श्री शान्तिनाथ, वृहद निर्वाण, सम्मेदशिखर, पंचमेरु पूजन विधान, कर्मदहन, नन्दीश्वरद्वीप, नवग्रह अरिष्टनिवारक, रत्नात्रय एवं महा मृत्युंजय विधान इसीप्रकार तीसरे खण्ड में ६ प्रकार के विशिष्ट विधानों का अपूर्व संग्रह है । इन ग्रंथों की गरिमामय उपयोगिता को दृष्टि में रखकर देश के महानतम दिगम्बर जैनाचार्यों श्रेष्ठ साहित्यकार विद्वानों, समाज के गौरवपूर्ण समाज सेवी श्रावकों तथा स्वाध्यायी जनों ने मुक्त कंठ से सराहा है । आत्मकल्याण का प्रशस्त मार्ग जिनेन्द्र भगवान की साविधि विशेष पूजन है । सांसारिक उपलब्धियों के साथ असाताकर्मों के छेदन में साविधि आराधना के प्रसंग अवश्य अनादिकाल से उपकारी रहे हैं । भगवान महावीर स्वामी की २६ सौ वीं जयंती के प्रसंग में चारों अनुपयोगों के मुख्यतः २६ ग्रंथों का गरिमा के साथ प्रकाशन इस ट्रस्ट द्वारा साकार किया गया है । विधान संग्रह प्रथम/द्वितीय भाग को भी इन ग्रंथों में समाहार किया गया है । आशा है भक्ति के प्रसंग से इस ग्रंथ

जन जन का महत उपकार करेंगे । युवाविद्वान प्रतिष्ठाचार्य पं. वर्द्धमानकुमार जी जैन सोंरया को साधुवाद देता हूँ । जिन्होंने ३ वर्ष के निरन्तर श्रम से इन विधान ग्रंथों का सम्पादन कर भारतीय जैन समाज को एक उपलब्धि प्रदान की । प्रत्येक विधान को सम्पन्न करने के लिए शास्त्रोक्त विधि का सम्यक् वर्णन इसमें समाहार किया गया है जो प्रत्येक श्रावक के हित में कल्याणकारी होगा ।

अंत में ट्रस्ट की ग्रंथमाला के सहसम्पादक के रूप में युवा प्रतिष्ठाचार्य विद्वान श्री पं. बर्द्धमानकुमार जैन सोंरया, चिं. डॉ. सर्वज्ञदेव जैन सोंरया टीकमगढ़ एवं श्रीमती सुनीता जैन एम.एस-सी.; एम.ए. बिलासपुर को आशीर्वाद देता हूँ जिनके निरन्तर अथक श्रम से इन ग्रंथों का शीघ्रता से प्रकाशन सम्भव हो सका । ऐसे अलौकिक समस्त जीवों के उपकारी तीर्थंकर महावीर स्वामी के २६ सौ वें जन्म वर्ष की पुनीत स्मृति में उनके ही द्वारा उपदेशित अध्यात्म ज्ञान के अलौकिक ज्ञान पुंज २६ ग्रंथों के प्रकाशन का संकल्प साकार करते हुए अत्यंत प्रमोद का अनुभव कर रहा हूँ । यह ग्रंथ अवश्य भावी पीढ़ियों कों आध्यात्म का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा । आशा है इससे भावी भव्य जन अपना निरन्तर उपकार करते हुए अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त करेंगे ।

सैलसागर, टीकमगढ़ (म.प्र.)
"पर्यूषण पर्व"
सितम्बर २००२

प्रतिष्ठाचार्य पं. विमलकुमार जैन सोंरया
अध्यक्ष-वीतराग वाणी ट्रस्ट रजि.
प्रधान सम्पादक-वीतरागवाणी मासिक

सम्पादक की कलम से

मण्डल विधान आरंभ करने की विधि

जिस स्थान पर विधान करना है वहाँ एक छोटा सा मण्डप बनाऐं। मण्डप के मध्य में जो भी विधान करना हो उसका इस पुस्तक में अंकित अनुसार पाँच प्रकार के रंगों से मण्डप की रचना करें पश्चात् मण्डप प्रतिष्ठा विधि से मण्डल की शुद्धि करें। मण्डल के मध्य में एक सिंहासन पर जो विधान किया जा रहा है उसके यंत्र की स्थापना करें, अगर वह यंत्र न हो तो विनायक या सिद्ध यंत्र की भी स्थापना कर सकते हैं।

सर्व प्रथम एक लोटे में पवित्र जल भरकर जल शुद्धि मंत्र पढ़ते हुए उसमें पुष्प डालें पश्चात् उस मंत्रित जल से मण्डप के चारों तरफ भूमि शुद्धि मंत्र का पाठ करते हुए जल की धारा देते हुए एक परिक्रमा करें पश्चात् शुद्धि मंत्र का पाठ करते हुए मण्डप एवं मण्डल पर जल के छींटे लगाए और मण्डल पर मंगल कलश – अष्ट मंगल द्रव्य आदि की स्थापना करें। इतना कार्य हो जाने के बाद नीचे लिखी विधि पूर्वक विधान सम्पन्न करें।

मण्डल के चारों कोनों पर चार मंगल कलशों की तथा एक यंत्र के पास बीच मण्डल में मंगल कलशों की स्थापना करें। मंगल कलशों में आठों द्रव्य, सुपाड़ी, हल्दी गांठ, कपूर, चांदी का सांतिया, सवा रुपया डाले तथा लोटे के मुख पर लाल तूस में लपटा रक्षा सूत्र से बंधा नारियल स्थापित करें और मंगल कलश पर ॐ, सांतिया, श्री, ह्रीं, क्लीं यह पांच बीजाक्षर केशर से अंकित करें । मण्डप के उत्तर या पूर्व भाग में एक ध्वजा लगाऐं (मंत्रपाठ) पढ़ते हुए । पश्चात् रक्षा नियोग मंत्र पढ़ते हुए मण्डप को रक्षा सूत्र से 3 वार लपेट कर रक्षित करें तथा ज्योति स्थापन मंत्र पढ़कर अखण्ड ज्योति की मण्डप के पास स्थापना करें । पश्चात नीचे लिखे अनुसार पात्र शुद्धि करें और इस ग्रथ में

अकिंत विधि अनुसार मंगलाष्टक पाठ से विधान शुरु करें ।

आवश्यक मंत्र

शुद्धि (मण्डप मण्डल और पात्र शुद्धि के लिए) -

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतं द्रावय द्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूँ ब्लूँ द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

रक्षा नियोग मंत्र (मण्डप पर रक्षा सूत्र लपेटते समय) -

ॐ णमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

ज्योति स्थापन मंत्र

ॐ अज्ञानतिमिर हरं दीपकं स्थापयामि ।

ध्वजा चढ़ाने का मंत्र-

ॐ णमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्ति स्वाहा।

भूमि शुद्धि मंत्र -

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा।

जल शुद्धि मंत्र -

ॐ ह्रीं ह्रों ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म तिगिंच्छ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिंधु रोहिद्रो हितास्या हरिदरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णरुप्य कूलारक्ता रक्तोदा पयोधि शुद्ध जल सुवर्ण प्रक्षालित नवरत्न गन्धाक्षत पुष्पोर्जिता मोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा ।

सर्व प्रथम मंगलाष्टक का पाठ पढ़े और नीचे लिखी विधि अनुसार विधान का कार्यक्रम सम्पन्न करें ।

मंगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुट- प्रद्योतरत्नप्रभा
भास्वत्पादनखेंदवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।१।।

सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रूयालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।२।।

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तराः विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।३।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते)मंगलम्।।४।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला, येऽष्टाविधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।५।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां ।
शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,

निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।६।।

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।७।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।८।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ।
ये शृण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।९।।

।। इति श्री मंगलाष्टकम्।।

संक्षिप्त अंगन्यास एवं सकलीकरण क्रिया

(मंगलाष्टक पाठ के बाद इस क्रिया को सम्पन्न करें)

अपने दाहिने हाथ में जल लेकर नीचे लिखा मंत्र पढ़कर जल को मस्तक पर डालें ।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं श्रावय श्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूँ ब्लूँ द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं झ्वीं हं सः स्वाहा

नीचे लिखा मंत्र पढ़कर पुनः अंजुलि में जल लेकर समस्त शरीर पर छिड़कें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वांग शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

(नीचे लिखा मंत्र पढ़कर दोनों हाथों की दशों ऊंगलियों को पानी में भिगो कर हाथ जोड़कर यंत्र को प्रणाम करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्राँ अंगुष्ठाभ्यां, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां, ॐ ह्रूँ णमो आइरीयाणं ह्रूँ मध्यमाभ्यां, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां, ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमो नमः स्वाहा ।

(नीचे लिखे मंत्रों को पढ़ते हुए यथा वर्णित स्थान पर पीले सरसों अथवा पुष्पों को डाले)

ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं ह्राँ मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम बदनं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं ह्राँ पूर्व दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिम दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशात् आगत विघ्नान निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अस्माकं, वस्त्रं, पूजाद्रव्यं, स्थलं, सर्व जगत रक्ष रक्ष सर्व विघ्नं निवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

(नीचे लिखा मंत्र पढ़कर सिर, माथा, दोनों कर्णों, वक्षस्थल, दोनों भुजाओं तथा पीठ पर चंदन के तिलक लगाऐं)

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्द कुन्दाद्याः जैन धर्मोऽस्तुमंगलम् ।।

(नीचे लिखा मंत्र पढ़कर यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनें)

ॐ नमः परम शान्ताय शान्ति कराय पवित्री करणायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा ।

(नीचे लिखा मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ में तीन फेरा लगाकर तीन गांठ लगाते हुए रक्षा सूत्र पहने)

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु कुरु, ॐ णमो अर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षा बंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा ।

मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि

नीचे लिखे मंत्र को 5 बार पढ़कर मण्डप पर जल के छीटें छिड़क देवें ।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धिं कुर्मः ।

(मण्डप की आठों दिशाओं में क्रमशः नीचे लिखे मंत्र पुष्प क्षेपते हुए मण्डप शुद्धि करें ।)

1. ॐ आं क्रौं ह्रीं नमः चतुर्णिकाय देवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

2. ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्व दिशा के प्रतिहारी कुमुदेश्वर देवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

3. ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्निकोण दिशा के प्रतिहारी यमेन्द्र देवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

4. ॐ आं क्रौं ह्रीं दक्षिण दिशा के प्रतिहारी वामन देवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

5. ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋतकोण दिशा के प्रतिहारी नैऋतेन्द्र देवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

6. ॐ आं क्रौं ह्रीं पश्चिम दिशा के प्रतिहारी अंजन देवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

7. ॐ आं क्रौं ह्रीं वायव्यकोण दिशा के प्रतिहारी वायुकुमारः देवाः

विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

8. ॐ आं क्रौं ह्रीं उत्तर दिशा के प्रतिहारी पुष्पदंत देवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

9. ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशान दिशा के प्रतिहारी ऐशान्नेद्र देवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

10. ॐ आं क्रौं ह्रीं वास्तुकुमारदेवाः, मेघकुमारदेवाः, नागकुमारदेवाः विघ्न निवारणार्थाय कार्य सिद्धयार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा ।

(अंत में नीचे लिखा मंत्र पढ़कर मण्डप एवं पात्रों के ऊपर पुष्पक्षेपण करें ।)

ॐ ह्रूँ फट् किरीटिं किरीटिं घातय घातय पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्त्रखड़ान कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान भिंद भिदं क्षां क्षं वः फट् स्वाहा ।

अभिषेक पाठ

श्रीमन्नतामरशिरस्तटरत्नदीप्ति,
तोयावभासि चरणाम्बुज युग्ममीशम् ।
अर्हन्तमुन्नतपदप्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेकविधिं करिष्ये ।।१।।

अथ पौर्वान्हिकदेववन्दनाया पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा स्तववन्दनासमेतं श्रीपंचमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़े)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः ।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा-
त्तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि ।।२।।
जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीयकीर्तिं
सेन्द्राः सुराप्तमदवारणगाः स्तुवन्ति ।

तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया
पुष्पांजलि मलयजातमुपाक्षिपेऽहम् ।।३।।

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेककी प्रतिज्ञा करें)

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः श्रीप्रस्तरे पूर्णशशांककल्पे ।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह श्रीलेखनं करोमि।

(यह पढ़कर अभिषेककी थालीमें केशरसे श्री लिखें)

कनकादिनिभं कम्रं पावनं पुण्यकारणम् ।
स्थापयामि पर पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर सिंहासन स्थापित करें)

भृगांरचामरसुदर्पणपीठकुम्भ-
तालध्वजातपनिवारकभूषिताग्रे ।
वर्धस्व नन्द जय पाठपदावलीभिः
सिंहासने जिनभवन्तमहं श्रयामि ।।६।।

वृषभादिसुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान् ।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम् ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।

(यह पढ़कर प्रतिमा अथवा यंत्र विराजमान करें)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः
क्षीराब्धिवारिभिरपूरयदर्थकुम्भान् ।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रे ।।८।।

शातकुम्भीयकुम्भौधान् क्षीराब्धेस्तोयपूरितान् ।
स्थापयामि जिनस्नानचन्दनादिसुचर्चितान् ।।९।।

ॐ ह्रीं चतु:कोणेषु चतु:कलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में चार कलश रखे)

आनन्दनिर्भरसुरप्रमदादिगानै-
वादित्रपूरजयशब्दकलप्रशस्तैः ।
उद्गीयमानजगतीपतिकीर्तिमेनां
पीठस्थलीं वसुविधार्चनयोल्लसामि ।।१०।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थिताय जिनायार्घं या यंत्रायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे, वादित्र नाद तथा जय जय शब्द का उच्चारण करें)

कर्मप्रबन्धनिगडैरपि हीनताप्तं
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम् ।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्त्वम् ।। ११।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह वं मं हं सं तं पं वं वं हं सं सं तं पं पं झं झं क्षीं झ्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्र– तरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

(यह पढ़कर अभिषेक करे)

तीर्थोत्तमभवैर्नीरैः क्षीरवारिधिरूपकैः ।
स्नपयामि जन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान् ।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से 108 धारा छोड़े)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवनवारां विन्दुरेकोऽपि नृणां
प्रभवति विहिधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम् ।। १३।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ध्वीं ध्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं ध्वीं ध्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रः ह्रौ ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करे)

पानीयचन्दनसदक्षतपुष्पपुञ्ज-
नैवेद्यदीपकसुधूपफलव्रजेन ।
कर्माष्टकक्कथनवीरमनन्तषक्तिं
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम् ।।१४।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे)

हे तीर्थपा निजयशोधवलीकृताशाः
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम् ।
सद्द्रव्यहज्जनितपकंकवन्धकल्पा
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु ।।१५।।

(यह पढ़कर शान्ति के लिये पुष्पाञ्जलि छोड़े)

नत्वा मुहुर्निजकरैरमृतोपमेयैः
स्वच्छैर्जिनेन्द्र तव चन्द्रकरावदातैः ।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये
देहे स्थितान् जलकणान्परिमार्जयामि ।।१६।।

ॐ अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर प्रतिमाजी को शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से पोंछे)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्त्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम् ।
जिघृक्षुरिष्टिमिन तेऽष्टतयीं विधातुं

सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि ।।१७।।

(यह पढ़कर प्रतिमाको सिंहासनपर विराजमान करे)

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः।
फलैरर्घैर्जिनमर्चे जन्मदुःखापहानये ।।१८।।

ॐ ह्रीं पीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावे)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च व्यात्युक्षणेन हरतादघसञ्चयं मे ।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद् भूयाद् भवातपहरं धृतमादरेण ।।१९।।

मुक्तिश्री वनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं,
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवी राज्याभिषेकोदकम् ।
सम्यग्ज्ञान चरित्र दर्शनलतासंवृद्धि सम्पादकं
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन स्नानस्य गन्धोदकम् ।।२०।।

(यह पढ़कर गन्धोदक शिरपर लगावे)

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते ।
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत् ।।
मदीयाद् भल्लाटादशुभकर्माटनमभूत् ।
सदेदृक् पुण्यार्हन् मम भवतु ते पूजनविधौ ।।२१।।

(यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि छोड़े)

शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीपार्श्व–तीर्थंकराय द्वादश–गणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यान पवित्राय सर्वज्ञाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्य–मही–व्याप्ताय अनन्त–संसार–चक्र–परिमर्दनाय, अनन्तदर्शनाय, अनन्तज्ञानाय, अनन्तसुखाय, अनन्त–वीर्याय, त्रैलोक्य–वशंकराय, सत्य–ज्ञानाय, सत्य–ब्रह्मणे, धरणेन्द्र–फणामण्डल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका–श्रावक–श्राविका–प्रमख–चतः संघोपसर्ग विनाशनाय

घातिकर्म–विनाशनाय, अघातिकर्म–विनाशनाय । अपवाद मस्माकम छिन्धि–छिन्धि, भिन्धि–भिन्धि। मृत्युं छिन्धि–छिन्धि भिन्धि 2 । अतिकामं छिन्धि 2 भिन्धि 2। रतिकामं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । क्रोधं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । अग्निं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व शत्रुं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । सर्वोपसर्गं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व विघ्नं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्वभयं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । सर्व राजभयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व–चोर–भयं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । सर्व दुष्ट–भयं छिन्धि 2 भिन्धि 2 । सर्व–मृग–भयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्वपरमंत्रं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्वमाभयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व शूलभयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व क्षय रोगं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व–कुष्ठरोगं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व ज्वर मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व मजमारिं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्वाश्वमारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व गोमारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व महिष मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व धान्य मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व वृक्ष मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व गुलमारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व पत्र मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व पुष्प मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व फलमारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व राष्ट्रभारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व देश मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व विष मारीं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व क्रूर रोगं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व बेताल शाकिनी भयं छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व वेदनीय छिन्धि 2 भिन्धि 2। सर्व मोहनीय छिन्धि 2 भिन्धि 2 ।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य शान्तिं कुरु 2 । सर्व जनानन्दनं कुरु 2 । सर्व भव्यानन्दनं कुरु 2 । सर्व गोकुलानंदनं कुरु 2 । सर्व ग्राम नगर खेट खर्वट मटम्बन पत्तन द्रोणामुख सहानन्दनं कुरु 2 । सर्व लोकानंदनं कुरु 2 । सर्व देशानन्दनं कुरु 2 । सर्व यजमाना नंदनं कुरु 2 । शीघ्रं व्याधि व्यसन वर्जितं अभय क्षेमा रोग्यं स्वस्ति अस्तु शान्ति रस्तु शिव मस्तु कुल गोत्र धन धान्य सदास्तु चन्द्रप्रभ वासुपूज्य मल्लि बर्द्धमान पुष्पदन्त शीतल मुनि सुव्रतनाथ पार्श्वनाथ परम देवाः सदा शान्तिं कुर्वन्तु कुर्वन्तु ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्व शान्तिम् कुरु कुरु स्वाहा ।

(अभिषेक के बाद विनयपाठ बोले और उसके बाद सामूहिक रूप से नित्य पूजा व यंत्र पूजा करें पश्चात मण्डल विधान करें। पूजा के बाद शान्ति, विसर्जन, स्तुति पढ़ते हुए परिक्रमा करें।)

पूजा प्रारम्भ विधि

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु !
णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं-अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ णमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ।।२।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न - विनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।।३।।
एसो पंच - णमोयारो सव्व - पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ।।४।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म - वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।।५।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष - लक्ष्मी - निकेतन ।

सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।६।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी -भूत -पन्नगाः ।
विष निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।७।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत)

उदकचन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप - सुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु मंगललोकोत्तम शरणेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप फलार्घ्यकैः ।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।३।।

ॐ ह्रीं द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु -सुदीप -सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाम महं यजे।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्त्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उदक चन्दन तन्दुल पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवलमंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिन शास्त्रमहं यजे।।४।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उमास्वामी देव विरचित तत्वार्थ सूत्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां सुकृतै हेतु-
र्जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाऽभ्यधायि ।।१।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति-प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय ।।२।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ।।३।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलंव्य वल्गन्
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।४।।
अर्हतपुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवन्हौ
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।।५।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान् के नाम के पश्चात् पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः ।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः ।

श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः ।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

(इति जिनेन्द्रस्वस्ति मगंलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नित्याप्रकंपाद्भुत्-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।१।।
कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ - पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।२।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण -विलोकनानि ।
दिव्यान मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।३।।
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।४।।
जंघावलि- श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बतीजांकुर-चारणाद्याः ।
नभोऽगंण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। ५।।
अणिम्निदक्षाः कुशलामहिम्नि लघिम्निशक्ताः कृतिनोः गरिम्णि
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।६।।
सकामरूपित्व -वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथा प्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ७।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।८।।
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषा दृष्टिविषं विषाश्च ।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाःस्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।९।।
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः ।

अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।१०।।

देव शास्त्र गुरु पूजा

(अडिल्ल छन्द)

प्रथम देव अरिहंत सुश्रुत सिद्धान्त जू ,
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर पन्थ जू ।
तीन रतन जग माँहि सो ये भवि ध्याइये,
तिनकी भक्ति प्रसाद परमपद पाइये ।।

(दोहा)

पूजों पद अरिहंत के, पूजों . गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार ।।१।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरु समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरु समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरु समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

(गीता छन्द)

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर, वन्दनीक सुपद-प्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा ।।
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूँ ।
अरिहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

मलिन वस्तु हरलेत सब,जल स्वभाव मल छीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।१।।

ॐ ह्रीं देव–शास्त्र–गुरुभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।। 1।।

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे ।

तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ।।
तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घिसि सचूँ ।
अरिहंत श्रुत - सिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।२।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसार–ताप–विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई ।
अति दृढ़ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही ।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल पुंज धरि त्रयगुण जचूँ ।
अरिहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन ।
जासो पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।३।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति ।।3।।

जे विनयवंत सुभव्य उर अंबुज प्रकाशन भान हैं ।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजगमाहिं प्रधान हैं ।।
लहि कुंद कमलादिक पुहुप, भव भव कुवेदनसों बचूँ ।
अरिहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

विविध भाँति परिमल सुमन,भ्रमर जास आधीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।४।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

अति सबल मद - कंदर्प जाको क्षुधा-उरग अमान है ।

दुस्सह भयानक तासु नाशन, को सु गरुड़ समान है ।।
उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ ।
अरिहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु -निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।५।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति ।।5।।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने मोहतिमिर महाबलती ।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप, प्रकाश जोति प्रभावली ।।
इह भाँति दीप प्रजाल, कंचन के सुभाजन में खचूँ ।
अरिहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

स्वपरप्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।६।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

जो कर्म ईंधन दहन अग्नि समूह सम उद्धत लसै ।
वर धूप तासु सुगन्धता करि, सकल परिमलता हँसै ।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव ज्वलनमाँहि नहीं पचूँ ।
अरिहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

अग्निमाँहि परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।७।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं ।

मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं ।।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ ।
अरिहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु, निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

जे प्रधान फल फलविषैं,पंचकरण रस लीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।८।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनमके पातक हरूँ ।।
इहिभाँति अर्घ्य चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूँ ।
अरिहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ ।।

(दोहा)

वसुविधि अर्घ्य संयोजके,अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।९।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

जयमाला

(दोहा)

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्नभिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार ।।१।।

(पद्धरी छन्द)

कर्मन की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोष राशि ।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुण गंभीर ।।२।।
शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इंद्र नमत कर सीस धार ।
देवाधिदेव अरिहंत देव, वंदौं मनवच तन करि सु सेव ।।३।।
जिनकी ध्वनि है ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप ।

दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत ।।४।।
सो स्याद्वाद मय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग ।
रवि शशि न हरैसो तम हराय,सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय ।।५।।
गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रतनत्रय-निधि अगाध ।
संसार देह वैराग्य धार, निरवांछि तपैं शिव पद निहार ।।६।।
गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस, भवतारन तरन जिहाज ईस ।
गुरुकी महिमा वरनी न जाय, गुरु नाम जपों मन-वचन-काय ।।७।।

(सोरठा)

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरे ।
द्यानत सरधावान, अजर अमर पद भोगवे ।।७।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

श्री जिनके परसाद तैं, सुखी रहैं सब जीव ।
यातैं तन मन वचन तैं, सेवो भव्य सदीव ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घावली

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है ।
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है ।।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै ।
सातशत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै ।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दस क्षेत्र के विषै तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रन हूतैं, थुति पूरी न करी है ।

द्यानत सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार ।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज ।।

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । अथवा

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर–युगमंधर–बाहु–सुबाहु–संजात–स्वयंप्रभ–ऋषभानन–अनन्तवीर्य–सूरप्रभ–विशालकीर्ति–वज्रधर –चन्द्रानन–चंद्रवाहु–भुजंगम–ईश्वर–नेमिप्रभ–वीरसेन–महाभद्र–देवयश– अजितवीर्येतिविंशति विद्यमान तीर्थङ्करेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्ध परमेष्ठी (संस्कृत)

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम् ।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितम् ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्ध परमेष्ठी (भाषा)

जल फल वसुवृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा ।
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम वंदा ।।
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी, अंतरयामी अभिरामी ।
शिवपुर विश्रामी निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी ।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्री सिद्धचक्राधि पतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पाँच बालयति

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं ।

श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अती,
नमूँ मन वच तन धरि प्रेम, पाँचों बालयती ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ महावीर स्वामी, श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय चौबीसी

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ।।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरांत चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोलहकारण

जल फल आठों दरब चढ़ाय,'द्यानत' वरत करों मनलाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमेरु जिनालय

आठ दरबमय अरघ बनाय,'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।
पाँचोंमेरु असी जिनधाम,सब प्रतिमाजी को करो प्रणाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन विजय अचल–मन्दर–विद्युन्माालि–पंचमेरु सम्बन्धि– जिनचैत्यालयस्थ–जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दीश्वरद्वीप जिनालय

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों ।।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों ।।

ॐ ह्रीं श्री नंन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यः अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशलक्षणधर्म

आठो दरब संभार, 'द्यानत' अधिक उछाहसो ।
भव आताप निवार, दस लक्षण पूजौं सदा ।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीरत्नत्रय

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्न त्रय भजूँ ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना ।
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना ।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण क्षेत्र

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोरकर विनती करौं ।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाश कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवासकों ।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

सरस्वती

जल चंदन अक्षत फूल चरु, अरु दीप धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै ।।
तीर्थंकर की ध्वंनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवर वाणी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई ।।
ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जिनेन्द्र

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर,बलि बलि जाऊँ मनवचकाय ।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय ।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र

जल गन्ध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघही ।
कन थाल अर्घ बनाया शिव सुख, 'रामचन्द्र' लहै सही ।।
श्रीचन्द्रप्रभ दुतिचन्द को पद, कमल नखससिलगि रह्यो ।
आंतक दाह निवारिं मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो ।।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।
शिवपद राज हेत हे श्रीपति, निकट धरों यह लाई ।।
वासुपूज्य वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।।
ॐ ह्रीं श्रीवासूपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे, अर्घ चढ़ाये मंगल गाय ।
'बखत रतन' के तुम ही साहिब, दीजे शिवपुर राज कराय ।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर, द्वादश मदन तनो पद पाय ।
तिनके चरण कमल के पूजे, रोग शोक दुख दारिद जाय ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र

जलफल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।
अष्टम छितिके राज करन को, जजों अंग वसु नाय ।।
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय ।।दाता०।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये ।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा ।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्री महावीर जिनेन्द्र

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों ।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरो ।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ।

श्री ऋषि-मण्डल

जल फलादिक द्रव्य लेकर, अर्घ सुन्दर कर लिया ।
संसार रोग निवार भगवन्, वारि तुम पद में दिया ।।

जहाँ सुभग ऋषिमंडल विराजैं, पूजि मन वच तन सदा ।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख,स्वप्न में दुख नहिं कदा ।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव–विनाशन– समर्थाय, रोग–शोक–सर्व–संकटहराय, सर्वशान्तिपुष्टि–कराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अरिहंतादि पंचपद, दर्शन–ज्ञान–चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त ऋषि, बीस चार सूर, तीन ह्रीं, अर्हंतबिम्ब, दशदिग्पाल यन्त्र सम्बन्धि परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दैनिक पूजा के बाद नीचे लिखी यंत्र पूजा करके विधान करना चाहिए । विधान के बाद शान्तिपाठ, विसर्जन करें।)

विनायक यन्त्र पूजा

परमेष्ठिन मंगलादित्रय विघ्नविनाशने ।
समागच्छ तिष्ठ तिष्ठ मम संनिहितो भव ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु परमेष्ठिन् मंगल लोकोत्तम शरणभूत! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

स्वच्छैर्जलैस्तीर्थभवैर्जराप मृत्यूग्ररोगापनुदे पुरस्तात् ।
अर्हन्मुखान् पंचपदान्शरण्यान् लोकोत्तमान् मागंलिकान्यजेऽहम् ।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमगंललोकोत्तमशरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चन्दनैर्गन्धहृतालिबृन्द – चितैर्हिमांशुप्रसरावदातैः
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान् मागंलिकान्यजेऽहम् ।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुमगंललोकोत्तमशरणेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदक्षतैमौक्तिककान्तिपाट - च्चरैः सितैर्मानसनेत्रमित्रैः ।
अर्हन्मुखान् पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।४।।
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... अक्षतं ।
पुष्पैरनेकैरसवर्णगन्ध - प्रभासुरैर्वासितदिग्वितानैः।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।५।।
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... पुष्पं ।
नैवेद्यपिण्डैर्घृतशर्कराक्त - हविष्यभागैः सुरसाभिरामैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।६।।
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... नैवेद्यं ।
आरार्तिकैरत्नसुवर्णरुक्म - पात्रार्पितैर्ज्ञानविकासहेतोः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।७।।
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... दीपं ।
आशासु यद्धूमवितानमृद्ध - तैर्धूपवृन्दैर्दहनोपसर्पैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान्लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।८।।
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... धूपं ।
फलैरसालैर्वरदाडिमाद्यै - र्हृद्यघ्राणहार्यैरमलैरुदारैः ।
अर्हन्मुखान्पञ्चपदान् शरण्यान् लोकोत्तमान्मागंलिकान्यजेऽहम् ।।९।।
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... फलं ।
द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे ह्यनर्घ्यमर्घं वितरामि भक्त्या ।
भवे भवे भक्तिरुदारभावाद् यैषां सुखायास्तु निरन्तराय ।।१०।।
ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय..... अर्घं ।
अनादिसन्तानभवान् जिनेन्द्रान् अर्हत्पदेष्टानुपदिष्टधर्मान् ।
द्वेधाश्रियालिगिंतपादपद्यान् यजामि भक्त्या प्रकृतिप्रसक्त्यै ।।११।।
ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयसमवसरणलक्ष्मीं विभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घं ।
कर्माष्टनाशाच्युतभावकर्मो-द्भतीन् निजात्मस्वविलासभूपान ।
सिद्धानन्तांस्त्रिककालमध्ये गीतान् यजामीष्टविधिप्रसक्त्यै ।।१२।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठगणं भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घं ।

ये पञ्चधाचारपरायणानामग्रेसरा दक्षिणशिक्षिकासु ।
प्रमाणनिर्णीतपदार्थसार्थानाचार्यवर्यान परिपूजयामि ।।१३।।

ॐ ह्रीं पञ्चाचारपरायणाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घं ।

अर्थश्रुतं सत्यविबोधनेन , द्रव्यश्रुतं ग्रन्थविदर्भणेन ।
येऽध्यापयन्ति प्रवरानुभावा- स्तेऽध्यापका मेऽर्हणया दुहन्तु ।।१४।।

ॐ ह्रीं द्वादशाङ्गपठनपाठनोद्यतायोपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घं ।

द्विधा तपोभावनया प्रवीणान् , स्वकर्मभूवीध्रविखण्डनेषु ।
विविक्तशटयासनहर्म्यपीठ - स्थितान् तपास्विप्रवरान् यजामि ।।१५।

ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारचारित्रराराधकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं ।

अर्हन्मगंलमर्चे सुरनरविद्याधरैकपूज्यपदम् ।
तोयप्रभृतिभिरर्घ्यैर्विनीतमूर्धा शिवाप्तये नित्यम् ।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मगंलायार्घं ।

ध्रौव्योत्पादविनाशनरूपाखिलवस्तुबोधनार्थकरम् ।
सिद्धं मंगलमिति वा मत्वार्चे चाष्टविधवस्तुभिः ।।१७।।

ॐ ह्रीं सिद्धमगंलायार्घं ।

यद्दर्शनकृतविभवाद् रोगोपद्रवगणा मृग इव मृगेन्द्रात् ।
दूरं भजन्ति देशं साधुभ्योऽर्च्यते विधिना ।।१८।।

ॐ ह्रीं सिद्धमगंलायार्घं ।

केवलिमुखावगतया वाण्या निर्दिष्टभेदधर्मगणम् ।
मत्वा भवसिन्धुतरीं प्रयजे तन्मंगलं शुद्धयै ।।१९।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घं ।

लोकोत्तममथ जिनराट्पदाब्जसेवनयामितदोषविलयाय ।
शक्तं मत्वा घृतजलगन्धैरर्चे समीडितं प्रभवैः ।।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमायार्घं ।

सिद्धाश्च्युतदोषमला लोकाग्रं प्राप्य शिवसुखं व्रजिताः ।
उत्तमपथगा लोके तानर्चे वसुविधार्चनया ।।२१।।
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमायार्घं ।
इन्द्रनरेन्द्रसुरेन्द्रैरर्थिततपसां व्रतैषिणां सुधियाम् ।
उत्तममध्वानमसावर्चेऽहं सलिलगन्धमुखैः ।।२२।।
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमायार्घं ।
रागपिशाचविमर्दनमत्र भवे धर्मधारिणामतुलम् ।
उत्तममपगतकामो वृषमर्चे शुचितरं कुसुमैः ।।२३।।
ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घं ।
अर्हच्छरणमथार्चेऽनन्तजनुष्यपि न जातु सम्प्राप्तम् ।
नर्तन गानादिविधिमुद्दिश्याष्टकर्मणां शान्त्यै ।।२४।।
ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मायार्घं ।
निर्व्याबाधगुणादिकप्राग्र्यं शरणं समेतचिदनन्तम् ।
सिद्धानाममृतानां भूत्यै पूजेयमशुभहान्यर्थम् ।। २५।।
ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घं ।
चिदचिद्भेदं शरणं लौकिकमाप्यं प्रयोजनातीतम् ।
त्यक्त्वा साधुजनानां शरणं भूत्यै पूजेयमशुभहान्यर्थम् ।।२६।।
ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घं ।
केवलिनाथमुखोद्गतधर्मः प्राणिसुखहितार्थमुद्दिष्टः ।
तत्प्राप्त्यै तद्यजनं कुर्वे मखविघ्ननाशाय ।।२७।।
ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणायार्घं ।
संसारदुःखहनने निपुणं जनानां नाद्यन्तचक्रमिति सप्तदशप्रमाणम् ।
सम्पूजये विविधभक्तिभरावनम्रः शान्तिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थसार्थैः ।। २८।।
ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घं ।

जयमाला

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा अग्रेसरं जिन वदन्ति भवन्तमिष्टम् ।
आनाद्यनन्तयुगवर्तिनमत्र कार्ये, विघ्नौघवारणकृतेऽहमपि स्मरामि ।।१।।
गणानां मुनीनामधीशत्वतस्ते, गणेशाख्यया ये भवन्तं स्तुवन्ति ।
तदा विघ्नसन्दोहशान्तिर्जनानां, करे संलुठत्यायतश्रायसानाम् ।।२।।
कलेः प्रभावात्कलुषाशयस्य, जनेषु मिथ्यामदवासितेषु ।
प्रवर्तितोऽन्यो गणराजनाम्ना, कथं सं कुर्याद् भव वार्धिशोषम् ।।३'
यो दृक् सुधातोषितभव्यजीवो, यो ज्ञानपीयूषपयोधितुल्यः ।
यो वृत्तदूरीकृतपापपुञ्जः, स एव मान्यो गणराज नाम्ना ।।४
यतस्त्वमेवासि विनायको मे, दृष्टेष्टयोगादविरुद्धवाचः ।
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति, विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ।।५।

जय जय जिनराज त्वद्गुणान्को व्यनक्ति,
यदि सुरगुरुरिन्द्रः कोर्टि वर्ष प्रमाणम् ।
वदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नो चेत,
कथमिव ही मनुष्यः स्वल्प बुद्धया समेतः ।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मन्त्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा ।

श्रियं बुद्धिमनाकुल्यं धर्मप्रीति विवर्धनम् ।
जिनधर्मे स्थितिर्भूयाच्छेयो में दिशतु त्वरा ।।

(इति पुष्पाञ्जलिः)

सभी मण्डल विधानों के लिए आवश्यक

सामग्री–सूची

पूजन सामग्री (१० व्यक्तियों की दृष्टि से)

चावल	लगभग	१० किलो
श्रीफल (नारियल)	,,	२१
बादाम	,,	१ किलो
लोंग	,,	१०० ग्राम
लायची	,,	१०० ग्राम
चिटक	,,	३००ग्राम
केशर	,,	५ ग्राम
धूपदशांग	,,	२५०ग्राम
कलावा रक्षासूत्र		१००ग्राम
सावित सुपाड़ी		५० ग्राम
हल्दी गांठ		५०ग्राम
चांदी का रुपऐ		५
चांदी के स्वास्तिक		५

बेंच, पाटा, चटाई, छत्र, चमर सिंहासन,
चंदेवा - ध्वजा–मण्डप पर लगाने को,
पूजन वर्तन सैट - ५
अभिषेक थाल एवं कलश अभिषेक
मंगल कलश हेतु ५ लोटे
लाल तूस आधा मीटर
घी, माचिस, रुई, दीपक कोयला, कपूर, कलावा
विधान की पुस्तकें
पूजन के लिए शुद्ध वस्त्र

इस संग्रह में संग्रहीत विधानों की एवं उनके मण्डल चित्रों की जानकारी

श्रुतस्कंध विधान

यह विधान ज्येष्ठ शुक्ला ५ के दिन करना चाहिए। उस दिन उपवास करें और मंत्र का त्रिकाल जाप करे। इस विधान सहित व्रत को लगातार ५ वर्ष तक करने से ज्ञान की वृद्धि होती है तथा सद्बुद्धि का प्रभाव आत्मा में जागृत होता है।

श्रुत स्कंध व्रत विधि–

यह व्रत भाद्रमास में किया जाता है । भाद्र कृष्णा एकम से आश्विन कृष्णा एकम तक ३२ दिन में १६ उपवास १६ पारणा करनी चाहिए । इस व्रत के करने से तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है।

मंत्र जाप–

१. ॐ ह्रीं द्वादशांग श्रुत ज्ञानाय नमः ।

२. ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत स्याद्वादनय गर्भित द्वादशांग श्रुत ज्ञानाय नमः द्वादशांग श्रुत ज्ञानाय नमः ।

३. ॐ ह्रीं गणधर देव रचिताशेष ज्ञान हेतु श्रुतस्कंधाय नमः ।

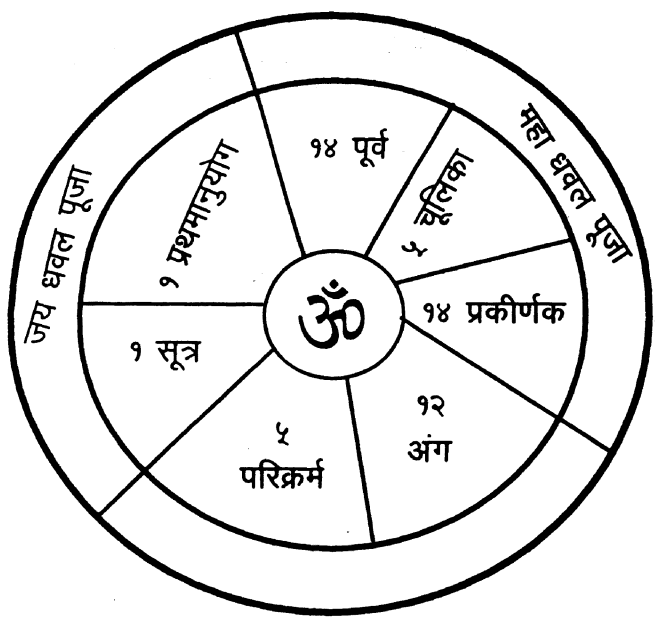

भक्तामर विधान

जिनेन्द्र भगवान की भक्ति का सर्वोत्कृष्ट पाठ है। भक्ति दुर्गति को दूर करने पुण्य को बढ़ाने तथा मुक्ति लक्ष्मी की प्राप्ति कराने में समर्थ है। जिन भगवान के गुणों को स्मरण करने से पाप दूर होते हैं। जैसे मयूर पक्षी के आने पर चन्दन वृक्ष में लिपटे सर्प ढ़ीले पड़ जाते हैं। चिन्तामणि रतन अचेतन है फिर भी उत्तम फल का दायक है उसी प्रकार अर्हंत की भक्ति सुफल की दायक है इस विधान के करने से सांसारिक व्यापदाओं का विनाश और आत्मिक सुखों की उपलब्धि होती है। श्रावक के कुल की सुख सम्वृद्धि का प्रतीक यह विधान है। समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए जिसदिन विधान करें इस मंत्र का जाप करें ।

मंत्र जाप–

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री ऋषभनाथ तीर्थंकराय नमः।"

श्री भक्तामर मंडल विधान के माड़ने का आकार

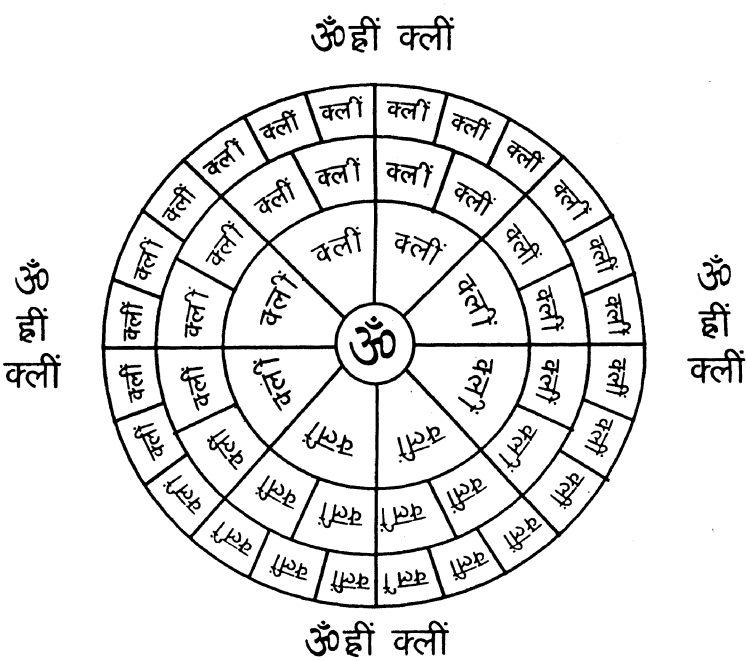

शान्तिनाथ विधान

जीवन में जब भी सुख या दुःख के प्रसंग उपस्थित हो तो शान्तिनाथ विधान करना चाहिए। सुख के प्रसंग में यह विधान करने से सुख सम्वृद्धि की चिर स्थाई स्थिति को बनाता है। और दुःख संकट के समय करने पर दुःख से अवश्य मुक्ति प्राप्त होती है। असाता कर्म की निर्जरा और साता की संवृद्धि में इस पाठ का अपना महत्व है। यह विधान १६ दिन वाले शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से पूर्णमासी तक १६ दिन तक करने से सातिशय प्रभाव पड़ता है। प्रतिदिन नीचे लिखे मंत्र का कमसे कम १००० मंत्र जाप करना चाहिए।

मंत्र जाप– ॐ ह्रीं जगच्छान्ति कराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिम् कुरु कुरु स्वाहा ।

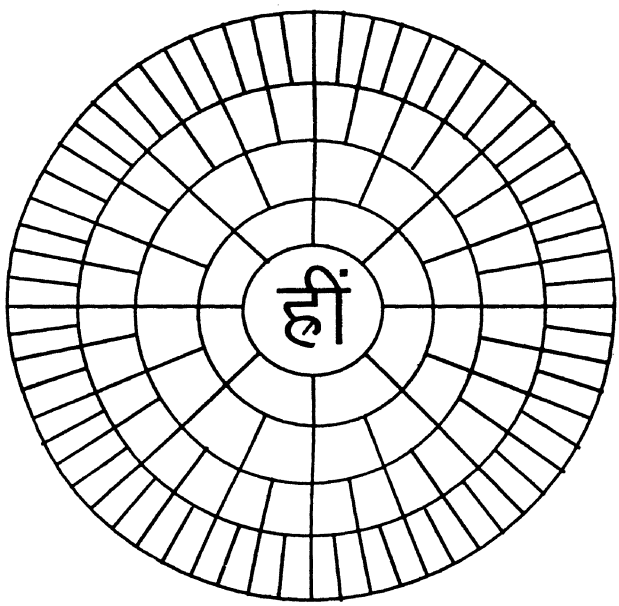

वृहद् निर्वाण विधान

इस विधान को दीपावलि के समय भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण वेला में उपवास कर करना चाहिए। इस विधान को निरन्तर १२ वर्ष तक करने से उत्तम कुल में जन्म लेने की स्थिति पड़ती है। महान सुख कारक तथा वर्षभर तक संकट से मुक्त रहने का सातिशय फल मिलता है।

मंत्र जाप– "ॐ ह्रीं अर्हं णमो श्री सन्मति देवाय नमः।" इस मंत्र का जाप करना चाहिए। इस विधान का कोई मण्डल नहीं है।

सम्मेदशिखर विधान

अनादि निधन सिद्ध भूमि होने से इसकी आराधना से अकृतिम जिनालयों में की गई आराधना जैसा उत्तम फल प्राप्त होता है। माह में एक बार अवश्य इस विधान को करने से भव्य जीव अगली पर्याय में अर्हंत जैसी अवस्था को प्राप्त करता है।

मंत्र जाप- ॐ ह्रीं अनादि निधन अनन्तानन्त सिद्ध पद प्राप्ताय श्री सम्मेदशिखर निर्वाण भूमिभ्यों नमः ।

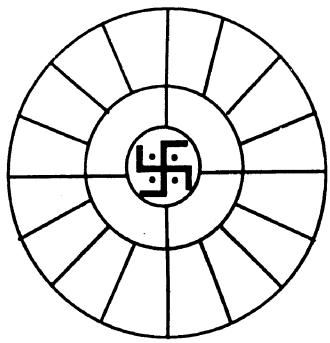

पंच मेरू पूजन विधान

यह विधान भाद्रमास, माघ और चैत माह की शुक्ल ५ से आरंभ कर ९ वीं तक करना चाहिए। उपवास करते हुए ५ वर्ष तक तीनों शाखाओं में करना चाहिए। मध्यम विधि में ५, ७, ९ को उपवास व ६, ८ को एकासन तथा जघन्य विधि में ५, ९ को उपवास शेष दिन एकाशन करें । इस विधान से सम्यक् दर्शन की प्राप्ति होती है। समस्त आपदाओं का हरने वाला कहा गया है। प्रतिदिन ५ मालाऐं इस मंत्र की देना चाहिए ।

मंत्र जाप- ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अस्सी अकृतिम जिनालयेभ्यो नमः ।

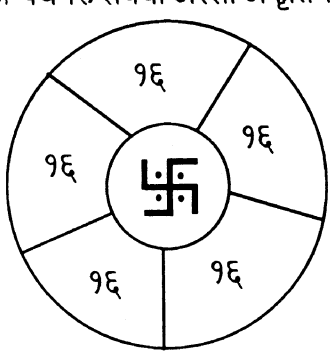

कर्मदहन विधान

यह विधान कर्म निर्जरा का हेतु है जिन भगवान के पादमूल में आराधना करने से असाता रूप पाप कर्मों की निर्जरा होती है। तथा तपश्चरण द्वारा समस्त कर्मों की निर्जरा होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस विधान को निरन्तर १४८ दिन तक आराधित करने से पाप कर्मों की निर्जरा तो होगी ही सम्यक्त्व की भी प्राप्ति होगी । इस विधान में आठ कर्मों की १४८ कर्म प्रकृतियों के विनाश की आराधना की गई है। यह व्रत ७४ माह में पूरा होता है । जिसमें १४८ उपवास एवं १४८ पारणाऐं होती है ।

मडल विधान के माडना को बनाने के लिऐ मध्य में गोलाकार वलय में ॐ तथा दूसरे वलय में ८ खण्ड बनाकर क्रमशः ५, ६, २, २८, ४, ६३, २, ५, अंक लिखें।

मंत्र जाप- ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ।

कर्मदहन व्रत-

(१) सात प्रकृति के नाश हेतु ७ चतुर्थियों के ७ उपवास ७ पारणा
(२) तीन प्रकृति के नाश हेतु ३ सप्तमी के ३ उपवास ३ पारणा
(३) छत्तीस प्रकृति के नाश हेतु ३६ नवमी के ३६ उपवास ३६ पारणा
(४) एक प्रकृति के नाश हेतु १ दशमी के १ उपवास १ पारणा
(५) सोलह प्रकृति के नाश हेतु १६ द्वादशीं के १६ उपवास १६ पारणा
(६) पच्चासी प्रकृति के नाश हेतु ८५ चतुर्दशी के ८५ उपवास ८५ पारणा

नन्दीश्वर द्वीप विधान

यह विधान कार्तिक, फाल्गुन, अषाड़ मास की अष्टान्हि का पर्व में ही करना चाहिए। शुक्ल पक्ष की ८ से पूर्णमासी तक यह पाठ करे। आठ वर्ष तक निरन्तर इसे करना चाहिये। इस विधान के साथ इसका व्रत होता है जो १०८ दिन में पूरा होता है। इसमें ५६ उपवास और ५२ पारणाऐं होती हैं। पूर्व दिशा की अंजनगिरि का वेला १ उसके २ उपवास एक पारणा दधिमुख के ४ उपवास ४ पारणा रतिकर के ८ उपवास ८ पारणा इस प्रकार कुल १४ उपवास १३ पारणाऐं पूर्व की हुईं। इसी प्रकार दक्षिण पश्चिम उत्तर की समझें ।

मंत्र जाप- ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्वापंचास जिनालयेभ्यो नमः ।

प्रत्येक तिथि के मंत्र जाप–

अष्टमी–ॐ ह्रीं नन्दीश्वर संज्ञाय नमः
नवमी–ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूति संज्ञाय नमः
दशमी–ॐ ह्रीं त्रिलोकसार संज्ञाय नमः
एकादशी–ॐ ह्रीं चतुर्मुख संज्ञाय नमः
द्वादशी–ॐ ह्रीं महालक्षण संज्ञाय नमः
त्रयोदशी–ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान संज्ञाय नमः
चतुर्दशी–ॐ ह्रीं सर्वसम्पत्ति संज्ञाय नमः
पूर्णमा–ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः

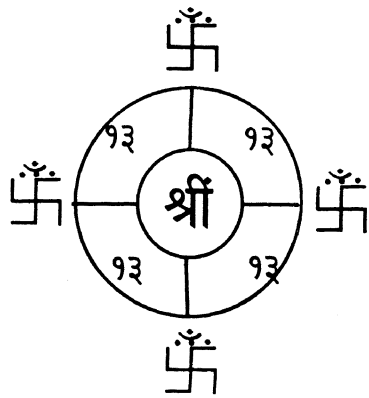

नवग्रह विधान

ज्योतिष चक्र अनुसार यदि कोई ग्रह किसी व्यक्ति के जीवन में पीड़ा कारक हो तो उसे यह विधान लगातार ९ दिन तक शुभ मुहूर्त में करना चाहिए उस ग्रह का मंत्र जाप प्रतिदिन ९ मालाऐं देकर जपना चाहिए। यह भव्यों के लिये महान कल्याणकारी बाधा निवारक परम सुखदायक विधान है। मिथ्यात्व मार्ग से विमुक्त होने के लिये उदय में आऐ असाता कर्म की एक देश निर्जरा के लिये आचार्यों ने इस महा कल्याणकारी विधान को करने का उपदेश दिया है ।

प्रत्येक ग्रह के मंत्र जाप–

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 7000 जाप्य ।।

ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 11000 जाप्य ।।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्टनिवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 10000 जाप्य ।।

ॐ ह्रीं क्रौं आँ श्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्री विमलअनन्तधर्मशान्ति कुन्थु अरह नमि वर्द्धमान अष्टजिनेन्द्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 8000 जाप्य ।।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं एं गुरुअरिष्टनिवारक श्री ऋषभअजित संभव अभिनन्दन सुमति सुपार्श्व शीतल श्रेयांशनाथ अष्टजिनेन्द्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 19000 जाप्य ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्रअरिष्टनिवारक श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 11000 जाप्य ।।

ॐ ह्रीं क्रौं ह्रः श्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारकाय श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 23000 जाप्य ।।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रूं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 18000 जाप्य ।।

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।। 7000 जाप्य ।।

कुल जाप्य 1 लाख 14 हजार हैं जो यथाशक्ति लोंग से (लवंग) करना चाहिए ।

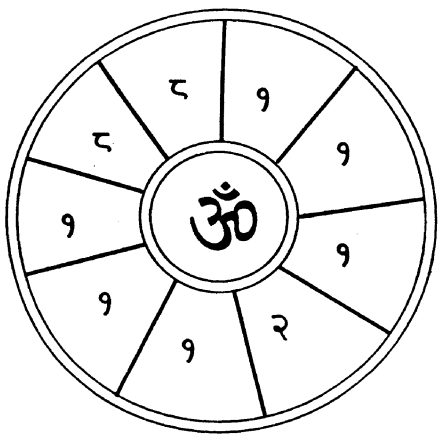

रत्नात्रय विधान

यह विधान भाद्र, माघ, चैत्र माह की शुक्ला त्रयोदशी से पूर्णमासी तक करना चाहिए। यथा नाम तथा गुणों की वृद्धि में यह विधान सातिशयकारी है तीन वर्षों तक तीनों शाखाओं में यह व्रत सहित विधान करने से जीव उत्तम कुल में जन्म लेकर मोक्ष का पात्र बनता है। द्वादशी को एकाशन एवं तीन उपवास के बाद पणमा को पारणा करें ।

मंत्र जाप-

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो नमः ।

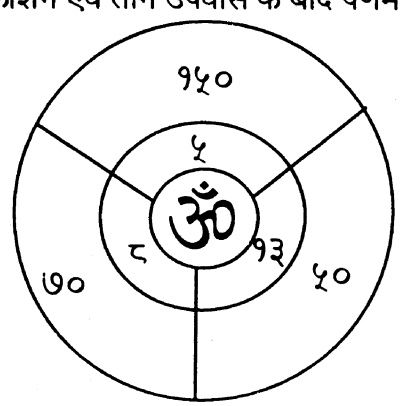

महामृत्युंजय विधान

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर यदि व्यक्ति के जीवन काल में तीव्र घटना या अकाल मरण जैसी दुर्घटना के घटित होने की सम्भावना हो तो इस विधान को सम्पादित करके सवालाख मंत्र का मृत्यंजय का जाप कर लेना चाहिए। जाप समापन के बाद हवन शान्ति करना। यह विधान संकटापन्ना अवस्थाओं को टालने में अतिशय कारी है। जीवन में एक बार अवश्य हर श्रावक को यह विधान कर लेना चाहिए।

मण्डल रचना में प्रथम कर्णिका के मध्य ॐ मिश्रित ह्रींकार (अनाहत मन्त्र) का न्यास करें। पश्चात् वलय प्रारम्भ करें। प्रथम-वलय में भगवत् जिनसहस्रनाम पूजा हेतु दशकोष्ठ बनावें, तथा एक-एक कोठे में सौ सौ बिन्दु रखें। अन्तिम कोठे में १०८ बिन्दु रखें। द्वितीय वलय में चौबीस तीर्थंकर एवं शासन यक्ष-यक्षियों की अर्चना हेतु ७२ कोठे बनावें, तीसरे वलय में पन्द्रह तिथिदेवता एवं नवग्रह देवता के सम्मान हेतु २४ कोठे बनावें, चौथे वलय में अकारादि द्वादश बीजाक्षरों की पूजा हेतु १२ कोठे बनावें। इस प्रकार क्रम से माण्डला बनाकर पूजा विधि प्रारम्भ करें।)

मंत्र जाप- ॐ णमो अर्हते भगवते देवाधिदेवाय यंत्र मंत्र सिद्धि कराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झौं बं पः हः हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु सिद्धिं कुरु कुरु वृद्धिं कुरु कुरु समस्त क्षाम डामर भय विनाशनं कुरु कुरु सर्व शान्तिकराय रक्षाप मृत्युंजयाय स्वाहा ।

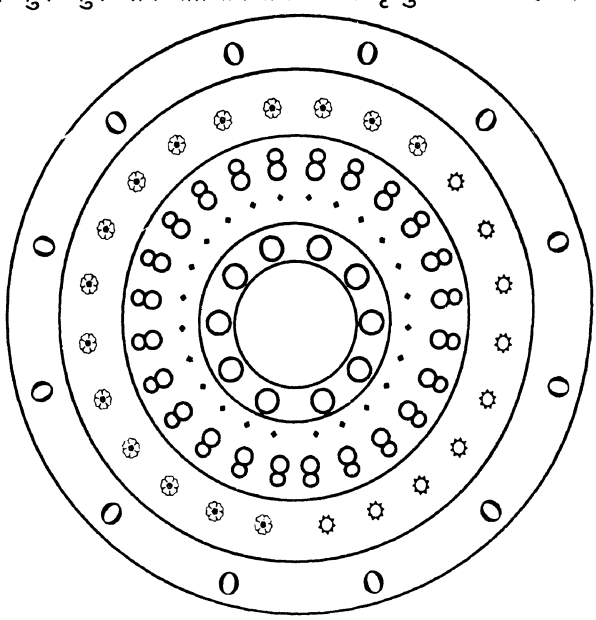

जिनेन्द्र पूजन विधि

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।

श्रावक के दैनिक षट्कर्त्तव्यों में सर्वप्रथम कर्त्तव्य भगवान जिनेन्द्रदेव की पूजा करना है। राग प्रचुर होने के कारण गृहस्थों के लिए आचार्यों ने जिनेन्द्र पूजा को प्रधान धर्म कहा है। यद्यपि इसमें पंचपरमेष्ठी की प्रतिमाओं का आश्रय होता है परन्तु पूजा करने वाले के भाव प्रधान हैं। भावों की प्रधानता के कारण पूजक की असंख्यात गुणी पापकर्म की निर्जरा होती है और असंख्यात गुणा शुभ कर्म का उदय होता है।

जिनेन्द्र प्रभू की पूजन से उत्तम फल और सिद्धियों की प्राप्ति होती है जबकि ज्ञान पूर्वक उसकी प्रवृत्ति हमारे जीवन में घटित हो रही हो। एक थाली में मंगल बीजाक्षरों को अंकित कर मन्त्रोच्चार पूर्वक उन बीजाक्षरों पर अर्घ्य चढ़ाते हैं उनका हेतु अवश्य हमें जानना चाहिए। क्योंकि बिना कारण के कार्य की सिद्धि नहीं होती हमारे आगम ग्रंथों में पूर्वाचार्यों ने परम्परा से श्रुत केवलियों द्वारा बताये गये मार्ग के अनुसार पूजा के क्रम और विधियों का व्याख्यान दिया है उसे हम विवेक पूर्वक प्रवृत्ति में आचरित करें जिससे हमारी पूजा प्रवृत्ति मोक्षसिद्धि में साधक बन सके।

बीजाक्षर वाली थाली में सर्व प्रथम हमें ऊपर ॐ बीजाक्षर लिखना चाहिये उसके नीचे 'श्री' तथा 'श्री' के नीचे 'स्वास्तिक' (सांथिया) बीजाक्षरों के नीचे तीन बिन्दु बनाना चाहिये या ह्रीं ह्रीं ह्रीं लिखना चाहिये। दायें हाथ तरफ 'श्री' बीजाक्षर के पार्श्व में पांच बिन्दु एवं बायें हाथ तरफ चार बिन्दु आरोपित करना चाहिए ठोने पर अष्ट पंखुड़ी कमल का आकार बनाना चाहिए। यह ऐसा क्यों और किसलिए किया जाता है इस शंका का समाधान पूर्वक ज्ञान अवश्य प्राप्त करें। उसका समाधान एवं विधि इस प्रकार है-

जब हम देव, शास्त्र, गुरू और सिद्ध भगवान की पूजा करें तो आठों द्रव्य ॐ बीजाक्षर पर ही चढ़ाना चाहिए क्योंकि ॐ बीजाक्षर पंच परमेष्ठी का वाचक बीजाक्षर है इस पर द्रव्य चढ़ासने का मतलब भगवान जिनेन्द्र देव के पादमूल में की जाने वाली हमारी इस पूजा से होने वाला शुभाश्रव जब भी उदय में आये तो मैं पंचपरमेष्ठी जैसे मंगल पद पर अधिष्ठित होऊ। ॐ बीजाक्षर पर आराधना के

साथ अर्पित द्रव्य की आकांक्षा इस हेतु की बोधक है। तथा इस पूजा का फल मुझे यह प्राप्त हो कि ॐ बीजाक्षर मेरी आत्मा के प्रदेशों में आत्मभूत हो। जब तक कोई मन्त्र या बीजाक्षर आत्मभूत नहीं होता तब तक उसका प्रभाव भी स्वयं या अन्य जीवों पर नहीं पड़ता। मन्त्र जब आत्मभूत हो जाता है तभी स्व एवं पर के ऊपर प्रभावी हो सकता है मात्र मंत्र को पढ़लेने से सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

इसी प्रकार ॐ बीजाक्षर अब इस आराधना से आत्मभूत होगा तब हम उस पूजा के फल को अर्थात् पंचपरमेष्ठी के पद को प्राप्त करने की पात्रता प्राप्त कर सकेंगे। ॐ बीजाक्षर के नीचे 'श्री'बीजाक्षर पर हम तीर्थंकरों की पूजा के अष्ट द्रव्य चढ़ायें भूत भावी वर्तमान या विद्यमान कोई भी तीर्थंकर हो तीर्थंकर की पूजा की सामग्री 'श्री' बीजाक्षर पर आरोपित करते हुए पूजक की यह भावना हो कि यह बीजाक्षर मेरी आत्मा में अभिभूत हो 'श्री' बीजाक्षर श्रेय का देने वाला है तीर्थंकर की पूजा से हम यही श्रेय प्राप्त करना चाहते हैं कि मेरी आत्मा तीर्थंकर जैसी हो यह तभी सम्भव है जब श्री बीजाक्षर हमारी आत्मा में आत्मभूत हो जाए।

जब हम किसी व्रत या निर्वाण भूमि (तीर्थ क्षेत्र) की पूजन करें तो आठों द्रव्य स्वास्तिक बीजाक्षर पर ही चढ़ायें क्योंकि स्वास्तिक कल्याण का प्रतीक है और व्रत तथा निर्वाण भूमि आदि भी कल्याण का प्रतीक मानी गई है बायें हाथ तरफ चार बिन्दु होते हैं वह अर्हंत, सिद्ध, साधु एवं धर्म इन चार मंगल के प्रतीक हैं। यह चारों ही मंगलमय हैं लोक में उत्तम हैं और इनकी शरण से ही आत्मा अनन्त सुख की पात्र बनती है। पुष्पक्षेपण इन्हीं भावनाओं के प्रतीक होते हैं। अतः पुष्पाञ्जलि इन्ही बिन्दुओं पर करना चाहिए।

दायें हाथ तरफ जो पांच बिन्दु होते हैं उन पर अपवित्रा पवित्रोवा.. पद बोलने के बाद पांच अर्घ्य चढ़ाना चाहिए। अर्घ चढ़ाने के पूर्व उदकचंदनतंदुल.. पद बोलकर मंत्र पूर्वक प्रथम बिन्दु पर अर्हंत सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधु के लिए, द्वितीय बिन्दु पर भगवान के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक के लिए, तृतीय बिन्दु पर भगवान के एक हजार आठ गुणों का चौथे बिन्दु पर भगवान के मुख कमल से उद्भूत प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग द्रव्यानुयोग का और अन्तिम पाँचवें बिन्दु पर मोक्षशास्त्र, तत्त्वार्थ सूत्र का अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।

हमारी आगम परम्परा में भी जिस तरह से ऊपर बीजाक्षर थाली में लिखने का निर्देश दिया गया है उसी क्रम से पूजा का विधान पूर्वाचार्यों की परम्परानुसार हम दैनिक रूप में आचरित करते हैं। (सांतिया) के नीचे जो तीन

बिन्दु होते हैं समस्त पूजाओं के बाद हम जिस स्थान पर (नगर या गांव) में पूजा कर रहे हैं उस नगर या ग्राम के ऊपर, मध्य और भूमिगत जितने भी जिन मंदिर, प्रतिमायें हैं उनको अंतिम अर्घ्य चढ़ाकर अंत में शांति विसर्जन पाठ बोलना चाहिए।

वसुनन्दि आचार्य ने लिखा है जल से पूजन करने से पाप रूपी मैल का संशोधन होता है। चन्दन चढ़ाने से मनुष्य सौभाग्य से सम्पन्न होता है अक्षत चढ़ाने से अक्षयनिधि रूपमोक्ष को प्राप्त करता है। वह चक्रवर्ति होता है और सदा अक्षोभ रोग शोक रहित निर्भय होते हुए अक्षीण लब्धि से युक्त होता है। पुष्प से पूजन करने वाला कामदेव के समान समर्चित देह वाला होता है। नैवेद्य चढ़ाने से मनुष्य शक्ति, कान्ति और तेज से सम्पन्न होता है दीप से पूजन करने वाला केवलज्ञानी होता है धूप से पूजन करने से त्रैलोक्य व्यापी यश वाला होता है तथा फलों से पूजन करने वाला निर्वाण सुखरूप फल को पाने वाला होता है।

जिनेन्द्र भगवान के पादमूल में खड़े होकर ही पूजन करना उत्कृष्ट है। बीमारी, वृद्धापन अथवा असहाय अवस्था में बैठकर भी पूजन की जा सकती है।

जिनेन्द्र भगवान के पादमूल में पूजन थाली के बीजाक्षर

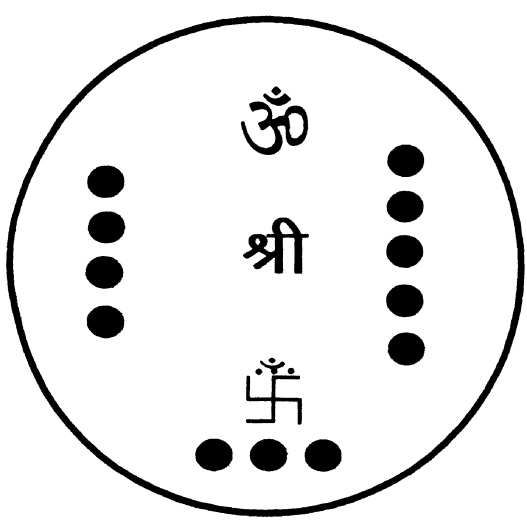

नोट - ठोना (स्थापना) पर आठ पंखुड़ी का फूल बनाऐं कोई बीजाक्षर न लिखा जाय।

श्रुतस्कन्धपूजा विधान

(आचार्य श्री श्रुतसागर जी विरचित)

सदङ्गपूर्वैः सकलैः प्रपूर्ण,
प्रकीर्णकैः सप्तविधैश्च भङ्गैः।
पूज्यं श्रुतस्कन्धमिहार्चनाय,
संस्थापये ज्ञानसमस्तबीजं।।

(एतत् पठित्वा श्रुतस्कन्धस्थापनार्थं स्वस्तिकोपरि पुष्पाणि क्षिपेत्)

नरामरेन्द्र संसेव्यं श्री जिनेन्द्रमुखोद्गतं।
स्वर्गादिदं गुणाधानं संस्थापयामि सच्छ्रुतं ।।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कन्ध ! अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वानं।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कन्ध ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कन्ध ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं।

अष्टक

क्षीरोदगङ्गादिसुनीरजातैः
धाराव्रजैः स्वच्छतरैः सुगन्धैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया,
सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं।।

ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतुश्रुतस्कन्धाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री खण्डकर्पूरसुकुङ्कुमादि, द्रव्योद्भवेश्चारु विलेपनाद्यैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया, सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं ।2।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतु श्रुतस्कन्धाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीशालिपुञ्जैर्बरमौक्तिकाभैः दिव्यैरखण्डैर्बहुपुण्यकारैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया, सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं ।3।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतु श्रुतस्कन्धाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीहेमरूपादिमयैः सुवर्णैः, सत्केतकीकुन्दसुचम्पकाद्यैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया, सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं ।4।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतु श्रुतस्कन्धाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पक्वान्नक्षीरान्नसुमोदकाद्यैः, नैवेद्यसारैर्वरभोगमूलैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया, सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं ।5।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतु श्रुतस्कन्धाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीरत्नदीपैश्चघृतादिजातैः, कर्पूरजैः मोहित मोहरूपैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया, सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं ।6।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतु श्रुतस्कन्धाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरकृष्णागरुचन्दनादि, श्रीसारवस्तूद्भवधूपवर्गैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया, सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं ।7।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतु श्रुतस्कन्धाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमातुलिङ्गाम्रसुनालिकेर, पूगादिभिर्दिव्यफलैः रसाढ्यैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया, सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं ।8।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतु श्रुतस्कन्धाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रपूज्य भक्त्याष्टविधार्चनैश्च, स्वर्घेण वाद्यादि महोत्सवाद्यैः।
यजे श्रुतस्कन्धमहं त्रिशुद्धया, सर्वज्ञभूत्यै त्रिजगत्प्रदीपं ।9।
ॐ ह्रीं श्रीगणधरदेवरचिताशेषज्ञानहेतु श्रुतस्कन्धाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ श्रुतलक्षणं भेदं चाह

मतिपूर्वं श्रुतज्ञानं पर्यादिभेदविंशतिं।
द्व्यनेकं द्वादशं ज्ञेयं श्रुतं त्रिधा नमाम्यहम्। पुष्पाञ्जलिं।

अथपीठबन्धमाह

अष्ट सप्त नभस्त्रिकं अष्टौ चतुस्त्रिकं षषं।
एकं मध्यपदं वर्ण अक्षरं न पुनः कथम्।।
।।16348307888।।

एकावण कोडीउ लक्ख अट्ठेव सहसचुलसीदी।
सयछक्कं णायव्वं साढा एकवीस पय गंत्था।।
।। 510884621।।

शतैकाद्वादशकोटिं लक्ष्यत्र्यशीतिमेव च।
सहस्रमष्टपञ्चाशत् पञ्चपादाङ्ग सार्वकम्
।। 11283358005।।

द्वादशांगानां सर्वपदानि प्राह —

पञ्चसप्तैकचाष्टौ च दशाशीति समक्षरम्
अङ्गबाह्यश्रुतं ज्ञेयं चतुर्दश प्रकीर्णकम्
।। 80108175 ।।

अष्टकोटिएकलक्षअष्टसहस्रएकशतपंचसत्तरि पदैकारक्षराणि।।
अङ्गबाह्यस्याक्षराणि सन्ति
सिद्धान्तस्थानकं नाम, एक पञ्चाशदुत्तमम्।
तस्यपूजामहं कुर्वे, केवलज्ञानसिद्धये।।

11 अङ्ग, 5 परिकर्म, 1 सूत्र, 1 प्रथमानुयोग, 14 पूर्व, 5 चूलिका, 14 प्रकीर्णक एवं सर्वस्थानकम् 51

इति पीठत्रयबन्धप्रकाशनाय पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अथांगपूजा

चतुष्कोटिस्मृतं लक्षं पञ्चदशसहस्रकम्।
द्वितयैकादशाङ्गानि पदसंख्यास्तुमध्यमा।। 41502000।।

इति एकादशाङ्गानां सर्वपदेषु पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अथ पृथक् पूजा

यस्यप्रसादतः पान्ति मुनीन्द्राः सद्व्रतानि वै।
तदाचाराख्यकं नित्यं यजेऽहं सज्जलादिभिः ।1।

ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रपदप्रमाणाय आचाराङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनयादिक्रियामेति, सूत्रकृताङ्गपाठतः ।
भव्यौघतारकाङ्ग तं, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 2।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत् सहस्रपदप्रमाणाय सूत्रकृताङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवादिसप्तपदार्थानां स्वरूपस्य निरूपकम्।
स्थानाङ्गं श्रमणानां तत् यजेऽहं सज्जलादिभिः ।3।

ॐ ह्रीं द्विचत्वारिंशत्सहस्रपदप्रमाणाय स्थानाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मौघशातने दक्षं, स्वपरार्थप्रकाशकम्।
गुणाढ्यं समवायाङ्गं, यजेऽहं सज्जलादिभिः ।4।

ॐ ह्रीं एकलक्षचतुःषष्टिसहस्रपदप्रमाणाय समवायाङ्गाय केवलज्ञानादि विभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतप्रश्नमुनीन्द्राणां प्रश्नोत्तरसुदापकम्।
व्याख्याप्रज्ञप्तिनामाङ्गं, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 5।

ॐ ह्रीं द्विलक्ष अष्टाविंशति सहस्रपदप्रमाणाय व्याख्याप्रज्ञप्तिनामाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकरगणेंद्राणां विभूतिख्यापकं सदा।
ज्ञातृकथासदगं तं, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 6।

ॐ ह्रीं पञ्चलक्ष षट् पञ्चाशत्सहस्रपदप्रमाणाय ज्ञातृकथागांय केवलज्ञानादि विभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावकसद्व्रतानां च, फलादीनां प्ररूपकम्।
अङ्गमुपासकाख्यं तं, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 7।

ॐ ह्रीं एकादशलक्षसप्ततिसहस्रपदप्रमाणाय उपासकागांय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदंतकृद्दशाङ्गं तत् गुणौघप्रतिपादकम्।
द्विपञ्चयतिनाथानां, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 8।

ॐ ह्रीं त्रयोविंशतिलक्ष अष्टाविंशति सहस्रपदप्रमाणाय अन्तकृद्दशाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्विपञ्चगणनाथाना–मुपसर्गादिवर्णकं।
तदनुत्तरध्येयाङ्गं, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 9।

ॐ ह्रीं द्विनवतिलक्षचतुः चत्वारिंशत्सहस्रपदप्रमाणाय अनुत्तरध्येयाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रश्नवयाकरणाङ्गं तं, नष्टाद्यर्थ प्रसूचकम्।
जिनेंद्रमुखजं सारं, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 10।

ॐ ह्रीं त्रिनवतिलक्षषोडशसहस्रपद प्रमाणाय प्रश्नव्याकरणाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपाकसूत्रनामाङ्गं सातासातादिकर्मणां।
सूचयति विपाकं तं, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 11।

ॐ ह्रीं एककोटिचतुरशीतिलक्षपदप्रमाणाय विपाकसूत्रांगाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टिवयाख्याननामांगं, पञ्चस्थानं निवेदकम्।
सारं तदुर्ज्जितं नित्यं, यजेऽहं सज्जलादिभिः। 12।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतकोट्यष्टाषष्टिलक्ष षट् पञ्चाशतसहस्रं तथा पञ्चपदप्रमाणाय

दृष्टिव्याख्यानांगाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांगं श्रुतं नित्यं मोक्षमार्गप्रदीपकम्।
सम्मानयामि चार्घ्येण नित्यानंदपदायवै।। 13।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगाय श्रुतज्ञानाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अथपरिकर्म्म पञ्चपूजा

चन्द्रप्रज्ञप्तिनामाख्यमादिमं परिकर्म्म च।
वर्णकं चन्द्रयानादेर्यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिशल्लक्ष पञ्चसहस्रपदप्रमाणाय चन्द्रप्रज्ञप्तिपरिकर्मणे केवलज्ञाना दिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 1।

सूर्यप्रज्ञप्तिनामाख्यं परिकर्मद्वितीयकं।
कथकं सूर्यलक्ष्मादि यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं पञ्चलक्षत्रिसहस्रपदप्रमाणाय सूर्यप्रज्ञप्ति परिकर्मणे केवलज्ञानादि विभूतये जलगन्धादिकं निर्वपामीति स्वाहा। 2।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्त्याख्यं, परिकर्म्मतृतीयकं।
वर्णनं जम्बूद्वीपस्य, यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं त्रिलक्षपञ्चविंशतिसहस्रपदप्रमाणाय जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति परिकर्म्मणे केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 3।

द्वीपार्णव प्रज्ञप्त्याख्यं परिकर्म्मचतुर्थकं।
वर्णनं लवणादीनां यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं द्विपञ्चाशल्लक्ष षट्त्रिंशत्सहस्रपद प्रमाणाय असंख्यातद्वीप सागर प्रज्ञप्ति परिकर्म्मणे केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 4।

व्याख्याप्रज्ञप्ति नामाख्यं परिकर्म्म च पञ्चमं।
ज्ञापकं भव्यभेदादर्यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं चतुशीतिलक्षषट् त्रिशत्सहस्रपदप्रमाणाय व्याख्याप्रज्ञप्ति परिकर्म्मणे केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 5।

अथ सूत्रपूजा

सूत्राख्यं सुष्ठुसिद्धान्तं कुदृष्टिचिन्हसूचकं।
दृष्टिवादाङ्गकं ज्ञेयं यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं अष्टाशीतिलक्षपदप्रमाणाय सूत्रसिद्धान्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथमानुयोग पूजा

आद्यानुयोगनामाख्यं दृष्टिवादाङ्गकं शुभं।
ख्यापकं श्रयादिदेवादेर्यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं पञ्चसहस्रपद प्रथमानुयोगसिद्धान्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ चतुर्दशपूर्व पूजा

उत्पादनामपूर्वं तदुत्पादादिनिवेदकं।
जीवाद्यर्थसमस्तानां यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं एककोटिपदप्रमाणाय उत्पादपूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

पृथ्व्यादिषु च जातानां पूर्वमग्रायणीयकं।
भेदं करोति जन्तूनां, यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं षण्णवति लक्षपदप्रमाणाय अग्रायणी पूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

वीर्यानुवादपूर्वाङ्गं वीर्यादिज्ञापकं वरं।
चक्रायुधादिमर्त्यानां, यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं सप्ततिलक्षपदप्रमाणाय वीर्यानुवादपूवाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

अस्तिनास्ति सुपूर्वं तत् अस्ति नास्तिप्रसूचकं।
जीवाद्यर्थ समूहानां यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं षष्टिलक्षपदप्रमाणाय अस्तिनास्ति पूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

ज्ञानप्रवादपूर्वं तत् मत्यादीनां प्रभेदकम्।
प्रपञ्चयति तन्नाथं, यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं एकोनकोटिपदप्रमाणाय ज्ञानप्रवादपूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

सत्यप्रवादपूर्वं तत् सज्जातानां च जन्तुषु।
प्रभेदकं सुशब्दानां, यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं षष्ठोत्तरैककोटिपदप्रमाणाय सत्यप्रवादपूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

आत्मप्रवादपूर्वं तत् आत्मस्वरूपबोधकम्।
दृव्यादिसप्ततत्त्वानां, यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं षट्विंशतिकोटिपदप्रमाणाय आत्मप्रवादपूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

कर्मप्रवादपूर्वं तत् कर्मोदयादिसूचकं।
पठन्ति ज्ञानिनो नित्यं यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं एककोटि अशीतिलक्षपदप्रमाणाय कर्म्मप्रवादपूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादि विभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।8।

प्रत्याख्यान सुपूर्वं तत् प्रत्याख्यानं मुनीश्वराः।
यज्ज्ञात्वा च प्रकुर्वन्ति यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं चतुरशीति लक्षपदप्रमाणाय प्रत्याख्यान पूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

विद्यानुवादपूर्वं तत् अष्टाङ्गसूचकं परं।
विद्यामंत्र निमित्तं यत् यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं एक कोटिदलक्षपदप्रमाणाय विद्यानुवाद पूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।10।

कल्याणनामपूर्वं तत् कल्याणस्य प्रपञ्चकं।
त्रिषष्टिपुरुषाणां च यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं षड्विंशतिकोटिपदप्रमाणाय कल्याणनामपूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादि विभूतये

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 11।

प्राणावादं च पूर्वं तत् प्राणापानादिबोधकं।
यत् बोधयति मंत्रादि यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशकोटिपदप्रमाणाय प्राणावाद पूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 12।

क्रियाविशालपूर्वं तत् अलङ्कारादिकं वरं।
ज्ञात्वा जानन्ति भव्यायं यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं नवकोटिपदप्रमाणाय क्रियाविशालपूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 13।

लोकप्रवादपूर्वं तत् मुक्तात्मानां प्रकाशकं।
कैवल्य सौख्यभाजां च यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं द्वादशकोटिपञ्चाशल्लक्षपदप्रमाणाय लोकप्रवादपूर्वाङ्गाय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 14।

अथ पञ्चचूलिका पूजा

चूलिकाञ्जलजातां च जलादिरोधदेशकां।
दृष्टिवादाङ्गिकां चाद्यां यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं द्विकोटिनवलक्षनवाशीतिसहस्र द्विशतपदप्रमाणाय जलगतचूलिकायै केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 1।

भूम्यादिषु प्रवेशादि मंत्रतंत्रादिवाचिकां।
चूलिकां स्थलजातां वै यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं द्विकोटि नवलक्षनवाशीति सहस्र द्विशतपदप्रमाणाय स्थलगतचूलिकायै केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 2।

मायारूपेन्द्रजालादि मंत्रतंत्रादि बोधिकां।
मायाख्यां चूलिकां सारां यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं द्विकोटि नवलक्ष्नवाशीतिसहस्रद्विशतपदप्रमाणाय मायागतचूलिकायै केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 3।

सिंहव्याघ्रादिरूपाणां मंत्रतंत्रादिदेशिकां।
चूलिकां रूपजातां च यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं द्विकोटि नवलक्षनवाशीतिसहस्रद्विशतपदप्रमाणाय रूपगतचूलिकायै केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 4।

आकाशयानमंत्रादि सूचिकाख्यगतां वरां।
चूलिकां दृष्टिवादाङ्गां यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं द्विकोटि नवलक्षनवाशीतिसहस्रद्विशतपदप्रमाणाय आकाशगतचूलिकायै केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 5।

दृष्टिवादं वरं चाङ्गं षड्विंशति सुभेदगं।
तीर्थनाथमुखोत्पन्नं भव्याय चास्तु सौख्यदं।।

ॐ ह्रीं जलगत स्थलगत मायागत रूपगताकाशगत पञ्चचूलिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 6।

अथ अंगबाह्य प्रकीर्णक पूजा

अङ्बाह्यं श्रुतं शेषं सामायिकादिसूचकम्।
समतादिकरं ग्रन्थं, यजेऽहं सज्जलादिभिः।।

ॐ ह्रीं अष्टकोट्यै कलक्षाष्टसहस्रै कशतपञ्चसप्ततिवर्ण प्रमाणाय अंगबाह्य श्रुतज्ञानाय केवलज्ञानाविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येकपूजा

आद्यं प्रकीर्णकं सारं सामायिकाभिधानकं।
यतिश्रावकभेदानां समताकालसूचकं। 1।

ॐ ह्रीं प्रथमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 1।

द्वादशस्तवनं नाम द्वितीयं च प्रकीर्णकं।
वर्णातिशयचिन्हादि कथकं च जिनेशिनां। 2।

ॐ ह्रीं द्वितीयप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 2।

वन्दनाशब्दसंयुक्तं तृतीय च प्रकीर्णकं।
अर्हदादिकपूज्यानां वन्दनाभेददीपकं।।

ॐ ह्रीं तृतीयप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 3।

प्रतिक्रमणसंज्ञं च चतुर्थं च प्रकीर्णकं।
दिनादि सप्तभेदानां प्रतिक्रमणदेशकं।।

ॐ ह्रीं चतुर्थप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 4।

वैनेयिकाभिधं ज्ञेयं पञ्चमं च प्रकीर्णकं।
दर्शनज्ञानचारित्र तपसां विनयाख्यकं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 5।

कृतिकर्म्माभिधं ज्ञेयं षष्ठं सुष्ठु प्रकीर्णकं।
दीक्षाङ्गीकारभेदादिक्रियासूचनतत्परं।।

ॐ ह्रीं षष्ठप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 6।

दशवैकालिकं नाम सप्तमं वै प्रकीर्णकं।
जिनोक्तपिण्डशुद्ध्यादि पुण्याचरणसूचकं।।

ॐ ह्रीं सप्तमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 7।

उत्तराध्ययनमाख्यं हि चाष्टमं सुप्रकीर्णकं।
नानोपसर्गदुःखादेः सहनफलभाषकं।।

ॐ ह्रीं अष्ठमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। 8।

व्यवहारान्तकल्पादि नामकं नवमं बहिः।
प्रकीर्णकसुयत्यादेः प्रायश्चित्तप्ररूपक।।

ॐ ह्रीं नवमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

कल्पाकल्पं च नामानं दशम च प्रकीर्णकं।
यतिसागारभेदानां कालाश्रितनिरूपकं।।

ॐ ह्रीं दशमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।10।

प्रकीर्णकं महाकल्पमेकादशमसंख्यकं।
दीक्षाशिक्षादिषट्कालं भेदाचरणभेदकं।।

ॐ ह्रीं एकादशमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।11।

द्विषट्संख्याप्रमं श्रेष्ठं पुण्डरीकं प्रकीर्णकम्।
चतुर्णिकायदेवानामुत्पत्त्यादिकवर्णनम्।12।

ॐ ह्रीं द्वादशमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।12।

महादिपुण्डरीकान्तं त्रयोदशं प्रकीर्णकं।
इन्द्राण्यादिषु देवीषु जन्महेतुः प्ररूपकं।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।13।

अशीतिकाभिधं शुद्धं चान्तिमं सुप्रकीर्णकं।
सत्वाद्यपेक्षयापेक्षं प्रायश्चित्तप्रभाषकं।14।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।14।

प्रकीर्णकं शुभं चाये श्रुतं श्रीजिनभाषितम्।
केवलज्ञानसम्प्राप्ति लोकालोकप्रकाशकं।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशमप्रकीर्णकपूजानिमित्ताय केवलज्ञानादिविभूतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अथ वस्तूप्राभृतादि पूजा

दश च चतुर्दश चाष्टावष्टादश च द्वयोर्द्विषट्कं च।
षोडशविंशतिं च त्रिंशत्मपि पञ्चदश च तथा। 1।
वस्तूनि दशदशान्येष्वनुपूर्वं भाषितानि पूर्वाणां।
प्रतिवस्तूप्राभृतकानि विंशतिं विंशतिं नौमि। 2।

चतुर्दशपूर्वाणि तेषां वस्तूनि 195; तेषां प्राभृतकानि 3900। तस्य द्विद्वादशानुयोगकं। तेषां प्राभृतकानि 93600 तेषां अनुयोगाः । 2246400। इति वस्तुप्राभृतकानुयोगेषु पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्रुतपूजापराभक्त्या अवध्याकूतपर्यय–
केवलज्ञानमाप्नोति यत्रभावेषु रञ्जिताः।।

इतित्रिषु ज्ञानेषु पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

एवं स्तुतं श्रुतं नित्यं त्रैलोक्यसौख्यसागरं।
ज्ञानायाऽस्तु च भव्यानां त्रिभुवनादिकीर्त्तये।।

ॐ ह्रीं वस्तुप्राभृतकानुयोगेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जाप्यमंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीद्वादशाङ्गंश्रुताय नमः। जाप्य 108 दीयते।।
ॐ ह्रीं वदवद वाग्वादिनि! भगवति! सरस्वति! ह्रीं नमः।।

अथ जयमाला

नानानन्दमयं प्रमोदसुकरं चिद्रूपभावोद्धुरं।
ज्ञानं विश्वशरीरिभावकथकं कर्मरिनिर्दाहकम्।।
श्री सर्वज्ञ विकासितं गणधरै। सेव्यं परं मुक्तिदम्।
भक्त्या संविभजामि तत् त्रिभुवने कीर्तिं प्रमोदावहम्।।

विकासित भव्यसुयोगिचरित्र! क्रियाभरभूषितपुण्यपवित्र!
जयामरसेवितबोधविकाश! समुज्ज्वलमुक्तिद पापविनाश!
सुजीवपदार्थ विकाशनचण्ड! परोन्नतकर्म सुरूपकदण्ड!

जयामरसेवितबोधविकाश ! समुज्ज्वलमुक्तिदपापविनाश !!
सुभावपदार्थविकाशनचण्ड ! परोन्नतिकर्मसुरूपकरण्ड !
जयामरसेवितबोधविकाश ! समुज्ज्वलमुक्तिदपापविनाश !!
मुनीशसुपर्य्यनुयोगसुभोग ! जिनेशविभूतिविवादनयोग !
जयामरसेवितबोधविकाश ! समुज्ज्वलमुक्तिदपापविनाश !!
उपासकमार्गसमुज्ज्वलचन्द्र ! द्विपञ्चयतीश्वरवाद महेन्द्र !!
जयामरसेवितबोधविकाश ! समुज्ज्वलमुक्तिद पापविनाश !!
दशान्तसुकेवलिनिर्णयकार ! निमित्तनिरूपमनिर्भरभार !
जयामरसेवितबोधविकास ! समुज्ज्वलमुक्तिदपापविनाश !!
सुखासुखकारणरूपतरङ्ग ! प्रकाशितबोधसुचन्द्रतरण्ड !
जयामरसेवित बोधविकाश ! समुज्ज्वलमुक्तिद पापविनाश !!
सुजीवहिताहितकर्मविपाक ! नरेन्द्र ! महेन्द्र ! विभूतिपताक !
जयामरसेवित बोधि विकाश ! समुज्ज्वल मुक्तिद पाप विनाश !!
अबोधतमोभरवारणसूर ! सुमुक्तिसुखामृतजीरधिपूर !
जयामरसेवितबोधविकाश ! समुज्ज्वलमुक्तिद ! पाप विनाश !!

धत्ता – अखिलनृपतिसेव्यं मोहमातङ्गसिंहं ।
परमपदविकाशं, बोधनं चिद्स्वरूपं ।।
त्रिभुवनयशसे तत् कर्मदावाग्निमेथं ।
भजतिशिवपदं यः सेव्यते शास्त्रसारं ।।
गुणैर्गरिष्ठं भवनं गुणानां, स्वर्गादिदाने विदधाति दक्ष्यं ।
करोतु बोधो भवतां नितान्तं, सारं च सौख्यं भवदुःखपारं ।।

(इत्याशीर्वादः)

इयं पूजा जगत्सारा तेजपुञ्जसुपूरिता ।
ये पठन्ति श्रुताचार्यैस्तेषां स्यात् ज्ञानपञ्चकम् ।।
एषापूजा प्रमादेन वर्द्धमानेन वर्द्धिता ।
कृष्णादिवीरदासत्वं करोत्वर्चां सुभक्तितः ।।

श्रुतसकलगुणाब्धिं ये श्रुतस्कन्धसार–
भिममपगतदोषं प्रार्थयन्तेऽतिभक्त्या।
नृसुरजिनगणेशाद्यैः पदैः सार्द्धमाशु,
सकलविमलकीर्त्या ते लभन्तेऽखिलार्थान् ।

एतद् भणित्वा श्रुतस्कन्धोपरि पुष्पाणिक्षिप्य पञ्चाङ्गं प्रणामं कुर्यात्।।

इति श्रुतस्कन्धपूजा सम्पूर्णा।

(सम्वत् 1830 वर्षे मिति मृग शिरवदि द्वादशी रूपनगरे लिखिता)

अथ श्री धवल ग्रन्थ पूजा

स्थापना – गीता छन्द

जय जय धवल तुम हो धवल करदो धवल इस दास को।
जिनवाणि के तुम अंश हो मुझ वास दो निज पास को।।
तुम ज्ञान अरु विज्ञान के दाता हरो सन्ताप को।
ये भाव भर अति भक्ति से करते नमन हम आपको।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतमहाकर्मप्रकृतिप्राभृतधवलश्रुतज्ञान ! अत्र अवतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भू तमहाकर्मप्रकृतिप्राभृतधवलश्रुतज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतमहाकर्मप्रकृतिप्राभृतधवलश्रुतज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सुरसरिता को जलसार, निर्मल भावन सों।
कञ्चनझारी की धार, ढारू उमङ्गन सों।।
ये प्राभृत के अधिकार, चौबीसों भारी ।
मैं धवल नमों सुखकार, चिरचितअघहारी ।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतधवलश्रुतज्ञानायजन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।1।

मलयागिरि चन्दनसार, शीतल मुनिचित सों।
तुम आगे दूं यह धार, छूटूं भव दुख सों ।।ये प्रा.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतधवलश्रुतज्ञानाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।2।

ये तन्दुल उज्जवल सार, चोखे अनियारे।
दीने तुम चरणन डार, उत्तम दृगहारे ।। ये प्रा.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतधवलश्रुतज्ञानाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।3।

ले सुमन सुगन्धित सार, सुन्दर सुरतरु के।
तुमको अर्चत मदहार, शिवसुन्दरि वर के ।। ये प्रा.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतधवलश्रुतज्ञानाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।4।

नेवज नानाविधि सार, मिष्ट सुरम्य बने।
मेटन को क्षुधा प्रहार, गौघृत मांहि सने ।। ये प्रा.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतधवलश्रुतज्ञानाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।5।

यह दीपज्योति तम खोय, शिवमग दरशावे।
पद जजत भगत तम मोह, उत्तम पद पावे ।। ये प्रा.।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतधवलश्रुतज्ञानाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।6।

यह अगरु तगर ले सार, सुरभित मनभावन।
पूजों धूपायन डारं, तसु मिस विधि जारन ।। ये प्रा.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतधवलश्रुतज्ञानाय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।7।

बादाम छुहारे लाय, पिस्ता दाखन सों।
पूजत तुमको हरषाय, शिवफल पावन सों।। ये प्रा.।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतधवलश्रुतज्ञानाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।8।

जल आदिक द्रव्य चढ़ाय, शुभ गुणसिद्धन से।
पूजों बहुचित हुलसाय, मम भव फन्द नसे।। ये प्रा.।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत धवलश्रुतज्ञानाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।9।

अथ जयमाला

दोहा – जिनवाणी को नमन कर, भक्ति हृदय में धार।
गाऊं आरति धवल की, अल्पबुद्धि अनुसार।।

(राग–चौबाला)

हे धवल तुम्हारे शब्दों में कैसा माधुर्य भरा भारी।
तेरी प्राकृतमय रचना से स्वाभाविकता दिखती सारी ।टेक।
धरसेन गुरु के शिष्यों ने, की सूत्रों में रचना सारी।
उन भूतबली अरु पुष्पदंत की, कृतियां हैं अति सुखकारी।।
सहसा स्मृति सुश्रुत पंचमि की, हो आती है अति सुखकारी।
पावन दिन की पुण्य स्मृति से, करमन प्राभृत रचना भारी।।
जिनवाणी सागर की कणिका, अकलंक इंदुसी तमहारी।3।
कर्मो का फंदा दिखलाकर, उलझन सुलझादी दुखकारी।
सुन सुन श्रद्धा दृढ़ हो जाती, भय भाग गये भारी भारी।4।
विज्ञान का गहन खजाना है, वैज्ञानिक जानत यह सारी।
रेडियो विचारा कुछ नहिं है, जब शब्दपति सुन ली भारी।5।
श्री वीरसेन स्वामी ने इसकी, टीका की है अति भारी।
श्री आर्यनन्दि अरु चन्द्रसेन भी, हुए मुनि सब सुखकारी।6।
सूर्यनन्दि अरु वीरनन्दि से, हुए यतीश्वर मनहारी।
गुणनन्दि और वसुनन्दी से, हो गए मुनीश्वर अघहारी।7।

सूरनन्दि सिद्धान्त देव के, चरणों की है बलिहारी।
शुभचंद्र आर्य गुणसागर थे, जिन दिग्दिगंत कीरति धारी।8।
नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रि ने गाई इसकी बलिहारी।
इससे शुभ सार खींच करके, वह गोम्मटसार रचा भारी।9।
इसकी महिमा कैसे गावें, हैं थक जाते ज्ञानी भारी।
हम सबकी श्रद्धा है तुम में, तेरी गोदी की बलिहारी। 10।
हे धवल तुम्हारे शब्दों में कैसा माधुर्य भरा भारी।
तेरी प्राकृतमय रचना से स्वाभाविकता दिखती सारी। 11।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूत महाकर्मप्रकृतिप्राभृतधवलज्ञानाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा – पूजन जो इस धवल की, पढे सुने दे कान।
भरे पुण्य भण्डार बहु, अनुक्रम से निर्वान।।

इत्याशीर्वादः, इति धवल पूजा।

अथ श्री जयधवल पूजा

(स्थापना)

जय धवल परम प्रकाश से अरि मोहतिमिर विनाशिया।
गुणधरवदनशशिकिरण निरखत मोक्षमार्गप्रकाशिया।।
यतिवृषभ ने शुभसूत्रचूर्णि सहस्रष्ट्रचना करी।
जयधवल टीका अति मनोहर शेष ऋषिवर विस्तरी। 1।

दोहा – पूरब ज्ञान प्रवाद के दशम वस्तु अधिकार।
नाम पेज्ज पाहुड त्रितय, सार खींच निरधार। 2।
अस्सी शत गाथा सुगम, श्रीगुणधर मुनि ईश।
रच पन्द्रह अधिकार में, जो भाखी गणधीश। 3।

ऐसो निर्मल ज्ञान मम, हृदय विराजो आय।
आह्वानन सन्निधिकरण, करुं हर्ष उर लाय। 4।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादाङ्कित जयधवलश्रुतज्ञान ! अत्रावतरावतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादाङ्कित जयधवलश्रुतज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादाङ्कित जयधवलश्रुतज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

नीर प्रासुक निर्मल लीजिये, धार श्रीश्रुतसन्मुख दीजिये।
पूजिये श्रुतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञानको ।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। 1।

कुंकुमादिक मिश्रित चन्दनैः, त्रिविधताप नशावनशान्तकैः।
पूजिये श्रुतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञान को।।

ॐ ह्रीं श्रीज़िनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा। 2।

धवल अक्षत धोय धरीजिये, पुंज श्रीश्रु तसंन्मुख दीजिये।
पूजिये श्रुतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञानको।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा। 3।

पुष्प सुन्दर नयन सुहावने, गंध लुब्ध अली मनभावने।
पूजिये श्रुतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञानको।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा। 4।

सरस मोदक आदि बनाय के, क्षुधंहरण श्रुतचरण चढायके।
पजिये श्रतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञानको।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

दीप उत्तम ज्योति जगावने, मोह अंध नशावन कारने।
पूजिये श्रुतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञानको।।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।6।

धूप दशविधि गंध सुलेयके, कर्मनाशक सन्मुख खेयके।
पूजिये श्रुतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञानको।।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।7।

फल मनोहर चक्षु सुहावने, गंध रसयुत मन ललचावने।
पूजिये श्रुतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञानको।।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।8।

अष्ट द्रव्य सजों गुण गायके, पूजिहों वसु अङ्ग नवाय के।
पूजिये श्रुतज्ञान प्रवाद को, जयधवल जजि सम्यक्ज्ञानको।।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

अथ जयमाला

जय जय श्रुतसागर ज्ञान उजागर, विश्व विमल कल्याणकरा।
स्यात्पद कर चिन्हित स्वपर विभाजित, दरशावत पदमोक्षधरा।।

(छन्द)

जयधवल तुम्हारे शासन ने मिथ्यातम दूर भगाया है।
सद्ज्ञान प्रकाश किया जगमें, भवि जीवन को समझाया है।1।
चैतन्य स्वरूप अनूपधरे दृग ज्ञान रूप दरशाया है।
पर काल अनादि से मोह लगा, सङ्ग नाना वेष बनाया है।2।

नर नारक पशु पर्याय दिखाकर देवपुरी पहुंचाया है।
गति चार चौरासी लक्ष स्वांग धरि बहुविधि नृत्य कराया है। 3।

काल अनन्त निगोद मांहि बसि जन्म मरण करवाया है।
इक श्वांस मात्र में बार अठारह मर मर ज्ञान घटाया है। 4।

फिर काल लब्धि बल निकसि तहां से त्रस थावर तन पाया है।
शुभ पुण्य उदय से मानुषकुल लहि जिन मारग रुचि लाया है। 5।

व्रत धार दिगम्बर मोह निबलकर उपशम भाव कराया है।
निर्ग्रंथ अवस्था के बल से झट अमर पुरी को धाया है । 6।

फिर निकसि तहां तैं त्रस थावर में बहुत काल भटकाया है।
यों मोह कर्मवश जीव अनन्ते नाना सङ्कट पााया है। 7।

नित्य निगोद मांहि तैं कढि लहि मानुष भव मग पाया है।
वसु वर्ष बिताकर सम्यक्व्रत गहि दर्शन मोह खिपाया है। 8।

धर ध्यान शुक्लवर क्षपक श्रेणि चढ घाति चतुष्क नशाया है।
फिर केवल बोध प्रकाशि चराचर भवि शिवपथ लगाया है। 9।

जयधवल तुम्हारे शासन ने मिथ्यातम दूर भगाया है।
सद्ज्ञान प्रकाश किया जगमें भवि जीवन को समझाया है।10।

कर्म अघाती चूर अनन्तर, सिद्ध स्वरूप लहराया है।
शुद्धस्वरूप में लीन भये तब आवागमन मिटाया है।11।

यति वृषभ सूरि ने मोह कर्म के भेद बहुत दरशाये हैं।
चौबिस अनुयोग प्ररूपण कर शुभ ओघादेश रचाये हैं।12।

इत्यादिक वर्णन बहुत किया एकाग्र ध्यान उर लाया है।
सब साठ हजार श्लोकनि में जयधवल नाम शुभ पाया है।13।

इनका संक्षेप स्वरूप ग्रहण कर गोमटसार रचाया है।
श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रि ने जग का भर्म मिटाया है।14।

फिर नय प्रमाण निक्षेप विवक्षा भेद समझ मन लाया है।
त्रय योग शुद्ध कर श्रवण मनन से पाप समूह नशाया है।15।

(धत्ता छन्द)

जय श्रुत गुणमाला धवल रसाला बुद्धि विशाला मम दीजे।
वसु अंग नवाऊं गुणगण गाऊं ज्ञान बढाऊं दुख छीजे।16।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल श्रुतज्ञानाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

इत्याशीर्वादः।

श्री महाधवल पूजा

महामोहनाशक प्रबल महाधवल विख्यात।
महाबन्ध प्रणमू तुम्हें करहु मुझे अवदात। 1।
भूतवली आचार्यकृत बन्धतत्त्व का ज्ञान।
दुर्नयहारि सुयनकरी हृदय विराजो आन। 2।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल ग्रन्थ ! अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल ग्रन्थ ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितजयधवल ग्रन्थ ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चालःकरले करले तू नित प्राणी पूजन करले जिनवानी)

निर्मल सलिल लेय कर में निर्मल भाव सों भाऊं।
जन्म जरा मृतु नाश करन को महाधवल हृदय लाऊं।।
आगम वाणी मुक्ति निशानी महापावनी भवि मानी।
पुण्यपापविच्छेदकृपानी, चिदानन्द की रजधानी।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय जलं नि. स्वाहा।

मुनिचितसम शीतल चन्दन ले साम्यभाव को अपनाऊं।
भव आताप मिटावन कारण महाधवल हृदय लाऊं । आगम.।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय चन्दनं नि. स्वाहा।

चंद्रोज्जवल सम उज्जवल अक्षत लेकर निज गुण मन भाऊं।
अक्षयपद प्राप्ति के हेतु मैं महाधवल हृदय लाऊं। आगम.।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय अक्षतान् नि. स्वाहा।

सुमन सुगन्धित लेकर कर में चिदवदनी तुम गुण गाऊं।
समय शूल निर्मूल करन को महाधवल हृदय लाऊं। आगम.।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय पुष्पं नि. स्वाहा।

मोदक खाजे गूझा ताजे श्रुतचरण में लाय चढाऊं।
क्षुधा निवारण कारण अग मैं महाधवल हृदय लाऊं। आगम.।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

सम्यक्दीप रतनत्रयसे अब निज परिणति को विकसाऊं।
भक्ति भाव से दीप चढाकर महाधवल हृदय लाऊं। आगम.।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय दीपं नि. स्वाहा।

धूपायन में पावक धर कर धूप सुगन्धित प्रज्वलाऊं।
अष्ट करम के नाश हेतु मैं महाधवल हृदय लाऊं। आगम.।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय धूपं नि. स्वाहा।

बादाम छुहारी लौंग सुपारी श्रीफल भारी ले आऊं।
आवागमन निवारण कारण महाधवल हृदय लाऊं। आगम.।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय फलं नि. स्वाहा।

करम मरम का भरम न जाने बहुविध जग में भरमाऊं।
हरन भ्रमण थिरता पद कारन महाधवल हृदय लाऊं। आगम.।
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

प्रकृति प्रदेश रु स्थिति, और रसोदय बन्ध।
गणधर गूंथित से रच्यो भूतवली महाबन्ध।।
करम बन्ध होता यह आत्मा से कैसे,
महाबन्ध में जो बताया है जैसे।
इसी जीव का भाव कुछ निमित्त पाकर।
बदल जाता पुद्गल करम रूप आकर। 1।
परस्पर इसी भांति रद्दोबदल यह,
वैभाव शक्ति से होती सदा यह।
मिलावट हुई एक की दूसरे में,
तज असलियत बंध गए पर गुणों में। 2।
तो भी तत्त्व दृष्टि से निज गुण न छोड़ा,
यह नाता विलक्षण निमित्त बस ही जोड़ा।
परस्पर बंधे दोनों एक दूसरे से,
चले चाल दोनों ही एक दूसरे से। 3।
पराधीन बनकर नचा नाच किसने,
बताओ ये दुखड़े उठाये है किसने।
अरे सच्चिदानन्द! मिटा भूल भाई,
महाबन्ध में श्री गुरु ने जो बताई। 4।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादमुद्राङ्कितधवलग्रन्थाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्तुति

परम दिव्यवानी जु गुणधर ने मानी,
नमों लोकमाता श्री जैनवानी।।टेक।।
करम मोहिनी हो अखय मोक्षदानी,
अनेकान्तधा द्वादशाङ्गी प्रमानी।

द्रव्य भाव नो कर्म भंजनि बखानी,
नमो लोकमाता श्री जैनवानी।1।
परम पण्डिता हो सुनीता पुनीता,
कनयखण्डिता निष्कलंङ्का अजीता।
दुरितहारिणी सुन्दरी भव्यमानी,
नमों लोकमाता श्री जैनवानी।2।
सुबोधा उधरनी भविक ताप हरनी,
मिथ्यात्व बन्धन को हो दृढ़ कतरनी।
दुःखित प्राणियों को सुबुद्धिनिधानी,
नमो लोकमाता श्रीजैनवानी।3।
सुधा सम यह कथनी भवाताप हरनी,
विषय मोचनी भव्य जन की सुमरनी।
दुराचार विध्वंसिनी सौख्य खानी,
नमों लोकमाता श्री जैनवानी।4।

(दोहा)

आगमरुचि सौं जो पढ़े, और गहे उपदेश।
सत्चित् आनन्द प्राप्त हो, नश जाये संक्लेश।।

इत्याशीर्वादः।

साधुपरमेष्ठि पूजा

तेरह विधि चारित्र गुरु पाते सही,
रूप दिगम्बर धरत गुणन के है मही।
तिन चरणन सिर नाय अरज इक मैं करूँ।
आवो तिष्ठो यहाँ पूज दुःख को हरूं।।

ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठि ! अत्रागच्छ आगच्छ संवौषट्।
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

卐 अष्टक 卐

निर्मल जल की भर कर झारी गुरु सन्मुख मैं लाऊँ।
जलधारा दे श्रीगुरु पूजूँ कर्मकलङ्क बहाऊँ।।
श्रीगुरु यह मुनिराज दिगम्बर इन चरणन चित लाऊँ।
भव की त्रास मिटे अब तासौं मनवाञ्छित फल पाऊँ।।
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर जल में घिसकर और कपूर मिलाऊँ।
भव आताप निवारण कारण श्रीगुरुचरण चढ़ाऊँ।। श्रीगुरु...
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल शशिसम धवल अनूपम भर कर थारी लाऊँ।
मन वच तन से गुरु पद पूजूँ महा अखय पद पाऊँ।। श्री गुरु...
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने अक्षये पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परिजात मन्दार कल्पतरु पुष्प अनेक सुहाई।
सो ले तुम पद पूज करत ही कामव्याधि मिट जाई।। श्रीगुरु...
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू घेवर और कलाकन्द फेणी आदि मँगाई।
क्षुधारोग के दूरकरण को लाकर तुरत चढ़ाई ।। श्री गुरु...
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप मणिज्योति ललितवर कञ्चन थाल धरीजै।
सो ले तुम पद पूज करत ही मोहमहातम छीजै।। श्री गुरु...
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कृष्णागरु चन्दन धूपं दशाङ्ग बनाई।
भर धूपायन आगे खेऊँ दुष्ट कर्म जर जाई।। श्री गुरु...
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल पिस्ता लौंग सुपारी केला आम मंगाऊँ।
सो ले तुम पद पूज करत ही मोक्ष महाफल पाऊँ।। श्री गुरु...
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलचन्दन इत्यादिक लेकर सुन्दर अर्घ्यं बनाऊँ।
सो ले तुम पद पूज करत ही शिव रमणी वर पाऊँ। श्री गुरु...
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सफल मुनीश्वर, नमित सुरासुर, अनुदिन चरण कमल नमूँ।
तुंम परसादे मन आल्हादे स्तवन करि भवदुःख गमूँ।।
श्री एक आत्मध्यान सहित नमो, दोय रागद्वेष परिरहित नमो।
तीन रयण मण्डित बरकाय नमो, चउकषाय रहित जति पाय नमो।।
पञ्चाचारचरणविचारनमो, पञ्चास्रव आस्रव रहित नमो।
पञ्चेन्द्रिय शोषित गात्र नमो, पञ्चम गति साधित तत्व नमो।।
षट्काय दया कर वीर नमो, षड्द्रव्य प्रकाशन धीर नमो।
षट्षट्मनि चिन्तित देव नमो, षट्काल बखानित सेव नमो।।
भय सात रहित गुणवन्त नमो, गुणस्थान सात जयवन्त नमो।
अष्टध्यान सहित मुनि पाय नमो, मद अष्टरहित गुरु पांय नमो।।
नव नयकलित गम्भीर नमो, नव विधिशील पालित वीर नमो।
दशलक्षणधर्मप्रकाश नमो, दशधर्मध्यान आवास नमो।।
दशएकपडिम उपदेश नमो, दश दुविध तपस्वी ईश नमो।

दह तीन चरण पालित धीर नमो, दश चार मल टालित वीर नमो।।
दह पञ्च परमाद विरहित नमो दह षट् परिभावना भावित नमो।
दह सात संयम गुणधरण नमो दह आठ दोष दूरिकरण नमो।।
दह आठ सहस्रशीलचरण नमो दह नव समास जीव कहण नमो।
दह दहवर मार्गण कथित नमो दह दह एक चतुर्गुण लक्ष्य नमो।।
दहदह दु परीषह सहण नमो, दह दह तीन स्थानक कलित नमो।
दह दह चतुर्जिनवर पाय नमो दह दह पञ्च भावना भावित नमो।
एह गुण आदि गुणवन्त नमो, निर्ग्रन्थमुनि जयवन्त नमो।
गुणधर पतिवर गुरु पाय नमो, मन वचन सफल करूँ काय नमो।।
त्रिभुवन जन पूजित चरण नमो त्रिभुवन भवियण उद्धरण नमो।
ते तारण तरण भवतरण्ड नमो, करुणारस गुणवन्त नमो।।
श्री धर्मशुक्लध्यानधरण नमो, गुणस्थान श्रेण्यारूढ़ नमो।
श्री केवलज्ञान उद्योत नमो, श्री मुक्ति रमणी घदशएकपडिम
उपदेश नमो,दशएकपडिम उपदेश नमो,वर कन्त नमो।।

धत्ता– मुनिवर स्वामी, नमूँ सिरनामी, दुय कर जोड़ि विनयकरी।
दीक्षा अति निर्मल देउ मुझ उजली ब्रह्म जिणदास भणौ कृपाकरी।।

ॐ ह्रीं साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय जगतारी शिवहितकारी।
अनिवारी वसुकर्म हरो।।
मम अजर सुनीजे ढील न कीजे।
शिवसुख दीजे दया करो।।

इत्याशीर्वादः।

ॐ

श्री भक्तामर विधान

(आचार्य श्री सोमसेन कृत)

पूर्व पीठिका

श्रीमन्त–मानभ्य जिनेन्द्रदेवं, परं पवित्रं वृषभं गणेशं।
स्याद्वादवारां निधिचन्द्रबिम्बं, भक्तामरस्याचंनमात्मसिद्धयै।।
वक्ष्ये सुवीरं करुणार्णवं च, श्रीभूषणं केवलज्ञानरूपं।
अलक्ष्यलक्ष्यं प्रणमाम्यलं वै, भक्तामरं सिद्धवधूप्रियं वै।।

आदौ भव्यजने नैवं, गत्वा चैत्यालयंप्रति।
नन्तव्यः परया भक्त्या, सर्वज्ञः शुद्ध लक्षणः।।

ततः सद्गुरु–मानम्य, विनयानत–चेतसा।
प्रार्थना च कार्या भव्यैः, पूजायै भावशुद्धितः।।

दीयतां सुगुरो ! आज्ञा, पूजां कर्तुशुभां वरं।
इत्युक्ते गुरुणाभाणि, विधि र्भक्तामरस्य वै।।

श्रीखण्डागुरुःकूर्पर, नारिकेल–फलानि च।
प्रचुराक्षस–पुष्पौद्या–नक्षताञ्चरुसञ्चयान्।।

मेलयित्वा प्रमोदेन, चन्द्रोपमध्वजादिकान्।
दीपान् धूपान् महावाद्य, गीतराव विराजितान्।।

तोरणै र्मणि–सन्नद्धै, रुज्ज्वलै श्चामरैस्तथा।
मण्डपैः पञ्चवर्णैश्च, द्रव्यै र्मङ्गलसूचकैः।।

वसुदेव–मिते कोष्ठे, वर्तुलाकार–मण्डिते।
रचयेद् वेदिकां तत्र, श्रीजिनार्चन–हेतवे।।

नातिवृद्धो न हीनाङ्गो, दुष्कुलो न च बालकः।
मलिनो न न मूर्खश्च, सर्वव्यसन वर्जितः।।

कलाविज्ञान–सम्पूर्णो, वाचालः शास्त्रवाक्पटुः।
पण्डितो मृज्यते तत्र, करुणारसपूरितः।।

सर्वाङ्गसुन्दरो वाग्मी, सकलीकरणक्षमः।
स्पष्टाक्षरश्च मन्त्रज्ञो, गुरुभक्तो विशेषतः।।

श्रावकान् श्राविकाश्चैव, योगिनश्चार्यिकास्तथा।
चतुर्विधं पर संघ, समाह्वयेत् सुभक्तितः।।

पूजा करणशुद्धेन, कार्या सर्वज्ञसद्मनि।
ततोऽर्चनं श्रुतस्यापि, गुरोः पादार्चनं ततः।।

कार्य सर्वज्ञ– पूजायाः, प्रारम्भे सर्वसिद्धिदम्।
अनेन विधिना भव्यैः, पूजा कार्या निरन्तरम्।।

रच–यन्नर्हतां पूजा–पीठिकां पुण्यमाप्नुयात्।
फलन्ति सर्व–कार्याणि, विघ्नराशिः क्षयं ब्रजेत्।।

।। इति पीठिका समाप्ता।।

श्री वृषभ देवस्तुतिः

(स्रग्धरा–वृत्तम्).

श्री मद्देवेन्द्रवन्द्यौ, जिनवरचरणौ, ज्ञानदीपप्रकाशौ।
लोकालोकावकाशौ, भवजलधिहरौ, संततं भव्यपूज्यौ।।

नत्वा वक्ष्ये सुपूजां, वृषभ जिनपतेः प्राणिनां मुक्तिहेतुं।
यम्मात्संसारपारं, श्रयति स मनुजे, भक्तियुक्तः सदाप्तः।।

(वसन्ततिलका–वृत्तम)

श्रीनाभिराजतनुर्ज शुभमिष्टिनाथं,
पापापहं मनुजनागसुरेश–सेव्यम्।
संसार–सागर–सुपोतसमं पवित्रं,
वन्दामि भव्यसुखदं वृषभ जिनेशम्।।2।।

यस्यात्र नाम जपतः पुरुषस्य लोके,
पापं प्रयाति विलयं क्षणमात्रतो हि।
सूर्योदये सति यथा तिमिरस्तयान्तं,
वन्दामि भव्यसुखदं वृषभं जिनेशम्।।3।।

सर्वार्थसिद्धिनिलयाद्भुवि यस्य पुण्यात्,
गर्भावतार–करणेऽमर–कोटिवर्गैः।
वृष्टिः कृता मणिमयी पुरुदेशतस्तं,
वन्दामि भव्यसुखद वृषभं जिनेशम्।।4।।

जन्मावतारसमये सुरवृन्द–वंद्यैः,
भक्त्यागतैः परमदृष्टितया नतस्तैः।
नीत्वा सुमेरुमभिवन्द्य सुपूजितस्तं,
वन्दामि भव्यसुखदं वृषभं जिनेशम्।।5।।

षट्कर्मःयुक्तिमवदर्श्य दयां विधाय,
सर्वाः प्रजाः जिनधुरेण वरेण येन।
संजीविताः सविधिना विधिनायकं तं,
वन्दामि भव्यसुखद वृषभं जिनेशम्।।6।।

दृष्ट्वा सकारणमरं शुभदीक्षिताङ्गं,
कृत्वा तपः परममोक्षपदाप्ति हेतुम्।
कर्मक्षयः परिकृतः भुवि येन तहि

वन्दामि भव्यसुखदं वृषभं जिनेशम्।।7।।

ज्ञानेन येन कथितं सकलं सुतत्त्वं,
दृष्टवा स्वरूपमखिल परमार्थ सत्यं।
तद्दर्शितं तदपि येन समं जनेभ्यो,
वन्दामि भव्यसुखदं वृषभं जिनेशम्।।8।।

इन्द्रादिभिः रचितमिष्टिविधिं यथोक्तं,
सत्प्रातिहार्यममलं सुखिनं मनोज्ञं।
यस्योपदेशवशतः सुखता नरस्य,
वन्दामि भव्यसुखदं वृषभं जिनेशम्।।9।।

पञ्चास्तिकाय षड्द्रव्यक सप्ततत्त्व,
त्रैयोक्यकादि–विविधानि विकासतानि।
स्याद्वादरूप–कुसुमानि हि येन तं च,
वन्दामि भव्यसुखदं वृषभं जिनेशम्।।10।।

कृत्वोपदेशमखिलं जिनवीतरागो,
मोक्षं गतो गतविकारःपर–स्वरूपः।
सम्यकत्वःमुख्यगुणकाष्टक सिद्धकस्त्वं,
वन्दामि भव्यसुखदं वृषभं जिनेशम्।।11।।

विविध–विभव–कर्ता, पाप–सन्ताप–हर्ता,
शिवपद सुख–भोक्ता, स्वर्ग–लक्ष्म्यादि–दाता।
गणधर–मुनि–सेव्यः, "सोमसेनेन" पूज्यः,
वृषभजिनपतिः श्रीं, वाञ्छितां मे प्रदद्यात्।।12।।

इदं स्तोत्रं पठित्वा हृदयस्थितःसिंहासनस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

यह स्तोत्र पढ़कर हृदयस्थित सिंहासन के ऊपर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें।

अथ स्थापना

मोक्षसौख्यस्थ कर्तृणां, भोक्तृणां शिवसम्पदाम्।
आह्वाननं प्रकुर्वऽहं, जगच्छान्ति–विधायिनाम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्री वृषभजिनेन्द्रदेव मम हृदये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्!

देवाधिदेवं वृषभं जिनेन्द्रं, इक्ष्वाकुवंशस्य परं पवित्रं।
संस्थापयामीह पुरः प्रसिद्धं, जगत्सुपूज्यं जगतां पतिं च।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्री वृषभजिनेन्द्रदेव! मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्

कल्याणकर्त्ता, शिवसौख्यभोक्ता, मुक्तेः सुदाता, परमार्थयुक्तः।
यो वीतरागो, गतरोषदोषः, तमादिनाथं निकटं करोमि।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्री वृषभजिनेन्द्रदेव मम हृदय समीपे सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकम्

(मन्दाक्रान्ता वृत्तम्)

गाङ्गेया यमुना हरित्सुसरिताम्, सीता–नदीया तथा।
क्षीराब्धि प्रमुखाब्धि–तीर्थ महिता, वीरस्य हैमस्य च।।
अम्भोजीय–पराग–वासित–महद्गन्धस्य धारा सती।
देया श्री जिनवाद–पीठ–कमलस्याग्रे सदा पुण्यदा।।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय जलम्।।

श्रीखण्डाद्रिगिरौ भवेन गहने, ऋक्षैः सुवृक्षैर्घनैः।
श्रीखण्डेन सुगन्धिना भवभृतां, सन्ताप–विच्छेदिना।।
काश्मीरप्रभवैश्च कुङ्कुमरसैः, घुष्टेन नीरेण वै।
श्रीमाहेन्द्र–नरेन्द्र–सेवितपदं, सर्वज्ञदेवं यजे।।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय चन्दनम्।।

श्रीशाल्युद्भवतन्दुलैः सुविलसद्–गन्धै र्जगल्लोभकैः।
श्रीदेवाब्धि–सरूप–हार–धवलैः नेत्रै र्मनोहारिभिः।।
सौधौतै–रतिशक्ति–जातिमणिभिः, पुण्यस्य भागरिव।
चन्द्रादित्य–सम–प्रभं प्रभुमहो, सञ्चर्चयामो वयम।।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय अक्षतं।।

मन्दाराब्ज–सुवर्णजाति–कुसुमैः, सेन्द्रीयवृक्षोद्भवैः।
येषां गन्धविलुब्ध–मत्त–मधुपैः, प्राप्त प्रमोदास्पदम्।।
मालाभिः प्रविराजिभिः जिन! विभो र्देवाधिदेवस्यं ते।
सञ्चर्चे चरणारविन्द युगलं, मोक्षार्थिनां मुक्तिदम्।।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय पुष्पम्।।

शाल्यन्नं घृतपूर्ण सर्पिसहितं, चक्षुर्मनोरञ्जकम्।
सुस्वादु त्वरितोद्भवं मृदुतरं, क्षीराज्यपक्वं वरम्।।
क्षुद्रोगादिहरं सुबुद्धिजनकं, स्वर्गापवर्गप्रदम्।
नैवेद्यं जिन–पाद–पद्मपुरतः, संस्थापयेऽहं मुदा।।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय नैवेद्यम्।।

अज्ञानादि–तमोविनाशन करैः, कर्पूरदीप्तै र्वरैः।
कार्पासस्य विवर्तिकाग्रविहितैः, दीपैः प्रभाभासुरैः।।
विद्युत्कान्ति विशेष संशय करैः, कल्याणसम्पादकैः।
कुर्यादार्तिहरार्तिकां जिन! विभो! पादाग्रतो युक्तितः।।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय दीपम्।।

श्रीकृष्णागरु देवदारु जनितैः, धूप ध्वजोद्वर्तिभिः।
आकाशं प्रति व्याप्तमधूपटलैः, आह्वानितैः षट्पदैः।।
यः शुद्धात्मविवृद्धकर्मपटलोच्छेदेन जातो जिनः।
तस्यैव क्रमपद्मयुग्मपुरतः, सन्धूपयामो वयम्।।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय धूपम्।।

नारिङ्गाम–कपित्थ–पूग–कदली–द्राक्षादि–जातैः फलैः।
चक्षुश्चित्तहरैः प्रमोदजनकैः, पापापहैर्देहिनाम्।।
चर्णाद्यैः मधुरैः सुरंशतरुजैः, खर्जूरपिण्डैस्तथा।
देवाधीश–जिनेश–पाद–युगलं, सम्पूजयामि क्रमात्।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकायं हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय फलम्।।

नीरैश्चन्दनःतन्दुलैः सुसघनैः पुष्पैः प्रमोदास्पदैः।
नैवेद्यैः नवरत्नदीपनिकरैः, धूमैस्तथा धूपजैः।।
अर्घ्यं चारुफलैश्च मुक्तिफलदं, कृत्वा जिनाङ्घ्रिद्वये।
भक्त्या श्रीमुनि–सोमसेनगणिना, मोक्षो मया प्रार्थितः।।

ओं ह्रीं परमशान्तिविधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय अर्घ्यं।।

जिनेन्द्रपादाब्जयुगस्य भक्त्या, जिनेन्द्रमार्गस्य सुरक्षपालं।
सम्यक्त्वयुक्तं गुणरश्मिपूर्णं, गोवक्त्रयक्षं परिपूजयामि।।

ओं ह्रीं वृषभदेवःपादारविन्दसेवक'गोवक्त्रयक्षाय आगतविघ्ननिवारकाय अर्घ्यं।

चक्रेश्वरीं जैनपदारविन्द–सहानुरक्तां जिनशासनस्थां।
विघ्नौघहन्त्रीं सुखधामकर्त्रीं, भक्त्या यजे तां सुखकार्यकर्त्रीम्।।

ओं ह्रीं जिनमार्गरक्षिकायै दारिद्रयनिवारिकायै चक्रेश्वर्यै अर्घ्यं।

अब संस्कृत के भक्तामर से पाठ शुरु करें और उसके अन्त में निम्नलिखित मन्त्र बोलकर अर्घ चढ़ावें–

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ–तीर्थङ्कराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

इसके पश्चात् निर्धारित समय तक संस्कृत व हिन्दी का पाठ मधुर वाणी में शुद्ध उच्चारण से करते रहें।

अगले दिन निर्धारित समय समाप्त होने पर निम्नलिखित मन्त्र 108 बार बोलकर हर मन्त्र के पश्चात् एक एक लौंग चढ़ावें।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थङ्कराय नमः स्वाहा।

भक्तामर स्तोत्र

(अष्टदल कमल पूजा)

भक्तामर–प्रणत–मौलि–मणि–प्रभाणा–
मुद्योतकं दलित–पाप–तमो–वितानम्।
सम्यक्–प्रणम्य जिन–पाद–युगं युगादा–
वालम्बनं भव–जले पततां जनानाम्।। 1।।

ओं ह्रीं विश्वविघ्नहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।।1।।

यः संस्तुतः सकल–वाङ्मय–तत्त्व–बोधा–
दुद्भूत–बुद्धि–पटुभिः– सुर–लोकनाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय–चित्त–हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।।2।।

ॐ ह्रीं नानामरसंस्तुताय सकलरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।।2।।

बुद्धया विनापि विबुधार्चित–पाद–पीठ
स्तोतुं समुद्यत–मतिर्विगत–त्रयोऽहम्।
बालं विहाय जल–संस्थितमिन्दु–बिम्ब
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।3।।

ॐ ह्रीं मत्यादि–सुज्ञानप्रकाशनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।।3।।

वक्तुं गुणान्गुण–समुद्र शशाङ्क–कान्तान्
कस्ते क्षमः सुर–गुरु–प्रतिमोऽपि बुद्धया।

कल्पान्त–काल–पवनोद्धत–नक्र–चक्रं
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ।। 4 ।।

ॐ ह्रीं नानादुःखसमुद्रतारणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं ।। 4 ।।

सो ऽहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश
कर्तुस्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्म वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्र
नाभ्येति किं निज शिशोः परिपालनार्थम् ।। 5 ।।

ॐ ह्रीं सकलकार्यसिद्धिकराय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं ।। 5 ।।

अल्प श्रुतं श्रुतवतां परिहास–धाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुर विरौति
तच्चारु चाम्र–कलिका–निकरैक–हेतु ।। 6 ।।

ॐ ह्रीं याचितार्थप्रतिपादनशक्तिसहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं ।। 6 ।।

त्वत्संस्तवेन भव–सन्तति–सन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त–लोकमलि–नीलमशेषमाशु
सूर्यांशु–भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ।। 7 ।।

ओं ह्रीं सकलपापकुष्टनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं ।। 7 ।।

मत्त्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद
मारभ्यते तनु–धियापि तव प्रभावात् ।

चेतो हरिष्यति सतां नलिनी–दलेषु
मुक्ता–फलद्युतिमुपैति ननूद–बिन्दुः।। 8।।

ओं ह्रीं अनेकसंकट संसारदुःख–निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 8।।

जलकुसुम सुगन्धै–रक्षतैः दीपधूपैः।
विविध–फलनिवेद्यैः–रर्चयामीह देवम्।
सुरनरवरसेव्यं दोहदानां वरेशं।
शिवसुखपदधामं प्राणिनां प्राणनाथम्।।

ओं ह्रीं अष्टदल–कमलाधिपतये श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

भक्तामर स्तोत्र

(षोडस दलकमलपूजा)

आस्तां तव स्तवनमस्त–समस्त–दोषं
त्वत्सङ्कथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि।। 9।।

ओं ह्रीं सकलमनोवांछितफलदात्रे क्लीं महाबीजाक्षर संहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 9।।

नात्यद्भुतं भुवन–भूषण भूत–नाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।। 10।।

ओं ह्रीं अर्हज्जिन–स्मरण–जिनसम्भूताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 10।।

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष–विलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।

पीत्वा पयः शशिकर–द्युति–दुग्ध–सिन्धोः
क्षारं जलं जल–निधेरसितुं क इच्छेत्।। 11।।
ओं ह्रीं सकलतुष्टि–पुष्टिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 11।।

यैः शान्त–राग–रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक–ललाम–भूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति।। 12।।
ओं ह्रीं वांछितरूपफलशक्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 12।।

वक्त्रं क्व ते सुर–नरोरग–नेत्र–हारि
निःशेष–निर्जित–जगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्क–मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डु–पलाश–कल्पम्।। 13।।
ओं ह्रीं लक्ष्मीसुख–विधायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 13।।

सम्पूर्ण–मण्डल–शशाङ्क–कला–कलाप
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर–नाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्।। 14।।
ओं ह्रीं भूतप्रेतादि–भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 14।।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि–
र्नीतं मनागपि मनो न विकार–मार्गम्।
कल्पान्त–काल–मरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रि–शिखरं चलितं कदाचित्।। 15।।

ओं ह्रीं मेरुवन्मनोवलकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 15।।

निर्धूम–वर्तिरपवर्जित तैल–पूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीःकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः।। 16।।

ओं ह्रीं त्रैलोक्य–लोक–वशङ्कराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 16।।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु–गम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर–निरुद्ध–महा–प्रभावः
सूर्यातिशायि–महिमासि मुनीन्द्र लोके।। 17।।

ओं ह्रीं पापान्धकार–निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 17।।

नित्योदयं दलितमोह–महान्धकारं
गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व–शशाङ्क–बिम्बम्।। 18।।

ओं ह्रीं चन्द्रवत्–सर्वलोकोद्योतनकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 18।।

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दु–दलितेषु तमःसु नाथ।
निष्पन्न–शालि–वन–शालिनि जीव–लोके।
कार्यं कियज्जलधरैर्जल–भार–नम्रैः।। 19।।

ओं ह्रीं सकल–कालुष्य–दोषनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 19।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरि–हरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं
नैवं तु काच शकले किरणाकुलेऽपि।। 20।।

ओं ह्रीं केवलज्ञान–प्रकाशित–लोकालोकस्वरूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 20।।

मन्ये वरं हरि–हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो–हरति नाथ भवान्तरेऽपि।। 21।।

ओं ह्रीं सर्वदोषहर–शुभदर्शनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 21।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र–रश्मिं
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।। 22।।

ओं ह्रीं अद्भुतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 22।।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस–
मादित्य वर्णममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः।। 23।।

ओं ह्रीं सहस्र–नामाधीश्वराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं।। 23।।

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माण–मीश्वर–मनन्त–मनङ्ग–केतुम्।

योगीश्वरं विदित योगमनेकमेकं
ज्ञान–स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ।। 24 ।।

ओं ह्रीं मनोवांछित–फलदायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं ।। 24 ।।

हत्वा कर्मरिपून् बहून् कटुतरान् प्राप्तं परं केवलं ।
ज्ञानं येन जिनेन मोक्षफलदं, प्राप्तं द्रुतं धर्मजम् ।।
अर्घेणात्र सुपूजयामि जिनपं श्री सोमसेनस्त्वहं ।
मुक्ति श्रीष्वभिलाषया जिन विभो ! देहि प्रभो वांछितम् ।।

ओं ह्रीं हृदयस्थित–षोडसदल–कमलाधिपतये श्री वृषभजिनाय अर्घ्यं ।

भक्तामर–स्तोत्र

(चतुर्विंशति दलकमल पूजा)

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित बुद्धि बोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवन–त्रय–शंकरत्वात् ।
धातासि धीर शिव–मार्ग–विधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ।। 25 ।।

ओं ह्रीं षड्दर्शन–पारङ्गताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।। 25 ।।

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति–हराय नाथ
तुभ्यं नमः क्षिति–तलामल–भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि–शोषणाय ।। 26 ।।

ओं ह्रीं नानादुःखविलीनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।। 26 ।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै–
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषैरुपात्तविविधाश्रय–जात–गर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ।।27।।

ओं ह्रीं सकलदोष–निर्मुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।27।।

उच्चैरशोक–तरुसंश्रितमुन्मयूख–
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त–तमो–वितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर–पार्श्ववर्ति ।। 28।।

ओं ह्रीं अशोकतरु–विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।28।।

सिंहासने मणि–मयूख–शिखा–विचित्रे
विभ्राजते तव वपु कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता–वितानं
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्र–रश्मेः ।। 29।।

ओं ह्रीं मणिमुक्ता–खचित–सिंहासन–प्रातिहार्य–युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।29।।

कुन्दावदात–चल–चामर–चारु–शोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौत–कान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क–शुचि–निर्झर–वारि–धार–
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।। 30।।

ओं ह्रीं चतुःषष्टि–चामर–प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।।30।।

छत्र–त्रयं तव विभाति शशाङ्क–कान्त–
मुच्चै स्थितं स्थगित–भानु–कर–प्रतापम् ।

मुक्ता–फल–प्रकर–जाल–विवृद्धशोभं
प्रख्यापयत्त्रि जगतः परमेश्वरत्वम् ।। 31 ।।

ओं ह्रीं क्षत्रत्रय–प्रातिहार्य–युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।। 31 ।।

गम्भीर–तार–रव–पूरित–दिग्विभाग–
स्त्रैलोक्य–लोक–शुभ–सङ्गम–भूति–दक्षः ।
सद्धर्मराज–जय–घोषण–घोषकः सन्
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ।। 32 ।।

ओं ह्रीं त्रैलोक्याज्ञाविधायिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।। 32 ।।

मन्दार–सुन्दर–नमेरु–सुपारिजात–
सन्तानकादि–कुसुमोत्कर–वृष्टि–रुद्धा ।
गन्धोद–बिन्दु–शुभ–मन्द–मरुत्प्रपाता
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ।। 33 ।।

ओं ह्रीं समस्त- पुष्पजाति–वृष्टि–प्रातिहार्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।। 33 ।।

शुम्भत्प्रभा–वलय–भूरि–विभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ति ।
प्रोद्यद्दिवाकर–निरन्तर–भूरि–संख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम–सौम्याम् ।। 34 ।।

ओं ह्रीं कोटिभास्कर–प्रभामंडित–भामण्डलप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।। 34 ।।

स्वर्गापवर्ग–गम–मार्ग–विमार्गणेष्टः
सद्धर्म–तत्व–कथनैक–पटुस्त्रिलोक्याः
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थ–सर्व
भाषा–स्वभाव–परिणाम–गुणैः–प्रयोज्यः ।। 35 ।।

ओं ह्रीं जलधर–पटलगर्जित–सर्वभाषात्मक–योजनप्रमाणदिव्यध्वनि प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 35।।

उन्निद्र–हेम–नव–पङ्कज–पुञ्ज–कान्ती
पर्युल्लसन्नख–मयूख शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।। 36।।

ओं ह्रीं पादन्यासे पद्मश्रीयुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 36।।

इत्थं यथा तव विभूतिर–भूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशन–विधौ न तथा परस्य।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रह–गणस्य विकाशिनोऽपि।। 37।।

ओं ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवशरणादि–लक्ष्मीविभूति विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 37।।

श्च्योतन्मदाविल–विलोल–कपोल–मूल
मत्त–भ्रमद्–भ्रमर–नाद–विवृद्ध–कोपम्।
ऐरावताभ–मिभ–मुद्धत–मापतन्तं
दृष्ट्वा भयंभवति नो भवदाश्रितानाम्।। 38।।

ओं ह्रीं हस्त्यादि–गर्वदुद्धर–भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 38।।

भिन्नेभ–कुम्भ–गलदुज्जवल–शोणिताक्त–
मुक्ता–फल–प्रकर–भूषित–भूमि–भागः।
बद्ध–क्रमःक्रम गतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रम–युगाचल–संश्रितं ते।। 39।।

ओं ह्रीं युगादिदेवनाम–प्रसादात् केशरिभय–विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 39।।

कल्पान्त–काल–पवनोद्धत–वन्हि–कल्पं
दावानलं ज्वलित–मुज्ज्वल–मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघित्सुमिव सम्मुखमातन्तं
त्वन्नाम–कीर्तन–जलं शमयत्यशेषम्।। 40।।

ओं ह्रीं संसाराग्नि–तापनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 40।।

रक्तेक्षणं समद–कोकिल–कण्ठ–नीलं
क्रोधोद्धतं फणिन–मुत्फण–मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम–युगेण निरस्त–शङ्क–
स्त्वन्नाम–नाग–दमनी हृदि यस्य पुंसः।। 41।।

ओं ह्रीं त्वन्नाम–नागदमनी–शक्तिसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 41।।

बल्गत्तुरङ्ग–गज–गर्जित–भीमनाद–
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकर–मयूख–शिखापविद्धं
त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ।। 42।।

ओं ह्रीं संग्राममध्ये क्षेमङ्कराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 42।।

कुन्ताग्र–भिन्न–गज–शोणित–वारिवाह–
वेगावतार–तरणातुर–योध–भीमे।
युद्धे जयं विजित–दुर्जय–जेय–पक्षा–
स्त्वत्पाद–पंकज–वनाश्रयिणो लभन्ते।। 43।।

ओं ह्रीं वनगजादि–भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 43।।

अम्भो–निधौ क्षुभित–भीषण–नक्र–चक्र–
पाठीन–पीठ–भय–दोल्वण–वाडवाग्नौ।

रंङ्गत्तरङ्ग–शिखर–स्थित–यान–पात्रा–
स्त्रासं विहाय भवतःस्मरणाद् व्रजन्ति।। 44।।

ओं ह्रीं संसाराब्धितारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 44।।

उद्भूत–भीषण–जलोदर–भार–भुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत जीविताशाः।
त्वत्पाद–पंकज–रजोमृत–दिग्ध–देहा
मर्त्या भवन्ति मकर–ध्वज–तुल्यरूपाः।। 45।।

ओं ह्रीं दाहताप–जलोदर–अष्ट–दशकुष्टसन्निपातादि–रोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 45।।

आपाद–कण्ठमुरु–श्रृङ्खल–वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगड–कोटि–निघृष्ट–जङ्घाः।
त्वन्नाम–मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगत–बन्ध–भया भवन्ति।। 46।।

ओं ह्रीं नानाविध कठिनबन्धनदूरकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 46।।

मत्तद्विपेन्द्र–मृगराजदवानलाहि–
सङ्ग्राम वारिधि–महोदर–बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमान–धीते।। 47।।

ओं ह्रीं बहुविध विघ्नविनाशनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।। 47।।

स्तोत्र–स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया रुचिर–वर्ण–विचित्र–पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ–गतामजस्रं
तं 'मानतुङ्ग'मवशा समुपैति लक्ष्मीः।। 48।।

ओं ह्रीं सकलकार्य–साधनसमर्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।48।।

नानाविघ्नहर प्रतापजनकं, संसारपारप्रदं।
संस्तुत्यं श्रीदं करोमि सततं, श्रीसोमसेनोऽप्यहम्।।
पूर्णार्घ्येण मुदा सुभव्यसुखदं, आदीश्वराख्यापरं।
हीरापण्डितसूपरोधवशतः, स्तोत्रस्य पूजाविधिम्।।49।।

ओं ह्रीं हृदयस्थिताय चतुर्विंशति–दलकमलाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।49।।

वरसुगन्ध–सुतन्दुल–पुष्पकैः, प्रवरमोदक–दीपक–धूपकैः।
फलभरै परमात्म–प्रदायकं, प्रवियजे जयदं धनदं जिनम्।। 50।।

ओं ह्रीं हृदयस्थिताय अष्टचत्वारिंशद्–दलकमलाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं।।50।।

जलगन्धाष्टभिर्द्रव्यै–र्युगादिपुरुषं यजे।
सोमसेनेन संसेव्यं, तीर्थ–सागर–चर्चितम्।।

ऋद्धि अर्घ्य

ओं ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घं।।1।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो ओहि–जिणाणं अर्घं।।2।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो परमोहि–जिणाणं अर्घं।।3।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि–जिणाणं अर्घं।।4।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि–जिणाणं अर्घं।।5।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं अर्घं।।6।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं अर्घं।।7।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो पादानुसारीणं अर्घं।।8।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोदराणं अर्घं।।9।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं अर्घं।।10।।

ओं ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय–बुद्धीणं अर्घं।। 11।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो बोहिय–बुद्धीणं अर्घ्।। 12।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमदीणं अर्घं।। 13।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं अर्घं।। 14।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं अर्घं।। 15।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं अर्घं।। 16।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग–महानिमित्त–कुशलाणं अर्घं।। 17।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो विउयण–यट्ठिपत्ताणं अर्घं। 18।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घं।। 19।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं अर्घं।। 20।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं अर्घं।। 21।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो आगास–गामिणं अर्घं।। 22।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो आसी–विसाणं अर्घं।। 23।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि–विसाणं अर्घं।। 24।।
ओं ह्रीं अर्हं णमोउग्ग–तवाणं अर्घं।। 25।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो दित्त–तवाणं अर्घं।। 26।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो तत्त–तवाणं अर्घं।। 27।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो महा–तवाणं अर्घं।। 28।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो घोर–तवाणं अर्घं।। 29।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घं।। 30।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण–परक्कमाणं अर्घं।। 31।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण–बंभचारिणं अर्घं।। 32।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं अर्घ्।। 33।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहि पत्ताणं अर्घं।। 34।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं अर्घं।। 35।।

ओं ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि–पत्ताणं अर्घं।। 36।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि–पत्ताणं अर्घं।। 37।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं अर्घं।। 38।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो वयल–वलीणं अर्घं।। 39।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घं।। 40।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो खीर–सवीणं अर्घ्ं।। 41।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवाणं अर्घं।। 42।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो महुर–सवाणं अर्घं।। 43।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो अमिय–सवाणं अर्घं।। 44।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण–महाणसाणं अर्घं।। 45।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अर्घं।। 46।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो सिद्धि–दायाणं वड्ढमाणाणं अर्घं।। 47।।
ओं ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं अर्घं।। 48।।

इसके पश्चात् निम्नलिखित मंत्र की एक माला फेरें और धूप से आहुति देवें :–

ओं ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थङ्कराय नमः स्वाहा।

भक्तामर महामण्डल पूजा जयमाल

(त्रोटक वृत्तम)

शुभदेश–शुभङ्कर–कौशलकं, पुरुपट्टन–मध्य सरोज–समं।
नृप–नाभि–नरेन्द्र–सुतं सुधियं, प्रणमामि सदा वृषभादि जिनं
कृत–कारित–मोदन–मोदधरं, मनसा वचसा शुभकार्य–परं।
दुरिता पहरं चामोद–करं, प्रणमामि सदा वृषभादि जिनं।।
तव देव सुजन्म–दिने परमं, वरनिर्मित–मङ्गल–द्रव्यशुभं।
कनकाद्रिसु–पांडुक–पीठगतिं, प्रणमामि सदा वृषभादि जिनं
व्रतभूषण–भूरि–विशेष–तनुं, करकङ्कण–कज्जल–नेत्रचणं।

मुकुटाब्ज–विराजित–चारुमुखं, प्रणमामि सदा वृषभादि–जिनं।।
ललितास्य–सुराजित–चारुमुखं, मरुदेवि–समुद्भव–जातसुखं।
सुरनाथ–सुताण्डव–नृत्यधरं, प्रणमामि सदा वृषभादिजिनं।।
वर–वस्त्र–सरोज–गजाश्वपदं, रथ–भृत्यदल चतुरङ्गजदं।
शिव–भीरु–सुभोग–सुयोगधनं, प्रणमामि सदा वृषभादिजिनं
गतराग–सुदोष–विराग–कृतिं, सुतपोबल–साधितमुक्तिगतिं।
सुख–सागर मध्य–सदानिलयं, प्रणमामि सदा वृषभादिजिनं
सु–समोसरणे रति–रोगहर, परिसदृश–युग्म–सुदिव्य–ध्वनिं।
कृत–केवलज्ञान–विकाशतनं, प्रणमामि सदा वृषभादिजिनं।।
उपदेश–सुतत्त्व–विकाशकर, कमलाकर–लक्षण–पूर्ण–भरं।
भवित्रासित–कर्म कलङ्कहरं, प्रणमामि सदा वृषभादिजिनं
जिन ! देहि सुमोक्षपदं सुखदं, घनघाति–घनाघन–वायुपदं।
परमोत्सव–कारित–जन्म–दिनं, प्रणमामि सदा वृषभादि–जिनं।।

संसार–सागरोत्तीर्णं, मोक्षसौख्य–पदप्रदं।
नमामि सोमसेनार्च्यम्, आदिनाथ जिनेश्वरम्।।

ॐ ह्रीं पूजाकर्तुः कर्म नाशनाय आगत विघ्न भय निवारणाय अर्घ्यम्।

स भवति जिनदेवः पञ्चकल्याणनाथः,
कलिल–मल–सुहर्त्ता, विश्व–विघ्नौघ–हन्ता।।
शिवपद–सुखहेतुःनाभि राजस्य सूनुः,
भव–जलनिधि–पोतो विश्वमोक्षाय नाथः।।
दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु, सुकीर्तिरस्तु,
सद्बुद्धिरस्तु धनधान्य–समृद्धि रस्तु।
आरोग्यमस्तु विजयोऽस्तु महोऽस्तु पुत्र–
पौत्राद्भवोऽस्तु तव सिद्धपति–प्रसादात्।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

शान्ति–पाठ

शान्तिजिनं शशि–निर्मल–वक्त्रं शील–गुण–व्रत–संयम–पात्रम्।
अष्टशतार्चित–लक्षण–गात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुज–नेत्रम।।

पञ्चमभीप्सित–चक्रधराणां पूजितमिन्द्र–नरेन्द्र–गणैश्च।
शान्तिकरं गण–शन्तिमभीप्सुः षोडस तीर्थकरं प्रणमामि।।

दिव्य–तरुः सुर–पुष्प सुवृष्टिदुन्दुभि़रासन–योजन घोषौ।
आतपवारण–चामर–युग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः।।

तं जगदर्चित–शन्ति–जिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं पठते परमां च।।

येऽभ्यर्चिता मुकुट–कुण्डल–हार–रत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुत–पाद–पद्माः।।

ते मे जिनाः प्रवर–वंश–जगत्प्रदीपा–।
स्तीर्थङ्कराःसततशान्तिकरा भवन्तु।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र–सामान्य–तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवाञ्जिनेन्द्रः
क्षेमं सर्व–प्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मधवा व्याधवी यान्तु नाशम्।
दुर्भिक्षं चौर–मारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलीके।
जैनेन्दं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व–सौख्य–प्रदायि।।
प्रध्वस्त घाति कर्माणः केवलज्ञान भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्ति वृषभाद्या जिनेश्वराः।।

इष्ट प्रार्थना

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः

शास्त्राभ्यासो जिनपति–नुतिः सङ्गतिःसर्वदार्यैः
सद्वृत्तानां गुण–गण–कथा दोष–वादे व मौनम्।
सर्वस्यापि प्रिय–हित–वचो भावना चात्मतत्त्वे।
सम्पद्यन्तां मम भव–भवे यावदेतेऽपवर्गः।।
तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पद–द्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाण–सम्प्राप्तिः।।
अकखर–पयत्थ–हीणं मत्ता–हीणं च जं मए भणियं।
तं खमउ णाणदेव य मज्झ वि दुक्ख–क्खयं दिंतु।।
दुक्ख–खओ कम्म–खओ समाहिमरणं च बोहि–लाहो य।
मम होउ जगद्–बंधव तव जिणवर चरण–सरणेण।।

ॐ

卐 श्री शान्तिनाथ विधान 卐

(श्री ताराचंद्र जी रिवाड़ी कृत)

प्रस्तावना

अरिहंत जिनेश्वर की अनुपम छवि, शान्तिसुधा धरके उरमें।
शिवनाथ निरञ्जन कर्मजयी बन, जाय बसे प्रभु शिवपुर में। 1।

मुनिनाथ तपोनिधि सूरि सुधी, तपलीन रहें नितही वन में।
श्रुत–ज्ञान–सुधा बरसावत हैं, गुरु पाठकवृन्द सुभव्यन में। 2।

रत्नत्रय की चिर ज्योति जगे, तप–ज्वाल में कर्मविनाश करें।
भव–भोग–शरीर विरक्त सदा, इन्द्रियसुखकी नहिं आश करें। 3।

गन्धकुटी में विराजत नाथ हैं, दिव्यध्वनि उनकी जौ खिरी।
गणराजने गूंथ के ज्ञान–प्रसून की, द्वादश अङ्ग की माल वरी। 4।

मङ्गलमय लोक जिनोत्तम हैं, मङ्गलमय सिद्ध सनातन हैं।
मङ्गलमय सूरि सुबृत धनी, मङ्गलमय पाठक के गन हैं। 5।

मङ्गलमय हैं साधु जन, ज्ञान सुधारस लीन।
जिन प्रणीत वर धर्म है, मंगलमय स्वाधीन। 6।

सब द्वीपों के मध्य में, जम्बूद्वीप अनूप।
लवण नीर–निधि सर्वतः, जहां खातिका रूप। 7।

पीछे धातिक द्वीप है, द्वितिय द्वीप श्रुतिसार।
कालोदधि है सर्वतः, परिखाके उनहार। 8।

पुष्कर नामक द्वीप है, कालोदधि के पार।
ताको आधा भाग ले, ढाई द्वीप सम्हार। 9।

ढाई द्वीप में तीन काल के, असंख्यात जिनराज।
वन्दनीय जो तीन लोक के,वन्दूं धर्म जहाज।10।

चन्द्रकलासम ज्योति मनोहर, अंग जिनेश को राजत है।
पद्म पुनीत प्रभा सम उज्जवल, देह प्रभु की विराजत है।
कन्ठ–मयूर, सुकञ्चन नीरद, तुल्य जिनेन्द्र की अंग प्रभा।
तीर्थेश्वर चौबीस अलौकिक, रूप–विमुग्ध है देव सभा।11।

दोहा – भूत भविष्यत वर्तमान के, चौबीसों जिनराज।
रत्नत्रय से भूषित जग में, अनुपम रहे विराज।12।

अरिहन्त सिद्ध त्रिलोक पूजित, धर्मध्वज आचार्य को।
मुनिवृन्द के शिक्षा–प्रदायक, पूज्य पाठक आर्य को।।
उन साधुओं को जो निरन्तर, ज्ञान ध्यान प्रवीण हैं।
तप शान्ति की शुचि साधना में, जो सदा तल्लीन हैं।13।

कर के प्रणाम त्रियोग से, मैं शान्तिनाथ विधान को।
प्रारम्भ करता हूँ बढ़ाने, भक्ति श्रद्धा ज्ञान को।।
लोक के सब गणधरों को, भक्ति श्रद्धा भाव से।
कुन्द – कुन्दादी दिगम्बर, मुनिवरों को चाव से।14।

करता प्रणाम इसीलिये कि, धर्म की ही नित विजय।
निर्विघ्न हो यह पाठ पूरा, है यही मेरी विनय।15।

दोहा – शान्तिनाथ भगवान के, गुण हैं अपरम्पार।
वाचस्पति वर्णन करें, तो भी पांय न पार।16।

माहात्म्य या फल

यह शान्तिनाथ विधान किसने, कब कहां क्यों कर किया।
फलप्राप्ति जो उसको हुई, नरभव सफल उसने किया। 1।

वृत्तान्त उसका मैं प्रसंग, सहित यहां वर्णन करूँ।
कल्याण हो, सुनकर जगत का, ध्यान यह मन में धरूँ। 2।

भरत क्षेत्र के आर्य खण्ड में, भारतभू विख्यात सुदेश।
मथुरा प्रान्त, वहां का शासक, सूर्यवंश का तिलक नरेश। 3।

राजनीति में निपुण न्यायप्रिय, वीर प्रजा का पालक था।
साम, दाम वा दण्ड भेद युत, शासन का संचालक था। 4।

एक बार जब दैवयोग से, दुर्विपाक ने किया प्रकोप।
ग्रामदेवता ने क्रोधित हो, किया उपद्रव, शान्ति–विलोप। 5।

महा भयङ्कर व्याधि विषम अति, फैलाई जब किन्नर ने।
दिन प्रतिदिन अति प्रबलवेग से, लोग लगे तब मरने। 6।

रोग प्रपीड़ित जनता, नृप ने, छोड़ी मथुरा नगरी।
काल–कृपाण लिए लख भारी, जनता भागी सगरी। 7।

शुक्ल त्रयोदशि के दिन सहसा, सेठ सुमति तंह आए।
मेघ सुवर्षा देख मनोरथ, मन में अति हर्षाए। 8।

मथुरा नगरी में प्रवेश कर, देखे नहिं नर नारी।
सूनी नगरी देख सुमति तब, मन व्याकुल भारी। 9।

देख जिनालय, पूज जिनेश्वर, मुनिनायक युग वन्दे।
दर्शन वन्दन भक्ति विनययुत, कर उर अति आनन्दे।10।

प्रश्न किया तब सेठ सुमतिने, नाथ उपाय बताएँ।
होगी शान्ति मुनीश्वर कैसे ?, व्याधिविघन नश जाएँ।11।

चारण ऋद्धी धारी मुनिवर, कहे वचन सुखदाई।
शान्तिनाथ जिन शान्ति विधायक, पूज रचों हर्षाई।12।

मन्त्र – ओं नमोऽर्हते भगवते सकलविघ्नहराय श्री शान्तिनाथाय नमः।
ओं ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्रराज के जपने से, मन शुद्ध शान्त हो जाता है।
विघ्न सभी होते विनष्ट हैं, पुण्यकोष भर जाता है। 1।

धन–सम्पत्ति अधिकार का मिलना, यह तो है साधारण बात।
उर मन्दिर में ज्ञान सूर्य का, होता उज्ज्वल दिव्य प्रभात। 2।

विधान का समय

इसका विधि विधान है भव्यो, सुनो चित्त को कर अम्लान।
सोलह दिवशी शुक्ल पक्ष में, प्रथम दिवस से करो विधान। 3।

जिनपूजा के पूर्व यन्त्र की, पूजा संस्थापन शुभ कार्य।
सहसमन्त्रका जापकरो नित, षोडशदिन तक सुविधि सुआर्य। 4।

पूजा के मङ्गल विधान में, दीप धूप फल पुष्प सुगन्ध।
भक्तिभाव युत करो समर्पित, अशुभ कर्म का होय न बन्ध। 5।

श्री शान्तिनाथ स्तवन

संसार सागर में भटकते, प्राणियों को हे प्रभो।
आप के युगचरण ही तो, शरण दे सकते विभो।।
दावाग्नि दुख–सन्ताप की, सवत्र ही तो जल रही।
मम मोह–माया ही निजातम, को यहां पर छल रही। 1।

क्रोधित भुजङ्गम के डसे, वहु प्राणियों के गात्र में।
गारुड़ी विद्या प्रशम करती, यथा क्षणमात्र में।
प्रभु आपके चरणाम्बुजों का, ध्यान करते भक्ति से।
सब विघ्न बाधाएँ विलय, होतीं निजातम शक्ति से। 2।

तप्तस्वर्ण के तुल्य आप के, दिव्यचरण का निर्मल ध्यान।
भव–सागर में पड़े प्राणियों, के सुपार हित बनता यान।।
ज्यों यामिनीके घन–तिमिर में, लुप्त भू आलोक हो।
प्रोद्यद्दिवाकर रश्मियां, करतीं प्रकाशित लोकको। 3।

जब तक नहीं होता उदय, रविरश्मि का संसार में।
तबतक कमलश्री सुप्त रहती, है सतत का सार में।।
जब तक नहीं होती कृपा, भगवान के युग चरण की।
तब तक नहीं है टूटती, जंजीर जीवन–मनण की। 4।

लोक आलोक विलोकन में, परिपूर्ण समर्थ जिनेन्द्र प्रभो।
त्रयछत्रछटा रवितुल्य अनूप, विराजित ज्ञान के पुञ्ज विभो।।
पदपङ्कज के गुणगान पुनीत से, पापपलायन हो क्षण में।
दर्पान्ध मृगेन्द्र के भीमनिनादसे, वन्य गजेन्द्र भगे रण में। 5।

प्रत्यूष बेलाके ललित उज्ज्वल, दिवाकर सा विमल।
नाथ का भामण्डलम् ज्यों, सोहता स्वर्णिम कमल।।
दिव्याङ्गनाओं के प्रफुल्लित, नयन मन को मोहता।
त्रैलोक्य के तम–तोम को, करता विदूरित सोहता। 6।

बाधारहित शाश्वत निराकुल, अन्यतम सुख सम्पदा।
नाथ के चरणाविन्दों, के समागम में सदा।।
प्राप्त करते भक्तजन हैं, भक्ति के आधार से।
आश्चर्य क्या यदि पार हों, संसार पारावार से। 7।

हे शान्तिनाथ जिनेन्द्र तव, चरणारविन्दों की कृपा।
भव दुःख से सन्तप्त जनके, हेतु बन जाती प्रपा।।
दूर होते दुःख–दारुण, नाथ की शुभभक्ति से।
ज्यो घनतिमिर है दूर होता, रविकिरण की शक्ति से। 8।

श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र के, इस संस्तवन को भाव से।
जो भव्यजन पढ़ते निरन्तर, हैं विनय सेचाव से।।
परिणाम उनके हों विमल, सब विघ्न बाधाऐं टलें।
कल्याण मंदिर के पथिक वे, मुक्ति के पथ पर चलें। 9।

विधान प्रारम्भ

स्थापना

हे शान्तिप्रभो ! हे शान्तिप्रभो, मेरे मन मन्दिर में आओ।
अघवर्ग–विनाशन–हेतु प्रभो, निज शान्त छवि शुभ दर्शाओ।। 1

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा जपने से।
भव–भोग–शरीर नश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से।। 2

नरजन्म सफल यह होता है, जब ध्यान तुम्हारा आता है।
निजरूप में लीन हुआ, प्रभु ! वह, भव–सागर से तर जाता है।। 3

ओं ह्रीं श्री सर्वकर्मबन्धनविमुक्त ! सकलविघ्नशान्तिकर ! मंगलप्रद ! पंचम चक्रेश्वर! श्रीशान्तिनाथ भगवन अत्रावतर अवतर सम्वौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं श्री सर्वकर्मबन्धनविमुक्त सकलविघ्नशान्तिकर ! द्वादशकामदेव ! श्री शान्तिनाथ भगवन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं श्री सर्वकर्मबन्धनविमुक्त ! सकलविघ्नशान्तिकर ! मंगलप्रद ! षोढष तीर्थंकर! श्री शान्तिनाथ भगवन अत्र मम सन्निहितो भव भंव वषट् सन्निधापनम्।

अष्टकम्

स्वर्णकलश में जल ले जो नित, जिनपद पूजन करते हैं।
वे निश्चय ही राजतिलक की, अतुल सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय जलम्।

केशर चन्दन अरु कपूर से, श्रीजिन चरणों का अर्चन।
करते हैं जो भव्य स्वर्ग में, सुरभित होते उनके तन।।
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय चन्दनम्।

प्रभु के चरणकमल की पूजा, निर्मल अक्षत से करते।
कामदेवसा रूप निरोगी, दीर्घ आयु जीवन धरते।।
ॐ म्रां म्रीं म्रं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अक्षतान्।

बकुल चमेली कुन्द मल्लिका, से प्रभुपद पंकज पूजन।
करते, पुष्पोत्तर विमान में, लेकर जन्म सफल जीवन।।
ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय पुष्पम्।

उज्ज्वल स्वर्णपात्र में लेकर, जो आज्यपक्व नैवेद्य विमल।
अर्पित करते प्रभुपद में वे, पाते कल्पवृक्ष के फल।।
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय नैवेद्यम्।

कर्पूर निर्मित समुज्ज्वल दीपधारा,
भगवज्जिनेन्द्र प्रभुकी शुभ आरती से।
होता विभूषित सुजन्म परत्र उसका,
कैवल्यज्योति उद्भाषित भारती से।
ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय दीपम्।

कर्पूर चन्दन विनिर्मित धूप द्वारा,
अर्हज्जिनेन्द्र प्रभुकी शुभ अर्चना से।
सौन्दर्य भूषित शरीर निरोग उनको,
मिलता अवश्य प्रभुपद वन्दना से।।
ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय धूपम्।

श्रीफल कदलीफल रसाल ले, श्रीजिनचरणों की पूजन।
मनवांछित फल दिव्य स्वर्ग के, पाते जो करते भविजन।।
ॐ खां खीं खूं खौं खः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय फलम्।

अष्टद्रव्यमय अर्घ्य विमल ले, शान्तिनाथ प्रभु का पूजन।
करते हैं जो भव्य शतेन्द्रों, से वन्दित हों दिव्यचरण।।
ॐ अ हां सि हीं आ हूं उ हौं सा हः जगदापद्विनाशनाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

जयमाल

ज्ञानरूप ओंकार नमस्ते, ह्रींमध्ये प्रभु शान्ति नमस्ते।
स्थावरांगि अरिहन्त नमस्ते, दयाधर्म परिपूर्ण नमस्ते। 1।

एकानेक स्वरूप नमस्ते, श्रीमच्चक्राधीश नमस्ते।
शान्तिदीप्ति शिवरूप नमस्ते, ज्ञानगर्भ निजरूप नमस्ते। 2।

नानाभाषाबोध नमस्ते, आशापास विहीन नमस्ते।
पावन गुनगणगीत नमस्ते, अष्टकर्म विध्वस्त नमस्ते। 3।

तीर्थङ्करपदपूत नमस्ते, पर–संकल्प -विहीन नमस्ते।
मुक्तिवधू के कन्त नमस्ते, सम्यक्चारित्रदक्ष नमस्ते। 4।

आत्मस्वभावे लीन नमस्ते, रत्नत्रय–संयुक्त नमस्ते।
आत्मबोधिपरिपूर्ण नमस्ते, इह परत्र सुखदाय नमस्ते। 5।

करुणासागर नाथ नमस्ते, वाणी विश्वहिताय नमस्ते।
शान्तिनाथ परमेश नमस्ते, तीव्रगरल हर दक्ष नमस्ते। 6।

कुरुवंशे शवतंस नमस्ते, ऋंषिचित्त हर्षितकरण नमस्ते।
कुलक्रमकारि जिनेन्द्र नमस्ते, सदा विचित्र स्वरूप नमस्ते। 7।

ह्रींबीजे वरशायि नमस्ते, धीर वीर भुवनेन्द्र नमस्ते।
विघ्नविनाशक शान्त नमस्ते, प्राणिनाथ तव नाम नमस्ते। 8।

भयहर्त्ता निर्भीक नमस्ते, दिव्यधुनी शिवरूप नमस्ते।
धर्मधुराधर धीर नमस्ते, निजचैतन्ये लीन नमस्ते। 9।

शान्ति जिनाष्टकको जो भविजन, धारे नित्य हृदय में।
सुख सम्पति ऐश्वर्य सहित हो, संशय नांहिं विजय में।10।

ओं ह्रीं जगच्छांतिकराय श्रीशान्तिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रथम बलय पूजा प्रारम्भ

(स्थापना)

हे शान्तिप्रभो ! हे शान्तिप्रभो, मेरे मन–मन्दिर में आओ।
अघवर्ग–विनाशन–हेतु प्रभो, निज शान्त छवि शुभ दर्शाओ। 1।

कर्मो के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा जपने से।
भव–भोग–शरीर विनश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से। 2।

नरजन्म सफल यह होता है, जब ध्यान तुम्हारा आता है।
निजरूपमें लीन हुआ, प्रभू ! वह, भव–सागर से तर जाता है। 3।

श्री ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त ! सकलविघ्नशान्तिकर ! पंचमचक्रेश्वर ! द्वादशकामदेव ! षोडशतीर्थंकर ! अष्टप्रातिहार्य संयुक्त ! श्री शान्तिनाथ भगवन! अत्र अवतर अवतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ! इति प्रथमवलयाष्टकोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं बिन्दु षट् स्वरम्।
हंबीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शान्तिनाथ महाम्यहम्। 1।

ओं ह्रीं अशोकतरुसत्प्रातिहार्य मण्डिताय अशोकतरुयुक्त शोभनपदप्रदाय ह्रम्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विन्दु षट् स्वरम्।
भ्रंबीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शान्तिनाथं महाम्यहम्। 2।

ओं ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभनपदप्रदाय भ्रम्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विन्दु षट् स्वरम्।
मंबीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शान्तिनाथं महाम्यहम्। 3।

ओं ह्रीं दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दिव्यध्वनिशोभनपदप्रदाय म्रम्ल्व्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विन्दु षट् स्वरम्।
रंबीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शान्तिनाथं महाम्यहम्।। 4

ओं ह्रीं चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्यमण्डिताय चामरोज्ज्वल शोभनपदप्रदाय रभ्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विन्दु षट् स्वरम्।
घंबीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शान्तिनाथं महाम्यहम्।। 5

ओं ह्रीं सिंहासनसत्प्रातिहार्य मण्डिताय सिंहासनप्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय घभ्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विन्दु षट् स्वरम्।
झंबीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शान्तिनाथं महाम्यहम्।। 6

ओं ह्रीं भामण्डलसत्प्रातिहार्य मण्डिताय भामण्डलप्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय झभ्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विन्दु षट् स्वरम्।
संबीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शान्तिनाथं महाम्यम्।। 7

ओं ह्रीं दुन्दुभिसत्प्रातिहार्यमण्डिताय दुन्दुंभिप्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय सभ्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

स्ववर्गोपगतां पीडां, क्षराग्निं विन्दु षट् स्वरम्।
खंबीजेन प्रहूः स्वघ्नं, शान्तिनाथं महाम्यम्।। 8

ओं ह्रीं छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमण्डिताय छत्रत्रयशोभनपदप्रदाय सर्वविघ्नहराय खभ्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

हभमरघझसखान् बीज, वर्णान् विधानतः।
प्रलयं यान्तु विघ्नौघाः, स्तोत्रेणार्घ्येण संयजे।।

ओं ह्रीं अष्टप्रातिहार्यसहिताय अष्टबीजमण्डनमण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय श्रीशान्तिनाथाय प्रथमबलयमध्ये पूर्णार्घ्यम्।

द्वितीय बलय पूजा प्रारम्भ

स्थापना

हे शान्तिप्रभो ! हे शान्तिप्रभो, मेरे मन–मन्दिर में आओ।
अघवर्ग–विनाशन–हेतु प्रभो, निज शान्त छवी शुभ दर्शाओ।। 1

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा जपने से।
भव–भोग–शरीर विनश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से।। 2

नरजन्म सफल यह होता है, जब ध्यान तुम्हारा आता है।
निजरूपमें लीन हुआ, प्रभु ! वह, भव–सागर से तर जाता है।। 3

ओं ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त ! सकलविघ्नशान्तिकर ! मङ्गलप्रद ! पंचमचक्रेश्वर! श्री शान्तिनाथ भगवन ! अत्रावतर अवतर सम्वौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओं ह्रीं श्री सर्वकर्मबन्धनविमुक्त सकलविघ्नशान्तिकर ! मङ्गलप्रद द्वादशकामदेव श्रीशान्तिनाथ भगवन ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त ! सकलविघ्नशान्तिकर ! मङ्गलप्रद ! षोडशतीर्थङ्कर! श्री शान्तिनाथ भगवन ! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधापनम् । इति षोडशदलात्मकद्वितीयवलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

भक्तिभावयुत प्रभुपूजन को, इन्द्र जिनालय आवें।
तीर्थंकर पदवी के कारण, श्री जिन के गुण गावें।।
श्री जिन प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा इन्द्र रचावें।
दर्शन ज्ञान अनन्त सुखामृत, बल विक्रम वे पावें।। 1

ओं ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे विदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद् वर्तमानार्हत्परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखण्डोज्झितनिदान बन्धनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अष्टकर्म से मुक्त निरञ्जन, सिद्धस्वरूपी राजें।
क्षायिकसम्यक आदि गुणोत्तम, सीमातीत विराजें।।

भूत भविष्यत् वर्तमान के, सिद्ध अनन्त निरञ्जन।
निजस्वरूप में लीन प्रभु की, करता पूजन वन्दन।।2

ओं ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद् वर्तमानसिद्धपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतर–खण्डोज्झितनिदानबन्धनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

पञ्चाचार – विभूषित गुरुवर, आतम – ज्योति जगावें।
ज्ञान तपोनिधि कर्मदलन को, ध्यान कुठार उठावें।।
शान्तिसुधाकर की शुचिशीतल, रश्मिप्रकाश प्रसारें।
संघ चतुर्विध के अधिनायक, काममहारिपु मारें।।3

ओं ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद्– वर्तमानसर्वआचार्यपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामल–तरखण्डोज्झितनिदानबन्धनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

द्वादश अङ्गविभूषित मुनिवर, पाठक साधु सुधी के।
मानविमर्दन करते निर्मद, गर्वित वादि कुधी के।।
ध्यानाध्ययन निरन्तर जिनके, शिवसाधन दर्शावें।
इष्टानिष्ट – संयोग वियोगे, हर्षविषाद न लावें।।4

ओं ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद्– वर्तमान पाठकपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामल–तरखण्डोज्झितनिदानबन्धनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

ज्ञानध्यानतप लीन निरन्तर, समता स्वादक योगी।
विषयातीत – स्वरूप जितेन्द्रिय, आतमरस के भोगी।।
ध्यानकृपाण लिये मुनियोगी, कर्म महारिपु मारें।
गुणश्रेणीयुत कर्म निर्जरा, निजगुण रूप विचारें।।5

ओं ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखण्डे भूत भविष्यद्– वर्तमानसर्वसाधुपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामल–तरखण्डोज्झितनिदानबन्धनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

पच्चीस दोषों से रहित, अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शनम्।
अर्हन्त आगम गुरुवरों का, मैं करों नित अर्चनम्।। 6

ओं ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्त्वामलतरखण्डोज्झितनिदान बन्धनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

द्वादशाङ्ग जिनेन्द्रवाणी, ज्ञान – दोष – विवर्जितम्।
सम्यग्विभूषित आत्मज्योति, को करों मैं वन्दनम्।। 7

ओं ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यग्ज्ञानामलतरखण्डोज्झितनिदानबन्धनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

गुप्तियाँ त्रय समिति पांचों, और पञ्च महाव्रतम्।
तेरह प्रकार चरित्र सम्यक्, का करों मैं पूजनम्।। 8

ओं ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यक्चारित्रामलतरखण्डोज्झितनिदानबन्धनाय कृतेज्याय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

ज्ञानावारक पञ्चप्रकृति हैं, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। 9

ओं ह्रीं ज्ञानावरणमहाबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

दर्शनावारक कर्म प्रकृति नव, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। 10

ओं ह्रीं दर्शनावरणकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

वदनीयविधि सुख दुःख द्वैविध, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। 11

ओं ह्रीं वेदनीयकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अष्टाविंशति प्रकृति मोह की, प्रभुने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। 12

ओं ह्रीं प्रचण्डमोहनीयकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

आयुकर्म की प्रकृति चार हैं, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। 13

ओं ह्रीं आयुकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

नामकर्म की प्रकृति नवति त्रय, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। 14

ओं ह्रीं नामकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

गोत्रकर्म की प्रकृति शुभाशुभ, प्रभु ने उभय विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। 15

ओं ह्रीं गोत्रकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अन्तरायविधि पंचप्रकृति हैं, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शान्तिजिनेश दया के सागर, पूजों पद अविनाशी।। 16

ओं ह्रीं अन्तरायकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

दर्शन ज्ञान चरण से भूषित, पंच परमपद पाऊँ।
शान्तिनाथ जिन के चरणों में, नितप्रति अर्घ्य चढाऊँ।। 17

ओं ह्रीं श्री पन्चपरमेष्ठिपदप्रदाय दर्शनज्ञानचारित्रकारकाय अष्टकर्मनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय द्वितीयबलयमध्ये पूर्णार्घ्यम्।

तृतीय बलय पूजा प्रारम्भ

स्थापना

हे शान्ति प्रभो ! हे शान्ति प्रभो, मेरे मन–मन्दिर में आओ।
अघवर्ग–विनाशन–हेतु प्रभो, निज शान्त छवी शुभ दर्शाओ।। 1

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा जपने से।
भव–भोग–शरीर विनश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से।। 2

नरजन्म सफल यह होता है, जब ध्यान तुम्हारा आता है।
निजरूपमें लीन हुआ, प्रभु ! वह, भव–सागर से तर जाता है।। 3

ओं ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त ! सकलविघ्नशान्तिकर ! मङ्गलप्रद ! पंचमचक्रेश्वर! श्री शान्तिनाथ भगवन ! अत्रावतर अवतर सम्वौषट् (इत्याह्माननम्)

ओं ह्रीं श्री सर्वकर्मबन्धनविमुक्त सकलविघ्नशान्तिकर ! मङ्गलप्रद द्वादशकामदेव! श्रीशान्तिनाथ भगवन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं सर्वकर्मबन्धनविमुक्त ! सकलविघ्नशान्तिकर ! मङ्गलप्रद ! षोडशतीर्थङ्कर! श्री शान्तिनाथ भगवन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् । इति तृतीयवलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

निजपरिवार सहित असुरों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 1

ओं ह्रीं श्री असुरकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित नागों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 2

ओं ह्रीं श्री नागकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित विद्युत के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 3

ओं ह्रीं श्री विद्युतकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित सुपर्ण के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 4

ओं ह्रीं श्री सुपर्णकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित पावक के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 5

ओं ह्रीं श्री अग्निकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित मारुत के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 6

ओं ह्रीं श्रीवातकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित स्तनितों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 7

ओं ह्रीं श्रीस्तनितकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित सागर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 8

ओं ह्रीं श्री उदधिकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित द्वीपों के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 9

ओं ह्रीं श्री द्वीपकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित दिक्सुर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 10

ओं ह्रीं श्रीदिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजपरिवार सहित किन्नर के, इन्द्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 11

ओं ह्रीं श्री किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

किम्पुरुषों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 12

ओं ह्रीं श्री किम्पुरुषेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

महोरगों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 13

ओं ह्रीं श्री महोरगेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

गन्धर्वोंके इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 14

ओं ह्रीं श्री गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

यक्षसुरों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 15
ओं ह्रीं श्री यक्षेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

राक्षसगण के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 16
ओं ह्रीं श्री राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

भूतसुरों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 17
ओं ह्रीं श्री भूतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

सुरपिशाच के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 18
ओं ह्रीं श्री पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

ज्योतिषियों के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 19
ओं ह्रीं श्री चन्द्रनामकेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

ज्योतिष देव–प्रतीन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 20
ओं ह्रीं श्री भास्करेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

सौधर्म स्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 21

ओं ह्रीं श्री सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

ईशानस्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 22

ओं ह्रीं श्री ईशानेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

सनतस्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 23

ओं ह्रीं श्रीसनतकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

माहेन्द्रस्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 24

ओं ह्रीं श्री माहेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

ब्रह्मस्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 25

ओं ह्रीं श्री ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

लान्तवनामा इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद–पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 26

ओं ह्रीं श्री लावन्तवेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

शुक्रस्वर्ग के इन्द्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 27
ओं ह्रीं श्री शुक्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

शतारेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 28
ओं ह्रीं श्री शतारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

आनतेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 29
ओं ह्रीं श्री आनतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

प्राणतेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 30
ओं ह्रीं श्री प्राणतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

आरणेन्द्रशुभ भाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 31
ओं ह्रीं श्री आरणेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अच्युतेन्द्र शुभभाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पदपङ्कज की, पूजा नित्य रचावें।। 32
ओं ह्रीं श्री अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

बत्तीस इन्द्रों से प्रपूजित, शान्तिनाथ जिनेश को।
परिपूर्ण अर्घ्य चढ़ाय पाऊँ, हे प्रभो ! शिवलोक को।। 33

ओं ह्रीं श्री चतुर्णिकायदेवेन्द्रपूजिताय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

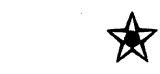

चतुर्थ बलय पूजा प्रारम्भ

(स्थापना)

हे शान्ति प्रभो ! हे शान्ति प्रभो, मेरे मन–मन्दिर में आओ।
अघवर्ग–विनाशन–हेतु प्रभो, निज शान्त छवी शुभ दर्शाओ।। 1

कर्मों के बन्धन खुलते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा जपने से।
भव–भोग–शरीर विनश्वर तब, क्षणभंगुर लगते सपने से।। 2

नरजन्म सफल यह होता है, जब ध्यान तुम्हारा आता है।
निजरूपमें लीन हुआ, प्रभु ! वह, भव–सागर से तर जाता है।। 3

ओं ह्रीं श्री सर्वकर्मबन्धनविमुक्त सकलविघ्नविनाशक ! पंचमचक्रेश्वर द्वादशकामदेव ! षोडशतीर्थङ्कर ! अष्टप्रातिहार्यसंयुक्त ! श्रीशान्तिनाथ भगवन! अत्र अवतर अवतर, अत्र तिष्ठ ठः ठः , अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्! इति् चतुर्थवलयचतुःषष्टि कोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

मनके विकार सब नाशन हेतु तेरी,
पूजा प्रशान्ति करती लगती न देरी।
हे शान्तिनाथ भगवन ! भवतापहारी,
करता प्रणाम तुमको अघनाशकारी।। 1

ओं ह्रीं मानसिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

वाचा प्रयत्नकृत दोष निवारने को,
पूजा समर्थ भवि जन्म सुधारने को।
हे शान्तिनाथ भगवन ! भवतापहारी,
करता प्रणाम तुमको अघनाशकारी।। 2

ओं ह्रीं वाचनिकपापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

कायाकुठार–कृत पाप–प्रणाश–कारी,
अर्चन सशक्त तव नाथ प्रदोषहारी।
हे शान्तिनाथ भगवन ! भव–तापहारी,
करता प्रणाम तुमको अघ–नाश–कारी।। 3

ओं ह्रीं श्री कायिकपापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

राज्यश्री, पुर, गेह, त्याग सों, होय उपद्रव भारी।
उनके नाशन हेतु प्रभु की, पूजा मैं विस्तारी।।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 4

ओं ह्रीं राजलक्ष्मीपुरराज्यगेहपद भ्रष्टोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

पूर्वोपार्जित कर्म उदय सों, घोर दरिद्य सतावें।
लक्ष्मीहीन विमोही नर नित, तीव्र महादुःख पावें।।
शान्तिनाथ के पदपंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 5

ओं ह्रीं दारिद्योद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

भीमभगन्दर कुष्ठ जलोदर, आदिक रोग घनेरे।
व्याधि उपद्रव कर्म–विनाशन, हेतु जजों पद तेरे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 6

ओं ह्रीं भीमभगन्दरगलितकुष्ठगुल्मरक्त पित्तवातकफस्फोटकाद्यु पद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

इष्टवियोग अनिष्टसंयोगे, जीव महादुःख पावे।
निजपरिणति को भूले मोही, आरत रौद्र सतावे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 7

ओं ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निजसेना वा परसेना कृत, घोर उपद्रव आवे।
धर्माराधन–ध्यान–विमुखजो, प्राणि महादुःख पावे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 8

ओं ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

नानाआयुध देह विनाशक, घोर उपद्रव आवे।
आर्तरौद्र की परिणति व्यापै, कोई न आन बचावे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 9

ओं ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

जलचर प्राणी दुष्ट नक्र औ, मत्स्य भयङ्कर भारी।
कर्म उदयजल बीच सतावें, व्याकुल हों नर नारी।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 10

ओं ह्रीं दुष्टजलचरजीवाद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

वन पर्वत के मध्य चतुष्पद, सिंह गजादिक प्रानी।
आक्रामक बन दुष्ट सतावें, होय दुःखी अज्ञानी
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 11

ओं ह्रीं व्याघ्रसिंहगजादिवनपर्वतवासिश्वापदाद्युपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

भूचर खेचर क्रूर जीव–कृत, तीव्र उपद्रव आवे।
आशापास बँधा यह प्राणी, परपरणति लपटावे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 12

ओं ह्रीं भूचरगगनचरक्रूरजीवोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

भीम भुजङ्गम वृश्चिक भीषण, घोर विषैले प्राणी।
हालाहल विष दन्त वदन से, पीड़ित हों जगप्राणी।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 13

ओं ह्रीं व्यालवृश्चिकादिविषदुर्द्धरोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

नख श्रृङ्गादिक तीक्ष्ण विषैले, जीवों के दुःख भारी।
कर्म असाता प्रेरित प्राणी, भुगते दुःख अतिभारीं।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 14

ओं ह्रीं दुष्टजीवापदकरनखोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

वन पशुओं के दाढ़ सीग नख, अति विकराल सतावें।
चंचु तुंड दन्तादिक कृत दुःख, घोर असाता लावें।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 15

ओं ह्रीं चच्चुतुण्डदाढाकण्टकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

दावानल वन मध्य भयङ्कर, खग मृग वृक्ष जलावे।
कर्म असात उदय यह प्राणी, घोर महादुःख पावे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 16

ओं ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम।

घोर प्रचण्ड पवन का दुर्जय वेग भयङ्कर आवे।
सागर मध्य प्रचण्ड लहर की, भीम भँवर लहरावे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 17

ओं ह्रीं प्रचण्डपतनोद्भवोपद्रनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

नौका पोत स्फोट उदधि में, दारुण दुःख–प्रदाता।
सागर मध्य पतन जब होवे, कर्म विपाक असाता।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 18

ओं ह्रीं नौकास्फुटितपतनोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

वन पर्वत भू–मण्डल मध्ये, भीम उपद्रव भारी
प्रभु पूजा से दूर सभी हों, जिनपद धोक हमारी।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 19

ओं ह्रीं वननगमेदिनीभयङ्करोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

सरिता सागर कूप सरोवर, वापी झील जलाशय।
इन मध्ये उपसर्ग भयङ्कर, करता कर्म दुराशय।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधूं के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 20

ओं ह्रीं नदीसरोवराब्धिकूपहदोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

विद्युत्पाद भयङ्कर वर्षा, ओला पाला भारी।
दैवविवाक अनेक उपद्रव, से पीड़ित नरनारी।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 21

ओं ह्रीं विधुत्पातादिभीमाम्बुवृष्युपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अल्प आयु कृत कर्म संयोगे, होय मरण दुःख भारी।
मन में होय प्रचण्ड विकलता, दुखिया सब संसारी।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 27

ओं ह्रीं अल्पमृत्युपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

कर्म उदय दुर्भिक्ष उपद्रव, अन्न अभाव सतावे।
जठरानल की भीषण ज्वाला, से प्राणी विलखावे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 28

ओं ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अन्तराय यह लाभ विरोधी, कर्म उदय जब आवे।
व्यापारादिक वृद्धि न होवे, धन उद्योग नशावे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 29

ओं ह्रीं व्यापारवृद्धिराहित्योपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

सम्बन्धी परिवार सगे सुत, भ्राता होय विरोधी।
घोर उपद्रव आय करें अरु, होवें कार्य–विरोधी।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 30

ओं ह्रीं बन्धुत्वोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अकुटुम्बी सन्तान बिना नित, अति संक्लेशित होवें।
मिथ्यामोह उदय से प्रेरित, प्राणी रोवें धोवें।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 31

ओं ह्रीं अकुटुम्बोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

युद्धस्थल के मध्य शत्रुदल, शस्त्र अनेक चलावें।
कर्म असात अकालमरण दुःख, जीव संसारी पावें।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 22

ओं ह्रीं संग्रामस्थलारिनिकटोपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

डाकिनी शाकिनि भूतप्रेत अरु, चोर पिशाच घनेरे।
कर्मो के परिपाक विषय सों, आय रहें नित घेरे।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 23

ओं ह्रीं डाकिनी शाकिनी भूतप्रेत पिशाचादिभयनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

उच्चाटन मोहन थम्भन कृत, घोर उपद्रव आवें।
विद्या दुष्ट अनेक प्रकारी, आकर नित सतावें।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 24

ओं ह्रीं मोहनस्तम्भनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

दुष्ट नवग्रह कृत पीड़ा जब, कर्म उदय से आवे।
अज्ञानी नर मूढ़ मिथ्यात्वी, कुगुरु कुदेव मनावें।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 25

ओं ह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

लोह शृङ्खला के दृढ़ बन्धन, अङ्ग प्रत्यङ्ग दुखावें।
पीड़ित प्राणी महादुःख पावें, हाहाकार मचावें।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 26

ओं ह्रीं शृंखलाद्युपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

पाप उदय अपकीरति भारी, आकुलता उपजावें।
मनसंताप महादुःख ज्वाला, सबसुख शान्ति जलावें।।
शान्तिनाथ के पद–पंकज जो, मन–मन्दिर में धारें।
मुक्तिवधू के कन्त जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 32

ओं ह्रीं अपकीर्त्युपद्रवनिवारकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

विश्व के कल्याण की, मङ्गलमयी शुभकामना।
ज्ञान दर्शन चरित तप हो, मोक्ष की प्रस्तावना।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 33

ओं ह्रीं सम्पूर्णकल्याणमङ्गलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

चिन्तामणि के तुल्य फलप्रद, शान्तिप्रभु की भाव से।
अर्चना मैं नित करों, सानन्द अतिशय चाव से।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 34

ओं ह्रीं चिन्तामणिसमानचिन्तितफलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

कल्पद्रुम–समफल–प्रदात्री, पाप–ताप विनाशिनी।
आराधना श्री शान्तिजिन की, सतत मंगलकारिणी।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 35

ओं ह्रीं कल्पवृक्षोपमकल्पितार्थफलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

कामधेनू तुल्य अनुपम, सब मनोरथ–सारिणी।
आनन्द दायक अर्चना, प्रभु–की, सदा हितकारिणी।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 36

ओं ह्रीं कामधेनूपमकामनापूर्णफलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

परम उज्ज्वल धर्म ध्याना–राधना की कारिणी।
बाधा–रहित प्रभू अर्चना, आनन्त–मंगल–दायनी।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 37

ओं ह्रीं परमोज्ज्वलधर्मध्यानबाधारहिताय अनवद्यबोधप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

त्रैलोक्य के सब प्राणियों को, नेत्र का उत्सव करे।
मनसिज–सदृश–सौन्दर्य पावे, जो प्रभू की पूजा करे।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 38

ओं ह्रीं कामदेवस्वरूपप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

कर्पूर चन्दन अगुरु पङ्कज, तुल्य सुरभित देह हो।
यदि शान्तिजिन की अर्चना में, अमल निश्चल नेह हो।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 39

ओं ह्रीं सुगन्धितशरीरप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

भव्याम्बुजों को नित प्रंफुल्लित, नाथ का भामण्डलम्।
रविरश्मिवत् करता प्रकाशित, शान्ति जिन–गुणमण्डलम्।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 40

ओं ह्रीं त्रैलोक्यनाथाह्लादकारकपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

क्षीरसागर की समुज्ज्वल, अमल लहरों से धवल।
देवता गाते निरन्तर, आपके हैं गुण विमल।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 41

ओं ह्रीं परमोज्ज्वलगुणसहितपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

वाचस्पती के तुल्य निर्मल, विशद–प्रतिभादायनी।
आपकी है अर्चना ज्यों, पूर्णिमा की चांदनी।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 42

ओं ह्रीं वाचस्पतिसमानपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

नवनिधि चतुर्दश रत्न का, स्वामित्व जो चक्रेश को।
खग देव नर द्वारा समर्चित, पूजता तीर्थेश को।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 43

ओं ह्रीं चक्रवर्तिपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

दोनों कुलों की शान्ति को निज, गुण विभूषित जो करें।
रमणीयता वरती उन्हें जो, शान्ति जिन पूजा करें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 44

ओं ह्रीं उभयकुलकमलविकासन सूर्यांशुसमाचरण प्रतिष्ठितगुणमण्डिताय अत्यन्त सुन्दराकृतिपुत्रवन्तिगेहमण्डनपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अर्चना शुभ भाव से, अरिहन्त की जो नित करें।
श्रावकोत्तम व्रतधरन, सद्बुद्धि को वे नर वरें।।
तीर्थेश चक्रि अनङ्ग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 45

ओं ह्रीं श्रावकसद्वृत्तकरणबुद्धिपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

शारदी नव ज्योत्स्ना –सम, कीर्ति का विस्तार हो।
प्रभु अर्चना हो मात्र शुभ, जिनके लिये आधार हो।।
तीर्थेश चक्रि अनङ्ग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 46

ओं ह्रीं परमोज्ज्वलकीर्तिपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

कल्याणकर्त्री, राजलक्ष्मी, धनदसम वे नर वरें।
जिनराज की शुभ भावना से, जो नर सतत पूजा करें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 47

ओं ह्रीं कल्याणकरराजधनदसमलक्ष्मीपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

तिर्यञ्च नारक भव कभी, जिन भक्त को मिलता नहीं।
नर देव भव शुभ लोक में, पाते प्रभू के भक्त ही।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 48

ओं ह्रीं नरकतिर्यग्गतिरहित नरसुरगतिसहित भवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

भावना षोडश विमल प्रभु, अर्चना से प्राप्त हों।
तीर्थंकर पदवी मिले, जिससे कि निश्चय आप्त हो।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 49

ओं ह्रीं षोडशकारणभावनासाधनबलपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

लोकदुर्लभ स्वप्न सोलह, नाथ माता देखती।
एकजननी पद प्रसव, निजपूज से अवलोकती।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 50

ओं ह्रीं जिनजननीतुल्यैकजननीपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

तीर्थेश वन सुरशैल पर, होता विशद अभिषेक है।
जिन अर्चना का हृदय जिनके, प्रकट विमल विवेक है।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 51

ह्रीं मेरुशिखरे स्नानयुक्तपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

संसार भोग शरीर से, निर्वेद दीक्षा–दायकम्।
नरजन्म प्रभु की अर्चना से, शुभ मिले शिवकारकम्।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 52

ओं ह्रीं सिद्धसाक्षिदीक्षाकारिभवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

जिनचन्द्र के निर्मल सुशासन, के असीम प्रभाव से।
वज्रवृषभ नाराच संहनन, प्राप्त पूजन–भाव से।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 53

ओं ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननमुक्तिप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

रत्नत्रयामृत से विभूषित, ध्यान के उपयोग से।
निर्मल यथा विख्यात हो, जिन अर्चना के योग से।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 54

ओं ह्रीं यथाख्यातरत्न त्रयाचरणयुक्तबलप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निज ध्यान में तल्लीन, आतमस्वाद अम्मृत चख सके।
तीर्थेश शान्ति जिनेश पूजन से, निजातम लख सके।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 55

ओं ह्रीं स्वात्मध्यानामृतस्वादसहितभवप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

राजती बारह सभा जिन, समवसरणे सर्वदा।
त्रैलोक्यपति की अर्चना से, प्राप्त होती सुखप्रदा।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 56

ओं ह्रीं समवसरणविभूतिपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

भगवान को दिव्य–ध्वनी, दिनरात में चतुवार हो।
जिननाथ पूजन से मिले, कैवल्य, बेड़ा पार हो।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 57

ओं ह्रीं सत्केवलज्ञानविभूतिपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अष्टकर्मों से रहित, गुण अष्ट युत परमात्मा।
निर्भय निरञ्जन सिद्धपद, पाता सुधी धर्मात्मा।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 58

ओं ह्रीं निरञ्जनपदप्रदाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

चित्त को आनन्द देती, नाथ की दिव्यार्चना।
सम्यक्तया प्रभु के पुजारी, की करें सुर वन्दना।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 59

ओं ह्रीं चिदानन्दकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

जिनके विमल मुखचन्द्र से, अम्मृत वचन अनुपम झरें।
त्रैलोक्य की सम्पत्तियाँ, प्रभु के पुजारी को वरें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 60

ओं ह्रीं वचनानन्दकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

जिननाथ के तन की अलौकिक, दिव्य परमाणु–प्रभा।
देखकर होती प्रफुल्लित, देव नर पशु की सभा।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 61

ओं ह्रीं कायानन्दकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

सर्वार्थवर्गों का प्रसाधक, नाथ मनसा चिन्तनम्।
तीर्थेश की दिव्यार्चना का, है महत् अतिशय फलम्।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 62

ओं ह्रीं अर्थवर्गसिद्धसाधनकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

प्रभु के गुणों का संस्तवन, निज वाणि–वीणा से करें।
वे काम–वर्ग–प्रसाधिनी, उत्कृष्ट महिमा को वरें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 63

ओं ह्रीं कामवर्गसाधनकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

जिननाथ पूजा से सफल, निजदेह को जो नर करें।
आश्चर्य क्या यदि मोक्ष–लक्ष्मी, को सहज ही वे वरें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 64

ओं ह्रीं मोक्षवर्गसाधनसिद्धकरणसमर्थाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

निर्लिप्त श्रीं जिनराज चौंसठ, ऋद्धियों के नाथ हैं।
झुक रहे शत इन्द्र के पद, पङ्कजों के माथ हैं।।
तीर्थेश चंक्रि अनंग पद, भूषित प्रभू की अर्चना।
श्री शान्तिनाथ जिनेश की मैं, नित करूँ आराधना।। 65

ओं ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमानाङ्गाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

शत एक विंशति तीर्थकर, जिनचन्द्र की पूजा करों।
विघ्नौघ के शान्त्यर्थ मैं, पूर्णार्घ्य चरणों में धरों।। 66

ओं ह्रीं शतैकविंशतिकोष्ठात्मकाय श्री शान्तिनाथाय अर्घ्यम्।

अरिहन्त के अतिरिक्त कोई; है नहीं जग में शरण।
संसार सागर में सुनौका, मात्र हैं प्रभु के चरण।।

इतीष्टप्रार्थनां कृत्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ओं ह्रीं अर्हंजगच्छान्तिकराय शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(जातिपुष्प या लवंग से 108 बार जाप देवें)

✦

✷ जयमाल ✷

शान्तिनाथ भगवान के, गुण हैं अपरम्पार।
निराधार संसार में, हैं सबके आधार।।
पँचम श्री चक्रीश हैं, द्वादशवें रतिनाथ।
षोडशवें तीर्थेश को, सदा नवाऊं माथ।।

जय शान्तिप्रभो चिद्रूपराज, जगजलनिधि में अद्भुत जहाज।
जय कर्मविनाशक शान्तिनाथ, जय विघ्नविनाशक शान्तिनाथ।।

गुणवारिधि जय हे शान्तिनाथ, जय मुक्तिवधू के प्राणनाथ।
जय आत्महितङ्कर शान्तिनाथ, जय कामविनाशक शान्तिनाथ।।

जय पाप क्षयङ्कर शान्तिनाथ, भुवनत्रय–कीर्तित शान्तिनाथ।
जय सम्यक्दर्शन हेतु नाथ, शिवमार्ग–विधायक शान्तिनाथ।।

जय भवगृह–अर्गल शान्तिनाथ, भवदुख–विध्वंशक शान्तिनाथ।।
जय मातृ शुभे जय शान्तिनाथ, त्रिभुवन त्राता पितु शान्तिनाथ।।

जय शान्तिनाथ शिवनाथ प्रभो! जय हित–सन्देशक नाथ विभो।
जित जन्म जरा औ मृत्यु जयी, जय रोग–शोक–हर कर्मजयी।।

शिवसुख के साधन शान्तिनाथ, भवभय के हारी शान्तिनाथ।
जय मानवली के मदमर्दक, जय शान्तिनाथ गुणगुणवर्धक।

तस्करकृतदुःख–विनाशक हे! भय भूत पिशाच विदारक हे।।
नवग्रह कृत बाधा दूर करो, व्यालादि विपति चकचूर करो।
जयभव्य–सरोज–दिवाकर हो, जयशिवसुख–पद्म–प्रभाकर हो।।

ओं ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप–पङ्क में मग्न, विश्व के हैं सब प्राणी।
मल–प्रक्षालन... हेतु, नाथ की मङ्गल वाणी।।
प्रभु–पद–पङ्कज में जलधारा, अर्पित करते जो प्राणी।।
हो निश्चय नित्य विश्व में, शान्तिसुधा वह कल्याणी।।

।। शांतये शान्तिधारा।।

श्री शान्तिनाथ भगवान को, जो पूजे मन लाय।
स्वर्गों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय।।

卐 इत्याशीर्वादः 卐

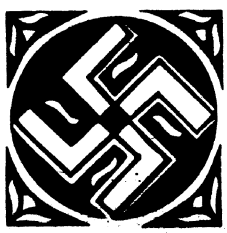

ॐ

卐 श्री वृहत् निर्वाण विधान 卐

(कविवर जगतराम जी कृत)

श्री वर्धमान निर्वाण पूजा

दोहा – त्रिशला सिद्धारथ तनुज, नाथवंश वर पाय।
महावीर जिन–चरणयुग, मोकों होहु सहाय।। 1

महावीर ने जा समै, गमन कियो शिवखेत।
सोई समय विचारकें, पूजें सुधी स्वहेत।। 2

ओं ह्रीं श्री महावीरातिवीरसन्मतिवर्धमानादिकानेकनामसंयुक्त भगवज्जिनेन्द्र अत्रावतरावतर सम्वौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(चौपाई)

मङ्गल निर्वाणक, महावीर, प्रात समै पूजो भवि धीर।
दस अतिशय जनमत जिनपाय, केवलज्ञान माहिं दसगाय।।

तिनि जिनवर प्रति चरननओर, दे जलधार जुगल करजोर।
मङ्गल निर्वाणक महावीर, प्रात समय पूजो भविधीर।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जलम्।

जिनके सुरकृत चौदह सार, ये अतिशय चौंतीस चितार।
तिन जिनवर प्रति पूजनधारि, भ्रमरलुब्ध वरचन्दन गार।। मंगल.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय चन्दनम्।

अष्ट प्रातहारजजुत देव, जिनकी करें इन्द्रशत सेव।
तिनजिनवर प्रतिमा अवलोक, लेवर शालि अखण्डितपोख।। मंगल.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षतम्।

चार अनन्त चतुष्टय सार, ये गुण छ्यालीस हैं जगतार।
श्री जिनप्रतिमा पूजों सार, ले वर सुमन विविध परकार।। मंगल.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पुष्पम्।

क्षुधातृषादि अठ–दश–दोष, हरत शिवगवर भवदधि सोस।
तिनि जिनवर प्रतिबिम्ब निहार, पूजनको भरिनेवज थार।। मंगल.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नैवेद्यम्।

लोकालोक भेद जिनगाय, जीव अजीव तत्त्व दरसाय।
तिन प्रतिबिम्ब निरख निजहेत, दीपक ले निर्मल अतिचेत।। मंगल.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय दीपम्।

मिथ्याभ्रमकर भ्रमे अनादि, जगतजीव जगमें बहु बादि।
तिनको शिवगति सार बताय, तिनप्रति धूप दशाङ्ग चढ़ाय।। मंगल.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय धूपम्।

जिनवृष उपदेशो हितकार, चलो जात अब तांई सार।
परमत खण्डन–मण्डन लोक, तिनप्रति लेफल चरणन ढोक।। मंगल.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय फलम्।

जिनके समोशरण में साध, चौदह सहश एकदश बाध।
ऐसे जगत प्रभु पद पाय, ले जलादि पूजों जिनराय।। मंगल.

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

(अडिल्ल)

पुष्पोत्तर तजि धवल, जु छट्ठ अषाढ़ की।
उत्तरफाल्गुन माहिं, बसे वर मायकी।।
अवधि अमरपति जान, रतन बरसाइयो।
कुन्दनपुर हरि आय, सु मंगल गाइयो।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

दोहा – दिवस पंचदस मास वसु, बरस पचत्तर सार।
रहे जु चौथे काल के, वीर लियो अवतार।।

(सुन्दरी छन्द)

शुक्लचैत्र चतुर्दशि के दिना, नखत उत्तराफाल्गुन सुर गना।
सजिगजेन्द्र गिरीन्द्र न्हवाइयो, लखि जिनेन्द्र सुमंगल गाइयो।।

दोहा – मृगपति का पगचिन्ह तसु, तन उतुंग कर सात।
हेमवरण जिनबिम्ब नित, पूजहुँ भव्य प्रभात।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदशीदिने जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

(अडिल्ल)

आयु बहत्तर बरस, कुंवरपद तीस जू।
सो लखि अथिर उदास, भये जगदीश जू।।
करि लौकान्तिक देव, सुथिर निज थल गये।
रचि शिविका झट नव्य, प्रभू तामें लये।।

पुरतें निकट न दूर, मनोहर बन गये।
चन्द्रकान्ति मणिमयी, शिलालखि सुर ठये।।
शिविकातें, पधराय, तहाँ सुरगण खड़े।
दुविध परिग्रह त्याग, प्रभु समरस बढ़े।।

प्राची दिशि सन्मुख, पद्मासन माँड़िके।
नमः सिद्ध कहि, पञ्चमुष्टि कच काढ़िके।।
निज आतम समदेव, सिद्ध सब साख दे।
त्र्योदश विध चारित्र, धर्‌यो अभिलाख दे।।

मगसिर मास दसें सुदि, जनम नखत परो।
ता दिन परम दिगम्बर, पद प्रभुजी धरो।।

साल विटप तर बैठि, बेर अपराहिनी।
दीक्षा गही मिलाय, शीघ्र शिव भामिनी।।

दोहा – जिन शिरकेश पवित्र अति, रतन पिटारे धार।
क्षीरोदधि पधराय हरि, निजथल गये नृतकार।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

दोहा – तन ममत्व तजि विश्वपति, शिलापट्ट वर पाय।
आरूढ़े तप धरत ही, चौथो ज्ञान उपाय।।

अजर अमर अव्यक्त जो, अजपा ताको ध्याय।
ध्यानसिद्धि के अर्थ प्रभु, अचल मेरुसम थाय।।

गुप्ति तीन गढ़ तुल्य भये तिनके महा।
संजम बख्तर तुल्य भये कहना कहा।।
कर्म–शत्रु जीतन की रुचि लागी तबै।
गुण अनेक सेना भट होत भए तबै।।

अनशनादि तप धारिजु द्वादश भाति जी।
ध्यान विषें सुविशेष शुद्धता पाय जी।।
अट्ठावीस मूलगुण अग्रेसुर कढ़े।
कर्म प्रवल अरि तिनहिं जीतने प्रभु बढ़े।।

(गीतिका छन्द)

लेश्याशुकल गजराज चढ़ि के, भूप अनुप्रेक्षा ढुके।
धाय धर्म–कृपाण गहि अरि, मोह–सेना पर झुके।।

उत्कृष्ट जिन परिणाम, कटकतनी सुरक्षा कारनै।
वर ज्ञानरूप प्रधान, अग्रेसुर कियो जगतारनै।।

(अडिल्ल)

अति विशुद्ध परिणाम सैन्यपति छाइयो।
रागादिक अरि हनन प्रबल उद्यम कियो।।
ध्यान जतन कर मूल प्रगट कर तन्त्र के।
करे चलाचल वीर जिनेश्वर सत्र के।।

अधःकरन के भाव जो प्रथमहिं भाय के।
हो परिणाम न अन्य क्षपक दिश जाय के।।
शुकल ध्यान असि प्रथम ध्याय ता करम ले।
प्रबलमोह करि घात, जाय बारम थले।।

(गीतिका छन्द)

ता थलैं दूजे शुकल बल त्रय, घातिया हनि जय लयो।
चढ़ि तेर में गुणस्थान श्रीजिन, समोसरन विभो ठयो।।
रचि कोट वेदी भूमि पर मध, थंभ तूपादिक (?) जहीं।
जोजन प्रमान जु सोभ गी, निरवार पद पूजत तहीं।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम्

करत विहार जिनेश भविक उपदेशते।
सकल संघ कर युक्त चरम तीर्थेश ते।।
नाना विध अतिशय कर युक्त प्रभू तहाँ।
आनि विराजे विपुलाचल पर्वत जहाँ।।

जहँ दिव्यधुनि प्रतिशब्द जय जय सभामण्डप भवन में।
धर्मोपदेश सो आइयो, तिन निकट निर्वानक समै।।
तब सुर असुर इन्द्र करि, अर्चित सवक र जानकें।
पावापुरी उद्यान सार, तहाँ पधारे आन कें।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम्।
इत्युच्चार्य कर्णिकायां पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(रागविलावल)

प्रकृति सात महावीर प्रभू, जिन प्रथम विदारी।
तीन आठ जे भानि के, नव छत्तीस सिधारी।।
दस में लोभ द्वादशें, सोलह तहाँ जु टारी।
त्रेसठ प्रकृति खिपाइयो, तिन जिन की बलिहारी।। 1

दोहा – सैतालिस प्रकृति हनी, कर्म घातिया वीर।
नाम तीनदश आयु त्रय, नाशि भये महावीर।। 2

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

जयमाला

दोहा – पञ्च नामधर ते सुगुरु, पावापुर वन आय।
शेष करम रिपु जीतने, शिवमग चलन उपाय।

(छन्द मात्रिक)

आये जहँ त्रिजगपति, ध्यान कीनो महा।
तृतिय पद शुकल माड़ो, सुहानो तहाँ।।
तब प्रभू दिव्यध्वनि, शब्द–रहिते भये।
अन्त के दिवस वा–की, चतुर्दश रहे।।

प्रभु गये उल्लङ्घि कर, तेर गुणस्थानतें।
चढ़ि अजोगे शुकल, तुरिये पद ध्यानतें।।
जोग सु निरोध करि, चरम–जुग समय जे।
हनि बहत्तर चरम, समय त्र्योदश जजे।।

चौद में अन्त सु अघातिया जय लई।
चेतना शक्ति वर ज्योति परगट भई।।
भांति यों अष्ट अरि कर्मदल हनि गये।
उर्ध्व जिन गमन कर शिवपुरी थिर गये।।

पक्षवर भ्रमर, कार्तिक अमाबस दिना।
स्वातिवर नखत परभात समया गिना।।
लोक के शिखर जिनदेव आरूढ़ियो।
सुख अनन्तो निरन्तर जहाँ पूरियो।।

मोह अरि बीस वसु प्रकृति जुत क्षय कियो।
प्रथम क्षायिक सम्यक्त्व गुन प्रगटियो।।
पञ्च भट सहित ज्ञानावरन चूरियो।
तब अनन्तो दुतिय ज्ञानगुन पूरियो।।

दर्शनावरण नव प्रकृति जुत दलमलो।
तब अनन्तो सुदर्शन तृतिय गुन मिलो।।
अन्तराय कराय जा पञ्च भटन जुत हनो।
तब तुरिय वीर्य गुन जिन अनन्तो बनो।।

(पद्धरी छन्द)

तेरानव भट जुत नाम मार, पंचम सूक्षम गुण प्रगट सार।
चवकटक सहितकर आयुनाश, छटवाँ अवगाहन गुन प्रकाश।।
हनि गोत्र करम को जोर ताय, सातम जु अगुरुलघु गुण उपाय।
जिन युगल वेदनी घाति पाय, गुण अष्टम अव्यावाध पाय।।

इन आदि अनन्ते गुन समाज, पायो प्रभु मुक्तिपुरी स्वराज।
तबही सुरेश बल अवधि पाय, निजसेन साज सब देव आय।।
तादिन वह पुरी प्रकाशरूप, दीपन समूह करके अनूप।
धरती अकाश सब दिशनि मांहि, दीपक माला प्रजुलित लखांहि।।

तब परमौदारिक प्रभु शरीर, मङ्गल पञ्चम लखि सुर गहीर।
शुभगन्ध पहुप आदिक मनोग, वसु द्रव्यनिकर पूजा नियोग।।

फिर चन्दन अगरादिक लियाय, तव वर उतुंगसुर सब रचाय।
जिनतन मङ्गलमय तहँ सचाय, तब अग्निकुमार सुशीश नाय।।

तिन मुकुटनि करि ज्वाला उठाय, भस्मीकृत शबसब होत तहाय।
सब सुर जय–जय कर तासु ओर, उर आनद परम सुभक्ति सोर।।

तब प्रथम इन्द्र आदिक सुराय, कर भस्म वन्दना सीस नाय।
कहते यह पुरुषोत्तम महान, बर धर्म तीर्थनायक सुजान।।
सो देखो अस्त भयो दिनेश, अब मिथ्यातम भ्रमकर प्रवेश।
ये प्रानी वृषतें विमुख होय, करके निज इच्छा मार्ग सोय।।

जगमें सु प्रवरतेंगे विशाल, इमि पश्चिम (?) सुरगण भक्तिमाल।
अपनी पवित्र लखि अमरराय, पुनिकर पूजा निजथान जाय।।
तादिनतें अब या भरत खेत, दीपावलिका प्रगटी उपेत।
प्रति वर्ष भव्य पूजा कराय, निर्वाण समय उत्सव सु पाय।।

पीछे सुनि नर नारिन समाज, कर मोदक ले परिवार साज।
अति आनन्द मङ्गल निरतसोय, क़ीनोंतिन अतिही कहसुकोय।।
ते सन्मति मति दे अरज येह, तुम करुणासागर विमल नेह।
भटके बहुकाल अनन्त बादि, तुम बिन कृपालु जगमें अनादि।।

(अडिल्ल)

या भव–वन के मांहि, बहुत दुख पाइयो।
जानो ज्ञान प्रसाद, तुमहिं तट आइयो।।

ताते कहने मांहि, कछू आवे नहीं।
वांछितार्थ पद तुम कर, पाऊँ प्रभु सही।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम्।

(गीतिका छन्द)

या भांति निर्वानक सु पूजन, समय की जो विधि कही।
सो नय प्रमाण के न्याय करि, भव्य तुम जानों सही।।
यह समय लखि जिन पूज उत्सव, करन भक्ति जु वश सही।
दुर्गतिहरण सुखहेत भवि, करिये परमरुचि कर सही।।

दोहा – तीन बरस वसुमास दिन, पंद्रह रहे सु सार।
महावीर शिवपुर गये, चौथे काल मँझार।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यम्।

निर्वाणकाण्ड विधान के बाद है –

(त्रिभङ्गी छन्द)

श्री वीर जिनेसुर, नमत सुरेसुर, वसु विधिकर जुग पद चरचं।
वहु तूर बजावें जिनगुन गावें, ध्यावें पावें मुक्तिपदं।।

इत्याशीर्वादः

ॐ ह्रीं निर्वाणमंगलमण्डितमहावीरजिनेन्द्राय नमः।

(इस मन्त्र का 108 जाप्य देना चाहिए)

वर्तमान चतुर्विंशतिजिन–निर्वाणभूमि पूजा

दोहा – मंगलकारी सर्व जिन, दाता परम चितारी।
फलद रचाकर चित्त हम, पूजत कर सिर धारि।।1

(अडिल्ल)

दीप अढ़ाई माहिं, मेरुपन सोभिते।
पंच विदेह सु भूमि, तहाँ मन मोहते।।
तिन मधि तीर्थङ्कर, मङ्गल सुखदाय जी।
रहें सदा जहाँ इन्द्र, जजें शिरनाय जी।।

(गीतिका छन्द)

शिरनाय सुरगण खग नरेश्वर, करें महोत्सव नित नये।
परिवार युत भर पुण्यकोष, प्रतच्छ लखि श्री जिन जये।।
विहरंत केवल गणधरादिक, करत वर उपदेशते।
तहँ सुनहिं अति रुचि धारि–भविजन, त्यागगृहतप करहिं ते।। 3

(अडिल्ल)

कालचतुर्थम सार, सदा वरते जहाँ।
यति श्रावकद्वय धर्म चले शाश्वत वहाँ।।
तीर्थाधिप चक्री, हलिहरि प्रतिहरि घने।
उपजे पुरुष अनूप, जहाँ शिवमग बने।। 4

दोहा – जहाँ न मिथ्यामारगी, एक धरम अरिहन्त।
इन्द्रादिक आवें जहाँ, करें भक्ति भगवन्त।। 5

भरतैरावत दश विषें, कालचक्र द्वय जोग।
तामधि जम्बूद्वीप यह, दक्षिण भरत मनोग।। 6

(अडिल्ल)

अब इस पंचमकाल, पाय इस क्षेत्र सो।
विद्यमान तीर्थङ्कर, मङ्गल नाहिं सो।।
ताते परम उछाह, सुमन बचसो रचो।
सिद्धभूमि थल पाय, हरष पूजा सुचो।। 7

वृषभनाथ जिन आदि, वीर पर्यन्त जी।
चौबिस सब इस क्षेत्र, भये भगवन्त जी।।
कल्याणक तिन सर्व, पूज्य हरि कर भये।
अब सिद्धालयमांहिं, यहां जिन पूजिये।। 8

ओं ह्रीं वर्तमानचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्राणि! अत्र अवतरतावतरत संवौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम। अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(अथाष्टकम्)

अडिल्ल – कनक कलश में छीर, उदक निरमलहि ले।
इन्द्र जजें हम शकति, नाहिं वह जल मिल।।
तृषा–निवारण–हेतु, जजों हितकरि अदा।
कैलाशादिक थान, मुकति मारग सदा।।
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः जलम्।

मलयागिरि केशर कुंकुम, जल सोहिलो।
परम सुरभि लहि भँवर, करहिं तापर किलो।।
भव आताप निवारण, कारण आनदा। कैलाशा.
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः चन्दनम्।

शशि मोती सम शालि, अखंडित वीन के।
परम सुगन्धी उज्जवल, उत्सव चीन के।।
अक्षयपद के हित जजों, जिन चरणदा।। कैलाशा.
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अक्षतम्।

सुमनस्वर्णमय सुरतरु, के सम ल्यायकें।
विविध प्रकार बनाय, सुगन्ध मिलायकें।।
मन्मथदाह निवार जजों, जिन पुण्यदा।। कैलाशा.
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पम्।

बाबरपुरी पिराक, तुरत घृत में कढ़े।
बहुत सुगन्ध लखात, हृदय आनन्द बढ़े।।
क्षुधानिवारण कंचन, थार सम्हारदा।। कैलाशा.
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः नैवेद्यम्।

मणिमय कंचन जड़ित, दीप अति सोहने।
बहु सुगन्ध नहीं धूम, लखत मनमोहने।।

तिमिरविनाशक दीपक, ले पूजों सदा।।
कैलाशादिक थान, मुकति मारन सदा।।
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः दीपम्।

चन्दन अगर कपूर, आदि दश कूटकें।
सुरभिसार अलि, मत्त जुरे कर टूटकें।।
धूप दहन में खेत, कर्म अरि हों विदा।। कैलाशा.
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः धूपम्।

खारक दाख लवंग, लायची आनिये।
श्रीफल वर बादाम, जायफल जानिये।।
ये फल दूषणरहित, मुक्ति–फल हेतदा।। कैलाशा.
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलम्।

वारि सुगन्ध सुरत्न, पहुप उरु धोयके।
दीपधूपफल वसु, विधि अर्घ सँजोयके।।
या विधि अर्घ सँजोय, स्वपर हित ज्ञानदा।। कैलाशा.
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

तत्त वितत घन सुषिर, साजि वाजिन सवै।
मङ्गलगीत उचारि, नारिनर मिल तवै।।
शुचिकर सब श्रृङ्गार, जजों विधि से तदा।। कैलाशा.
ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

गाथा – अट्ठावर्याम्म उसहो, चम्पाए वासुपुज्जजिणणाहो।
उज्जते णेमिजिणो, पावाए णिव्वुदी महावीरो।।

(अडिल्ल)

अष्टापद आदीश, ईश जगतार जी।
वासुपूज्य चम्पापुर, परम उदार जी।।

नेमिनाथ गिरनार, वीर पावापुरी।
मुक्ति गमन इन थान, नमन तिन नितकरी।।

ॐ ह्रीं यथाक्रमं सिद्धपदप्राप्तेभ्यः वासुपूज्यनेमिनाथ महावीरजिनेन्द्रभयः अ.

गाथा – वीसंतु जिणवरिंदा, अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा।
सम्मेदे निरिसिंहरे, णिव्वाणपथा णमो तेसिं।।

अडिल्ल

अजितनाथ जिन आदि, जिनेश्वर बीस जी।
अमर असुरगण जिनपद, नावत सीस जी।।
गिरि सम्मेद शिखरतें, लोक शिखर गये।
तिन जिनवर उर ध्याय, नाय शिर जय जये।। 12

ॐ ह्रीं सम्मेदाचलान्निर्वाणपदप्राप्ततीर्थङ्करेभ्यः अर्घम्।

जयमाला

दोहा – शिवथल प्रापण मास तिथि, नाम सवनि सुखकार।
वर्णन सुरभि सुलुब्धचित, भयो भ्रमर आकार।। 1

(पद्धरी छन्द)

जय ऋषभदेव कैलाशशीश, वदि माघचतुर्दशि मुक्ति ईश।
चम्पापुर द्वादश में जिनेश, भादों सुदि पंचमितिथि सुदेश।। 2

गिरनारनेमि जिन मुक्तिथान, आषाढ़ सुदी आठें महान।
पावापुरतें प्रभु वीरनाथ, कार्तिक वदि चौदश प्रणमि माथ।। 3

पुनि शिखर सम्मेद उतंग सीस, तहँ अतिपवित्र वर कूट बीस।
तिनके अब ग्रन्थ प्रमान नाम, भाषों जिन मुक्तिकरन सुठाम।। 4

जय सिद्धकूट मन सिद्धि ठाम, जिन अजित लयो शिवनारि धाम।
जय चैत्र शुकल पंचमि महेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 5

जय धवल दत्त गिरि शोभनीक, जिन संभव शिवतियवरीठीक।
जय चैत्र सुदी छठ दिन नरेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 6

जय आनंदकूट महामनोग, लहि अभिनंदन शिवनारि जोग।
जय छठ वैशाख शुकल सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 7

जय अचलनाम इक कूटसार, जिन सुमतिभये भव–उदधि पार।
जय चैत सुदी ग्यारस महेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 8

जय मोहन कूट समेद शीश, पदमप्रभ मुक्त भये महीश।
जय फागुन सुदि सातें नरेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 9

जय वर प्रभासनामा सुकूट, तहँतें सुपार्श्वप्रभु करम टूट।
जय फागुन सुदि सातें सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 10

जय ललितकूट प्रभु परम ठाम, चंद्रप्रभ लहि तहाँ मुक्तिधाम।
जय भादों सुदि सातें सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 11

जय सुप्रभकूट पूजें महेश, जय पुष्पदन्त हम हर कलेश।
जय भादोंसुदि नवमी सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 12

जय विद्युतवर शुभकूट थान, हनिशीतल प्रभु तहाँकर्ममान।
जय आश्विनसुदि एकम सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 13

जय संकुलनामा कूट तास, श्रेयांस कियो जग शीसवास।
जय श्रावणसुदि बारस तिथेस, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 14

जय वीर सुसंकुलनाम तास, लहिविमलविमल पदताहि पास।
जय सुदि अषाढ़ आठें महेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 15

जय नाम स्वयंभू कूट वेश, वरी शिवनारि अनंत जिनेश।
जय द्वादशि चैत्रसुदी सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 16

जय सीरीदत्त वर कूट जास, पंचमगति श्रीजिन धर्म पास।
जय चैत्र अमावस तहँ नरेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 17

जय शान्तप्रभासी कूट जेह, प्रभु शान्ति जगत शिवपुर वसेह।
जय ज्येष्ठ भ्रमर भू तिथि सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 18

जय कूट ज्ञानधर सरस ठौर, प्रभु कुन्थु भये त्रयभुवन मौर।
जय वदि वैशाख प्रथम दिनेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 19

जय नाटककूट समेद शीस, जय अरहनाथ हुव मुकति ईश।
जय चैत्र अमावस तिथि सुदेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 20

जय संवलकूट पवित्र थान, हनि मल्लि मल्ल कमन अमान।
जय फाल्गुन सुदि पंचमि प्रवेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 21

जय निर्जरकूट पवित्र गाय, मुनि सुव्रत मुक्ति.वधू रमाय।
फाल्गुन वदि बारस सोदिनेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 22

यह कूट मित्रधर परमठाम, नमिनाथ पधारे मुक्ति धाम।
जय सुदि वैशाख चतुर्दशेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 23.

जय कूट सुवर्ण सुभद्र नाम, प्रभुपारस तजि सब जगतकाम।
जय श्रावण सुदि सातें खगेश, सम्मेद शिखर आये सुरेश।। 24

शिवगमन समय इनको बखान, अनुक्रम लखि अंकहि नाम जान।
जिन प्रथम द्वतिय चौथे गुणेश, पंचम सप्तम अष्टम जिनेश।। 25

एकादश दशम जिनेन्द्र देव, पूर्वान्ह समय शिव मार्ग लेव।
पुनि बारस तेरम चौदमीस, षोडस सत्रम उनईस बीस।। 26

वावीसम तेवीसम जिनेश, किये निशासमय शिव में प्रवेश।
तीजे नवमें छठवें जिनुक्त, ये दिनके पिछले पहर मुक्त।। 27

जय पंद्रम जिनजु अठारमेय, इकईसम वीर जिनेश सेय।
इनकी अरुणोदय बेलसार, जिन मुक्ति वधू सँग मिलन कार।। 28

जय ऋषभ नेमि अरुवासुपूज्य, पदमासन शिवलहि जगतपूज्य।
अवशेष ऊर्ध्व आसन प्रवीन, निर्वाण पुरी प्रति गमन कीन।। 29

(सोरठा)

मोह प्रबल गढ़ तोर, सकल करम रिपु मारियो।
लोकशिखर की ओर, गमन कियो अविचल भये।। 30

ॐ ह्रीं वर्तमानकालसम्बन्धितचतुर्विंशतिजिनेन्द्राय नमः।

(108 बार जाप देना)

❀

प्रत्येक निर्वाण पूजा

दोहा – तीर्थङ्कर भगवान के, वन्दों पञ्च कल्यान।
अतिशय ठाम मनोगसव, वन्दों शिर धरि ध्यान।।

ढार (ते साधु मेरे उर वसो)

साधु जहाँ निजध्यान धरि, पावें सु केवल ज्ञान।
वन्दों सुठौर प्रशस्त जो, तीर्थ प्रधान जहान।।
जा थान सों केवलपुरी, निर्वाण पहुँचे जान।
पूजों सु थान पुनीत जो, जा सम सु थान न आन।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकाल–सम्बन्धि–जिनेन्द्राद्यसंख्यातमनुयः अत्र अवतरतावतरत संवौषट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । । । । सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक (ढार कार्तिक की)

प्रानी उज्जवल जल मुनिचित्त सौ, भूस्पर्श बिना करधार हो।
प्रानी सुवरण घट भर ल्याइये, जिन मुनिगण पूजन कार हो।।

प्रानी सिद्ध–भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मङ्गल ठाम हो।
भवि परम उछाह सुधार कें, जिन मुनिपद पूजन कार हो।।
ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः जलम्।

प्रानी चन्दन सरसम शीतलो, वर केशर कुंकुम गार हो।
प्रानी भवआताप निवारिकें, जिन मुनिगण पूजन कार हो।। प्रा.
ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः चन्दनम्।

प्रानी कुन्दकलीसम शालि ले, अरु बीन अखंडित थार हो।
प्रानी श्रेष्ठ अखैपद कारने, जिन मुनिगण पूजन कार हो।। प्रा.
ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः अक्षतम्।

प्रानी परम सुगन्धी फूल ले, पुनि परख प्रछाल सो आन हो।
प्रानी कामदहन के कारने, जिन मुनिगण पूजन कार हो।। प्रा.
ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः पुष्पम्।

प्रानी मोदक खाजे आदि जे, पकवान विविध मनहार हो।
प्रानी कञ्चन थार संजोयके, जिन मुनिगण पूजन कार हो।। प्रा.
ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः नैवेद्यम्।

प्रानी दीपक जोति सुहावनी, जिमि रतन अमोलक सार हो।
प्रानीकर धरि परम उछाहसों, जिन मुनिगण पूजन कार हो।। प्रा.
ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः दीपम्।

प्रानी गंध सहित वर धूप ले, पावक मँह खेवत सार हो।
प्रानी अशुभ करम अरिजारने, जिनमुनिगण पूजन कार हो।। प्रा.
ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः धूपम्।

प्रानी दाख लवंग सु लायची, पिस्तादिक आम अनार हो।
प्रानी अजर अमरपद कारने, जिन मुनिगण पूजन कार हो।। प्रा.
ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः फलम्।

प्रानी जल फलादि वसु द्रव्यले, कर कनक रकेवी धार हो।
प्रानी जिनवांक्षक जिन जोयकें, जिन मुनिगण पूजन कार हो।। प्रा.

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

सोरठा – उत्तम भाव उपाय, श्री जिन तीरथ वन्दना।
कीजे मन वच काय, नय प्रमाण के न्याय कर।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

अथ प्रत्येकार्घ्य

गाथा – वरदत्तो य वरंगो, सायरदत्तो य तारवरणयरे।
आहुट्टयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(गीतिका छन्द)

वरदत्त और वरङ्ग यतिवर, और सायरदत्त जी।
इन आदि साड़े तीन कोड़ी, मुनी हर दुखसत्त जी।।
तारबर नगर समीपतें वसु, कर्महर शिवपद लयो।
जल आदि अर्घ बनाय नित, उर धार हम पूजन ठयो।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवरदत्त–वराङ्गकुमारसायरदत्तादिपञ्चाशल्लक्षकोटित्रयमुनीनां निर्वाणास्पदश्रीतारंगासिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – णेमिसामि पज्जण्णो, संबुकुमारो तहेव अणुरुद्धो।
बाहत्तरि कोडीओ, उज्जन्ते सत्तसया सिद्धा।।

(गीतिका छन्द)

श्रीनेमिनाथ प्रद्युम्न जी अरु, सम्बुकुमार दयाल जी।
अनुरुद्ध मुनि इत्यादि जे, षट्–काय के रखपाल जी।।
सातसैं बहत्तरकोडि मुनि, गिरनार तें शिवपद लयो।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर धारि हम पूजन ठयो।।2

ॐ ह्रीं श्रीं नेमीनाथ प्रद्युम्न–शम्बुकुमारानुरुद्धादिमुनीनां सप्तशतकोत्तर–द्वासप्ततिकोटिसंख्यानां मुक्तिस्थानेभ्यः श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – रामसुदा वेण्णिजणा, लाडणारिदाण पंचकोडीओ।
पावागढ़वरसिंहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

जुगल रामसुत कर्मनि घात, लाड देश नृप आदि विख्यात।
पांच कोड़ि पावागढ़ शीश, मुकति गये वन्दों तिन ईश।।3

ॐ ह्रीं श्रीरामचन्द्रस्य लाडनरेन्द्रपुत्रयादिमुनीनां पञ्चकोटिप्रमितानां निर्वाणास्यपदेभ्यः श्रीपावागढ़ सिद्धिक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – पंडुसुआ तिण्णिजणा, दविडणारिदाण अट्ठकोडीओ।
सेत्तुजयधिरिसिंहरे, णिव्वाण गया णमों तेसिं।।

(छन्द मात्रा 20)

पाण्डुसुत तीन नृप सो, देश द्राविड़ तने।
आदि वसु कोडि मुनि तरणतारण भने।।
शीश सेत्तु ञ्जयगिरि–तें परमपद लयो।
तिनहिं हम मन वचन, कर सु पूजन ठयो।।4

ॐ ह्रीं श्रीयुधिष्ठर–भीमार्जु नादिमुनीनां वसुकोटिप्रमितानां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री शत्रुञ्जयसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – सत्ता जे बलभद्दा, जदुवणारिदाण अट्ठकोडीओ।
गजपंथे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(छन्द मात्रा 20)

सात वल भद्र अरु, नृपति जदुवंशिये।
आदि वसु कोड़ि मुनि,करम विध्वंसिये।
शीस गजपन्थगिरि–तें परमपद लयो।
तिनहिं हम मन–वचन, काय कर सिर नयो।।5

ॐ ह्रीं श्री वलभद्रादिवसुकोटिप्रमितमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री गजपन्थ–सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – राम हणू सुग्गीओ, गव्यगवाक्खो य णीलमहाणीलो।
णवणवदीकोडीओ, तुंगीगिरि णिव्वुदे वन्दे।।

(ढार भरथरी को)

रामहनू सुग्रीवजी, अरुगवयगवाख्य नील अवर महानील जी।
इन आदिक दक्ष, तेगुरु पूजों भावसों जी।।
निन्यानवे कोडीउ, तुङ्गीगिरि शिवपद लेइउ।
तिनको कर जोड़ जी, ते गुरु पूजों भाव सों जी।। 6

ॐ ह्रीं श्रीराम – हनुमन्तकुमार – सुग्रीव – सुडील – गव – गवाख्यनील – महानील–कुमारादि–नवनवति–कोटि–प्रमितमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्रीमागीतुंगी–सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – णंगाणंगकुमारा, कोडीपञ्चद्धमुणिवरा सहिया।
सुवणागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

नङ्गानङ्ग कुँवर जुग भास, पांच कोड़ि अरु लाख पचास।
सोनागिरि चड़ि लहि भवतीर, तिनहिं नमन हम करत सुधीर।।

ॐ ह्रीं श्रीनंगानंगकुमारादिसार्धपञ्चकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री सोना गिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – दहमुहरायस्स सुवा, कोडीपञ्चद्धमुणिवरा सहिया।
रेवाउहयतडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(चौपाई)

दसमुखराय तने सुत और, साड़े पांच कोड़ि मुनि जोर।
रेवानदी उभय तट पाय, मुक्ति गये वन्दों शिरनाय।।

ॐ ह्रीं श्री रावणपुत्रादिसार्धपञ्चकोटि–प्रमितानां–मुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्रीरेवारोधोभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्य अर्घ्यम्।

गाथा – रेवाणइए तीरे, पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे।
दो चक्की दह कप्पे, आहुट्टयकोडिणिव्वुदे वंदे।।

ढार "ते साुध मेरे उर बसो"

रेवानदी तट भाग पश्चिम, सिद्धिवर तहँ कूट।
दो चक्रवर्ति अनङ्ग दस, तहँते करम अरि छूट।।

इन आदि साड़े तीन कोड़ि, मुनीश शिवपद पाय।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उरधार मङ्गल गाय।।

ॐ ह्रीं श्रीचक्रवर्तिद्वयकामदेवदशकादिसार्धत्रय–कोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः रेवानदीपश्चिमदिग्भागस्थ–सिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – बडवाणीवरणयरे, दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिंहरे।
इन्दजीद कुम्भयणो, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(चौपाई)

बड़वानी बड़नयर सुहाई, दक्षिण भाग चूलगिरि गाई।
इन्द्रजीत घटकर्ण तहाँ ते, मुक्ति गये हम नमत यहाँ ते।।

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रजीतकुम्भकर्णयो निर्वाणास्पदेभ्यः बड़वानीबड़नगर ग्रामयो दक्षिणदिग्भास्थचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – पावागिरिवरसिहरे, सुवण्णभद्दाइ मुणिवरा चउरो।
चेलणाणईतडम्मे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(गीतिका छन्द)

वरनगर निकट उत्तंग परवत, नाम पावागिरि परो।
ताके समीप नदी जु चेलना, नाम तट ताको धरो।।
वर ध्यान मुनिवर चार सुवरण, भद्र आदि महान जो।
लहि मुक्तिथान अनन्तसुख, तिनको त्रिकाल प्रणाम जो।। 11

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णभद्रादिचतुर्णा मुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः पावागिरिशिख रेभ्यः अथवा चेलनानदीतटेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – फलहोड़ी वरग्रामे, पच्छिमभायम्मि द्रोणगिरिसिहरे।
गुरुदत्ताइमुणिदा, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(ढार परमादी की)

फलहोड़ी वर ग्राम, पश्चिम दिशि के माहीं।
द्रोणगिरीवर नाम, पर्वत के सिर तांहीं।।

गुरुदत्तादि मुनीश, पञ्चमगति तहँ पाई।
तिनि मुनिकों कर जोर, पूजत अर्घ बनाई।। 12

ॐ ह्रीं श्री गुरुदत्तानिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री फलहोड़ीबड़ग्राम पश्चिम दिग्भागस्थद्रोणगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – णायकुयारमुणिदो, बालि महाबालि छेय अच्छेया।
अट्ठावय गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(ढार परमादी की)

नागकुमार मुनीन्द्र, बाल महाबाल जी।
छेद अभेद ऋषीन्द्र, तिनगुन–माल सुधार जी।।
गिरि कैलाश महान, जु शिखरतें परनी।
शिविरमणी सुखकार, वन्दन तिननित करनी।।

ॐ ह्रीं श्रीबाल–महाबाल–नागकुमारादिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः श्री कैलाशगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – अच्चलपुर वरणयरे, ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे।
सोहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(पद्धरी छन्द)

अचलापुर की दिशि ईशान, गिरिमेरु शिखर धर परम ध्यान।
आहूठकोड़ि मुनि मोक्ष पाय, तिनकों, त्रिकाल हम शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री सार्धत्रयकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः अचलापुरग्रामस्य ईशान दिग्भागस्थ श्री मुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – वसस्थलवरणियरे, पच्छिमभायम्मिकुंथुगिरिसिहरे।
कुलदेसभूसणमुणी, णिव्वाणगयाणमो तेसिं।।

(ढार जौगी रासा की)

वनसथलपुर निकट मनोहर, पच्छिम भाग दिशाने।
नाम कुन्थुगिरि शिखर तहाँ पर, करम कुलाचल भाने।।

कुलभूषण दिशभूषण स्वामी, वेश दिगम्बर धारी।
योगनिरोध परमपद पायो, तिनहिं प्रणाम हमारी।।

ॐ ह्रीं श्रीकुलभूषण–देशभूषणमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः वंशस्थलगिरिपश्चिम–दिग्भागस्थकुन्थलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – जसरहरायस्य सुआ, पंचसयाइं कलिंगदेसम्मि।
कोडिशिलाकोडिमुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं।

(सुन्दरी छन्द)

नृप यशोधर के सुत पांच सौ, सरस देश कलिंग विषें सु जे।
रूचिर कोटिशिला मुनिकोटि जे, गये मुक्ति तिन्हें कर जोड़ जें।।

ॐ ह्रीं श्री यशोधरपुत्रस्य कलिङ्गदेशेशीयपञ्चशतकभूपत्यादिकोटिप्रमित–मुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः कोटिशिलासिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – पासस्स समवसरणे, सहिया वरदत्त मुणिवरा पंच।
रेस्सिदीगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

अडिल्ल

समोसरण वर सहित, पार्श्वजिनदेव जी।
रेसन्दीगिरि पर्वत, आये देव जी।।
श्री वरदत्त आदि मुनि, राज तहां गये।
निर्वानक ते साध, पूज्य त्रयजग भये।।

ॐ ह्रीं श्री वरदत्तादिपञ्चर्षीश्वराणां निर्वाणास्पदेभ्यः श्रीरेशन्दीगिरि (नयनागिरि) सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

(चौपाई)

निःबृति जीवन जेह प्रमान, चतुरवीस जिन आदि बखान।
दौसै साड़े चौदा कोड़ि, द्वादश शतक इक्यासी जोड़ि।।
और असंख्य परमऋषिराज, लोकशिखर लहि तजि जगकाज।
इसही भरतक्षेत्रतें वीर, तिनहिं चितारि जजत हम धीर।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करादिद्वादशशतैकाशीप्युत्तरद्विशतसार्धचतुर्दशकोटि–मुख्यमुनीनामन्येषां चासंख्यातमुनिवराणां निर्वाणास्पदेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

(सुन्दरी छन्द)

सरस गाथन के अनुसार जी, परम महालघु बरननकार जी।
अवरजिन शासन अनुसारजे, मुनिसमूह जजों उर धार जे।।
दोहा – पाटिलपुर के निकट तें, सेठ सुदर्शन सार।
पायो अविचल ठाम जहँ, सुख अनन्त अविकार।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनश्रेष्ठिनः निर्वाणास्पदेभ्यः पाटिलपुत्रस्थारामसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

(अडिल्ल)

जलगत थलगत सरित उदधिगत जानिये।
परवतगत सिद्धनि के, थोक प्रमानिये।।
कुल गिरिवर गत नाम, कुधर गत जानिये।
कंचनगिरि गत जे, शिवलोक विषें ठये।।
कुन्ड–द्रहनि गत, वन उपवन गत सार ये।
गिरि गर्भनतें गत भव, एक सिधारये।।
सब नरथल तें, शिवपद पायो सार जू।
सिद्धसमूह चितार जजों, उर धार जू।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वक्षेत्रसम्बन्ध्यनेकमुनिवराणां सिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

श्री अतिशय क्षेत्र पूजा

गाथा – पासं तह अहिणंदण, णायछहिं मंगलाउरे वंदे।
अस्सारम्मे पट्टणि, मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि।।

(गीतिका छन्द)

श्री पार्श्वनाथ जिनेश को जिमि, त्योंहि अभिनन्दनहिं को।
आयो समवसृत मंगलापुर, रम्यता कवि कहिय को।।

तातें उभै जिन मंगलापुर, बंदि मन वच तन तहाँ।
आशारमे पट्टन विषें समव–सरण मुनि सुव्रत जहाँ।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथभिनन्दनयोः समवसरणास्पदङ्गलापुरक्षेत्राय, मुनिसुव्रतस्य समवसरणास्पदाशारम्यपट्टनक्षेत्राय अर्घ्यम।

गाथा – बाहुबलि तह बदंमि, पोयणपूरत्थिणापुरं बंदे।
संती कुंथव अरिहो, वाराणसिए सुपासपासं च।।

(ढाल सीमन्धर जी की वन्दना की)

पोदनपुर बाहूवली वंदामी हो, शांति कुन्थु अरनाथ।
हस्तिनापुर तीन जिन वंदामी हो, अष्टांगै नय माथ।।
पुनिनगर वाराणसि विषैं हो, जिन पारस और सुपार्श्व जी।
वंदहु त्रिविध त्रिकाल भव हो, हरहु पीर कृपाल जी।।
भगवान ईश्वर सुगत विष्णु, श्रीजिन विपुल अपार जी।
जिननाम इन्द्र धरणेन्द्र चक्री, भक्ति करहिं महान जी।।

ॐ ह्रीं बाहुबलिचरणाश्रितपोदनपुराय, शान्तिकुन्थ्वरहचरणस्पृष्टहस्तिनागपुराय, सुपार्श्वपार्श्वपदाश्रितवाराणसीक्षेत्राय अर्घ्यम्।

गाथा – महराये अहिछित्रे, वीरं पासं तहेव वंदामि।
जंबुमुणिंदो वंदे, णिव्वुइपतोबि जंबुवणगहणे।।

(पद्धरी छन्द)

मथुरा अहिक्षेत्र महाविशाल, महावीर पार्श्व वन्दों त्रिकाल।
जामुनके घन तहँ वनसुठान, शिवपाय जम्बु मुनिवर प्रमान।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथमहावीरचरणस्पृस्टमथुराहिक्षेत्रेभ्यः जम्बुनाम्नोऽन्तिमकेवलिनो निर्वाणास्पदक्षेत्राय मथुरानिकटे यमुनावनाय च अर्घ्यम्।

गाथा – पञ्चकल्लाणठाणइं, जाणवि संजादमच्चलोयम्मि।
मणवयकायसुद्धी, सव्वे सिरसा णमंसामि।।

(चौपाई)

इस वर मनुष लोक के मांहि, पञ्च कल्याण ठाम जे पाहिं।
सर्व तीर्थ मन वचतन ध्याय, ते थल पूजों अर्घ बनाय।।

ॐ हीं अधद्वितीयद्वीपेषु सप्तत्युत्तरशतार्यक्षेत्रेषु यानि यानि पञ्चकल्लयाणक–संयुक्तस्थानानि तेभ्यः सर्वेभ्यः अर्घ्यम्।

गाथा – अग्गलदेवं वंदमि, वरणयरे णिंयडकुंडली वंदे।
पास सिवपुरि वंदमि, होलगिरि संखदेवम्मि।।

(भुजङ्गी छन्द)

वरनगरतीऊनकुंडन विषैं, अग्गलदेव श्रीआदि देवानके थान हैं।
तिनहिंपग बंदिअरु पार्श्वजी, वंदिपुनि शिवपुरविषैं बंदिजोर हाथ हैं।
और होल्लयगिरि नाम पर्वतजहाँ, सङ्खदेवम्मि कहिये जगन्नाथ हैं।
सङ्खवर चिन्हसंजुक्त श्रीनेमि प्रभूतिनहिं पगबंदिकर जोर जुगहाथ हैं।।

ॐ हीं आदिनाथपदांकितवरनगरक्षेत्राय, पार्श्वनाथपदाश्रितशिवपुरक्षेत्राय शङ्खचिन्हसंयुक्तनेमिनाथचरणस्पृष्टहोलागिरिक्षेत्राय अर्घ्यम्।

गाथा – गोम्मटदेवं वंदमि, पञ्चसयं धणुहदेहउच्चतं।
देवा कुंडति बुट्टी, केसरिकुसुमाण तस्स उबरिम्मि।।

(चौपाई छन्द)

गोम्मटदेवं शरीर ऊँचाई, धनुष पाँच सौ, सुर बरसाई।
ऊपर केशर कुसुम महान, बंदो तिनहिं जोर जुग पान।।

ॐ हीं पञ्चविंशत्युत्तर–पञ्चशतधनुः कायविराजितगोम्मटदेवपदाश्रित–गोम्मटक्षेत्राय अर्घ्यम्।

गाथा – णिव्वाणठाण जाणिवि, अइसयठाणाणि अइसएसहिया।
संजादमिच्चलोए, सव्वे सिरसा णमस्सामि।।

सोरठा– जो निर्वान सु ठाम, सुन्दर महा मनोग जे।
पुनि अतिशय जुत ठाम, मध्यलोक तीरथ यजे।।

ॐ हीं अस्मिन् मर्त्यलोके यानि निर्वाणक्षेत्राणि अतिशयक्षेत्राणि च सञ्जा–तानि तेभ्यः सर्वेभ्यः अर्घ्यम्।

पाँच प्रकार के केवलियों की अर्चना

सर्वज्ञ विश्वपदार्थ ज्ञायक, समोसरन जो अवनि तैं।
चउकाल अथवा इन्द्र गणधर, सभानायक प्रसन तैं।।
उचरन्त दिव्यध्वनि अनक्षर, आदि अतिशय जहँ घने।
सातिशय केवलि श्रीजिनेश्वर, तिनहिं पूजें हित तने।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनसुखवीर्याद्यनन्तगुणमण्डितेभ्यः शातिशयकेवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम्।

(ढाल जोगीरासा की)

थिति उतकृष्टी कोटि पूर्व में, आठ बरस घट भाई।
बन्ध प्रकृति जे सर्वनाशि इक, सातावेदनि पाई।।
सत्त्व प्रकृति पच्चासी को भनि, उदय बियालिस धारी।
लेश्या शुकल ध्यान पद तीजो, परमानंद पदकारी।।
आठ लाख पुनि सहस अठानवे, पाँचसै दोय बखाने।
हैं उत्कृष्ट सजोग केवली, तेरहवें गुण ठाने।।
जहँ नव क्षायिकलब्धि अधिक हों, दोष अठारह भाने।
सुरकृत गन्धकुटी निर अतिशय, केवलि जिन सो ठाने।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाद्यनन्तगुणमण्डितनिरतिशय केवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम्।

(गीतिका छन्द)

सुरनरपशु करके तथा, स्वमेव ही प्रापत भयो।
अतिघोर वीर महा उपद्रव, जीत केवलि–पद ठयो।।
इक समय में इक बार ही लखि, सकल लोक अलोकने।
उपसर्ग–केवलि चरम–तन धर, तिनहिं हम पूजन ठने।।

ॐ ह्री उपसर्गप्राप्तकेवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम्।

उपसर्ग दुर्धर पाय अन्तमुहूर्त में कर्म घातिया।
कर अन्त केवलज्ञान ले पुनि, शेष कर्म विनाशिया।।

लहि मुक्ति ज्ञानै अन्तकृत–केवलि परमगुरु गुन भजें।
जे एक तीर्थङ्कर समय जो, होंय दश दश जिन जजें।।
ॐ ह्रीं अन्तःकृत्केवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम्।

(गीतिका छन्द)

जे ज्ञान पञ्चम धारि, पै उपदेश प्रभु नाहीं करें।
ते मूककेवलि जानि तिन, पूजन सकल भव अघ हरें।।
यह कथन 'सामायिक सुपाटी, देख टीका के विषें।
पुनि और जैन विशेष श्रुत कर, ठीक बुधि इहठा लिखें।।
ॐ ह्रीं मूककेवलिजिनेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाला

दोहा – पन परमेष्ठी, जिनगिरा, रत्नत्रय वृष येहि।
आचार्यदिक मुनि सबै, इन सबको प्रणमेहि।।
ये पद सर्व प्रकार ही, पूजित लोक–मँझार।
इनका विनय विचार कर, पुनि जयमाल उचार।।

()पद्धरी छन्द

नित नमों परमगुरु आत्मवन्त, जे मूलोत्तर गुण धरण सन्त।
बाबीस परीषह सहत शूर, गिरिशिर तरुतल सरतीर पूर।।
लखिजगत अथिर निज निंदमूल, सुखदुख तृणधन अरि मित्रतूल।
निज आतमलीन विरक्त देह, जे मुक्ति–वधू प्रतिधर सनेह।।

जे दोविध संयम धरणधीर, जे द्वादश विधतप तपत वीर।
जे त्र्योदश विध चारित्र धारि, ते साधु नमों उर गुण चितारि।।
जे मास दोय चव षट प्रजन्त, केश लोंच करें निजकर महंत।
जिनके ब्रत मंत्रनतें सु न्हान, जे धर्म शुकल ध्यावत सुध्यान।।

जे शास्त्र कमण्डलु मोरपिच्छ, महाकोमल तार खुली जुतुच्छ।
लघुमूल्य शरद लागे न जास, संयम कारण राखें जु पास।।
जे षटरस त्याग करें अहार, उपशान्त क्षुधा वृषकाज सार।
षट् आवश्यक संजम सुपक्ष, वैयावृत पालन प्रानरक्ष।।

सिर नाभि प्रमान न द्वार जेह, नहिं करत प्रवेश गृहस्थ–गेह।
जे अन्तराय मल दोष टार, इकवार असन पख मासकार।।
जे करणहेतु ना अशन लेत, बलवृद्धि न काज न स्वाद हेत।
तनुवर्धन काज न देहकान्ति, नहिं आयुवर्धन सदा जु शान्ति।।

लखि अति उपसर्ग दयाअभाव, अति रोगविषें नहिं अशन चाव।
ब्रह्मचर्यभाव सन्यास माँहि, इन कारन लघुभोजन कराहिं।।
जे वीरासन खड्गासनीय, धनुषासन वज्रासन मुनीय।
गोदोहन पद्मासन जु वीर, नानाविधि आसन धरनधीर।।

जिनके पनविधि स्वाध्याय चित्त, स्वाध्याय वाचना माँहि नित्त।
जे चार सुधाता पाय वेश, स्वाध्याय करें सब ही मुनेश।।
कर पग जलतें शुचिकर प्रक्षाल, घर पद्मासन कर नमस्कार।
जे शास्त्र उच्चार करें हमेश, मरयादापूर्व सवै मुनेश।।

जे अवधि तुरियधर चरमज्ञान, इन धारक मुनि कहिये महान।
पुनि राजऋषीश्वर ये चितार, अक्षीण विक्रिया ऋद्धि धार।।
जे बुद्धि–औषधी ऋद्धिवन्त, ते परम ऋषीश्वर परम सन्त।
जे देव ऋषीश्वर गगनगामि, जे परम ऋषी केवलि प्रमान।।

दीपक चिरकाल तने जु सोय, मन–बल पुनि ज्ञान विशेष होय।
सँहनन वर वैराग्य भाव, एकाविहारि मुनिगुण लखाय।।
जे द्वादशाङ्ग श्रुतज्ञान पाय, ता बल जुगश्रेणि चढे सु धाय।
जे चार ज्ञानधर पन सु जेहिं, गुरुनिकट न दीक्षा सीख देहिं।।

प्रायश्चितनामा तप मांहि जेहि, गुरुकहिं तामाफिक दण्डलेहिं।
जे नानाविधके धारि नेम, ध्यावत, अध्यातम ध्यान जेम।।
जे कारण सङ्घ–कदाच साध, द्वादश योजन ताई न बाध।
जावे जो वरषाकाल माहिं, तो दोष लगे तिनको जु नाहिं।।

जे दोष विशेष लग ज्ञानहानि, प्रायश्चितकर शुद्धि न ताहि जानि।
तो सङ्घबाह्य मुनि काढ़ि देहिं, ज्यों नागवेलि दल गलत तेहिं।।
जे तीन वर्ण धर तन निरोग, वासी सुदेस निकषाय जोग।
इन्द्री सुपूर्ण मुनि पूर्णदेह, दीक्षाधर नरबरचिन्ह येह।।

जिनके जिनवचन नसों उछाहिं, सुनिये पुनि धारण ग्रहण ताहिं।
सुविचारत तत्त्वस्वरूप भाव, जे दीक्षाधर नर गुन लखाव।।
कहुँअवधि ज्ञानविन तुरिय ज्ञान, कहुँ मनपर जयविन अवधि ज्ञान।।
मनपरचय अवधि विना ऋषीस, लहि केवलज्ञान समस्त दीस।।

जे चढ़ि अजोग गुणथल विशाल, लघु पञ्चाक्षर उच्चरन काल।
लागे जो ता उत काल वास, तहाँ तिष्ठ सकल करि कर्म्मनास।।
जे पंडित पंडित मरण पाय, इक समय विषें शिवलोक जाय।
ते गुरु गुण उरधर 'जगतराय', प्रणमै त्रिकाल निजशीष नाय।।

(कवित्त)

रत्नत्रय वृष क्षमा धैर्य धर, घने शास्त्र पढ़ि पायो पार।
कुलवर तन मनोग बहुदिनके, दीक्षित मोक्षाभिलाषी सार।
ज्ञान विराग भावना चउ जुत, इत्यादिक गुण लखि गणधार।
तिनको आचारजपद दें सब, सर्व संघ आज्ञा दातार।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणमण्डितेभ्यः ऋषीश्वरेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

गाथा – जो जण पढई तियालं, णिव्वुइकंडवि भावसुद्धए।
भुंजदि णरसुरसुक्खं, पच्छा सो लहइ णिव्वाणं।।

(सुन्दरी छन्द)

पढ़हि जे तिरकाल सुचाव सों, निवृतिकांड मनोहर भाव सों।
भुगत सुरनरके सुख तापिछै, लहें मुक्ति पुरी सुख तें अछै।।

इत्याशीर्वादः।

(गीतिका छन्द)

श्रुति देब गुरु जिनबिम्ब जिनगृह, द्रव्य तीरथ जे भने।
जिनगेह भूथल पञ्चमङ्गल, क्षेत्र तीरथ ये गने।।
कल्याणकाल अरु सिद्धचक्र, व्रतादि तीरथ काल ये।
जे रत्नत्रय हैं भाव–तीरथ, ताहि नावत भाल ये।।

सोरठा – द्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव तीर्थ ये चार हैं।
शिथिलाचारहिं टाल, धर्मरुप इनथल रहो।।
इनथल पुण्य जुबन्ध इमि, जिमि सुवृष्टिको नाज।
अघ इनथल बन्धन कठिन, वज्रलेप न इलाज।।

(सखी छन्द)

निर्वान गिरा नहिंजानी, जिन शारद ना पहिचानी।
ताविन शब्दारथनाहिं, निशि दीप विना गृह माहिं।

इति निर्वाणभूमिसमुच्चयपूजा समाप्ता।।

ॐ

卐 सम्मेद शिखर विधान 卐

(श्री कविवर जवाहरलाल छतरपुर म.प्र. कृत)

(दोहा छन्द)

सिद्धक्षेत्र तीरथ परम् है उत्कृष्ट सुथान।
शिखरसमेद सदा नमों, होय पाप की हान।।
अगणित मुनि जँहते गये, लोकशिखर के तीर।
तिनके पदपंकज नमो, नाशे भव की पीर।।

(अडिल्ल छन्द)

है उज्ज्वल यह क्षेत्र, सु अति–निरमल सही।
परम पुनीत सुठौर, महागुण की मही।।
सकल–सिद्धि–दातार, महा–रमणीय है।
बन्दों निजसुख हेतु अचलपद देत है।।

(सोरठा)

शिखरसमेद महान, जग में तीर्थ प्रधान है।
महिला अद्भुत जान, अल्पमती मैं किमिक हो।।

(सुन्दरी छन्द)

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है, विपुल उज्जवल तीर्थ महान है।
करहिंभक्तिसुजे गुणगायके, वरहिं सुरशिव के सुख जायके।।

(अडिल्ल छन्द)

सुर हरि नर इन आदि, और बन्दन करें।
भवसागर तें तिरें, नहीं भव में परें।।
सफल होय तिन जन्म, शिखर दरशन करें।
जन्म–जन्म के पाप, सकल छिन में टरें।।

श्री तीर्थंकरजिनवर जुबीस, अरु मुनि असंख्यसब गुणनईश।
पहुँचे जँहते कैवल्य–धाम, तिनको अब मेरो है प्रणाम।।

(गीतिका छन्द)

सम्मेदगढ़ है तीर्थ भारी, सबहि को उज्जवल करे।
चिरकाल के जे कर्म लागे, दर्शतें छिन में टरें।।
है परमपावन पुण्यदायक, अतुल महिमा जानिये।
है अनूप सुरूप गिरिवर, तासु पूजन ठानिये।।

(दोहा)

श्री सम्मेदशिखर सदा, पूजो मन वच काय।
हरत चतुर्गति दुःख को, मनवान्छित फलदाय।।

ओं ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः। अत्र मम सन्निहि भव भव वषट्।

अथाष्टक (अडिल्ल छन्द)

क्षीरोदधि सम नीर सु निरमल लीजिये।
कनककलश में भरके धारा दीजिये।।
पूजों शिखरसम्मेद सुमन वच काय जी।
नरकादिक दुख टलें, अचलपद पाय जी।।

ओं ह्रीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

पयसों घसि मलयागिरि चन्दन लाइये।
केसर आदि कपूर सुगन्ध मिलाइये।।
पूजों शिखरसमेद सु मन वच काय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी।'

ओं ह्रीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनम्।

तन्दुल धवल सुवास सुउज्जवल धोयकें।
हेमरतन के थार भरों शुचि होय के।।
पूजों शिखरसमेद सु मन वच काय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी।।

ओं हीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

सुरतरु के सम पुष्प अनूपम लीजिये।
कामदाहदुखहरण चरण प्रभु दीजिये।।
पूजों शिखरसमेद सु मन वच काय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी।।

ओं हीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम्।

कनकथार नैवेद्य सु षटरसतें भरें।
देखत क्षुधा पलाय सु जिन आगे धरे।।
पूजों शिखरसमेद सु मन वच काय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी।।

ओं हीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्।

लेकर मणिमय दीप सुज्योति प्रकाश है।
पूजत होत सु ज्ञान मोहतम नाश है।।
पूजों शिखरसमेद सु मन वच काय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी।।

ओं हीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्।

दशविध धूप अनूप अगनि में खेवहूं।
अष्टकर्म को नाश होत सुख लेवहूं।।

पूजों शिखरसमेद सु मन वच काय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी।।

ओं ह्रीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपम्।

एला लोंग सुपारी श्रीफल लाइये।
फल चढ़ाय मन वांछित शिवफल पाइये।।
पूजों शिखरसमेद सु मन वच काय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी।।

ओं ह्रीं विंशतिती र्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलम्।

जल गन्धाक्षत पुष्प सु नेवज लीजिये।
दीप धूप फल लेकर अर्घ्य सु कीजिये।।
पूजों शिखरसमेद सु मन वच काय जी।
नरकादिक दुख टरें अचलपद पाय जी।

ओं ह्रीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम्।

पद्धरी छन्द

श्री विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्र, अरु, असंख्यात जँहतें मुनेन्द्र।
तिनकों करजोरिकरों प्रणाम, तिनको पूजों तिस सकल काम।।

ओं ह्रीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः महार्घ्यम्।

अडिल्ल छन्द

जे नर परम सुभावन तें पूजा करें।
हरि हलि चक्री होय राज छह खँडकरें।।
फेरि होय धरणेन्द्र इन्द्रपदवी धरें।
नानाविध सुखभोगि बहुरि शिवतिय वरें।।

जोगारासा छन्द

श्री सम्मेदशिखर गिरि उन्नत, शोभा अधिक प्रमानो।
विंशति तिहिं पर कूट मनोहर, अद्भुत रचना जानो।।
श्रीतीर्थंकर बीस जहांतें, शिवपुर पहुँचे जाई।
तिनके पदपंकज जुग पूजों, अर्घ्य प्रत्येक चढ़ाई।।

ओं ह्रीं विंशतितीर्थंकरा द्यसंख्यातमुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

1. श्री अजितनाथ सिद्धिधरकूट

प्रथम सिद्धिवर कूट सु जानो, आनंद मंगल दाई।
अजितनाथ जँहतें शिव पहुँचे पूजों मनवचकाई।।
कोड़िजु अस्सी एक अरबमुनि, चौवन लाख जु गाई।
कर्मकाटि निर्वाण पधारे, तिनको अर्घ्य चढ़ाई।।

ओं ह्रीं सिद्धिबरकूटतः श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि एक अरब अस्सीकोटि चौवनलाख मुनि – सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

2. श्री सम्भवनाथ धवलदत्तकूट

धवलदत्त है कूट दूसरो, सब जियको सुखकारी।
श्रीसम्भव प्रभु मुक्ति पधारें, पापतिमिर कों टारी।।
धवलदत्त दे आदि मुनी नव, कोड़ाकोड़ी जानो।
लाख बहत्तरसहसवियालिस, पँचशतकऋषि मानो।।
कर्मनाशकरि शिवपुर पहुँचे, बन्दों शीश नवाई।
तिनकेपदजुग जजों भावसों, हरसि हरसि चितलाई।।

ओं ह्रीं धवलदत्तकूटतः श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रादि नौकोड़ाकोड़ी बहत्तरलाख ब्यालीस हजार पांचसौ मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

3. श्री अभिनन्दननाथ, आनन्दकूट (चौपाई छन्द)

आनंदकूट महासुखदाय, अभिनन्दन प्रभु शिवपुर जाय।
कोड़ाकोड़ि बहत्तर जान, सत्तरकोटि छत्तिस लखमान।।
सहस बियालिस शतकजु सात, कहे जिनागम मेंइह भाँत।
ये ऋषि कर्म काट शिव गये, तिनके पदयुग पूजत भये।।

ओं ह्रीं श्री आनन्दकूटतः श्री अभिनन्दनजिनेन्द्रादि बहत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तरकोड़ी छत्तिसलाख ब्यालिस हजारसातसौमुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

4. सुमतिनाथ, अविचलकूट (अडिल्ल छन्द)

अविचल चौथो कूट महासुखथान जी।
जँहतें सुमतिजिनेश गये निर्वान जी।।
कोड़ाकोड़ी एक मुनीश्वर जानिये।
कोड़ि चौरासी लाख बहत्तर मानिये।।
सहस इक्यासी और सातसौ गाइये।
कर्म काटि शिव गये नमों शिर नाइये।।
सो थानक मैं पूजों मनवनचकाय जी।
पाप दूर हो जाय अचलपद पाय जी।।

ओं ह्रीं अविचलकूटतः श्री सुमतिनाथजिनेन्द्रादि एककोड़ाकोड़ि चौरासीकोड़ि बहत्तरलाख इक्यासी हजार सातसौमुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

5. पद्मप्रभ, मोहनकूट

मोहनकूट महान परम सुन्दर कह्यो।
पद्मप्रभ जिनराज जहां शिवपुर लह्यो।।
कोटि निन्यानव लाख सतासी जानिये।
सहस तितालिस और मुनीश्वर मानिये।।
सप्त सैकरा सत्तर ऊपर बीस जू।

मोक्षगये मुनि तिनहिं नमों नितशीश जू।।
कहें "जवाहरलाल" दोय कर जोर के।
अविनाशी पद दे प्रभु कर्मनि तोरि के।।

ओं ह्रीं मोहनकूटतः श्री पदमप्रभ जिनेन्द्रादि नियन्यानवे कोड़ि सतासी लाख तेतालीस हजार सात सौ नव्वे मुनि सिद्धप्रदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

6. सुपार्श्वनाथ, प्रभासकूट (सोरठा छन्द)

कूट प्रभास महान, सुन्दर जनमन मोहनो।
श्रीसुपार्श्व भगवान, मुक्ति गये अघनाश के।।
कोड़ाकोड़ि उनचास, कोड़ि चौरासी जानिये।
लाख बहत्तर मान, सात सहस है सात सौ।।
और कहे व्यालीस, जँहते मुनि शिवको गए।
तिनहिं नमें नित शीश, दास जवाहर जोर कर।।

ओं ह्रीं प्रभासकूटतः श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि उनचास कोड़ाकोड़ि चौरासीकोड़ि बहत्तरलाख सात हजार सातसौ वियालीसमुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

7. श्री चन्द्रप्रभ, ललितकूट (दोहाछन्द)

पावन परम उतंग है, ललितकूट है नाम।
चन्द्रप्रभ शिवपुर गये, बन्दों आठों याम।।
नौसे अर बसु जानिये, चौरासी ऋषि मान।
कोड़ि बहत्तर यों कहे, अस्सी लाख प्रमान।।
सहस चौरासी पंचशत, पचवन कहे मुनिन्द।
वसु करमन को नास कर, पायो सुख को कन्द।।
ललितकूटतें शिव गये, बन्दों शीश नवाय।
तिन पद पूजों भावसों, निजहित अर्घ्य चढ़ाय।।

ओं ह्रीं ललितकूटतः श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रादि नौसौचौरासी अरब बहत्तर कोड़ि अस्सीलाख चौरासी हजार पांचसौपचपन मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

8. श्रीपुष्पदन्त, सुप्रभकूट (पद्धरि छन्द)

श्रीसुप्रभकूट सुनाम जान, जँह पुष्पदन्त को मुक्तिथान।
मुनिकोड़ाकोड़ि कहे जुभाख, नव ऊपर नव धर कहे लाख।।
शतचार कहे अरु सहस सात, ऋषि अस्सी और कहे विख्यात।
मुनिमोक्ष गये हरि कर्मजाल, वन्दों करजोरिनवाय भाल।।

ओं ह्रीं सुप्रभकूटतः श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्रादि एककोड़ाकोड़ि निन्यानवेलाख सात हजार चारसौ अस्सी मुनि – सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

9. श्री शीतलनाथ, विद्युतकूट (सुन्दरी छन्द)

सुभग विद्युत कूट सु जानिये, परम अद्भुतता परमानिये।
गये शिवपुर शीतलनाथ जी, नमहुतिनपदकरधर माथ जी।।
मुनिजु कोड़ाकोड़ि अठारहू, मुनिजु कोड़िवियालिस जानहू।
कहे और जु लाख बतीस जू, सहस व्यालिस कहेयतीशजू।।
अवर नौ सौ पाँचसु जानिये, गये मुनि शिवपुर को मानिये।
करहिं जे पूजा मन लायके, धरहिं जन्म नभव में आयकें।।

ओं ह्रीं विद्युत्प्रभकूटतः श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्रादि अठारह कोड़ाकोड़ि व्यालिसकोड़ि बत्तीसलाख व्यालीसहजार नौसौपांच मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

10. श्रेयांसनाथ, संकुलनाथ (जोगीरासा)

कूट जु संकुल परम मनोहर, श्रीश्रेयांस जिनराई।
कर्म्मनाश कर शिवपुर पहुँचे, बन्दों मनवचकाई।।
छ्यानव कोड़ाकोड़ि जानो, छ्यानव कोड़ि प्रमानो।
लाख छियानवे सहसमुनीश्वर, साढ़े नव अब जानो।।
ता ऊपर व्यालीस कहे हैं, श्री मुनि के गुण गावें।
त्रिविधयोगकरि जो कोई पूजें, सहजानंद पद पावें।।
सिद्ध नमों सुखदायक जग में, आनंद मंगलदाई।

जजों भावसोंचरण जिनेश्वर, हाथ जोड़ि शिरनाई।।
परममनोहर थान सु पावन, देखत विघन पलाई।
तीन काल नित नमत 'जवाहर' मेटो भव भटकाई।।
जँहतें श्री मुनि सिद्ध भये हैं, तिनको शरण गहाई।
जापदको प्रभु प्राप्त भये हो, सो पद देहु मिलाई।।

ओंह्रीं संकुलकूटतः श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि छयानव कोड़ाकोड़ि छियानवेलाख नौहजार पांचसौव्यालीस मुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

11. विमलनाथ, सुवीरकुलकूट (कुसुमलता छन्द)

श्रीसुवीरकुल कूट परम सुन्दर सुखदाई।
विमलनाथ भगवान जहाँ पन्चमगति पाई।।
कोड़ि जुसत्तर सात लाख षट्सहस जु गाई।
सात शतक मुनि और वियालीस जानो भाई।।

दोहा – अष्टकर्म को नष्ट कर, मुनि अष्टमक्षिति पाय।
तिनप्रति अर्घ्य चढ़ावहूं, जनम मरण दुख जाय।।
विमलदेव निर्मल करण, सब जीवन सुखदाय।
मोतीमुख वन्दत चरण, हाथ जोर शिरनाय।।

ओं ह्रीं सुवीरकुलकूटतः श्रीविमलनाथ जिनेन्द्रादि सत्तरकोड़ि सातलाख छहहजारसात सौव्यालीस मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

12. अनन्तनाथ, स्वयम्भूकूट (अडिल्ल छन्द)

कूट स्वयम्भू नाम परम सुन्दर कह्यो।
प्रभु अनन्त जिननाथ जहाँ शिवपद लह्यो।।
मुनि जु कोड़ाकोड़ि छियानवे जानिये।
सत्तर कोड़ि जु सत्तरलाख प्रमानिये।।
सत्तर सहस जु और सातसै गाइये।
मुक्ति गये मुनि तिनको शीश नवाइये।।

कहें 'जवाहरलाल' सुनो, मन लायके।
गिरिवर को नित पूजों अतिसुख पायके।।

सोरठा – पूजत विघन पलाय, ऋद्धि सिद्धि आनद करे।
सुरशिवको सुखदाय, जो मनवच पूजा करे।।

ओं ह्रीं स्वयम्भूकूटतः श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि छियानवेकोड़ाकोड़ि सत्तरकोड़ि सत्तरलाख सत्तरहजारसातसौ मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

13. धर्मनाथ, सुदत्तकूट (चौपाई छन्द)

कूट सुदत्त महाशुभ जान, श्रीजिन धर्मनाथ को थान।
मुनि कोड़ाकोड़ि उनईस, और कहे ऋषि कोड़िउनीस।।
लाख जु नव नौसहस सुजान, सात शतक पंचानव मान।
मोक्ष गये वे कर्मन चूर, निशदिन ताहि नमो भरपूर।।
महिमा जाकी अतुल अनूप, ध्यावतवर इन्द्रादिक भूप।
शोभित महाअचलपद पाय, पूजों, आनदमंगल दाय।।

दोहा – परम पुनीत पवित्र अति, पूजत शत सुरराय।
तिह थानक को देखकर, मोतीसुत गुण गाय।
पावन परम सुहावनों, सब जीवन सुखदाय।
सेवत सुर हरि नर सकल, मनवांछित फलदाय।।

ओं ह्रीं सुदत्तकूटतः श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्रादि उन्नीस कोड़ाकोड़ि उन्नीसकोड़ि नौलाख नौहजार सातसौ पंचानवैमुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

14. शान्तिनाथ शान्तिप्रभ कूट (सुगीतिका छन्द)

श्री शांतिप्रभ है कूट सुन्दर, अतिपवित्र सु जानिये।
श्री शाँतिनाथ जिनेन्द्र जँहते, परमधाम प्रमानिये।।
नव जु कोड़ाकोड़ि मुनिवर, लाखनव अब जानिये।
नौ सहस नवसै मुनि निन्यावन, हृदय में धर जानिये।।

दोहा– कर्मनाश शिव को गये, तिन प्रति अर्घ्य चढ़ाय ।
त्रिविधयोगकरि पूज है, मनवांछित फलदाय।।

ओं ह्रीं शान्तिप्रभकूटतः श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्रादि नौकोड़ाकोड़ि नौलाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

15. कुंथनाथ, ज्ञानधरकूट (गीतिका छन्द)

ज्ञानधर शुभकूट सुन्दर, परम मनमोहन सही।
जँहतें श्री प्रभु कुन्थुस्वामी, गये शिवपुर की मही।।
कोड़ा सु कोड़ी छ्यानवै मुनि, कोड़ि छ्यानव जानिये।
अरुलाखवत्तिससहसछ्यानव,शतकसात प्रमानिये।।
दोहा– और कहे व्यालीस मुनि, सुमरो हिये मँझार।
तिनपद पूजों भावसों, कर भवदधि से पार।।

ओं ह्रीं ज्ञानधरकूटतः श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि छ्यानवकोड़ाकोड़ि छ्यानवेकोड़ि बत्तीसलाख छ्यानवेहजार सात सौ व्यालीस मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

16. अरहनाथ, नाटककूट

दोहा – कूट जु नाटक परम शुभ, शोभा अपरम्पार।
जँहतें अर जिनराज जी, पहुँचे मुक्ति मँझार।।
कोड़िनिन्यावजानिमुनि, लाखिनिन्यावन और।
कहे सहस निन्यानवै, बन्दों कर जुग जोर।
अष्टकर्म को नष्ट करि, मुनि अष्टमक्षिति पाय।
ते गुरु मम हृदयें वसो, भवदधि पार लगाय।

सोरठा – तारण तरण जहाज, भवसमुद्र के बीच में।
मेरी बाँह, डूबत ते राखो मुझे।।
अष्ट करम दुखदाय, ते तुमने चूरे सबै।

केवलज्ञान उपाय, अविनाशी पद पाइयो।।
मोतीसुत गुण गाय, चरणन शीश नवायके।
मेटो भव भटकाय, मांगत अब वरदान यों।।

ओं ह्रीं नाटककूटतः श्रीअरहनाथ जिनेन्द्रादि कोड़ाकोड़ि निन्यानवेलाख निन्यानवेहजार मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

17. मल्लिनाथ, सम्बलकूट (सुन्दरी छन्द)

कूट सम्बल परमपवित्र जू, गये शिवपुर मल्लिजिनेश जू।
मुनिजुछ्यानवेकोड़ि प्रमानिये, पदजजत हृदय सुखआनिये।।

(मोतीदास छन्द)

भजों प्रभुनाम सदा सुखरूप, जजों मनमें धर भाव अनूप।
टरें अघपातक जांहि जु दूर, सदा जनकोसुख आनदपूर।।
डरें ज्यों नाग गरुड़को देखि, भजेगजजुत्थजु सिंहय पेखि।
तुम नाम प्रभु दुखहर्ण सदा, सुखपूर अनूपम होय मुदा।।
तुम देव सदा अशरण शरणं, भटमोहबली प्रभु जी हरणं।
तुमशरणगहो हम आय अबै, मुझ कर्मबली दृढ़ चूर सबै।।

ओं ह्रीं सम्बलकूटतः श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्रादि छ्यानवेकोड़िमुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

18. मुनिसुव्रतनाथ (मदाबलिप्तकपोल छन्द)

मुनिसुव्रत जिननाथ सदा आनद के दाई।
सुन्दर निर्जरकूट जहांतें शिवपुर जाई।।
निन्यानव कोड़ाकोड़ि कहे मुनि कोड़िसत्याना।
नौ लख जोड़ मुनीन्द, कहे नौ से निन्याना।।

सोरठा – कर्मनाश ऋषिराज, पंचमगति के सुख लहे।
तारणतरण जहाज, मो दुख दूर करो सकल।।

(भुजंगप्रयात छन्द)

बली मोहकी फौज प्रभु जी भगाई, जग्योज्ञान पंचममहा सौख्यदाई।
समोसर्ण धरणेन्दने तबबनायो, तबैदेव सुरपति सभी शीशनायो।।

जयजय जिनेन्द्रं सुशब्दं उचारी, भए आजदर्शन सबै सौक्खकारी।
गये सर्वपातक प्रभु मूरहीते, जबै दर्श कीने प्रभू दूरहीतें।।

सुनीनाथ श्रवनन जु तेरी बढाई, गहो शरणहमने तुम्हारो सुआई।
बली कर्म नाशे जबै मुक्तिपाई, तिन्हें हाथ जोरे सदाशीश नाई।।

ओं ह्रीं निर्जरकूटतः श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि निन्यानवैकोडाकोड़ि सत्तानवेकोड़ि नौलाख नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

19. नमिनाथ, मित्रधरकूट (ज़ोगीरासा)

कूट मित्रधर परम मनोहर, सुन्दर अति छविदाई।
श्रीनमिनाथ जनेश्वर जँहतें, अविनाशी पद पाई।।
नौसे कोड़ाकोड़ि मुनिवर, एक अरब युत जानों।
लाख पैंतालिस सातसहसअरु, नौसैव्यालिस मानो।।

दोहा – वसु करमन को नाश कर, अविनाशी पद पाय।
पूजों चरण सरोज को, मनवांछित फलदाय।।

ओं ह्रीं मित्रधरकूटतः श्रीनमिनाथ जिनेन्द्रादि नौसौकोड़ाकोड़ि एकअरब पैतालिसलाख सातहजार नौसौ व्यालीस मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

20. पार्श्वनाथ, सुवर्णभद्रकूट

दोहा – सुवरणभद्र जु कूट पै, श्री प्रभु पारसनाथ।
जँहते शिवपुर को गये, नमों जोरि युग हाथ।।

(त्रिभंगी छन्द)

मुनि कोड़ियासी, लाख चौरासी, शिवपुरवासी, सुखदाई।
सहसपैंतालिस, सातसौव्यालिस तजि के आलस गुणगाई।।
भवदधितें, तारण, पतितउधारण, भवदुखहारण, सुखकीजे।
यह अरज हमारी सुन त्रिपुरारी, शिवपद भारी, मोहिदीजे।

(पद्धरी छन्द)

यह दर्शनकूट अनन्त लह्यो, फल षोडशकोटि उपास कहो।
जग में यह तीर्थ कह्यो भारी, दर्शन तें पाप कटें सारी।।

(मोतीदास छन्द)

टरें गति बंदत नर्क तिर्यंच, कबहु दुख को नहि पावें रंच।
यही शिवका जगमें है द्वार, अरे नर बन्दो कहत 'जबार'।।

दोहा – पारसप्रभु के नामतें, विघन दूर टरि जांय।
ऋद्धिसिद्धि निधिआनिकें, मिलि है निशदिन आय।।

ओं ह्रीं सुवर्णभद्रकूटतः श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि व्यालीस करोड़ चौरासीलाख पैंतीसहजार सातसौ व्यालीस मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छन्द)

जे नर परम सुभावनसों पूजा करें।
हरि हलि चक्री होय राज्य षट्खंड करें।।
फेरि होंय धरणेन्द्र इन्द्रपदवी धरें।
नानाविधसुख भोगि बहुरि शिवतिय धरें।।

इत्याशीर्वादः

✡ अथ समुच्चयपूजा ✡

दोहा – या विध बीस जिनेश के, बीसों शिखर महान।
और असंख्य मुनीश जँह, पहुँचे शिवपद थान।।

ओं ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(गीतिका छन्द)

पदमद्रह को नीर निरमल, हेमझारी में भरों ।
तृषारोग निवारने को, चरणतर धारा करों ।।
सम्मेदगढतें मुनि असंख्ये, कर्म हर शिवपुर गये ।
सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनि संचये ।।

ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः जलम् ।

चंदन कपूर मिलाय केसर, नीरसों घसि लाइये ।
जिनराज पाप विनाश हमरे, भवाताप मिटाइये ।। सम्मे.

ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः चन्दनम् ।

चन्द्र के सम ल्याय तन्दुल, कनकथारन में भरों ।
अक्षय सु पंद के कारणं, जिनराजपद पूजा करों ।। सम्मे.

ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अक्षतान् ।

कुन्द कमला दिक चमेली, गन्ध पर मधुकर फिरें ।
मदनबाण विनाशवे को प्रभुचरण आगे धरें ।। सम्मे.

ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः पुष्पम् ।

नेवज मनोहर थाल में भर, हरष कर ले आवनें ।
करहु पूजा भाव सों, नर क्षुधारोग मिटावनें ।। सम्मे.

ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः नैवेद्यम् ।

दीप ज्योति प्रकाश करके, प्रभू के गुण गावनें ।
मोहतिमिर विनाश करके, ज्ञानभानु प्रकाशनें ।। सम्मे.

ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः दीपम् ।

वर धूप सुन्दर ले दशांगी, ज्वलन माहिं सु खेइये ।
वसु कर्मनाशन के सु कारण, पूज प्रभु की कीजिए ।।

सम्मेदगढ़तें मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये।
सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनि सँचये।।
ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः धूपम्।

उत्कृष्ट फल जग माहि जेते, ढूँढ कर ले आइये।
जों नेत्र रसना लगें सुन्दर, फल अनूप चढ़ाइये।। सम्मे.
ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः फलम्।

वसुद्रव्ययुत शुभ अर्घ्य लेकर, मन प्रफुल्लित कीजिये।
तबु दास यह वरदान मांगे, मोक्षलक्ष्मी दीजिये।।
सम्मेदगढ़तें मुनि असंख्ये, कर्महर शिवपुर गये।
सो थान परमपवित्र पूजों, तासु फल पुनि संचये।।
ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

नित करें जे नरनारि पूजा, भक्तिभाव सु लायके।
तिनको सुजस यह कहें 'जवाहर' हरष मनमें धारके।।
ते हों सुरेश नरेश खगपति, समझ पूजाफल यही।
सम्मेदगिरि की करहुँ पूजा, पाय हो शिवपुर मही।।
ओं ह्रीं असंख्यातमुनि सिद्धपंद प्राप्तेभ्यः श्री सम्मेद शिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

कवित्त – परम शिखरसम्मेद, सबहि को हैं सुख करता।
बन्दें जे नरनारि, तिन्हों के अघ सब हरता।।
नरकपशु गति टरें, सौख्य जग के बहु पावें।
नरपति सुरपति होय, फेरि शिवपुर को जावें।।

दोहा – जे तीरथ बन्दे नहीं, सुने धर्म नहिं सार।
ते भवतन में भ्रमहिंगे, कबहुँ न पावें पार।।
नरभव उत्तम पाय के, श्रावककुल अवतार।
पूजा जिनवर की करें, ते उतरें भवपार।।

सबविध जोग जुपायजे, शिखर न बंदे सार।
रतन पदारथ पाय ते, देत समुद्र में डार।।

श्री आदिनाथ, सर्वसिद्धवरकूट (कैलाशगिरि)

प्राणी हो आदीश्वर महाराज जी, अष्टापद शिवनाथ हो।
पूजत सुर हरि नर सकल, सो पावे पद निर्वान हो।।
प्राणी हम पूजत इतही सदा, यह नाशे भवभव भीतिहो।
प्राणी पूजों मनवचकाय कर, अष्टापद से निर्वान हो।।

ओं ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्रादि दशसहस्र मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री कैलाशगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम्।

श्री वासुपूज्य (मन्दागिरि)

सोरठा – वासुपूज्य जिनराज, चम्पापुरतैं शिव गये।
मनवचजोग लगाय, पूजों पदजुग अर्घ्य ले।।

ओं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि एकसहस्र मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः श्रीचम्पापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम।

श्री नेमिनाथ, ऊर्जयन्तकूट (गिरनार)

दोहा – नेमीश्वर तजि राजमति, लीनो दीक्षा जाय।
सिद्ध भये गिरिनारतें, पूजों अर्घ्य चढाय।।

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्रादि दिसम्बुप्रद्युम्नानिरुद्धेत्यादि बहत्तरकोड़ि सातसौमुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्री गिरिनार सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम।

श्रीमहावीर स्वामी (सुन्दरी छन्द)

वर्धमान जिनेश्वर पूजिये, सकल पातक दूर सु कीजिए।
गये पावापुरतें मुक्ति को, तिनहि पूजत अर्घसँयुक्ति सों।।

ओं ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्रादि षटत्रिंशन्मुनि सिद्धप्राप्तेभ्यः पावापुरस्थ पद्मसरोवरस्थ सिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम।

श्रीचौबीसगणधर, प्रथमटोक

दोहा – तीर्थंकर चौबीस के, गणनायक हैं जेह।
तिनकों पूजों अर्घ्य ले, मनवच धारि सनेह।।

ओं ह्रीं .चतुर्विंशति जिनगणधरचरणकमलेभ्यः अर्घ्यम।

सिद्धक्षेत्र जे और हैं, भरतक्षेत्र के ठाहि।
और जु अतिशयक्षेत्र हैं, कहे जिनागम मांहि।।
तिनके नाम सु लेत ही, पाप दूर हो जाय।
ते सब पूजों अर्घ्य ले, भव भव में सुखदाय।।

ओं ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रातिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम।

दीप अढ़ाई मांय, सिद्धक्षेत्र जे और हैं।
पूजों अर्घ्य चढ़ाय, भवभव के अघ नाश हैं।।

ओं ह्रीं सार्धद्वीपद्वये विद्यमानसिद्धक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम।

(अडिल्ल छन्द)

पूजों तीस चौबीस परमसुखदाय जु।
भूत भविष्यत् वर्तमान गुणगाय जू।।
कहे विदेह के बीस नमों शिर नाय जू।
अर्चों अर्घ्य बनाय सुविधन पलाय जू।।

ओं ह्रीं श्रीभूतभविष्यवर्तमानकाल सम्बन्धित्रिंशच्चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः विदेहक्षेत्र विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यश्च अर्घ्यम।

दोहा – चैत्य अकृत्रिम जे कहे, तीन लोक के मांय।
ते सब पूजों अर्घ्य ले, हाथ जोड़ शिरनाय।।

ओं ह्रीं त्रिलोकसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यम।

जयमाला

(लोलतरंग छन्द)

मनमोहन तीरथ शुभ जानो, पावरपरम सुक्षेत्र प्रमानो।
उन्नत शिखर अनूपमसोहे, देखत ताहि सुरासुरमोहे।।

दोहा – तीरथ परम सुहावनो, शिखरसमेद विशाल।
कहत अल्पबुधि उक्तिसों, सुखदायक जयमाल।।

(चौपाई छन्द)

सिद्धक्षेत्र तीरथ सुखदाई, वन्दत पाप दूर हो जाई।
शिखर शीशपर कूट मनोग्य, कहे बीस अति शोभायोग्य।।

प्रथम सिद्धिवर कूट सुजान, अजितनाथ को मुक्तिसुथान।
कूट तनों दर्शन फल एह, कोटि बतीस उपास गिनेह।।

दूजो धवल कूट है नाम, सम्भवप्रभु जँहते शिवधाम।
दरश कोटि प्रोषध फलजान, लाख वियालिसकहो बखान।।

आनदकूट महा सुखदाय, जँहते अभिनन्दन शिव जाय।
कूट तनो दरशन यों जान, लाख उपास तनो फलमान।।

अविचल कूट महासुख देश, मुक्ति गये जँह सुमतिजिनेश।
कूटभाव धरि पूजे कोय, एक कोटि प्रोषध फल होय।।

मोहनकूट मनोहर जान, पद्मप्रभ जँहते निर्वान।
कूटपूजफल लेहु सुजान, कोटि उपास कहो भगवान।।

मनमोहन है कूट प्रभास, मुक्ति गये जँह नाथ सुपास।
पूजें कूट महाफल होय, कोटि बतीस उपासजु सोय।।

चन्द्रप्रभ को मुक्ति सुधाम, परमविशाल ललित घटनाम।
कूट तनो दर्शनफल जान, प्रोषध सोलह लाख बखान।।

सुप्रभ कूट महासुखदाय, जँहतें पुष्पदन्त शिव पाय।
पूजे कूट महाफल लेव, कोटि उपास कहो जिनदेव।।

श्री विद्युतवर कूट महान, मोक्ष गये शीतल धरिध्यान।
पूजें त्रिविधयोग कर कोय, कोटि उपासतनो फल होय।।

संकुलकूट महाशुभ जान, श्रीश्रेयांस गये शिव थान।
कूट तनो दर्शन फल सुनो, कोटि उपास जिनेश्वर भनो।।

कूट सुवीर परमसुखदाय, विमलजिनेश जहां शिवपाय।
मनवच दरश करे जो कोय, कोटि उपासतनो फलहोय।।

कूट स्वयम्भू सुभग सु नाम, गये अनन्त अमरपुर धाम।
यही कूट को दर्शन करे, कोटि उपास तनो फल धरे।।

है सुदत्तवर कूट महान, जँहते धर्मनाथ निर्वान।
परमविशाल कूट है सोय, कोटि उपासदरशफल होय।।

कूट शान्तिप्रभ सुन्दर कह्यो, शांतिनाथ जँहते शिवलह्यो।
कूट तनो दर्शन है सोय, एककोटिप्रोषधफल होए।।
परम ज्ञानधर है शुभकूट, शिवपुर कुन्थु गये अघ छूट।
जाको पूजे जो कर जोड़ि, फल उपवासकह्यो इककोड़ि।।

नाटककूट महाशुभ जान, जँहतें शिवपुर अर भगवान।
दर्शन करे कूट जो कोय, छ्यानव कोड़िवासफलहोय।।

संवलकूट मल्लि जिनराज, जँहते मोक्ष भये शुभकाज।
या दरशनफल कहो जिनेश, प्रोषध एक कोटि शुभवेश।।

निर्जरकूट कहो सुखदाय, मुनिसुव्रत जँहतें शिवपाय।
कूट तनो अब दर्शन सोय, एक कोटिप्रोषधफल होय।।

कूट मित्रधरतें नमि मुक्त, पूजत पाँय सुरा सुर युक्त।
कूट तनो फल है सुखकन्द, कोटि उपास कहो जिनचंद।।

श्री प्रभु पार्श्वनाथ जिनराज, चहुँगति से छूटे महाराज।
सुवरणभद्र कूट को नाम, तासों मोक्ष गये सुखधाम।।

तीन लोक हितकरन अनूप, बंदत ताहि सुरसुर भूप।

चिंतामणि सुरवृक्ष समान, ऋद्धिसिद्धि मंगल सुखदान।।
नवनिधि चित्राबेलि समान, जाते सौख्य अनूपम जान।
पारस और कामसुरधेन, नानाविध आनद को देन।।
व्याधिविकारजांहिसब भाज, मनचिन्ते पूरे हों काज।
भवदधिरोग विनाशक सोय, औषधि जगमें और न कोय।।
निर्मल परम थान उत्कृष्ट, बन्दत पाप भजें अरू दुष्ट।
जोनर ध्यावत पुण्य कमाय, जश गावत सब कर्म नशाय।।
कटें अनादिकाल के पाप, भजें सकलछिन में सन्ताप।
नरपति इन्द्र फणेन्द्रजु सबै, और खगेन्द्र मृगेन्द्र जु नवै।
नित सुरसुरी करें उच्चार, नाचत गावत विविध प्रकार।
बहुविध भक्तिकरें मन लाय, विविध प्रकार वादित्र बजाय।।
दृम दृम दृमता बजे 'मृदंग' घन घन घंट बजे मुहचंग।
झुनझुन झुनझुन झुनियां झुने, सर सर सर सारंगी धुने।।
मुरली बीन बजे धुनि मिष्ट, पटहा तूर सुरान्वित पुष्ट।
सब सुरगणथुति गावतसार, सुरगण नाचत बहुत प्रकार।।
झननन ननना, नुपूर वान, तननन नना तोरत तान।
ताथिइ थिइ थिइ थेई चाल, सुरनाचत नावत निजभाल।।
गावत नाचत नाना–रंग, लेत जहां सुर आनद संग।
नित प्रतिसुर जँह बंदतजाय, नानाविध के मंगल गाय।।
अनहदधुनि को मोद जु होय, प्रापति वृषकी अतिही होय।
तातें हमको सुख दे सोय, गिरिवर बंदोकर धरिदोय।।
मारुत मन्द सुगन्ध चलेय, गन्धोदक जँह नित वरषेय।
जियकी जाति विरोध नहोय, गिरिवर बंदो करधरि दोय।।

ज्ञान चरण तप साधनसोय, निजअनुभव कोध्यानजु होय।
शिवमन्दिर को द्वारो सोय, गिरिवर बंदोकर धरि दोय।।

जो भवि वन्दे एकहि वार, नरक निगोद पशु गति टार।
सुरशिवपद को पावे सोय, गिरिवर बंदोकर धरि दोय।।

जाकी महिमा अगम अपार, गणधर कहत न पावें पार।
तुच्छबुद्धि मैं मतिकर हीन, कही भक्तिवश केवल लीन।।

(धत्ता छन्द)

श्रीसिधखेतं, अतिसुख–देतं, शीघ्रहिं भवदधि पार करं।
अरिकर्मविनाशन शिवसुखकारन, जयगिरिवरजगतारवरं।।

ओं ह्रीं श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

(दोहा)

शिखर सु पूजे जो सदा, मनवचतन चित लाय।
दास 'जवाहर' यों कही, सो शिवपुर को जाय।।

(इत्याशीर्वाद :)

श्री सम्मेदशिखर पूजन विधान समाप्तम्

ॐ

卐 पञ्चमेरु पूजन विधान 卐

(कवि श्री टेकचंद्र जी कृत)

अथ व्रतमाहात्म्यवर्णन

(सर्वदीर्घ वेसरी छन्द)

वानी पूजों देवा केरी। तातैं टूटे मोहा जेरी।।
साधा ध्याऊँ सांचा भाऊँ। या भौ माही नाहीं आऊँ।। 1

सर्वदीर्घ जोगीरासा की चाल –

देवा सेवो सो या भौ में आवा जांवो हारै।
आपा तार्‌यो औरे तारैं ज्यों नावा औतारै।।
जाका ध्याना जोगी आना पापा हानाकाजै।
ऐसो नाथो द्योमो साथो भौ–भौ साता साजै।। 2

साधा साधो जो या भौ में जाके रागा नाहीं।
आपा साधै प्रानी नावा ध्यानाध्येना माहीं।।
तापा आपै जापा जापै मोको राखै सोही।
मेरो सीसा याके पावे नाखो दीना होही।। 3

ऐसे देवा याकी वानी साधा तीनो सोही।
मीको ज्ञानो ऐसो दीजौ मो पै राजी होही।।
तातैं नांदी दीपा पांचों मेरा पूजा सारी।
पूरी हो जावै सा कीजौ ऐसी वांछा म्हारी।। 4

वेसरी छन्द

या पूजा श्रीपाले कीनी। काया रोगा की खय लीनी।।
या पूजा सो लोका देवैं। जो जीवा नीका है सेवैं।। 5

सर्वलघु दोहा

वरत यह सुखकरन लख। समचित कर सिव सहल।।
पहल करम सव नस भजय, कर यह वरत जु टहल।।6

चौपाई

यो व्रत मयणा सुन्दर करौ। सुभट सातसें को दुख हरौ।।
ताकर जगमें महिमा पाय। इस लख भव पूजौ मनलाय।।7

अडिल्ल छन्द

वरस एक में वार तीन यह व्रत करैं।
कार्तिक फागुन सुदी अषाढ़ विषैं धरैं।।
करै वर्ष लग आठ तथा वृष तीन जी।
शक्ति बड़ीका धार करैं परवीन जी।। 8

सोरठा – शक्ति बड़ी धर सोय, करै बहुत दिन भी सही।
उद्यापन फिर होय, नाहीं व्रत दूनो करै।। 9

गीता छन्द

पीछै जु शक्ति प्रमाण अपनी द्रव्य तैं पूजा करैं।
उपकरण सुन्दर छत्र चामर लायकें मंदिर धरैं।।
पुस्तक लिखावैं दान करुणा देय दीन बुलाय जी।
इस रीति धर्म उद्योत ठाने जीव सो शिवपाय जी।। 10

पद्धरी छन्द

याविध अनेक महिमा निधान। यह वरतकहों धुनि में प्रमाण।।
कविकवलों गुणभाषै अपार। बहु कहिये कहांजग मांहिसार।। 11

(इति व्रतमहिमा समाप्त)

समुच्चय पूजा

स्थापना (चाल जोगीरासे की)

पांचो मेरु महान कनक के, तिन पै जिनके थानों।
गिनत असी तिन मांहि बिम्ब हैं, रतन मई पुन खानों।।
देव खगा तौ जाय जजै वहां, हम यहाँ भावना भावैं।
तातैं मेरन के जिनबिम्ब सु, थापन थाप जजावैं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल मन सो ही जल उज्ज्वल भाजन भाव करायो।
आर्ज्य भाव रस सोही जीवा ता बिन पय धर लायो।।
वीसी चार सवै जिन मन्दिर पाँच मेरु के जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पाप को हानौं।।

ॐ ह्रीं पंञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल भाव कियौ शुभ चंदन भक्त गंध को धारी।
मंद मोह झारी करता मैं भर लायौ सुखकारी।।
वीसी चार सबै जिन मंदिर पाँच मेरुके जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पाप को हानौं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरु संबंध्य शीति जिनालयस्थ बिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव अखंडित उज्ज्वल सोही अक्षत सुभग बनाये।
नानाभक्त उपाय उक्ततै पुण्य बंधको आये।।

वीसी चार सबै जिन मंदिर पाँच मेरुके जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानौं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्य शीति जिनालयस्थ बिम्बेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव प्रफुल्लित फूल बनाये बहुविध भक्ति सुरंगा।
विनयवान तामें गंध नीकी पुष्पन लायो चंगा।।
वीसी चार सबै जिन मंदिर पाँच मेरुके जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानौं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्य शीति जिनालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परणत परम मनोज्ञ तने मैं शुभ नैवेद्य बनायौ।
नानारस नयद्वार घनी यह भक्तभाव कर आयौ।।
वीसी चार सबै जिन मंदिर पाँच मेरुके जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानौं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्य शीति जिनालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्ज्ञान प्रकाश सकल तत्वनको दीप बनाई।
धर्म ध्यान बहुतेज अगनि में जारी प्रीति बढ़ाई।।
वीसी चार सबै जिन मंदिर पाँच मेरुके जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानौं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्य शीति जिनालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकरम शुभ चंदन पीस्यौ ताकी धूप बनाई।
धर्म ध्यान बहुतेज अगनि में जारी प्रीति बढ़ाई।।
वीसी चार सबै जिन मंदिर पाँच मेरुके जानौं।

सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानौं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्य शीति जिनालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप रहत परणाम किए फल समता थाल भराये।
आनंद होत सुलेय हाथ में बहुविध जिन गुन गाये।।
वीसी चार सबै जिन मंदिर पाँच मेरुके जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानौं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्य शीति जिनालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसे आठों दृव्य मनोहर ताको अरघ बनाई।
निर्मल भाव बनाय रकेवी ता धर शीश नवाई।।
वीसी चार सबै जिन मंदिर पाँच मेरुके जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानौं।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्य शीति जिनालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों मेरु असी जिन धाम। है विन किये ध्रुव तिस ठाम।
तिन मध बिम्ब देव जिनराय। सो मैं पूजों अर्घ चढ़ाव।।

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थबिम्बेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम सुदर्शन मेरु की पूजा

अडिल्ल छन्द

मेरु सुदरशन जान बड़े विस्तार जी।
मानूं स्वर्ग थंभन कूं थंभा सार जी।।
जापै षोडश धाम जिनेसुर के सही।
सो हम थापन थाप जजैं इस ही मही।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनचैत्यालयस्थबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनचैत्यालयस्थबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनचैत्यालयस्थबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (चौपाई)

निरमल नीर गंग को लाय। झारीं मणि मय माहिं धराय।।
मेरु सुदरशन जिनके धाम, षोडश पूजों तीरथ ठाम।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडश जिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चंदन सो घिसवाय। लायो प्रभु पातरमें जाय।।
मेरु सुदर्शन जिनके धाम, षोडश पूजों तीरथ ठाम।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि षोडश जिनालयेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मुक्ताफल से लाय। उज्ज्वल खंडविना सुखदाय।।
मेरु सुदर्शन जिनके धाम, षोड्रश पूजों तीरथ ठाम।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडश जिनालयेभ्यो अक्षतं।

फूल कलप द्रमके सुखरूप। लायो माला गूंथ अनूप।।
मेरु सुदर्शन जिनके धाम, षोडश पूजों तीरथ ठाम।।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडश जिनालयेभ्यो पुष्पं।

नानारस नैवेद्य बनाय। मोदक आदिभले सुखदाय।।
मेरु सुदर्शन जिनके धाम, षोडशपूजों तीरथ ठाम।।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडश जिनालयेभ्यो नैवेद्यं।

दीपक रतनमई तमहार। लायो धर पातर मैं सार।।
मेरु सुदर्शन जिनके धाम, षोडशपूजों तीरथ ठाम।।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडश जिनालयेभ्यो दीपं।

सारधूप दशगंध बनाय। खेऊँजिन चरनन सुखदाय।।
मेरु सुदर्शन जिनके धाम, षोडशपूजों तीरथ ठाम।।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडश जिनालयेभ्यो धूपं।

श्रीफलखारक अनिफल और। लायो भक्त हिये धर जोर।।
मेरु सुदर्शन जिनके धाम, षोडशपूजों तीरथ ठाम।।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडश जिनालयेभ्यो फलं।

जल चंदन अक्षत पुह लेय। चरू दीपक फल धूप सु खेय।।
मेरु सुदर्शन जिनके धाम, षोडशपूजों तीरथ ठाम।।
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु संबंधि षोडश जिनालयेभ्यो अर्घं।

प्रत्येक अर्घ (पद्धरी छन्द)

वनभद्रसाल जिन थान चार। विन कीने शाश्वत पुण्यकार।।
तैं पूजों वसु द्रव अर्घ लाय। संबंध सुदर्शन मेरु पाय।। 1
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभद्रशालसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं.।

नंदन वन चव जिन थान जान।
सो तीर्थ पापहारी सु मान।। तैं पूजों।। 2
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुनंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं.।

चव जिन थल सोहे मनस थान।
सब रतन खण्ड उपमा निधान।। तैं पूजों।। 3
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं.।

जिन थल चव पांडुक वन मझार।
खुर खग पूजों तहाँ भक्ति सार।। तैं पूजों।। 4
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं.।

चव गज दंतो चव जिन सुगेह।
महां सुन्दर देखें होय नेह ।। तैं पूजों।। 5
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुचतुर्गजदन्तसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं.।

जंबु वृक्षै जिन थान सोय। रचना मणि मय तहां बिंब जोय।।
ते पूजों वसु द्रव अर्घ लाय। संबंध सुदर्शन मेरु पाय।। 6
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुजम्बूवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं.।

जिन थान शालमलि वृक्ष ठांहि।
मुख मकहमा कहते पार नाहिं ।। तैं पूजों।। 7
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं.।

सुदरशन मेरु दक्षिणदिसाय। जिनथान कुलाचल पैजो पाय।।
तिनमें जिनबिंब मनोज्ञ सोय। जिनके पद पूजों दीन होय।। 8
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिदक्षिणदिक्कुलाचलस्थजिनालयाय अर्घं.।

उत्तर दिश याही मेर जानि।
जिन भवन कुलाचल पै सु थान।। तिनमें. ।।9
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिउत्तरतदिशात्रयकुलाचलस्थजिनालयाय अर्घं.।

सुदरशन मेरु पूरब दिशाय ।
जिन थान वक्ष्यारन सीस पाय।। तिनमें.।। 10
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशासम्बन्ध्यष्टवक्ष्यारगिरिस्थजिनालयेभ्यो अर्घं.।

पच्छिम दिश येही मेरु सार।
विक्ष्यारन पै जिन भवन धार।। तिनमें.।। 11
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपच्छिमदिशासम्बन्ध्यष्टवक्षारगिरिस्थजिनालेभ्यो अर्घं.।

इस मेरु सुदरशन पूर्व जाय।
विजयारध पै जिनभवन पाय।। तिनमें.।। 12
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपूर्वदिशायाः षोडश विजयार्धपर्वतस्थजिनालयेभ्यो अर्घं.।

पच्छिम सुदरशन मेरु ठांहि।
वेताडन पै जिन भवन पांहि।। तिनमें. । 13
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशि विजयार्धपर्वतस्थजिनालयाय अर्घं.।

इस मेरु सुदरशन दछन जानि।
रूपाचल पै इक जिन सुथानि ।। तिनमें.।। 14
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुदक्षिणदिशि एक रूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं.।

उत्तर दिश इसही मेरु जान।
विजयारध पै जिन भवन मान।। तिनमें.।। 15
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुउत्तरदिशिरूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं.।

अडिल्ल छन्द

तीस चार वैताढ़ सोल वक्ष्यार जी।
दोय विरछ षट कुलाचला लख सारजी।।
षोडश वनके थान चार गज दंत हैं।
ह्यां इक इक जिन भवन जजों ते संत हैं।। 16
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्ध्यष्टसप्ततिजिनालयेभ्यो महार्घं.।

अथ जयमाला

दोहा – मेरु सुभग थानक भलौ, तीरथ पातक नास।
जजौं थान इस संग के, मन वच तन है दास।। 1

चाल–तेगुरु की

मेरु सुदरशन सोहनौ, तीरथ पद सुखदाय।। टेक।।

ऊँचो जोजन लाख है, सब कनक स्वरूप।
नीचै की मणि तेज है, बहु घेर अनूप।। मेरु सुदर.।। 2

भद्रसाल वन मेरु की, जड़ भौम मझार।
ता ऊपर फिर जाइये, वन नन्दन सार।। मेरु सुदर.।। 3

ता ऊपर वन सोम है, तीजौ वन सोय।
ऊपर पांडुक वन कहो, चौथो अवलोय।। मेरु सुदर.।। 4

इस वन वन, चव जानिये, श्रीजिनवर ठाम।
कनक रतन जड़िये सही, सब करो प्रणाम।। मेरु सुदर.।। 5

ठाम ठाम सर बावड़ी, शुभ महल अनूप।
देव तहां क्रीड़ा करैं, वापक गुन रूप।। मेरु सुदर.।। 6

कै चारन मुनि जाय हैं, जिन वंदन काज।
ध्यान धरैं शुभ थानमें, पावै शिवराज।। मेरु सुदर.।। 7

पांडुक वन में जानिये, मध चूलक ठाम।
वैडूरक मणिमय सही, रंग हरत सुधाम।। मेरु सुदर.।। 8

जोजन तुङ्ग चालीस है, तिस ऊपर जोय।
केस अन्तरै स्वर्ग है, सौधर्म जुग सोय।। मेरु सुदर.।। 9

इत्यादिक महिमा–घनी, कवलों वरनाय।
सहस जीभतै कीजिये, तोहु पार न पाय।। मेरु सुदर.।। 10

सब गिरि में परधान है, यह मेरु महान।
याके अन परवार हैं, तहां जिनके थान।। मेरु सुदर।। 11

तीस चार वैताढ हैं, षोडश वक्ष्यार।
और कुलाचल षट सही, गजदंत वृक्ष सार।। मेरु सुदर.।। 12

एक एक जिन थान हैं, मैं पूजों सार।
मेरु सुदरशन है सही, कंचन वरन अपार।। मेरु सुदर.।। 13

दोहा – मेरु मांहि मन राखिये, तहां अकृत्रिम थान।
जिनके मुनि चारण तहाँ, तातैं नमि पुनि आनि।। 14

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति सुदर्शन मेरु पूजा सम्पूर्ण)

अथ द्वितीय विजयमेरु पूजा

(गीता छन्द)

खंड धातकी पूर्व दिशकौ विजय मेरु सुथान है।
तिस ऊपरै जिनधाम षोडश अकीर्तन पुन धाम है।।
इन आदि और कुलाचलादिक मेरु संबंधी सही।
जिन थान कूं यहाँ थापि पूजूं भक्त तै पुनकी ग्ही।। 1

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोड़शजिनालयानि अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयानि अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक (अडिल्ल छन्द)

नीर निरमलो गंग धारको लाइये।
सुन्दर झारी घालि हरष बहु पाइये।।
जनम–मरन दुख हरन महा थुति गायजी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन बावन अगर गंधले सार जी।
निरमल नीर घसाय आप कर धार जी।।
भौ तपरोग मिटावनकौ गुन गायजी।
पूज्य जिनालय विजय मेरु जुत पायजी।। चंदनं.

अक्षत उज्ज्वल खंड विनाही लाइयौ।
प्राशुक जलतैं धोय शुद्ध करवाइयौ।।
थान अखयका लोभ धार मैं आयजी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पायजी।। अक्षतान्.

फूल कनक चांदी के प्राशुक लेयजी।
तिनको हार बनाय शोभजुत जेयजी।।
कामदहन के काज भक्त धर आयजी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी।। पुष्पं.

नाना रस नैवेद्य आदि मोदक सही।
कीनैं शुभ आचार सहित अब इस मही।।
भूखरोग खय काज आज हम आयजी।

पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी।। नैवेद्यं.

मणिमय दीपक लेय जोत परकाश जी।
कंचन पातर धार होय प्रभु दास जी।।
मेटन मिथ्या ध्वांत पूजने आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी।। दीपं.

धूप मनोज्ञ बनाय बंध दश डार जी।
खेवन आयौ अगनि माहि थुति धारजी।।
कर्म दाह फल चाह और नहीं आयजी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी।। धूपं.

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी सारजी।
खारिक आदि अनेक और फल धारजी।।
कारण शिव फल लोभ आप पै आयजी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी।। फलं.

नीर गंध तंदुल पुह चरु ले दीपजी।
धूप फला विध आठ अरघ शुभ टीपजी।।
नाना सुख के काज पाप खयदायजी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी।। अर्घ.

प्रत्येक अर्घ (जनजंपि की चाल)

विजय मेरु की भौम में बन भद्रसाल सुखदाई जी।
च्यार जिनालय मणिमई ते पूजो अर्घ बनाई जी।।
मन वच भक्त लगाय कैं।। 1

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसाल वनस्थचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं।

नंदन बन या ऊपरै तिस महिमा अधिक विचारो जी।
विजयमेरु शुभस्थान है यह तीरथ निरमल जानोजी।। मन.।। 2

ॐ ह्रीं विजयमेरु नंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं।

इस ऊपर वन सोम है तहां देव विद्याधर जावें जी।
चारि जिनालय हैं तहां ते पूजों मैं अघ ढावैं जी।।
विजयमेरु तीरथसही तहां जिनथल मुनिशिव जावैंजी।।मन.।।3
ॐ ह्रीं विजयमेरु सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं।

पांडुक वन सब ऊपरे जहां रतनमई जिन गेहा जी।
चारि जिनालय जिन कहे ते पूजों अरघ समेहा जी।।
विजयमेरु तीरथसही तहां जिनथल मुनिशिव पावैंजी।।मन.।।4
ॐ ह्रीं विजयमेरु पांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं।

विजय मेरु दक्षिण दिशा जंबू वृक्ष बहु विस्तारो जी।
तापैं इक जिन गेह है सो पूजौं अरघ संवारौ जी।।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग नित सारो जी।।मन.।।5
ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिशास्थजंबूवृक्षस्यैकजिनालयार्घं।

उत्तर दिश इस मेरु की शाल्मली वृक्ष जानौ जी।
तापै जिन मंदिर सही ते पूजों अरघ चढ़ानौं जी।।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।।मन.।।6
ॐ ह्रीं विजयमेरुउत्तरदिशायाः शाल्मलिवृक्षस्यैक जिनालयार्घं।

विजयमेरु गजदंत पै जिन थानक है पुन्य दाई जी।
सो चारों थल बंदिये ले अरघ महा हरषाई जी।।
विजय मेरु तीरथ सही पूजै सुर खग यह थानौं जी।।मन.।।7
ॐ ह्रीं विजयमेरु चतुर्गजदन्तोपरिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु दक्षिणदिशा गिरि तीन कुलाचल सारोजी।
तिन पै जिन थानक सही ते पूजों हरष अपारो जी।।
विजय मेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी।।मन.।।8
ॐ ह्रीं विजयमेरु दक्षिणदिशायाः त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्यो अर्घं।

उत्तर दिश इस मेरु की गिर कहे कुलाचल तीनौं जी।
तिन पै जिन मन्दिर सही ते पूजो भक्ति नवीनोजी।।
विजय मेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी।।मन.।।9

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंध्युत्तरदिशायास्त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं।

दक्षिण दिस वेताढ है गिरि विजय मेरु तैं जानों जी।
तिन पै जिनथल विन किये ते पूजौं हरष बढानों जी।।
विजय मेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी।।मन.।।10

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिश्येकविजयार्धोपर्येकजिनालयार्घं।

विजयमहा गिरि मेरु की विजयारध पश्चम सोलाजी।
तिनपै इक–इक जिनभवनते पूजैं अघहोय खोलाजी।।
विजय मेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी।।मन.।।11

ॐ ह्रीं विजयमेरु पश्चिमदिशायांषौडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं।

विजय मेरु की उत्तरैं विजयारध एक सुथानो जी।
तापै इक जिन थान है सो पूजों कर सम्मानों जी।।
विजयमेरु तीरथसही पूजैं सुर खग यह थानों जी।।मन.।।12

ॐ ह्रीं विजयमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धोपर्येकजिनचैत्यालयार्घं।

पूरब दिस इस मेरु की विजयारध महा गिरिंदा जी।
तिन पै षोडश जिन भवन पूजैं मिट है अघ फंदाजी।।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी।।मन.।।13

ॐ ह्रीं विजयमेरुपूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषुषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं।

पूरब दिस इस मेरु की बसु परवत सार विक्ष्यारो जी।
तिनपै जिन थल आठ हैं ते पूजों मन वच धारोजी।।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी।।मन.।।14

ॐ ह्रीं विजयमेरु पूर्वदिश्यष्टवक्ष्यारेष्वष्ट जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं।

पच्छम विजय सुमेरु की आठ बिक्ष्यार सुजानौ जी।
आठ तिनौं पै जिनभवन ते पूजों अरघ सुआनौजी।।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी।। मन.।। 15

ॐ ह्रीं विजयमेरु पश्चिमदिश्यष्टवक्ष्यारेष्वष्ट जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द

विजय मेरु संग इस प्रकार वन चार जी।
गजदंता वृक्षदोय कुलाचल सार जी।।
विजयारध चौंतीस वक्ष्यार सुजानिये।
इन पै जे जिन थान जजौं अर्घ आनिये।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

दोहा – विजय मेरु दूजो सही, जान अकिरतन थान।
या संबंध जे जिन भवन, पूजैं सुर खग आन।। 1

मुनियानन्द की चाल–

मेरु विजया विषैं थान जिनके सही।
बिम्ब तिनमें जिसे देव जिन छवि कही।। 1

दिष्ट नाशा दिये ध्यान पदमासना।
देखते नाश होय पापकी वासना।। 2

शांति मुद्रा बिना राग सुखदायजी।
मानु अब दिव्य धुनि खिरैगी आयजी।।
इन्द्र से दीन होय करै अरदासना।
देखते नाश होय पापकी वासना।। 3

ध्यान में मुनि जिन बिम्ब जे ध्याय है।
आपनौ रूप ऐसो कियो चाय हैं।।
जोय जिन ध्यान नहीं होय जग आसना।
देखते नाश होय पाप की वासना।। 4

भक्त मन मोहनी देह जिनराय की।
देखते बढै उर राग सुखदाय जी।।
मोक्ष तिय नित चहै रूप तिन भासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।। 5

देखते मूर्ति जिन राय सुध आय है।
सोम अति सोहनी काय जिनराय है।।
लखै शुभ ध्यान दुर ध्यान की वासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।। 6

आदि इनको घनी ऊपमा दायजी।
अकिरतम देव जिन बिम्ब में पाय जी।।
तीर्थ मंगल करा और समता सना।
देखते नाश होय पाप की वासना।। 7

बिम्ब सब रतन मय तजे बहु धारजी।
जोति तिनकी कनै दबै शशिसारजी।।
कनक मय गेह जिन धरें परकासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।। 8

बड़े विस्तार जिन थान को जानिये।
कोटि त्रय वेष्टि रचना घनी मानिये।।
वाग वन महल वापी सुदुख नाशना।
देखते नाश होय पाप की वासना।। 9

दूसरे मेरु विजय तनी विधि कही।
वरनतै सोभ पुण्य रास भव्यनि लही।।
तीर्थ सिद्ध क्षेत्र मुनि करै कर्म नासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।। 10

विजय यह मेर बहु घेर में जानिये।
देव खग गमन तहँ सदा तिस थानिये।।
जजैं ते जाय हम करैं यहँ उपासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।। 11

दोहा – विजय मेरु गुनमाल को, जपें जोय भवि कोय।
ताको तीरथ लाभ हैं, दिये भाव फल होय।। 12

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति विजय मेरु पूजा समाप्त)

□□□

अथ तृतीय अचलमेरु पूजा

।। वेसरी छन्द।।

मेरु अचल सम्बंधि जिनाला, सो पूजै सुर खग गुनमाला।
हम तौ सकत हीन हैं भाई, तातैं यहाँ थपि भावन भाई।। 1

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयान्यत्रावतरतावतरत संवौषट्।
ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयान्यत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयान्यत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (अडिल्ल छन्द)

नीर निरमलो कनक पात्र धर लायजी।
उज्ज्वल सार सुगन्ध मनोहर आयजी।

अचल मेरु सम्बन्ध जिते जिन थान जी।
पूजों भक्त बढ़ाय फलै भव हानजी।। 1

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन चारु सुगंध अगर मिलवायजी।
प्राशुक पानी लाय घस्यो थुति गायजी।।
अचल मेरु सम्बन्ध जिते जिन थानजी।
पूजों ताफल भव आताप मिटावजी।। 2।। चंदनं

अक्षत अखंड अनूप गंध धारी सही।
धवल रंग मुकता फलसे पुन की सही।।
अचल मेरु सम्बन्ध जिते जिन थानजी।
पूजों ता फल अक्षय पदकों पायजी।। 3।। अक्षतान्

फूल कलप वृक्ष सार गंध दायक सही।
कंचन चांदी फुल आपनै कर मही।।
अचल मेरु सम्बन्ध जिते जिन थानजी।
सो पूजों पद मदन तनौं खय जानिजी।। 4।। पुष्पं

नाना रस शुभ लाय कियौ नैवेद्यजी।
मोदक आदि बनाय लिए निरवेदजी।।
अचल मेरु सम्बन्ध जिते जिन थानजी।
सो पूजों फल भूख तनी होय हानिजी।। 5।। नैवेद्यं

दीपक मणिमयसार जोति तम नासना।
कनक पात्र धर लाय करौ धुति भासना।।
अचल मेरु सम्बन्ध जिते जिन थानजी।
सो पूजौं फल होय मिथ्यातम नासजी।। 6।। दीपं.

अगर चंदन आदि जो दशधा धूपजी।
अगनि मध्य खेऊँ निज हौन अरूपजी।।
अचल मेरु सम्बन्ध जिते जिन थानजी।
सो पूजौं फल कर्म दहै शिव जायजी।। 7।। धूपं.

श्री फल लौंग बादाम सुपारी सारजी।
आदि इने अनि आनि फला सुखकारजी।।
अचल मेरु सम्बन्ध जिते जिन थानजी।
सो पूजौं फल मोक्ष हौनकी जानिजी ।। 8।। फलं

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु दीपक सही।
धूप और फल आठ लेय अरघे टही।।
अचलमेरु सम्बन्ध जिते जिन थानजी।
सो पूजौं फल अमल हौन हित आनजी।। 9।। अर्घं

अथ प्रत्येक अर्घ

।। चौपाई।।

अचल मेरु को भौम मझाार, भद्रसाल जानौं वनसार।
ताके मध चव जिनवर थान, ते हौं पूजों शक्ति प्रमान।। 1
ॐ ह्रीं अचलमेरु भद्रसालवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं नि.।

नंदन नाम महा बन सोय, अचल मेरु के ऊपर जोय।
ताके मांहिं चार जिनथान, तेऊ पूजों शक्ति प्रमान।। 2
ॐ ह्रीं अचलमेरु नन्दनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं नि.।

अचल मेरु के ऊपर सोय, सोमनस नाम वन अद्भुत जोय।
तामें चार जिनालय जान, ते हों पूजों शक्ति प्रमान।। 3
ॐ ह्रीं अचलमेरु सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं नि.।

पांडुक वन सब ऊपर जोय, अचल मेरु सम्बन्धी सोय।
ता विच चार जिनालय जानि, ते हूँ पूजों शक्ति प्रमान।।4
ॐ ह्रीं अचलमेरु पांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं नि.।

अचल मेरु की दक्खिन दिशा, जंबू वृक्ष ऊपरे लसा।
एक जिनेसुरजी का थान, सो ही पूजों शक्ति प्रमान।। 5
ॐ ह्रीं अचलमेरु दक्षिणदिशस्थजम्बूवृक्ष्यैकजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि.।

अचल मेरु की उत्तर सोय, सालमली वृक्ष मणमय जोय।
तापै एक जिनेसुर थान, सोहू पूजौं शक्ति प्रमान।। 6
ॐ ह्रीं अचलमेरुत्तरदिशायाः शाल्मलिवृक्षोपर्य्येक जिनचैत्यालयार्घं।

अचल मेरु के चार बखान, गजदंता परवत हित दान।
तिनपै चार जिनालय जान, तेहू पूजौं शक्ति प्रमान।। 7
ॐ ह्रीं अचलमेरु चतुर्गजदन्तोपरिचतुजिनालयेभ्यो अर्घं नि.।

अचलमेरु की दक्षिण सोय, तीन कुलाचल गिर शुभ जोय।
जिन पै तीन जिनालय जान, ते हू पूजौं शक्ति प्रमान।।8
ॐ ह्रीं अचलमेरु दक्षिणदिशि त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयोभ्यो अर्घं।

अचल मेरु उत्तर दिस जाय, तीन कुलाचल परवत पाय।
तिन पै तीन जिनालय जान, ते हू पूजौं शक्ति प्रमान।। 9
ॐ ह्रीं अचलमेरुत्तर दिशि त्रिषुकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्यो अंर्घं नि.।

अचल मेरु की पूरब जोय, आठ वक्ष्यार महा गिर पाय।
तिन इक इक पै है जिनथान, तेहों पूजौं शक्ति प्रमान।। 10
ॐ ह्रीं अचलमेरु पूर्वदिश्यष्टवक्ष्यारगिरिष्वष्ट जिनालयेभ्यो अर्घं नि.।

पच्छम अचल मेरु को जोय, आठ बक्ष्यार बढ़े गिर सोय।
तिन पै आठों ही जिन थान, तेहू पूजौं शक्ति प्रमान।। 11
ॐ ह्रीं अचलमेरु पश्चिमदिश्यष्टवक्ष्यारेष्वष्टजिनालयेभ्यो अर्घं।

अचल मेरु की पूरब जोय, हैं बिजारध षोडशसोय।
तिन पै षोडश ही जिन थान, सो हौं पूजौं शक्ति प्रमान।। 12
ॐ ह्रीं अचलमेरु पूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्यो अर्घं।

अचल मेरु की दक्षिण भौम, बिजयारध गिर है इक सोम।
ता ऊपर इक जिनको थान, सोहू पूजौं शक्ति प्रमान।। 13
ॐ ह्रीं अचलमेरु दक्षिणदिश्येकविजयार्धोपर्येक जिनालयार्घं नि.।

मेरु अचल की पश्चिम जेइ, षौडश विजयारध गिर लेइ।
तिन सबपै इक–इक जिनथान, सो हौं पूजौं शक्ति प्रमान।। 14
ॐ ह्रीं अचलमेरु पश्चिमदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशचैत्यालयेभ्यो अर्घं ।

अचल मेरु की उत्तर धरा एक खगाचल पर्वत परा।
तापै एक जिनालय जान, सों हौं पूजौं शक्ति प्रमान।। 15
ॐ ह्रीं अचलमेरुत्तरदिश्येक विजयार्धस्यैकजिनालयार्घं नि.।

खंड धातकी दक्षिण जाय, इष्वाकार एक गिर पाय।
ता पै एक जिनालय मान, सो हौं पूजौं शक्ति प्रमान।। 16
ॐ ह्रीं धातकीखंडदक्षिणदिश्यवक्ष्वाकारपर्वतोपर्येक जिनालयार्घं नि.।

उत्तर दिश खँड धातकि माहिं, इक्ष्वाकार मध्य में पाहिं।
ता पै एक जिनालय मान, सोमैं पूजौं शक्ति प्रमान।। 17
ॐ ह्रीं धातकीखंडस्योत्तरदिश्यिक्ष्वाकारपर्वतोपर्येकजिनालयार्घं नि.।

ऐसे अचल मेरु विध जोय, सो–सो धरा जिनालय सोय।
ते हौं अरघ लाय हरषाय, पूजौं सब जिन थल थुति गाय।। 18
ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

✤ अथ जयमाला ✤

दोहा – अचल मेरु पै जिन न्हवन, होय मुनि शिव जाय।
तातैं तीरथ निरमलौ, मैं पूजौं गुन गाय।। 1

।। वेसरी छन्द।।

अचल मेरु सम्बन्धी जानौं, हैं जिन थान सु कहौ बखानौ।
अरु पर्वत गिर याकी लारा, सुन तैं जीव लहैं पुर सारा।। 2

जहां–जहां जिन मन्दिर होई, सो–सो थान कहौं सुनि सोई।
चव्वन षोडश जिन थल धारा, सुन तैं जीव लहै पुन सारा।। 3

चार कहे गजदंता भाई, इन पै चव जिन गेह बताई।
सो भी रतन मई शुभकारा, सुन तैं जीव लहै पुन सारा।। 4

जम्बू शाल्मली वृक्ष जानौं, इन जुग पै जुग जिनथल मानौं।
तहँ भी सुर खग का पै सारा, सुन तैं जीव लहै पुन सारा।। 5

षोडश गिर वक्ष्यार हैं भाई, तिन पै षोडश जिन गृह पाई।
तहां जाय पूजौं शुभ धारा, सुन तैं जीव लहै पुन सारा।। 6

विजयारथ चौंतीसा जानौ, ते सब चांदीमय तन थानौ।
तिनपै चौतिस जिनथल भारा, सुनतैं जीव लहै पुन सारा।। 7

इक्ष्वाकार दोय गिर जानौ, इन पै दोय जिनालय मानौ।
तहां सुरखग पूजैं हितकारा, सुन तैं जीव लहै पुन सारा।। 8

इत्यादिक जिन मंदिर भाई, सबै थान जिय की सुखदाई।
ये सब तीरथ थान अपारा, सुन तैं जीव लहै पुन सारा।। 9

जो पूजै परतछ तहँ जाई, ताके उदय पुन्य होय भाई।
हम परोक्ष गुन गावें प्यारा, सुन तै जीव लहै पुन सारा।। 10

हम यहां पूज्य भावना भावैं, ताही कर भव सफल करावैं।
गावै राग धार गुन भारा, सुन तैं जीव लहै पुन सारा।। 11

दोहा – खंड धातकी पछम दिश, अचल मेरु शुभ धाम।
ता सम्बन्ध तीरथ सवै, जजौं जिनेश्वर ठाम।। 12

ॐ ह्रीं धातकीपश्चिमदिश्यचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घं।
इति अचलमेरु पूजा समाप्त।

अथ चतुर्थ मंदिरमेरु संबंधी जिनालय पूजा

(मुनियानन्द की चाल)

अर्घ यह कर धरा पूर्व दिशा जानिये।
मेरु चौथा भला मंदर सुख मानिये।।
तासम्बन्धी जिते जिन थानका है सही।
सो सकल थापि इहां जजौ पुन्य की मही।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसम्बन्धिजिन चैत्यालयानि अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् इत्याह्वानम्।
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसम्बन्धिजिन चैत्यालयानि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसम्बन्धिजिन चैत्यालयानि अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक (भुजंगप्रयात छन्द)

लियानीर प्राशुक भले पात्र माहीं।
धरी भक्त उरमें लिये हाथ ठाहीं।।

करूँ वीनती गुनन की गाय माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धी जिनाला।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भला अगर चंदन घसा नीर माहीं।
धरे गंध बहु भंवर गुंजार लाहीं।।
लिया पात्र माहीं कहीं भक्त माला।
जजौं मेरु मंदिर सम्बन्धी जिनाला।। 2।। चंदनं

भले खंडविन तंदुला सोध लाया।
घने उज्जला सोभदाई सुहाया।।
धरें पात्र माहीं पढ़ी भक्त माला।
जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला।। 3।। अक्षतान्

लिए फूल शुभ वृक्ष के गंधदाई।
करी माल नीकी भली जुक्त लाई।।
धरी आपने हाथ कह भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धी जिनाला।। 4।। पुष्पं

नैवेद नाना भरे स्वाद लाया।
घने मेलि रस मोदकादिक बनाया।।
धरे पात्र करले पढ़ी भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धी जिनाला।। 5।। नैवेद्यं

लिए दीप मणिमय महा जोति धारी।
गया अंध तिनतें जगे छोड़ि सारी।।
लिए आरती गाय सुख भक्त माला।
जजौं मेरु मंदिर सम्बन्धी जिनाला।। 6।। दीपं

करी धूप दशधा लगी गंध आनी।
घसी नीरतैं जोर बारीक ठानी।।
धरी अगनि पै हरष कह भक्त माला।
जजौं मेरु मंदिर सम्बन्धी जिनाला।। 7।। धूपं

लिए श्रीफला लौंग बादाम भारी।
भले खारका और जानौं सुपनारी।।
चले पात्र में धार पढ़ भक्त माला।
जजौं मेरु मंदिर सम्बन्धी जिनाला।। 8।। फलं

धरैं नीर चंदन अक्षत पहुप भारी।
नईवेद दीपक भला धूप थारी।।
धरी अर्घ करले भली भक्त माला।
जजौं मेरु मंदिर सम्बन्धी जिनाला।। 9।। अर्घं

अथ प्रत्येक अर्घ

(मुनियानन्द की चाल)

मेरु मंदिर तनी भौम में जानिये,।
महा बन भद्रसाला सुखद मानिये।।
तास मध्य चार जिन थान पुण्य की मही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।। 1।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुभद्रसालवन सम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि.।

ऊपरैं मेरु मन्दिर तनों जानिये।
नन्दन वन सोभिए महा सुख मानिये।।
ता विषैं चार जिनराज मन्दिर सही।
सो जजौं अर्घ सों वीनती मुख कही।। 2।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु नन्दनवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि.।

मेरु मन्दिर तने ऊपरे सारजी।
सौमवन है सही सकल सुख कारजी।।
ता विषै चार जिन देव मंदिर सही।
सो जजौं अर्घसों वीनती मुख कही।। 3।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि.।

ऊपरै मेरु मन्दिर, तने जानिये।
पांडुवन सोहनो तीर्थ सो मानिये।।
चार जिन थान विन कि तहां हैं सही।
सो जजौं अर्घतें वीनती मुख कही।। 4।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु पांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि.।

मेरु मन्दिर दक्षिण दिशा जोय जी।
वृक्ष जंबू कहौ रतन मय सोयजी।।
तास ऊपर कहौ थान जिनको सही।
सो जजौ अर्घ तैं वीनती मुख कही।। 5।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुभद्रसालवन सम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि.।

मेरु मन्दिर तनी दिशा उत्तर गिनौ।
सालमल वृक्ष सो मणिमई धुनि भनौं।।
एक जिन गेह विन कियो तहां है सही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।। 6।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुत्तदिशि शाल्मलिवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयार्घं नि.।

मेरु मंदिर तनें चार गजदंत जी।
तिन विषैं चार जिन थान अघ तंतजी।।
देव खगजाय जिन सेव करहैं सही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।। 7।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुश्चतुर्गगजदन्तेषु चतुर्जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि.।

मेरु मन्दिर तनें दक्षिन दिश भौमजी।
तीन गिर कुलाचल जान अति सोमजी।।
तिन विषैं तीन जिन थान शुभ की मही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।। 8।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुदक्षिणदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यः जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश मेरु मन्दिर तनी जानिये।
तीन परवत भले कुलाचल मानिये।।
तिन विषैं तीनही थान जिनके सही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।। 9।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुत्तरदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यः जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु पूरब दिशा मन्दिर की जानिये।
आठ वक्ष्यार गिर बड़े शुभ मानिये।।
तिन विषैं आठ ही जिन भवन है सही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।।10।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु पूर्वदिशासम्बन्ध्यष्टवक्षारगिरिष्टाभ्यः जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्छिम दिश मेरु मन्दिर तनी जोइये।
आठ वक्षार गिर कनक मय सोइये।।
तिन विषैं आठ जिन थान शुभको मही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।।11।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु पश्चिमदिश्यष्टासु वक्षारगिरिष्वटाभ्यः जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरब दिश मेरु मन्दिर तनी सारजी।
जान विजयार्धा षोडशा भारजी।।
ऊपरै जिन भवन सवन के हैं सही।

सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।।12।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु पूर्वदिशासम्बन्धिषौडशविजयार्धेषु षोडशजिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दच्छन दिश मेरु मन्दिर तनी जायजी।
एक रूपाचला खगन को थाय जी।।
ता विषैं एक जिनराज मन्दिर सही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।। 13।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु दक्षिणदिशासम्बन्ध्येकविजयार्ध गिरावेकजिनालयाभ्यं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु मन्दिर तनी पछिम दिश भाय है।
षोडशा खगाचल रूप मय पाय है।।
तिन धरै देव जिन भवन षोडश सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।14।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु पश्चिमदिशासम्बन्धिषोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दिर शुभ मेरुकी उत्तरदिश जायजी।
खगाचल एक गिर रूपमय थांयजी।।
ता विषैं एक जिनराज थल है सही।
सौं जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।।15।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुत्तरदिशासम्बन्धिषोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि इन मेरु मन्दिर तनी लारजी।
थान बहु सुभग सब अकिरतम सारजी।।
तिन विषैं अकिरतम ठाम जिनजे सही।
सो जजौं अर्घ तैं वीनती मुख कही।।16।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरु सम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

दोहा – मन्दिर मेरु सु सोहनौ, चवथे अचल अनादि।
ता सम्बन्धि जिन थानको, नमौं करों अघ वादि।।1।।

।। परमादी की चाल।।

पौहकर अर्घ मझार पूरब मेरु कहा जी।
मन्दिर ताका नाम जिन धुनि माहि चयाजी।।2।।

जाके शीश मझार पांडुक है वन नीका।
रचना धरैं अपार सुखदायक सबजीका।।3।।

ता बन चार अनूप पांडुक शिला कहीजी।
अर्धचन्द्र आकार बहु विस्तार लही जी।।4।।

मोटी जोजन आठ लंबी सौ लक्ष भाई।
चौड़ी है जो पचास जोजन अति सुखदाई।।5।।

ता ऊपर सिंहपीठ तीन कहे अति भारी।
ता मध कलश हजार आठ रहे शुभकारी।।6।।

मंगल द्रव वसु ज्ञान धूप घटादिक सारे।
रचना और अनेक जानि अनादि अपारे।।7।।

ऐसी सिला अनूप ता ऊपर जिन आवैं।
बैठि सिंहासन ठाम प्रभु असनान करावैं।।8।।

इस खंड जे जिन होंय तिनकों इन्द्र सुलावें।
ह्यां धर सुर अब आय क्षीरोदधि जल भावैं।।9।।

कलश सहस वसु आनि सागर से विस्तारा।
वसु जोजन त्वंग जानि एते मध्य विचारा।।10।।

इक जोजन मुख सार ऐसे कलश सुलावैं।
हाथों हाथ सुदेव हरिके हाथ धरावैं।।11।।

इन्द्र तबै कर लेय जय जय शब्द करावैं।
जिन शिर एके साथ धारा कलश ढरावैं।।12।।

कर हरि नृत्य थुति गान जिनको घर पहुंचावैं।
तातैं ए गिरराज जगमें तीरथ गावैं।।13।।

तहँ मुनि चारण जाय ध्यान धरैं सुध लाई।
कर्म काटि शिव लेय तातैं तीरथ थाई।।14।।

इम बहु उपमा धार मंदिर जानौं मेरा।
कनक मई सब पीठ त्वंग बड़ा बहु फेरा।। 15।।

दोहा – चौथा मंदिर मेरु जो, सुर खग को आधार।
हम यहां तैं, पूजन तनी, भावना भावैं सार।। 16।।

(इति मन्दिरमेरु पूजा समाप्त)

* * *

अथ पंचम विद्युन्माली मेरु पूजा

।। गीता छन्द।।

विद्युन्माली मेरु पञ्चम पच्छम पुष्कर दीप जी।
गजदन्त वृक्ष कुलाचला वैताढि पै शुभ टीपजी।।
इन आदि सकल वक्ष्यार थानक ऊपरैं जिन थानजी।
ते जजों थापन आदि मैं यहां भावना शुभ आनजी।। 1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयानि अत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयानि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयानि अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक (त्रिभंगी छन्द)

जल प्राशुक लाया अति हरषाया निरमल पाया सुखकारी।
धर कंचन झारी भक्त उचारी नय शिव धारी गुन भारी।।
यह विद्युन्माली मेरु विशाली सब अघ टाली थान सही।
इनके सम्बन्धी जिन थल संधी मैं सब बन्दौं पुन्य मही।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चंदन आनी गंध जु थानी घसि शुचि पानी त्यार किया।
धर रतनन झारी निज कर धारी भक्त उचारी हर्ष लिया।।
यह विद्युन्माली।।2।। चंदनं

शुभ अक्षत जानौं खंड न मानौ धवल अघानौ वास धरा।
तिनकों शुभ धोये. पुंज संजोये भाव मिलोये पुन्य करा।।
यह वि. ।।3।। अक्षतान्

अब फूल सुलाये गंध धराये सब मन भाये शोभ दई।
फलवृक्षनि के हैं हाथ लिए है गूंथ दए हैं माल ठई।।
यह वि. ।।4।। पुष्पं

नैवेद्य सुप्यारा बहु रस धारा स्वाद अपारा तुरत किये।
धर कंचन थाली भक्त विशाली कह गुन माली हरष हिये।।
यह वि. ।।5।। नैवेद्यं

मणिदीपक आन्या सबतम भान्या ज्ञान उगान्या हम लाये।

धर पातर माही उर हरषाही भक्त बढ़ाई गुन गाये।।
यह वि. ।।6।। दीपं

हम धूप बनाए शुभ गंध लाए दश विध भाए मेलि लई।
अब भक्त बढ़ाई मुख थुति गाई अगनि धराई खेय दई।।
यह वि.।।7।। धूपं

फल लौंग सुपारी श्रीफल भारी खारिक सारी हम लाए।
फिर जान बदामा और सुकामा लेकर ठामा शुभ दाए।।
यह वि. ।।8।। फलं

जल चंदन आन्या अक्षत मिलाना पहुप सुजाना गंध धरा।
चरु दीप सु धूण फल जु अनूणा अर्घं सरूपा हाथ करा।।
यह वि. ।।9।। अर्घं

अथ प्रत्येक अर्घ (चौपाई)

पहुकर अर्घ पछम दिस मेर, विद्युन्माली नाम अति घेर।
ताके भद्रसाल जिन थान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि भद्रसालवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं।

याही विद्युन्माली मेर, ता ऊपरि नन्दन वन हेर।
ता वन में चव जिनके थान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबन्धि नंदनवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं।

इस ही मेरु सोमवन सोय, ताकी महिमा अद्भुत होय।
ता वन विषैंचार जिन थान, सोहौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु सौमनसवनसम्बन्धि चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं।

मेरु सुविद्युन्माली देख, तिस पै पांडुक वन है येक।
ताके मध चव जिनके थान, सोहौं जजौं अर्घ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु सम्बन्धिपांडुकवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं।

विद्युन्माली मेरु सुभाय, ताके चव गजदंते पाय।
तिन इक इक पै है जिनथान, सौहौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु सम्बन्धिचतुर्गजदंतेषु चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं।

याही मेर दक्षिण दिश जोय, जंबू नाम वृक्ष इक होय।
ताके मध्य एक जिन थान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु सम्बन्धिदक्षिणदिशि जंबूवृक्षोपर्येक जिनचैत्याल–
यार्घं।

इस ही मेरु उत्तर दिश जोय, सालमली वृक्ष जानो सोय।
ता ऊपर जिनको इक थान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्ध्युत्तरदिशि शाल्मलिवृक्षोपर्येक जिनालयार्घं।

याही मेरु दक्षिण दिश जाय, तीन कुलाचल गिर शुभपाय।
तिन पै तीन थान जिनराय, सो हौं जजौं अरघ थुति गाय।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि दक्षिणदिशायां त्रिषु कुलाचलेषुत्रिजिनाल
–येभ्योऽर्घं।

उत्तर दिश इस मेरु सुजेय, तीन कुलाचल परवत तेय।
तिन पै तीन देव जिन थान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि विद्युन्मालिमेरु त्रिषु कुलाचलेषु त्रिजिनालयेयोऽर्घं।

याही मेरु पूरब दिश सोय, आठ वछार नाम गिर होय।
तिन सबपै इक इक जिन थान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु पूर्वदिशायामष्टवक्षारपर्वतेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं।

याही मेरु की पच्छिम सोय, आठ वक्षार नाम गिर होय।
तिन पै आठ जिनेश्वर थान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशायामष्टवक्ष्यारेष्वष्टजिनचैत्याल
–येभ्योऽर्घं।

पूरब इस ही मेरु बताय, षोडश रूपाचल मन लाय।
तिन इक इक पै है जिनथान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु पूर्वदिशि षोडस विजयार्ध पर्वतेषु षोडस जिनचैत्याल –येभ्योऽर्घं।

इस ही मेरु दच्छिन दिश जोय, विजयारध इक पर्वत सोय।
ता ऊपर है इक जिन थान, सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु पूर्वदिशि षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनाल – येभ्योऽर्घं।

याही मेरु पच्छिम दिश धरा, षोडश गिर बैताढ सु परा।
तिन सब पै जिनजी के थान, सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडश जिनालयेभ्योऽर्घं।

उत्तर इस ही मेरु सुजाय, एक रूप गिर परवत पाय।
जाके शीश एक जिन थान, सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुत्तदिश्येकविजयार्धपर्वतोपर्येक जिनालयार्घं।

अर्घ दीप पहुकर के माहिं, दच्छिन इक्ष्याकार कहाहिं।
ता ऊपर इक जिनवर थान, सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरु पुष्करार्द्ध दक्षिणदिश्येकेक्ष्वाकारोपर्येक जिन– चैत्यालयार्घं।

याही दीप उत्तर दिश जाय, इक्ष्वाकार महा गिर पाय।
तापै इक है जिनको थान, सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपोत्तरदिश्येकेक्ष्वाकारपर्वतसम्बन्धि जिनचैत्यालयार्घं।

विद्युनमाला मेरु सुलार, एते थान जान सुखकार।
जो तीरथ हैं जिनके थान, सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधि जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

दोहा – पच्छिम पहुकर द्वीप में, विद्युन्माली मेरु।
कनक मई अति सोहनौ, तीरथ निरमल घेर।।1।।

।। वेसरी छन्द।।

विद्युनमाली मेरु सुथाना, तहां जिन गेह पाप मलहाना।
तिनकी उपमा को मुख गावै, सहस जीभ तें पार न पावै।।2।।

रतन बिंब कंचन जेन गेहा, देखत जन मन उपजे नेहा।
उदै पुन्य ताके तहां जावै, तुछ पुन धारी दरशन पावै।।3।।

जाय देव खग इन्द्र धनिंदा, तिनमें पूरब भव जिन बंदा।
हमसे हीन शक्ति नहीं जावैं, ताते हम यहां भावना भावै।।4।।

शची सहित हरि देव मिलाई, जाय मेरु पूजै जिन पाई।
गावैं गान भक्त मुख सेती, नटै नाचा नाना गति जेती।।5।।

शची नचै हरताल बजावैं, कभू नचै हर शची नचावैं।
हाव भाव सब लाला ठानै, चंचल पग कर तन द्रिग तानै।।6।।

नचै आकाश भुमक भू जाई, कभूं दीखे कभूं अट्टश थाई।
दीरघ तन कबहूं लघु होई, बजै ताल बैना धुन सोई।।7।।

बजै तार तंदूरे भाई, बजै मृदंग नफीरी आई।
सारंगी संहतार अपारा, बाजे बजे इत्यादिक सारा।।8।।

सबका सुर इकताल बजावैं, मीठे सुर बहु देवा गावैं।
हाथन की अंगूरी पै आवैं, अपसर बहुती निरत करावैं।।9।।

ऐसे देव हरी तब जावैं, ऐसे भक्ति करै पुन्य लावै।
जैजै शब्द करै मुख सोई, ताकरि पाए मैल निज धोई।।10।।

ऐसे तौर हर सुर तहां जावे, वा खगराज भक्तवश आवैं।
सोभी बहु विध सेवा ठानै, भाव समान महा पुन्य आनैं।।11।।

याविध सुर खगकर नित सेवा, ऐसा मेर थान शुभदेवा।
विद्युन्माली मेरु सुथाना, कवलों करों गुननका गाना।।12।।

तातैं जोभव पुन्यको चाहौ, तौ या मन्दिर कोशिर नाहौ।
यह तीरथ शिव साधन ठामा, पुन्य बधनको है भवदामा।।13।।

दोहा –विद्युन्माली सेवते, पाप नसे भव खाय।
जे भव पूजे भाव सों, ते निहचै शिव जाय।।14।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति विद्युन्मालिमेरु पूजा समाप्त)

समुच्चय जयमाला

दोहा – मेरु सुदरशन जानिये, विजय अचल शुभ ठाम।
मंदिर विद्युन्मालिया, पांचों यह शुभ धाम।।1।।

(मुनियानंद की चाल)

दीप जंबू विषै मेरु सुदरशना।
लाख जोजन कहा त्वंग नभ फरसना।।
दूसरा धातकी खंड पूरब दिशा।
मेरु विजय महाशोभ जुत अतिलसा।।2।।

धातुकि खंड पश्चिम दिशा जानिये।
तीसरा मेरु शुभ अचल सुख मानिये।।
अर्घ पहुकर विषैं पूर्व दिश सारजी।
मेरु मंदर कहा चतुरथा धारजी।।3।।

दिशा पच्छम तनी अर्घ पुहकर सही।
पांचमा मेरु विद्युन्माली कही।।
चार यह मेरु त्वंग सहस चौरासिया।
कनक के सकल यह तीर्थ अघनासिया।।4।।

एक इक मेरु पै चार बन हैं सही।
एक बन मांहि जिन थान चवा धुन कही।।
चार वन तनै मिलि भये षोडश थला।
पांच मेरुन तने चार बीसी फला।। 5।।

मेरु इक शैल गजदंत चव जानजी।
पंच मेरुन तनै बीस सुख थानजी।।
पंच ही मेरु के वृक्ष दश थाय हैं।
सालिमल जंबू वृक्ष नाम शुभ दाय हैं।।6।।

मेरु इक एक षट् कुलाचल सारजी।
पंच के तीस बहु धरें विस्तारजी।।
जान वैताढ चौंतीस इक मेरु के।
एक सत सतर पंच मेरु शुभ घेर के।।7।।

जानि वक्ष्यार इक मेरु के षोडसा।
पंच मेरुन तने असी गिन मोडसा।।
इश्वाकार दोइ धातकी खंडजी।
दोइ गिन अर्ध पहुकर धरा मंडजी।।8।।

सकल यह अकीरतम थान जानों सही।
इन विषैं सबन पै थान जिन शुभ मही।।
पंच मेरुन के सनमंध सब गाइये।
तीन सत और चोरानवे पाइये।। 9।।

जानकों तौ सकत हीन हम हैं सही।
भक्त वस भावना करत हैं इस मही।।
आठही द्रव्यसुध लेय थुत गायजी।
जजत हों सकल जिन गेह हरषायजी।।10।।

प्रोष पूजा करी राग हिरदें धरी।
तासतें पुन्य की पोट उरमें भरी।।
तास फल भाव अति निरमले हो गए।
करो तब पाठ यह सुफल मानो भए।।11।।

और सब जगत भ्रमजाल कवि जानियो।
एक जिन चरन को सरन सतमानियो।।
औ नहीं आस यह चाहि जानों सही।
हाथतें जजैं यह थान फिर शिवमही।।12।।

दोहा – पंच मेरु की आरती, और अकिरतम थान।
तिन पद 'टेक' नमो सदा, जो चाहो सुध ज्ञान।।13।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति पंचमेरु विधान समाप्त)

ॐ

卐 कर्मदहन विधान 卐

(कवि श्री चंद्रजी कृत)

दोहा– तीर्थंकर जिनको नमें, सुर नर मुनिगण सन्त।
जयवंते वरतो सदा, ऐसे सिद्ध महन्त।।1।।

छप्पय – ऋषभ अजित संभव जिनेन्द्र अभिनन्दन जानों।
सुमति पद्म जिनदेव, सुपारसचन्द्र बखानों।।
पुष्पदन्त शीतल श्रेयांश, जिन वासुपूज्य वर।
विमल अनन्त धर्म शांति, कुंथु जिन अरह कर्महर।।
मल्लि मुनिसुव्रत सु नमि नेमि, पार्श्व महावीर जी।
ये चौबीसों वन्दन करों, हरो जगत की पीर जी।।

सोरठा – गुरु के लागो पांय, आचारज उवझाय मुनि।
शारद माय मनाय, दे सुबुद्धि नाशे कुमति।।

सवैया – ज्ञानावरणी सु हानि, ज्ञान जिन अनन्त लयो।
दरशनावरणी सु घाति, अनन्त दरश पायो है।।
मोहनीय कर्म नाशि, सुख अनन्त को प्रकाश।
अन्तराय नाशके, अनन्त वीरज पायो है।।
आयु करम नाशा, अवगाहन गुण प्रगट भयो।
वेदनीय नाश, अव्यावाध प्रगटायो है।।
नाम हनि अमूर्ति हो, गोत्र नाशा अगुरु लघु।
आत्मविलासी, भये त्रिजग दर्शायो है।।

दोहा – ऐसे सिद्ध महन्त को, पूजों मैं शिरनाय।
उतर उतर अपवर्ग से, तिष्ठ तिष्ठ इत आय।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् संवौषट्।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(त्रिभंगी छन्द)

गंगाजल आनो, निरमल छानो, तप्त करानो शुद्ध महा।
झारी भर नाचों, तन मन राचों, आनन्द सांचो हृदय लहा।।
ते सिद्ध लहन्ता, सब गुणवन्ता, पूजत सन्ता भक्ति करों।
निजमन हरषाऊँ, पुण्य कमाऊँ, करम नशाऊँ मुक्ति वरों।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

केशर रंग पियरा, घिसके नियरा, चन्दन सिपरा गंध महा।
धर हेम कटोरा, युग का जोरा, षटपद शोरा करत जहाँ।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

तंदुल बहु लीने, खंड विहीने, शुद्ध सु बीने धोय लिये।
धर मध्यसो थारा, शशि उनिहारा, देखत प्यारा हरष हिये।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ले सुमन घनेरे, ऋतु ऋतु केरे, मन हुलसेरे देखत ही।
धर मध्य सु थारा, भाव उजारा, मदन निवारा सेवत ही।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

नेवज कर ताजा, लाडू खाजा, अति छवि छाजा मन भाया।
षटरस कर मीना, स्वाद नवीना, थाल भरीना हरषाया।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दीपक ले नीका, ज्योति जगीका, रतन नहींका पर जालों।
धर मध्य सुथारा, विपुल उजारा, मोह निवारा तम टालो।।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

वर गंध कुचरकें, दशविधि करकें, उत्तम धरकें खेवत हों।
तसु धूम्र उड़ाना, मन हरषाना, करम नशाना सेवत हों।।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

उत्तम फल प्यारा, आम अनारा, श्रीफल भारा ले सु धरो।
तुशरणें आया, मन हरषाया, सुकृत कमाया पार करो।।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जल गंध सुधारे, अक्षत न्यारे, पुष्प सु प्यारे नेवजले।
द्युति दीप उचारी, धूप सुधारी, फल धर भारी सरस भले।।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

(अडिल्ल)

अष्ट करम जे दुष्ट, तिन्हें तुम नाशियो।
अष्ट महा गुण सुष्ट, तिन्हें सु प्रकाशियो।।
अष्ट द्रव्य से पूजों, मन वच काय जी।
आठो अंग नवाय, नमों तुम पांय जी।।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

प्रत्येक पूजा

दोहा – ज्ञानावरणी पंच विधि, सो तुम नाशे देव।
ज्ञान प्रकाशे पंच भनि, करों तुम्हारी सेव।।

(गीता छन्द)

मतिज्ञानावरणी घातके, मतिज्ञान सुन्दर पाइयो।
श्रुतज्ञानावरणी नाशकर, श्रुतज्ञान निज उर पाइयो।।

विधि अवधि मनपर्यय सु भारी, ज्ञानावरण निवारियो।
तब अवधि मनपर्यय सु भारी, ज्ञान निज उर धारियो।।

दोहा –केवल ज्ञानावरण हनि, प्रगटो केवल ज्ञान।
लोकालोक निहारते, पूजों सिद्ध महान।।

ॐ ह्रीं पंच प्रकार ज्ञानावरणकर्मनिवारणाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

दोहा –दरशन घाटक प्रकृति नव, दरशन होन न देत।
ताहि विनाश प्रकाशियो, अनन्त दरशन श्वेत।।

(अडिल्ल छन्द)

प्रथम चक्षुदर्शनावरण विधि जानिये।
द्वितीय अचक्षुदर्शनावरण बखानिये।।
तीजी अवधि दर्शनावरणी गाइये।
चौथी केवल दर्शनावरण लहाइये।।

दोहा – सुख से सोवे सुख जगे, सो निद्रा पहिचान।
टेरे से जागे न सो, निद्रा–निद्रा जान।।

उठता बैठा ऊँघे सोई । प्रचला करम उदय जिय होई।।
चलत फिरत जिहिं नींद सतावे। सो प्रचला प्रचला कहलावे।।
जाके उदय बड़ोवल होई। नारायण प्रतिहरि समसोई।।
सो स्त्यानगृद्धि है भाई। इनको हते भये शिवराई।।

ॐ ह्रीं नवप्रकारदर्शनावरणकर्मविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।2।।

पाईता छन्द

अब कर्म वेदनी मानो, दो प्रकृति तास के जानो।
इक साता द्वितीय असाता, सब जीवन जेर कराता।।

दोहा – साता सुख आभास हो, दुःख असाता देत।
इनको हति शिवपुर गये, ते पूजों नित हेत।।

ॐ ह्रीं द्विप्रकारवेदनीकर्मविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।3।।

दोहा – बीस आठ भट मोह के, बड़े बड़े सरदार।
जेर किये जग जीव सब, छोड़त नाहिं गमार।।
प्रथम प्रकृति मिथ्यात्व हनि द्वितीय मिश्रमिथ्यात्व।
समयमिथ्यात्व तृतीय हनि, तब पायो सम्यक्त्व।।

(अडिल्ल छन्द)

चार अन्तानुबन्धी के भेद बखानिये।
क्रोध मान अरु माया लोभहिं जानिये।।
चार अप्रत्याख्यानरु प्रत्याख्यानके।
चार संज्वलन हनि षोडश भट हानि के।।

दोहा – प्रथम नाश सम्यक्त्व लहि, द्वितिय अणुव्रत ठान।
त्रितिय घाति मुनिपद धरे, चौथी हति जिनजान।।
चार चौक सोलह भये, ये क्रोधादि कषाय।
इनको हति शिवपुर गये, जजों सिद्ध सुखदाय।।

ॐ ह्रीं त्रिमिथ्यात्वषोडसकषायप्रकृतिघाताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।4।।

(गीता छन्द)

अब हास्य रत्यारति, शोक सु भय जुगुप्सा जानिये।
स्त्री पुरुष तीजो नपुंसक, वेद त्रिविधि बखानिये।।
ये नों कषाय विनाश कर, इमि मोहनीका क्षय किया।
सो सिद्ध मन वच काय पूजों, शुभोदय अवसर लिया।।

ॐ ह्रीं नोकर्मरहितसर्वमोहविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।5।।

दोहा – त्रय षोडश नव मिल प्रकृति अट्ठाईस बखान।
तिन सबही कों अष्टकर, जो पहुंचे शिवथान।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

दोहा – आयुकर्म योद्धाप्रबल, ताके हैं भट चार।
ताको जिअ बन्धन करे, तहां धरत निर्धार।।

(अडिल्ल)

देव आयु के उदय, देवपद पाइये।
मनुष्यायुके उदय, मनुष्य कहाइये।।
तिर्यंचायुके उदय, तिर्यग्गति में परे।
नरक आयु के उदय, नारकी अवतरे।।

दोहा – चारों गति के दुःख सहे, पड़ो कर्मवश जीव।
ताको हति शिवपुर गये, पूजों सिद्ध सदीप।।

ॐ ह्रीं चतुःप्रकारायुकर्मविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।6।।

दोहा – नाम करम के उदय जिय, नाना नाम धरात।
ताकी प्रकृति तिरानवे, सो जानो इस भांत।।

गीता छन्द

सित पीत श्याम अरुण हरित, ये पंच वरण बखानिये।
वित्त आम्ल सु क्षार कडुवा, मिष्ट रस पन जानिये।।
दुर्गन्ध और सुगन्ध दो, स्पर्श की बसु लेखिये।
लहु और भारी तपत शीत, कठोर नरम विशेखिये।।

दोहा – चिक्कण रूक्ष मिलाय सब, वर्णादिक की बीस।
ते हति के शिवपुर गये, पूजों ते जगदीश।।

ॐ ह्रीं वर्णादिकविंशतिप्रकृतिविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।7।।

दोहा – संहनन छह संस्थान छह, गति पुनि चार गनीस।
आन पूर्वी चार मिल, संस्थानादिक हैं बीस।।

(कुसुमलता छन्द)

वज्र वृषभ नाराच, वज्र नाराच दुतिय भनि।
तीजा है नारच, अर्द्धनाराच चतुर्गनि।।
कीलक पंचम जान, छटम स्फाटक नामा।
छहो संहनन धार, जीव भटके जगधामा।।

समचतुर प्रथम संस्थाना। न्यग्रो धोपरि मण्डाना।।
सातिक तृतीय गनि लीजे। बावन फिर कुब्ज भनीजे।।
हुंडक छठमो सो जानो। ये छह शरीर संस्थानो।।
गति चार पूर्वीचारा। सुरनर पशु नारकधारा।।

दोहा – षट–षट चतु–चतु बीस सब, संस्थानिक जान।
तिनको हति शिवपुर गये, ते पूजों भगवान।।

ॐ ह्रीं शरीरादिविंशतिविनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।8।।

(कुसुमलता छन्द)

औदारिक वैक्रियकाहारक तैजस जानो।
कार्मान मिल पन शरीर, ये ही परमानो।।
ये ही बंधन नाम, ये ही संघात पंच भनि।
इन्द्री पंच मिलाय, शरीरादिक सु बीस गनी।।

ॐ ह्रीं शरीरादिविंशतिप्रकृतिघाताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।9।।

दोहा – औदारिक वैक्रियक, आहारक आंगोपांग।
अशुभ चाल शुभ चाल मिल, पैंसठ प्रकृति सुआंग।।

ॐ ह्रीं उपांगशुभाशु भवृत्तप्रकृतिघाताय सिद्धपरमेष्ठिनेभ्यो अर्घं निर्व.।।10।।

अडिल्ल – वर्णादिककी बीस, सेल आदि सु जान तन।
संस्थानादिक बीस, आदि सम चतुर नाम भन।।

शरीरादि – पुनः बीस, औदारिक आदि बखानो।
दोय चाल मिलके, उपसंग पैसठ पहिचानो।।

ॐ ह्रीं पंचाधिकषष्टिपिण्डप्रकृतिनाशनाय अर्घं निर्व.।।11।।

(अडिल्ल छन्द)

अब अट्ठाइस प्रकृति, अपिण्ड बखानिये।
प्रथम अगुरु लघु, दुतिय स्वास सो जानिये।।
तीजी है अयघात, तूर्य परघात जू।
आतापन उद्योत, जान विख्यात जू।।

दोहा – तीर्थंकर निर्माण मिल, प्रकृति हनी तिन आठ।
वसु विधि द्रव्य मिलायकर, जजों सिद्धकर ठाठ।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघ्वष्टप्रकृतिघाताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।।12।।

(कुसुमलता छन्द)

सूक्षम वादरजान, प्रकृति साधारण कहिये।
त्रस स्थावर शुभ अशुभ स्थिर लहिये।।
सुस्वर दुस्वर सुभग, और दुर्भग बखानिये।
अपर्याप्त पर्याप्त, और आदेय जानिये।।

दोहा – अनादेय यशकीर्ति भनी, अयशकीर्ति जान।
ये दश टुककी बीस हनी, पायो शिवस्थान।।

ॐ ह्रीं विंशतिप्रकृति विनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।

दोहा – पैंसठ पिण्ड अपिण्ड पुनि, अट्ठाईस बखान।
नामप्रकृति सब त्रानवे, घात लियो शिवथान।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(कुसुमलता छन्द)

गोत्रकर्म बलवान, प्रकृति दो ताको जानो।
एक ऊँच पुनि द्वितीय, नीच कुल गोत्र बखानो।।
उच्च उदय पद उच्च, नीचके उदय नीच लहि।
इनहिं घाति शिवगये, तिनहिंपूजों सुचरण गहि।।

ॐ ह्रीं द्विप्रकारगोत्र कर्म विनाशनाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।

वेसरी छन्द

अन्तराय अष्टम विधि जानो, ताकी पांच प्रकृति पहिचानो।
दानान्तराय उदय जु आये, दान न देय सके न सुहावे।।
लाभान्तराय उदय जु होई, कर उपाय लाभ ना कोई।
भोगांतराय उदय जु जी के, भोग मिलें भोगे न खुशी के।।

दोहा – अन्तराय उपभोग के, जानों उदय सु माहिं।
वस्त्राभूषण तैयार पर, चेतन भोगत नाहिं।।
वीर्यान्तराय के उदय, जीब न बीरज पाय।
पांचों हति शिवपुर गये, पूजों मन बच काय।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारान्तरायकर्म घाताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्व.।

कुसुमलता छन्द

ज्ञानावरणी पांच, दरश की नव विधि जानो।
कही वेदनी दोय, मोह अठ बीस बखानो।।
आयु तनी गनि चार, त्रानवे नाम की कहिये।
गोत्र करम की दोय, पंच अन्तराय की लहिये।।

दोहा – आठ करम की प्रकृति सब, इक शत अड़तालीस।
सबको हति शिवपुर गये, भये त्रिजग के ईश।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा – सुरपुर नरपुर नागपुर, तीन भुवन के ईश।
तिन गुण की जयमालिका, गांऊँ धर कर शीश।।

(त्रोटक छन्द)

जिनज्ञानावरणी घात करी, निजशक्ति अनंत प्रकाश धरी।
दर्शन आवरण निवार कियो, दर्शन अनन्त तब धार लियो।।
फिर मोह महारिपु दुष्टहरो, तब सुख अनन्त प्रकाश करो।
अन्तरायवली जब नाशकिया, तब वीर्य अनन्तप्रकाश लिया।।

ये घाति चतुष्टय नाश भये, तब चार अतुष्ठयानंत लये।
अबचार अघातिया शेषरहे, तिनको भी अन्तिमकाल दहे।।
क्षय वेदनी अव्यावाध लहा, विधि आयुहता अवगाहगहा।
हनिनाम अमूर्तिकगुण गयनं, प्रगटसो अगुरुलघुगोत्र हनं।।

ये आठोंकरम विनाश किये, गुण प्रगटे आठ प्रकाश लिये।
जो भव में तनत्याग किया, तासे कछु ऊन शरीर लिया।।
तिनके न क्षुधा न तृषा दरशे, नहिं रागद्वेष तिन्हें परशे।
फिर होय न जन्मजरा मरना, स्थितिकाल अनंततहां करना।।

नहिं रोग न शोक सदा तिनके, भयविस्मय व्यपतनतिनके।
निद्रा नहीं खेद न स्वेदतहां, मदमोद अरति चिंता न तहां।।
त्रैलोक विलोकत हैं सु सदा, निरइच्छा इच्छा न धारकदा।
निसिवासा संतसुध्यान करें, चिरकाल लगे सो करम हरें।।

गणधर निज धार हृदय चरणा, तुमको ध्यात मनहरपचना।
मुनिराज तुम्हें जो ध्यावत है, तुम्हरे ढिंगसो चलआवत हैं।।
अहमिन्द्र सदा तुव ध्यान करें, नित चेतन की चरचा उचरें।
इन्द्रादिक भक्त करें तुम्हरी, निज थानकदो विनती हमरी।।

किन्नर तुम्हरे गुणगावत हैं, स्वरताल समाज बजावत हैं।
द्रुम–द्रुम बजे सु मृदंग जहां, मुरली धुनि बाज रही सु तहां।।
वर बीन बजाय सु गान करें, स्वरसप्त महामुखसों उचरें।
संगीतकला तहां ठानत हैं, ततनं तन तानुस तानत हैं।।

छम छम छम नूपुर बाजत हैं, ततथेई–2 धुनि साजत हैं।
इति भांति सुरस्तुति गावत हैं, जय जय–2 शब्द सुनावत हैं।।
जय जय जयवंत सदासुरहौं, शिवथान मंझाारन आनचहौं।
जय भक्तन को सुखदायक हो, शिवमारग जात सहायक हो।।

मैं दीन दुखी भवफंद परो, करुणाकर आप उद्धार करो।
जवलों यह फन्द सो नाहिनशे, तबलों, तुव भक्ति हृदय सु बसे।।
यह मांगत हों तुमसे वरजी, करुणाकर आप सुनो अरजी।
तुमका तज आनन शरण गहों, कहें 'चन्द्र' सदातुव शरण रहों।।

(धत्ता)

जय–2 सुरदेवा, सुरनर सेवा, करत स्वयमेवा भक्ति सही।
मन–वच'तन ध्याऊँ, तुमगुण गाऊँ, ता फल पाऊँ मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा – देव नमत अरहंत पद, नित सेवत गुरु निर्ग्रंथ।
दया धरम सु हृदय बसत, 'चन्द्र' चलत निजपंथ।।
बुधजन से विनती करों, बार बार शिरनाय।
अनरथ घट बढ़ शब्द हों, तो तुम धरो बनाय।।
मैं मतिहीन विवेक नहिं, अरु प्रमाद आधीन।
थिरता जग की जान लघु, लघु कर रची नवीन।।

।।इत्याशीर्वादः।।

ॐ

卐 श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजन विधान 卐

(कवि श्री रविलाल जी कृत)

स्थापना

दोहा– नित आतम कल्याण की, व्याधि उठी हिय मांहि।
नर भव बिन कैसें तपे, आतम–आतम मांहि।।1।।

शुद्धातम जिनराज लख, समदृष्टि सुरलोक।
भक्ति करें इनकी सही, बढ़ै पुण्य का थोक।।2।।

जान अढ़ाई पर्व को, देवन किया विचार।
नन्दीश्वर द्वीप जायकें, करें पूज चित धार।।3।।

अकृत्रिम जिन बिम्ब तँह, अरहत सम नहिं फेर।
धन्य भाग्य उनका जिन्हें, मिले दरश सुख ढ़ेर।।4।।

त्रिभंगी

हम किस विधि जावैं, पूजा रचावैं, गुण गण गावें प्रभुजीके।
वह अष्टम द्वीपा, वह सुख रूपा, वह गुण कूपा प्रभुजी के।।
शक्तिहीन हम, ढाई द्वीप के, पद दर्शन की, प्रभु जी को।
हम इतहिं मनावें हृदय थपावें, शीश झुकावें प्रभु जी को।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ जिनबिंब समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ जिनबिंब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ जिनबिंब समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

उज्जवल जल निर्मल लाय, शीतल सुखकारी।
पूजत श्री जिनवर पाय कञ्चन भर झारी।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।
बावन जिनमन्दिर जान, सुरनर मन मोहैं।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन सार, केशर रङ्ग भरी।
जिनवर के चरण पखार, भव आताप हरी।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।
बावन जिन मन्दिर जान, सुरनर मन मोहैं।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत शशि किरन समान, पुञ्ज–सु दे दीजे।
भर कनक थाल भर आन, जिनपद पूजीजे।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।
बावन जिनमन्दिर जान, सुर–नर मन मोहैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु फूल सुगन्धित ल्याय, जिनमन्दिर जइए।
प्रभु चरणन भेंट चढ़ाय, श्रीजिनगुण गइए।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।
बावन जिनमन्दिर जान, सुर नर मन मोहैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गोझा पकवान, रसना को प्यारे।
जिन सम्मुख देत चढ़ाय, हर्ष हिये धारे।।

नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।
बावन जिनमंदिर जान, सुर नर मन मोहैं।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले दीप अमोलकसार, जगमग ज्योति जगी।
ले कनक रकाबी धार, प्रभुसों प्रीति लगी।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।
बावन जिनमन्दिर जान, सुर नर मन मोहैं।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश विधि की धूप बनाय, प्रभु आगे खेवो।
कर्मादिक रोग नशाय, श्री जिनपद सेवो।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।
बावन जिनमन्दिर जान, सुर नर मन मोहैं।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल परम मनोहर लाय, नैनन सुखकारी।
जिन चरन सुपूजन जाय, पावों शिव प्यारी।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।
बावन जिनमन्दिर जान, सुर नर मन मोहैं।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल बसु द्रव्य मिला, अर्घ बनावत हैं।
जिनराज सु पूजत जाय, प्रीभु गुण गावत हैं।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारों दिश सोहैं।

बावन जिनमन्दिर जान, सुर नर मन मोहैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्द्ध चौपाई

जल फल आठों द्रव्य मिलाय, जिनवर पूज हृदय हर्षाय।
महा सुख होय, देखे नाथ महा सुख होय।।
बावन जिनमन्दिर सुखदाय, पूजत आठों कर्म नशाय।
महा सुख होय, देखे नाथ महा सुख होय।। 10।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दक्षिण पश्चिमोत्तर द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशि अर्घ

(अडिल्ल छन्द)

है नन्दीश्वर दीप दिशा पूरब जहाँ,
अंजनगिरि के शिखर भवन जिनवर तहाँ।
सुरपति पूजन जाय हर्ष, मन में धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि अञ्जनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

नन्दा वापी बीच सुदधिमुख गिरि कहो,
तापर श्री जिनभवन सरस उपमा लहो।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,

हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दा वापी प्रथम कोण रतिकर परो,
ता ऊपर जिनधाम विराजत है खरो।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदावापिका ईशानकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दा वापी दुतिय कोण रतिकर महा,
मन्दिर श्री जिनराज तपो तापर कहाँ।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदावापिका आग्नेयकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दवती वापी विच दधिमुख देखिये।
तापर जिनवर भवन सुअद्भुत पेखिये।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नन्दवती वापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दवती वापी मुख कोण सु रतिकरा
प्रथम तहाँ जिनगेह अधिक उपमा धरा।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नन्दवती वापिकाआग्नेयकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दवती वापी मुख कोण सुजानिये,
दूजे रतिकर पर जिनभवन बखानिये।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नन्दवती वापिका नैऋत्यकोणे रतिकर गिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दोत्तरा वापि मुख विच ताकों भनों,
दधिमुखगिरि के शीश भवन जिनवर तनों।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदोत्तरा वापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दोत्तरा वापि सु कोण रतिकर दियै,
आदि श्री जिन धाम देख दिनकर छियै।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपेपूर्वदिशि नंदोत्तरा वापिकानैऋत्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

बाहर कोण सुजान वापी नन्दोत्तरा,
रतिकर गिरि के शीश भवन जिन दूसरा।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 10।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नंदोत्तरावापिका वायव्यकोणेरतिकर गिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापी नन्दीघोषा सु बीच निहारिये,
दधिमुख पर जिन भवन सरस उर धारिये।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 11।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिनन्दीघोषा वापिकावायव्यकोणे रतिकर गिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पहलो कोण सुजान नन्दीघोषा तनो,
रतिकर पर जिन भवन बहुत अद्भुत बनो।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 12।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपेपूर्वदिशि नन्दीघोषा वापिकावायव्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दीघोषा वापि मुख कोण सु दूसरो,
रतिकर पर जिनधाम 'लाल' पायन परो।
सुरपति पूजन जाँय हर्ष मनमें धरें,
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ पूजन करें।। 13।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि नन्दीघोषा वापिकाईशानकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा – नन्दीश्वर पूरब दिशा, अञ्जन दधि गिरि जान।
रतिकर मिल त्रोदश गनों, पूजत अघ तम हान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिसंबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशि अर्घ

चौपाई

नन्दीश्वर दक्षिण दिशि नाम।
अंजनगिरि पर श्री जिन धाम।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अरजा वापी बीच सु जेह।
दधिमुख गिरि पर श्री जिन गेह।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन पर पूजत प्रभु पाय।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अरजा वापी कोण सु आदि।
रतिकर पर जिन भवन अनादि।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिका ईशानकोणे रतिकर गिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अरजा वापी दूजो कोन।
रतिकर गिरि पर श्री जिनभोन।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।। 4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिका आग्नेयकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विरजा वापी बीच निहार।
दधिमुखगिरि पर जिन गृह सार।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।। 5।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विरजा पहले कोण विचित्र।
रतिकर पर जिन भवन विचित्र।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिका आग्नेयकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विरजा दूजे कोण सुजान।
रतिकर गिरि पर श्री भगवान।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिका नैऋत्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापि अशोका बीच जु बनो।
दधिमुख पर जिन मन्दिर तनो।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पहलो कोण अशोकादीश।
जिन मन्दिर रतिकर गिरि शीश।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिका नैऋत्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापी अशोका कोण दूसरे।
धाम जिनेश्वर रतिकर सिरे।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिका वायव्यकोणेरतिकर गिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापी वीतशोका बिच सोय।
दधिमुख गिरि जिन मन्दिर होय।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वीत शोका सु कोण गनेह।
पहले रतिकर पर जिनगेह।।
सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।।12।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कोण वीतशोका को पेख।
दूजे रतिकर जिन गृह देख।।

सुर सुरपति नित जजत सुजाय।
हम जिन घर पूजत प्रभु पाय।।13।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोका वापिकायाव्यकोण रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा – नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, अञ्जन दधिगिरि जान।
रतिकर मिल त्रोदश गनों, पूजन अघ तम हान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि सम्बन्धी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशि अर्घ

दोहा – नन्दीश्वर पश्चिम दिशा, अञ्जनगिरि पर जाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।।1।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापिका अञ्जनगि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विजया वापी बीच में, दधिमुखगिरि सुख दाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापिकामध्य दधिमुखगि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विजया वापी कोण लख, प्रथम सु रतिकर पाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापिका ईशानकोण रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कोण विजया वापी तनों, द्वय रतिकर मन लाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयवापिका आग्नेयकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापी वैजयन्ति विषैं, दधिमुख गिरि बतलाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयन्तिवापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कोण वैजयन्ति जहाँ, रतिकर प्रथम बताय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयन्तिवापिका आग्नेयकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कोण वैजयन्ति दुतिय, रतिकर शीश सुहाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयन्तिवापिका नैऋत्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापी जयन्ति बीज गिन, दधिमुखगिरि चित लाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयन्तिवापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

प्रथम जयन्ति कोण में, रतिकर शिखर सु जाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयन्तिवापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कोण जयन्ति वापिका, रतिकर, दुतिय दिपाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 10।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयन्तिवापिका वायव्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

बीच वापी अपराजिता, दधिमुख पर हर्षाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 11।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अपराजिता सुकोण में, रतिकर प्रथम बताय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 12।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापिका वायव्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कोण दुतिय अपराजिता, रतिकर लाल सुधाय।
सुरपति जिनमन्दिर जजें, हम पूजत जिन पाय।। 13।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापिका ईशनकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा

नन्दीश्वर पश्चिम दिशा, अञ्जन दधिगिरि जान।
रतिकर मिल त्रोदश गनों, पूजत अघ तम हान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशिसम्बन्धी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

O

श्री नन्दीश्वर द्वीप उत्तर दिशि अर्घ

(पद्धडी)

नन्दीश्वर अष्टम द्वीप सार,
उत्तरदिशि अञ्जन गिरि निहार।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रम्या वापी बिच जगमगाय,
दधिमुख गिरि शिखर विषैं सुहाय।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रम्या वापी मुख कोण जान,
रतिकर गिरि शिखर प्रथम महान।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापिकामध्य ईशानकोणे रतिकर गिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रम्या वापी विदिशा विशाल,
दूजे रतिकर गिरि द्युति रिशाल।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापिका आग्नेयकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रमणीया वापि बिच है पवित्र
दधिमुखगिरि शिखर बनों पवित्र।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रमणीया वापि मुख कोण जास,
रतिकर गिरि शिखर प्रथम प्रकाश।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापिका आग्नेयकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रमणीया वापि विदिशा विचार,
रतिकर गिरि दूजों शिखर धार।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापिका नैऋत्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापी सुप्रभा बिच है अनूप,
दधिमुख गिरि श्वेत वरन स्वरूप।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापी सुप्रभा विदिशा सु आदि,
रतिकर गिरि शिखर बनो अनादि।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापिका नैऋत्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वापी सुप्रभा मुख कोण देख,
दूजे रतिकर गिरि पर सुलेख।

जिनमन्दिर सुर पूजंत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 10।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापिका वायव्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सर्वतोभद्रा वापी सुजान,
तिस बीच सु दधिमुख शिखर आन।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 11।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापिकामध्य दधिमुखगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सर्वतोभद्रा वापी मुख कोण वेश,
रतिकर गिरि प्रथम कहो जिनेश।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 12।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापिका वायव्यकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सर्वतोभद्रा वापी विशाल,
रतिकर गिरि दूजे पर त्रिकाल।
जिनमन्दिर सुर पूजत सु जाय,
हम जजत सु जिन पद शीश नाय।। 13।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापिका ईशानकोणे रतिकरगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दोहा – नन्दीश्वर उत्तर दिशा, अञ्जन दधिगिरि जान।
रतिकर मिल त्रोदश गनों, पूजत अघ तम हान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सम्बन्धी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

❋ जयमाला ❋

दोहा – अष्टम क्षेत्र विशाल में, कार्तिक, फाग, अषाढ़।
देवन का भक्ति करों, रचि–रचि पद अतिगाढ़।।

(शिखरणी)

आठमों द्वीप में योजना सार है,
एक सौ त्रेसठ कोडि विस्तार है।
भवन वावन्न में मूर्ति जिन पूजिये,
मन वचन काय से तन मई हूजियें।। 2।।

चार दिशि चार गिरि धूम्रमयी राजहीं,
जास को देखते नील गिरि राजहीं।
एक एक ओर चउ वावरी सुजलभरी,
श्वेत रत्न की शिला मनो विराजत खरी।।3।।

एक एक वापिका मध्य दधि गिरि मुखं,
वर्ण उज्जवल दिखो पिण्ड हिम सन्मुखं।
वापिका कोण दो में शिखर दो लसें,
रक्तवर्ण देश साँझ रंग लाज कर लसें।।4।।

तीन दश गिरि महाँ एक एक दिश धरें,
चहूँ दिशा माँहि पर्वत यहाँ सुन्दरे।
भवन बावन्न में मूर्ति जिन पूजिये,
मन वचन काय से तन मई हूजिये।। 5।।
बावनों पर्वतों पर हैं जिन मन्दिरा,
रतन मई दीप तें सूर्य की सी धरा।
एक प्रासाद में बिम्ब शत आठ हैं,
बाल मनु तेज सम रत्न मई ठाठ हैं।। 6।।

अर्द्धशत पाँच धनु पद्म आसन धरें,

हैं वृषभनाथ वृष रूप मय अवतरें।
ज्यों समवशरण में नाथ छवि देखिये,
मान भाव नाश को मान थंभ पेखिये।। 7।।

बिम्ब को देखते मोह नश जात है,
वीतरागता प्रभात में जु तम विलात है।
मन विषें शुद्धता बहुत दुर्लभ कही,
शुद्धता के समय व्रत धारे सही।। 8।।

मदन्तर कषाय में व्रत धारन करें,
अष्ट सोड़स वरष व्रत पूरन करें।
दर्श सम्यक्त रत्न पाप घट बीच में,
बन गये जौहरी सत्य की खोज में।। 9।।

ह्वै मग्न भक्ति में पुण्य पैदा किया,
चिन्ता मणि रत्न ज्यो रंक हाथे लिया।
भव्य जन भाव धर पूज को रचावही,
भावशुद्ध नाट्यको सुआप में नचावहीं।।10।।

दोहा – परमातम जिनबिम्ब में, राजत है सुख रूप।
जो पूजे शुभ भाव सौं, पावे भाव अनूप।।11।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नन्दीश्वर अष्टम् द्वीप की, पूज करो हरषाय।
स्वर्गो के सुख भाग "रवि", मुक्तवधू को पाय।।

।। इत्याशीर्वादः।।

❑

नवग्रह अरिष्टनिवारक विधान

(श्री मनसुख सागर जी रचित)

(श्लोक)

प्रणम्याद्यन्ततीर्थेशं धर्मतीर्थपवर्तकं।
भव्यविघ्नोपशांत्यर्थ, ग्रहार्च्या वर्ण्यते मया।।
मार्तंडेन्दुकु जसोम्य–सूरसूर्यकृतांतकाः।
राहुश्च केतुसंयुक्तो, ग्रहशान्तिकरा नव।।

(दोहा)

आदि अन्त जिनवर नमो, धर्म प्रकाशन हार।
भव्य विघ्न उपशान्तको, ग्रहपूजा चित्त धार।।
काल दोष परभावसौं विकलप छूडे नाहिं।
जिन पूजामें ग्रहनकी, पूजा मिथ्या नाहिं।।
इस ही जम्बूद्वीप में, रवि–शशि मिथुन प्रमान।
ग्रह नक्षत्र तारा सहित, ज्योतिष चक्र प्रमान।।
तिनहीके अनुसार सौं कर्म चक्र की चाल।
सुख दुख जाने जीवको, जिन वच नेत्र विशाल।।
ज्ञान प्रश्न–व्याकर्ण में, प्रश्न अंग है आठ।
भद्रबाहु मुख जनित जो, सुनत कियो मुख पाठ।।
अवधि धार मुनिराजजी, कहै पूर्व कृत कर्म।
उनके वच अनुसार सौं, हरे हृदयको भर्म।।

समुच्चय पूजा

(दोहा)

अर्क चन्द्र कुज सोम गुरु शुक्र शनिश्चर राहु।
केतु ग्रहारिष्ट नाशने, श्री जिन पूज रचाहु।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रह अनिष्टनिवारक चतुर्विंशति जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (गीतीका छन्द)

क्षीर सिन्धु समान उज्जवल, नीर निर्मल लीजिये।
चौबीस श्री जिनराज आगे, धार त्रय शुभ दीजिये।।
रवि सोम भूमज सौम्य गुरु कवि, शनि नमो पूतकेतवै।
पूजिये चौंवीस जिन ग्रहारिष्ट नाशन हेतवै।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड कुम कुम हिम सुमिश्रित, घिसौं मनकरि चावसौं।
चौबीस श्री जिनराज अघहर, चरण चरचों भावसौं।।
।। रवि सोम.।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्डित सालि तन्दुल, पुंज मुक्ताफलसमं।
चौवीस श्री जिनराज पूजन, नाम ह्वै नवग्रह भ्रमं।।
।। रवि सोम.।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्द कमल गुलाब केतक, मालती जाही जुही।
कामबाण विनाश कारण, पूजि जिनमाला गुही।।
।। रवि सोम.।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी सुहारी पुवा पापर, लेऊ मोदक घेवरं।
शत छिद्र आदिक विविध विंजन, क्षुधा हर बहु सुखकरं।।
।। रवि सोम.।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप जग मग जोत तमहर, प्रभू आगे लाइये।
अज्ञान नाशक निज प्रकाशक, मोह तिमिर नसाइये।।
।। रवि सोम.।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णा अगर घनसार मिश्रित, लोंग चन्दन लेइये।
ग्रहारिष्ट नाशन हेत भविजन धूप जिन पद खेइये।।
।। रवि सोम.।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम पिस्ता सेव श्रीफल मोच नीबूं सद् फलं।
चौबीस श्रीजिनराज पूजत, मनोवांछित शुभफलं।।
।। रवि सोम.।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुमन अखण्ड तन्दुल, चरु सुदीप सुधूपकं।
फल द्रव्य दुध दही सुमिश्रित, अर्घ देय अनूपकं।।
।। रवि सोम.।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – श्रीजिनवर पूजा किये, ग्रह अरिष्ट मिट जाय।
पंच ज्योतिषी देवैं, मिल सेवें प्रभु पाय।।

(पद्धडी छन्द)

जय2 जिन आदिमहन्त देव, जय अजित जिनेश्वर करहिं सेव।
जय2 संभव संभव निवार, जय2 अभिनन्दन जगत तार।।
जय सुमति2 दायक विशेष, जय पद्मप्रभु लख पदम लेष।
जय2 सुपार्स हर कर्म फास, जय2 चन्दप्रभु सुख निवास।।

जय पुष्पदंत कर कर्म अन्त, जय शीतल जिन शीतल करंत।
जय श्रेय करन श्रेयान्स देव, जय वासुपूज्य पूजत सुमेव।।
जय विमल2 कर जगत जीव, जय2 अनन्तसुख अति सदीव।
जय धर्मधुरन्धर धर्मनाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्ति साथ।।
जय कुन्थनाथ शिव–सुखनिधान, जय अरहजिनेश्ववर मुक्तिखान।
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत सुव्रत प्रकाश।।
जय2 नमि देव दयालं सन्त, जय नेमनाथ तसुगुण अनन्त।
जय पारस प्रभु संकट निवार, जय वर्धमान आनन्दकार।।
नवग्रह अनिष्ट जब होय आय, तब पूजै श्रीजिनदेव पाय।
मन वच तन मन सुखसिंधु होय, ग्रहशांति रीत यह कहीजोय।।

ॐ ह्री सर्वग्रहारिष्टनिवारक श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौवीसौं जिनदेव प्रभु, ग्रह सम्बन्ध विचार।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम, जो पाऊं सुख सार।।

इत्याशीर्वादः।

●

सूर्यग्रह अरिष्टनिवारक पद्मप्रभु पूजा

सोरठा–पूजों पदम जिनेन्द्र, गोचर लग्न विषे यदा।
सूर्य करे दुख दंद, दुख होवे सब जीवको।।

(अडिल्ल छन्द)

पंचकल्याणक सहित, ज्ञान पंचम लसैं।
समोसरन सुख साध, मुक्तिमांहि वसैं।।
आह्वानन कर तिष्ठ सन्निधी कीजिये।
सूरज ग्रह होय शांत, जगत सुख लीजिये।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव2 वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक (छन्द त्रिभंगी)

सोनेकी झारी सब सुखकारी, क्षीरोदधि जल भर लीजे।
भव ताप मिटाई तृषा नसाई, धार जिन चरनन दीजे।।
पद्मप्रभु स्वामी शिवमग–गामी, भविक मोर सुन कूंजत हैं।
दिनकर दुख जाई पाप नसाई, सब सुखदाई पूजत हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलियागिरि चन्दन दाह निकंदन, जिनपद वंदन सुखदाई।
कुमकुम जुत लीजे अरचन कीजे, ताप हरीजे दुखदाई।।
।। पद्मप्रभु स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल गुणमंडित सुर भवि मंडित, पूजत पंडित हितकारी।
अक्षय पद पावों अछत चढ़ावो गावो गुण शिव सुखकारी।।
।। पद्मप्रभु स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मचकुन्द मंगावे कमल चढावे, बकुल बेल दृग चित्त हारी।
मंदर ले आवो मदन नसावो, शिवसुख पावो हितकारी।।
।। पद्मप्रभु स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गौ धृत ले धरिये, खाजे करिये, भरिये हाटक मय थारी।
विंजन बहु लीजे पूजा कीजे, दोष क्षुधादिक अघहारी।।
।। पद्मप्रभु स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि दीपक लीजें घीव भरीजे, कीजे धनसारक बाती।
जगजोत जगावे जगमग जगमग, मोहि तिमिरको है घाती।।
।। पद्मप्रभु स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालगुरु धूप अधिक अनूपं, निर्मल रुपं घनसारं।
खेवो प्रभु आगे पातक भागे, जागे सुख दुख सब हरनं।।
।। पद्मप्रभु स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल ले आओ सेव चढाओं, अन्य अमर फल अविकारं।
वांछित फल पावो जिनगुण गावो, दुख दरिद्र वसु कर्महरं।।
।। पद्मप्रभु स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन लाया सुमन सुहाया, तन्दुल मुक्ता सम कहिये।
चरु दीपक लीजे धूप सु खेजे, फल ले वसु कर्मन दहिये।।
।। पद्मप्रभु स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल गंध ले फूल सुगन्धित लीजिये।
तन्दुल ले चरु दीप धूप खेविजिये।।
कमल मोदको दोष तुरंत ही धूजिये।
पद्म प्रभु जिनराज सुसन्मुख हूजिये।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय पूणार्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जै जै सुखकारी, सब दुखहारी, मारी रोगादिक हरन।
इन्द्रादिक आवे, प्रभु गुण गावे, मंदिर गिर मंजन करणं।।
इत्यादिक साजै दुंदुभि बाजै, तीन लोक सेवत चरणं।
पद्मप्रभु पूजक पानत धुजंत भव भव मांगत शरणं।।
जय पद्मप्रभु पूजा कराय, सूरज ग्रह दूषण तुरत जाय।
नौ योजन समवसरण बखान, घण्टा झालर सहित वितान।।
शतइन्द्र नमत तिस चरन आय, दशशत गणधर शोभा धराय।
वाणी घनधोर जु घटा जोर, धन शब्द सुनत भवि नचै मोर।।
भामण्डल आभा लसत भूर, चन्द्रादिक कोट कला जु सूर।
तहां वृक्ष अशोक महां उतंग, सब जीवन शोक हरे अभंग।।
सुमनादिक सुर वर्षा कराय, वे दाग चंवर प्रभुपै ढराय।
सिंहासन तीन त्रिलोक ईश, त्रय छत्र फिर नग जड़त शीश।।
मत भई आवत मकरन्द सार, त्रय धुलि सार सुन्दर अपार।
कल्याणक पांचों सुख निधान, पंचम गति दाता है सुजान।।
साढ़े बारह कोड़ी जु सार, बाजै दिन वेद बजे अपार।
धरणेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र ईस, त्रिलोक नमत कर धरि ऋषीस।।
सुर मुक्त रमा वर नमत बार, दोऊ हाथ जोड कर बार बार।
याके पद नमत आनंद होय, दूति आगे दिनकर छिपत जाय।।
मन शुद्ध समुद्र हृदय विचार, सुख दाता सब जनको अपार।
मन वच तन कर पूजा निहार, कीजे सुखदायक जगत सार।।

ॐ ह्रीं श्री सूर्यग्रह अरिष्टनिवारक श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन हितकारी, सुख अति भारी, मारी रोगादिक हरणं।
पापादिक टारै ग्रह निरवारै, भव्य जीव सब सुख करणं।।

इति आशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत।

चन्द्र अरिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभु पूजा

निश पति पीड़ा, ठान गोचर लग्न विषै परे।
वसु विधि चतुर सुजान, चन्द्रप्रभु पूजा करे।।
चन्द्रपुरीके बीच चन्द्रप्रभु अवतरै।
लक्षण सोहे चन्द्र सबनके मन हरैं।।
भव्य जीव सुखकाज द्रव्य ले धरत हैं।
सोम दोषके हेत थापना करत हैं।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीचन्द्रप्रभु जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं परिपुष्पाजलि क्षिपेत्।

अथाष्टक

कंचन झारी जडत जडात, क्षीरोदक भर जिनहिं चढ़ात।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।।
चन्द्रप्रभु पूजौं मन लाय, सोम दोष तातैं मिट जाय।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर केशर घनसार, चरचत जिन भव ताप निवार।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो ।। चन्द्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

खण्डरहित अक्षत शशिरुप, पूंज चढाय होय शिवभूप।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।। चन्द्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल कुन्द कमलिनी अभंग, कल्पतरु जस हरै अमंग।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।। चन्द्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

धेवर बावर मोदक लेऊ, दोष क्षुधाहर थार भरेउ।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।। चन्द्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक घृत जु भरेउ, बाती वरत तिमिर जु हरेउ।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।। चन्द्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरुकी कनी खिवाय, वसु विधि कर्म जु तुरत नसाय।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।। चन्द्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल अम्ब सदा फल लेउ, चोच मोच अमृत फल देउ।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।। चन्द्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध पुष्पं शालि नैवेद्य, दीप धूप फल ले अनिवेद्य।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ जगत गुरु हो।। चन्द्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन बहु फल जु तन्दुल लीजिये।
दुग्ध शर्करा सहित सु विंजन कीजिये।।
दीप धूप फल अर्घ बनाय धरीजिये।
पूजों सोम जिनेन्द्र सुदुःख हरीजिये।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

चंदप्रभु चरणं सब सुख भरणं करणं आतम हिल अतुलं।
दर्द जु हरणं भव जल तरणं, मरन हरं शुभकर विपुलं।।
भव्य मन हृदय मिथ्यात तम नाशकम्।
केवलज्ञान जग–सूर्य प्रतिभासकम्।।
चंद्रप्रभु चरण मन हरण सब सुखकरं।
शाकिनी भूत ग्रह सोम सब दुखहरं।।
वर्धनं चंद्रमा धर्म जलानिधि महा।
जगत सुखकार शिव–माग प्रभने महा।। चंद्रप्रभु.।।
ज्ञात गम्भीर अति धीर वर वीर हैं।
तीनहूँ लोक सब जगतके मीर हैं।।
विकट कंदर्पको दर्प छिनमें हरा।
कर्म वसु पाय सब आप ही तै झरा।। चंद्रप्रभु.।।
सोमपुर नगर में जन्भ प्रभुने लहा।
क्रोध छल लोभ मद मान माया दहा।। चंद्रप्रभु.।।
देह जिनराजकी अधिक शोभा धरे।
स्फटिकमणि कांति तांहि देख लज्जा करे।।चंद्रप्रभु.।।
आठ अरु एक हजार लक्षण महा।
दाहिने चरणको निशपति गह रहा।। चंद्रप्रभु.।।
कहत 'मनसुख' श्री चन्द्रप्रभु पूजिये।
सोम दुख नाशके जगत भय धूजिये।। चंद्रप्रभु.।।

ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप तापके नाशको, धर्मामृत रस कूप।
चंद्रप्रभु जिनं पूजिये होय जो आनंद भूप।।

इत्याशीर्वादः।

मंगल अरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य पूजा

वासुपूज्य जिन चरण युग भूसुत दोष पलाय।
तातें भवि पूजा करो, मनमें अति हरषाय।।
वासुपूज्यके जन्म समय हरषायके।
आये गज ले साज इन्द्र सुख पायके।।
लै मंदिर गिर जाय जु न्हवन करायके।
सोंपे माता जाय जो नाम धरायके।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्रीवासुपूज्य जिन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

कनक झारी अधिक उत्तम रतन जड़ित सु लीजिये।
पद्म द्रहको जल सुगंधित कर धार चरनन दीजिये।।
भूतनय दूषण दूर नाश जु सकल आरत टारके।
श्री वासुपूज्य जिन चरन पूजो हर्ष उरमें धारके।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड मलय जु महा शीतल सुरभ चंदन विस धरौं।
जिन चरन चरचों भविक हित सों पाप ताप सबै हरौं।।
।। भूतनय.।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्डित सुरभि मंडित थारी भर कर मैं गहों।
अक्षत सु पुंज दिवाय जिन पद अखय पदमें जो लहों।।
।। भूतनय.।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल कुन्द गुलाब चम्पा, पारिजातक अतिघने।
पहूँच पूजत चरन प्रभुके कुसुम शर तब हो हने।।
भूतनय दूषण दूर नाश जु सकल आरत टारके।
श्री वासुपूज्य जिन चरन पूजो हर्ष उरमें धारके।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गौ घृत सद्य मंगाय भविजन दुग्ध मिश्रित शर्करी।
चरु चारु लेकर जजों जिनपद, क्षुधा वेदन सब हरी।।
।। भूतनय.।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि जडित कंचन दीप सुन्दर घृत तामें भरो।
उद्योत कर जिन चरण आगे, हृदय मिथ्यातम हरो।।
।। भूतनय.।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

काला अगर धन सार मिश्रित देव फूल सुहावने।
खेवत धुंआ सो सुरंग मोदित, करत वसु कर्म हने।।
।। भूतनय.।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल अनार जो आम नींबू, चोच मोच सुधा फलं।
जिन चरन चरचत फलन सेती, मोक्षफल दाता रलं।।
।। भूतनय.।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधन अक्षत पुष्प विंजन, दीप धूप फलोत्तमं।
जिनराज अर्घ चढाय भविजन, लेऊ मुक्ति सुखोत्तमं।।
।। भूतनय.।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल

सुरभित जल श्रीखण्ड कुसुम तन्दुल भले।
विंजन दीपक धूप सदा फल सों रले।।
वासुपूज्य जिन चरण अर्घ शुभ दीजिए।
मंगल ग्रह दुख टार सो मंगल लीजिए।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

मंगल ग्रह हरनं मंगल करनं, सुखकर शिव–रमणी वरनं।
आतम हित करनं भवजल तरनं, वासुपूज्य सेवत चरनं।।

पद्धडी छन्द

इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र जु देव, आय करें जिनवरकी सेव।
वासुपूज्य जिनपूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो।।टेक।।
विजया जननी मन हर्षाय जनक जु वासुपूज्य सुखदाय।
वासुपूज्य जिनपूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो।।
शुभ लक्षण कर लक्षित काय, चम्पापुर जन में जिनराय।
वासुपूज्य जिनपूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो।।
महिषा अंक चरनमें परो, देखत सबका संशय हरो।
वासुपूज्य जिनपूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो।।
फाल्गुन असि जो चौदश जान, हो वैराग्य सु धरियो ध्यान।
वासुपूज्य जिनपूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो।।
घात घातिया केवल पाय, जैनधर्म जगमें प्रगटाय।
वासुपूज्य जिनपूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो।।
षट शत एक मुनीश्वर भयो, गिरिमन्दार शिव लहि गयो।
वासुपूज्य जिनपूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो।।
मंगल हेतु जजों जिनराय, मंगल ग्रह दूषण मिट जाय।
वासुपूज्य जिनपूजा करो, मंगल दोष सकल परिहरो।।

धत्ता छन्द

पूजन प्रभुकी कीजे, दोष हरीजे, छीजे पातक जन्म ज़रा।
सुख होय अविकारी ग्रहदुखहारी, भवजल भारी नीरतरा।।

ॐ ह्रीं भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इतिश्री भौमअरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्यजिनपूजन संपूर्ण।

बुधग्रह अरिष्ट निवारक अष्ट जिनपूजा

सौम्य ग्रह पीड़ा करै, पूजों आठ जिनेश।
आठ गुण जिनमें लसें, नावत शीश सुरेश।।
विमलनाथ जिन नमों, नमो जु अनन्तनाथ जिन।
धर्मनाथ जिन बंद बंद हौं, शांति शांति जिन।।
कुन्थु अरह जिन सुमरि, सुमरि पुनि वर्धमान जिन।
इन आठों जिन जजों, भजों सुख करन चरन तिन।।
बुध महाग्रह अशुभता धरत करत दुख जोर जब।
आह्वाननं कर तिष्ठ तिष्ठ, सन्निधि करहु तव।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिन अत्र अवतर2 संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं, परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

अथाष्टक

(गीता छन्द)

हेम झारी जड़ित मन जल भरों क्षीरोदक तनं।
धार देत जिनराज आगे, पाप ताप जु नाशनं।।
विमलनाथ अनंतनाथ, सु धर्मनाथ जु शांत ये।
कुन्थु अरह जु नमिय जिन महावीर आठों जिन जजे।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभि सुमरत लेऊं चंदन, घिसों कुमकुम संग ही।
जिन चरन चरचत मिटे ग्रीषम, मोह ताप जु भाग ही।।
विमलनाथ अनंतनाथ, सु धर्मनाथ जु शांत ये।
कुन्थु अरह जु नमिय जिन महावीर आठों जिन जजे।।
ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षत अखंड उभय कोट समान शुभ जू अति घने।
ले कनक थार भराय भविजन, पुज देत सुहावने।।
।। विमलनाथ.।।
ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
मन्दार माली मालती मच कुन्द मरुवो मोतिया।
कमल कुन्द कुसुम करना, काम बाण जु घातिया।।
।। विमलनाथ.।।
ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
घृत शुद्ध, मिश्रित शर्करामृत, करहु विंजन भावसों।
ग्रह शांति के होत जिनके, चरन चरचों चावसों।।
।। विमलनाथ.।।
ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मणि जडित हाटक दीप सुन्दर खातका घनसार है।
सर्पि सहित शिखा प्रकाशित, आरती तमहार है।।
।। विमलनाथ.।।
ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
लोभा अगर कर्पूर चंदन, लौंग चूरन लेइये।
वन्हि धूम विवर्जितम जिन चरन आगे खेइये।।
।। विमलनाथ.।।
ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
कल्पपादक जिन श्रीफल, फल समूह चढ़ाइये।
भक्ति भाव बढ़ाय करके, सरल श्रीफल लीजिये।।
।। विमलनाथ.।।
ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सलिल चंदन सुमन, अक्षत क्षुधा हर चरु लीजिये।
मणि दीप धूपक फल सहित, वसु द्रव्य अर्घ करीजियें।।
विमलनाथ अनंतनाथ, सु धर्मनाथ जु शांत ये।
कुन्थु अरह जु नमिय जिन महावीर आठों जिन जजे।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदनं आदिक दरब, पूजों वसु जिनराय।
सोम्य ग्रह दूषण मिट, पूरन अर्घ चढ़ाय।।

।। विमलनाथ.।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

विमलनाथ जिन नमों, नमों जु अनन्तनाथ जिन।
धर्मनाथ पुनि नमों, नमों शांति कर्ता तिन।।
कुन्थुनाथ पद वन्द, वन्दन हों अरहनाथ जिन।
नमिय प्रणमि जिन पाय, पाय जिन वर्धमान जिमि।।
ये आठों जिनरायको, हाथजोड़ शिर धरत हों।
सोम तनुज दुःख हरनको, मंगल आरति करत हों।।

पद्धड़ी छन्द

जय विमल विमल आतम प्रकाश।
षट् द्रव्य चराचर लोक वास।।
जय जय अनन्त गुण हैं अनन्त।
सुर नर जस गावत लहे न अन्त।।
जय धर्म धुरन्धर धर्मनाथ।
जग जीव उधारन मुक्ति साथ।।
जय शांतिनाथ जग शांति करन।
भव जीवनके दुःख दारिद्र हरन।।

जय कुन्थु जिन कुन्थादि जीव।
प्रतिपालन कर सुख दे अतीव।।
जय अरह जिनेश्वर अष्ट कर्म।
रिपु नाम लियो शिव रमन शर्म।।
जय नमिय नमिय सुर वर खगेश।
इन्द्रादि चन्द्र थुति करत शेष।।
जय वर्धमान जग. वर्धमान।
उपदेश देय लहि मुक्ति थान।।
शशि सुत अरिष्ट सब दूर जाय।
भव पूजे अष्ट जिनेन्द्र पाय।।
मन वच तनकर जुग जोड़ हाथ।
मनसिन्धु जलधि तव नवत माथ।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनेभ्यो अर्घं निर्व ।

ये आठ जिनेश्वर नमत सुरेश्वर, भव्य जीव मंगल करनं।
मन वांछित पूरे पातक चूरे, जन्म मरण सागर तरनं।।

इत्याशीर्वादः।

गुरु अरिष्टनिवारक श्री अष्ट जिनपूजा

मन वच काया शुद्ध कर, पूजों आठ जिनेश।
गुरु अरिष्ट सब नाश हो, उपजे सुख विशेष।।

छप्पय

ऋषभदेव जिनराज, अजित जिन संभवस्वामी।
अभिनन्दन जिन सुमति, सुपारस शीतल स्वामी।।
श्री श्रेयांस जिनदेव, सेव सब करत सुरासुर।
मनवांछित दातार, मारजित तीन लोक गुरु।।
संवौषट् ठः ठः तिष्ठ सुसन्निधि हूजिये।
गुरु अरष्टिके नाशको, आठ जिनेश्वर पूजिये।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्रीअष्टजिनः अत्र अवतर2 संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव2 वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

उज्जवल जल लीजे, मन शुचि कीजे हाटकमय भृङ्गार भरं।
जिन धार दिवाई, तृषा नसाई, भवजल निधि वे पार परं।।
ऋषभ अजित सम्भव, अभिनंदन, सुमति सुपारस नाथ वरं।
शीतलनाथ श्रेयांस जिनेश्वर, पूजत सुरगुरु दोष हरं।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन दाह निकन्दन, कुमकुम शुभ ले घनसारं।
चरचों जिन चरनं, भव तप हरनं, मनवांछित सब सुख निकरं।।
।। ऋषभ.।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सरल शाली कृष्ण जीरक, वसुमती जो मन हरं।
उभय कोटक, अरु अखण्डित, अखय गुण शिवपद धरं।।
।। ऋषभ.।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पकं चमेली, करन केतकी, मालती मरुवो मोल सरं।
कमल कुमुद गुलाब कुन्दजु, सरन जुहीं शिव–तिय वरं।।
।। ऋषभ.।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवरहि सु बावर पुवा पुरेयै, मोदक फैनी घेवरं।
सुरहि घृत पय शर्करराजुत, विविध चरु क्षुध क्षयकरं।।
।। ऋषभ.।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिकर जड़ित सुवर्ण थाल ले, कदली सुत घृत मांहि तरं।
दीपक उद्योतं, तम क्षय होतं, निज गुण लखि भार भरं।।
।। ऋषभ.।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन अगर, लोंग सुतरंग, विधि द्रव्य ले सुरभितरं।
खेवत जिन आगे, पातक भागे, धूवा मिस वसु कर्मजरं।।
ऋषभ अजित सम्भव, अभिनंदन, सुमति सुपारस नाथ वरं।
शीतलनाथ श्रेयांस जिनेश्वर, पूजत सुर गुरु दोष हरं।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी श्रीफल भारी, चोच मोच कमरख सु वरं।
लैके फल नाना, शिव सुख थाना, जिनपद पूजत देत तुरं।।
।। ऋषभ.।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन फूलं तन्दुल तूलं, चरु दीपक लै धूप फलं।
वसु विधिसे अरचे, वसुविधि विरचै, कीजे अविचल मुक्तिधरं।।
।। ऋषभ.।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अड़िल्ल छन्द)

मन वच काया शद्ध पवित्र जु हूजिये।
लेकर आठों दरव आठ जिन पूजिये।।
मंगलीक वसु वस्तु पूर्ण सब लीजिये।
पूरन अर्घ मिलाय आरती कीजिये।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्टनिवारक श्री अष्टजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सुर गुरु दुख नाशन, कमलपत्रासन, वसुविधि वसुजिन पूजकरं।
भव भव अघहरनं, सबसुखकरनं, भव्यजीव शिवधामधरं।।

(पद्धड़ी छन्द)

जय धर्म–धुरंधर ऋषभ धार, जय मुक्ति कामनी कन्त सार।
जय अजितकर्म अरि प्रबल जान, जय जीतलियो सगुणनिधान
जय सम्भव सम्भव दम्भ छेद, जय मुक्ति रमा लइयो अखेद।
जय अभिनन्दन आनंदकार, जय जय जन सुखकर्ता अपार।।

जय सुमति देव देवाधिदेव, जय शुभमतिजुत सुरकरहि सेव।
जय2 सुपार्श्व सुख परमज्ञान, जय लोकालोक प्रकाशमान।।
जय जन्म–जरा मृत वन्हि हर्न जय तिनका हमको नित्य शर्ण।
जय श्रेयकरन श्रेयांसनाथ, जय श्रेयसपद दय मुक्ति साथ।।
जय2 गुणगरिमा जग प्रधान जय भव्य कमल परकाश भान।
जय मनसुखसागर नमत शीश, जय सुरगुरु दोषन मेट ईश।।

ॐ ह्रीं गुरुअरिष्ट निवारक श्री अष्ट जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

(दोहा)

आठ जिनेश्वर पूजते, आठ कर्म दुख जाय।
अष्ट सिद्धि नव निधि लहैं, सुरगुरु होय सहाय।।

शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त पूजा

पुष्पदन्त जिनरायको, भवि पूजौं मन लाय।
मन वच काया शुद्धसों, कवि अरिष्ट मिट जाय।।

अडिल्ल छन्द

गोचरमें ग्रह शुक्र आय जब दुख करै।
पुष्पदन्त जिन पूज सकल पातक हरै।।
आह्वानन कर तिष्ठ सन्निधि हूजिये।
आठ द्रव्य ले शुद्ध भावसों पूजिये।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रह अरिष्टनिवारक पुष्पदन्त जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव2 वषट् सन्निधिकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथाष्टक (सोरठा)

निर्मल शीत सुभाय, गंगाजल झारी भरौ।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुम कुम लेइ घिसाय, कनक कटोरीमें धरौं।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल अक्षत लाय भाव सहित तुष परिहरौ।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली जाय, जुही कुन्द जु केवरो।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विंजन विविध बनाय, मधुर स्वाद युत आचरों।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन दीप कराय, कदलीसुत बाती करों।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर मिलाय, लोंग धूप बहु विस्तरौं।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चोच मोच फल पाय, सरस पक्क लीजे हरों।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक लै आय, अर्घ देत पातक हरो।
कवि अरिष्ट मिट जाय, पुष्पदन्त पूजा करौं।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन ले फूल और अक्षत घने।
दीप धूप नैवेद्य सुफल मनमोहने।।
गीत नृत्य गुण गाय अर्घ पूरण करो।
पुष्पदन्त जिन पूज शुक्र दूषण हरौ।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

मन वच तन ध्यावो, पाप नसावो, सब सुख पावो अघ हरणं।
ग्रह दूषण जाई, हर्ष बढ़ाई, पुष्पदन्त जिनवर चरणं।।

(पद्धड़ी छन्द)

जय पुष्पदन्त, जिनराज देव, सुर असुर सकल मिल करहि सेव।
जय फाल्गुन सुदि नौमी बखान, सुरपति सुर गर्भकल्याण ठान।।
जय मार्गशीर्ष शशि उदय पक्ष, नौमी तिथि जगमें भये प्रत्यक्ष।
जय जन्म-महोत्सव इन्द्र आय, सुर गति ले इन्द्र न्हवन कराय।।
जय वज्रवृषभ नाराच देह दश शत वसु लक्षण सुनहि गेह।
जय राजनीति कर राज कीन, मगसिरसित पड़वा तप सु लीन।।
जय घात घातिया कर्म धीर, निज आतम शक्ति प्रकाश वीर।
जय कार्तक सुदी दुतिया महान, लहि केवलज्ञान उद्योत भान।।
जय भव्य जीव उपदेश देय, जग जलदि उबारन सुजस लेय।
जय भादों सुदी आठें प्रसिद्ध, इन शेष कर्म प्रभु भये सिद्ध।।

जय जय जगदीश्वर भये देव, भृगु तजहिं दोपहर करत सेव।
जय मनवांछित तुम करत ईश, मन शुद्ध जलधि तुम नमत शीश।।

ॐ ह्रीं शुक्र अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सब गुण अधिकारी, दूषण हारी, मारी रोगादिक हरनं।
भृगु सुत दुख जाई, पाप मिटाई, पुष्पदन्त पूजत चरणं।।

इति आशीर्वादः।

शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिनपूजा

(दोहा)

जन्म लग्न गोचर समय, रवि सुत पीड़ा देय।
तब मुनिसुव्रत पूजिये, पातक नाश करेय।।

(अडिल्ल छन्द)

मुनिसुव्रत जिनराज काज जिन करनको।
सूर्य पुत्र ग्रह क्रूर, अरिष्ट जु हरनको।
आह्वानन कर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः करो।
होय सन्निधि जिनराय, भव्य पूजा करो।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव2 वषट्।

अथाष्टक (चाल कातक)

प्राणी गन्धोदक ले सीयरो, निर्मल प्रासुक ले नीर हो।
प्राणी झारी भर त्रय धार दे, जासे कर्म--कलंक मिटाय हो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी चंदन घिस मलियागिरी, अरु कुम कुम तामें डार हो।
प्राणी जिनपद चरचों भावसों, जासों जन्म जरा जर जाय हो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी उज्वल शशिसम लीजिये, एजी तंदुल कोट समान हो।
प्राणी पांच पुज्ज दे भावसों, अक्षय पद सुखदाय हो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी बेल चमेली केवडो, करनार कुमुद गुलाब हो।
प्राणी केतकी दलसे पूजिये, तब कामबाण मिट जय हो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी विंजन नाना भांतिके, एजी षट रस कर संयुक्त हो।
प्राणी जिन पद पूजों भावसों, तब जाय क्षुधादिक रोग हो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी रतन जोत तम नासनी, कर दीपक कंचन थार हो।
प्राणी जिन आरती कर भावसों, एजी भव आरत तम जायहो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी चंदन अगर कपूर ले सब खेवो पावक मांहि हो।
प्राणी अष्ट करम जर क्षार हो, जिन पूजत सब सुख होय हो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी आम अनार पियूष फल, चौच मोच बादाम हो।
प्राणी फलसों जिनपद पूजिये, एजी पावे शिव फलसार हो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी निरादिक वसु द्रव्य ले मन वच काय लगाय हो।
प्राणी अष्ट कर्मका नाश ह्वै एजी अष्टमहागुण पाय हो।।
प्राणी मुनिसुव्रत जिन पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

जल चन्दन ले फूल और अक्षत घने।
चरु दीपक बहु धूप महाफल सोहने।।
पूरण अर्घ बनाय जिन आगे हूजिये।
मुनिसुव्रत जिनराय भावसों पूजिये।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन पंचकल्याणक पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

मुनिसुव्रत सुव्रत करन, त्याग करन जगजाल।
शनि ग्रह पीड़ा हरनको, पढ़ो हर्ष जयमाल।।

(पद्धडी छन्द)

जय जय मुनिसुव्रत त्रिजगराय,
शत इन्द्र आय माथा नमाय।
जस जय पद्मावती गर्भ आय,
साबन वदी दुतिया हर्षदाय।।
जय जय सुमित्र घर जन्म लीन,
वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीन।
जय जय दश अतिशय लसत काय,
त्रयज्ञान सहित हित मित कहाय।।
जय जय तन लक्षण सहस आठ,
भवि जीवनमें थुतिकरन पाठ।
जय जय सौधर्म सुरेश आय,
जन्म कल्याणक करियो सु भाय।।
जय जय तप ले वैशाख मास,
सुदी दशमी कर्म कलंक नाश।
जय जय वैशाख जो असित पक्ष,
नौमी केवल लहि जग प्रत्यक्ष।।
जय जय रचियों तब समवसरन,
सुर नर खग मुनिके चित्त हरन।
जय छियालीस गुण सहित देव,
शत इन्द्र आय तहां करत सेव।।
जय जय फागुन वदी द्वादशीय,
शिवनाथ वसे मुनि सिद्ध लीय।
जय जय शनि पीडा हरन हेत,
मनसुखसागर कर सुख निकेत।।

ॐ ह्रीं शनि अरिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रत जिन अनर्घपद प्राप्ताय निर्वपामीति स्वाहा।

(घत्ता छन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी सब जग नामी,
भव्य जीव बहु सुख करनं।
मन वांछित पूरैं पातक चूरैं,
रविसुव्रत पीड़ा हरनं।।

इति आशीर्वादः।

राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमिनाथ जिनपूजा

गोचर में जब आय पीड़ा करे,
नेमिनाथ जिनराज तबै पूजा करे।
आठ द्रव्य ले शुद्धभाव हि आनके,
श्याम पुष्प मन लाय भक्तिको ठानके।।
पूजों नेम जिनेश भव्य चित्त लायके,
राहु देय दुख दुष्ट राशिमें आयके।
कर आह्वानन तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः उच्चरों,
होय सन्निधि शक्ति भक्त पूजा करों।।

ॐ ह्रीं राहुअरिष्टनिवरक श्रीनेमीनाथ जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव 2 वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

अष्टक (गीतीका छन्द)

कनक झारी मणिजडित ले, शीत उदक भरायके।
प्रभु नेम जिनके चरण आगे, धार दे मन लायके।।
जब राहु गोचर समय दुख दे, देय दुष्ट स्वभावसों।
तब नेम जिनके भावसेती, चरण पूजों चावसों।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

श्रीखंड मलय मिलाय केसर, कदली सुत तामें घिसो।
जिन चरण चरचत भाव धरके, पाप ताप तबै नसौं।।
जब राहु गोचर समय दुख दे, देय दुष्ट स्वभाव सों।
तब नेम जिनके भाव सेती, चरण पूजों चाव सों।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अनूपम सालि सम्भव, कनक भाजन लेइये।
जिन अग्रपुंज चढ़ाय भवि जन, एकचित्त मन देइये।।
।। जब राहु गोचर.।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

कमल कुन्द गुलाब गुंजा केतकी करना भले।
सुमन लेके सुमन सेती, पूजते जिन अघ टले।।
।। जब राहु गोचर.।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

विंजन विविधरस जनित मनहर क्षुधादूषणको हरे।
भर थार कंचन भावसेती, नेमिजिन आगे धरे।।
।। जब राहु गोचर.।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मणिमई दीप अनूप भरके, चन्द्र ज्योति सु जगमगे।
निज हाथ लै प्रभु आरती कर, मोह तब ही भगै।।
।। जब राहु गोचर.।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागरु लोभान लेके, और द्रव्य सुगन्ध मय।
जिन चरण आगे अगनी पर धर, धूप धूम सुरभि भमैं।।
।। जब राहु गोचर.।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

अम्बा बिजोरा नारियेल, श्रीफल सुपारी सेवको।
फल ले मनोहर सरस मीठे, पूज ले जिनदेवको।।
।। जब राहु गोचर.।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

जल गन्ध अक्षत पुष्प सुरभित, चरु मनोहर लीजिये।
दीप धूप फलौघ सुन्दर अर्घ, जिन पद दीजिये।।
।। जब राहु गोचर.।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्व. स्वाहा।

आठ द्रव्य ले सार नेम प्रभु पूजिये।
राहु होय ग्रह शांति पाप सब धूजिये।।
मन वांछित फल पाय होय बड़ भागसो।
जो पूजे जिन देव बडे अनुरागसो।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय महाअर्घं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

श्री नेम जिनेश्वर जगपरमेश्वर, जीव दया जु धुरंधरं।
मैं शरणन आयो शीश नमायो, सिंधु सुत दूषण हरनं।।

(पद्धड़ी छन्द)

जय जय जिन नेम सुनेम धार,
करुणा कर जग जन जलधि तार।
जय कार्तक सुदि छठमी प्रधान,
शिवदेवी उर अवतरे आन।।
जय जय सावन सुदी छठ सुदेव,
इन्द्रादि न्हवन विधि करहि सेव।
जय जय यदु कुल मंडित दिनेश,
सुर नर खग स्तुति करत शेष।।
जय जय शुचि शुक्ल उदास होय,
छठको तप कर निज आत्म जोय।
जय जय निर्मल तन निर्विकार,
भामण्डल छबि शोभा अपार।।

जय जय आश्विन सुदी ज्ञान भान,
तिथि प्रथम प्रहर जग सुख निधान।
जय जय सावन छठ शुक्ल पक्ष,
सब लोकालोक कियो प्रत्यक्ष।।
जय जय वसु विध विधि सकल नास,
लहि सुख अनन्त शिव लोक वास।
जय जय अजरामर पद प्रधान,
हो त्रिभुवन पति लोकाग्र थान।।
जय जय छाया सुत परिहरन,
मनसुख समुद्र जु गहिये शरन।।

ॐ ह्रीं राहु अरिष्टनिवारक श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्व. स्वाहा।

(धत्ता छन्द)

भव जन सुखदाई होउ सहाई, मन वच काया गावत हों।
सब दूषण जाई पाप नसाई, नेम सहाई छावत हों।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लि पार्श्वनाथ पूजा

(दोहा)

केतु आय गोचर विषै, करे इष्टकी हान।
मल्लि पार्श्व जिन पूजिये, मन वांछित सुख खान।।

(अडिल्ल छन्द)

मल्लि पार्श्व जिन देव सेव, बहु कीजिये।
भक्ति भाव वसु द्रव्य शुद्ध कर लीजिये।।
आह्वानन कर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः करौ।
मम सन्निधि कर पूज हर्ष हियमें धरौ।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चाल नन्दीश्वर)

उत्तम गंगाजल लाय मणिमय भर झारी।
जिन चरण धार दे सार, जन्म जरा हारो।।
मैं पूजों मल्लि जिनेश, पारस सुखकारी।
ग्रह केतु अरिष्टनिवार, मनसुख हितकारी।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड मलय तरु ल्याय, कदली सुत डारी।
घिस केसर चरणनि ल्याय, भव आताप हरी।। मैं पूजों.।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल अक्षत अविकार, मुक्ता मम सोहैं।
भरले हाटक मय थाल, सुर नर मन मोहैं।। मैं पूजों.।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

लै फूल सुगन्धित सार, अलिगुंजार करै।
पद पंकज जिनहिं चढाय, काम विथा जु हरै।। मैं पूजों.।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विंजन बहुत प्रकार, षट् रस स्वाइ मई।
चरु जिनवर चरण चढ़ाय कञ्चन थार लई।। मैं पूजों.।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि दीपक धूप भराय, चंद्रकली बाती।
जगज्योति जहां लहकाय, मोहतिमिर घाती।। मैं पूजों.।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु चंदन लाय, धूप दहन खेइ।
मोदित सुरगण ह्वै जाय, रूचि सेती लई।।
मैं पूजों मल्लि जिनेश, पारस सुखकारी।
ग्रह केतु अरिष्ट निवार, मनसुख हितकारी।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु चोच मोच बादाम, श्रीफल फल देई।
अमृत फल सुख बहु धाम लीजे मन लेई।। मैं पूजों.।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन सुमन सु लेय तन्दुल अगहारी।
चरु दीप धूप फल लेई, अर्घ करूं भारी।। मैं पूजों.।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

लै वसु द्रव्य विशेष सु मंगल गायके।
गीत नृत्य करवाय जु तुर बजायके।।
मनमें हर्ष बढ़ाय, अर्घ पूरण करौं।
केतु दोषको मेंट पाप सब परिहरौं।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महाअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय मल्लि जिनेसुर सेव करे सुर, पार्श्वनाथ जिन चरण नमों।
मन वच तन लाई अस्तुति गाई, करौं आरती पाप गमों।।

पद्धड़ी छन्द

जय जय त्रिभुवन पति देव देव, इन्द्रादिक सुरनर करहि सेव।
जय जय निज गुण ज्ञायक महंत, गुण वर्णन करत न लहतअंत।।

जय जय परमातम गुण अरिष्ट, भव पद्धति नाशन परम इष्ट।
जय जय अष्टादश दोष नाश कर दिन सम लोकालोक भास।।
जय जय वसु कर्म कलंक छीन, सम्यक्त्व आदिवसु सुगुण लीन।
जय जय वसु प्रतिहारज अनूप, वसुनी शुभ भूमिके भये भूप।।
जय अदेह तुम देह धार, वर्णादि रहित में रूप सार।
जय जय अजरामर पद प्रधान, गुण ज्ञान आलोकालोक मान।।
जय जय सुख साता बोधदर्श, निज गुण जुत परगुण नहीं पर्श।
जय जय चित्त ऋद्ध समुद्र सार, कर जोर नमों हों बार बार।।

ॐ ह्रीं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः।

रत्नत्रय विधान

(कविवर पण्डित टेकचन्द जी विरचित)

प्रस्तावना बेसरीछन्द

सरधो जानो पालो भाई, तीनोंमें कर राग जुदाई।
लै लै नीका द्रव्य सुसारा, पूजे पाओ मोक्षगारा।।

नाराच छन्द

भला सुज्ञान दर्शना–चरित्तरा सुसार है।
भवसमुद्रनाव मोक्ष–पन्थ का अधार है।।
यही जु पन्थ सिद्धि का, नहीं जु और जानिये।
जजों सुदर्श ज्ञान वा चरित्र भक्ति आनिये।।
सार येहि तीन रत्न, पारखी मुनीन्द्र हैं।
लहें जु राज छांडि या, बिना गुणी न सोह हैं।।
नहीं जु राग द्वेष ताहि, पाइये कदा सही।
तीन रत्नरूप वस्तु, चित्त में जिन्हों लही।।
मुनीन्द्र याहि पायके, न पांय फिर भवा सही।
जिनेन्द्र याहि पायके, प्रिया शिवा तिया गही।।
यही जु तीन मानका, जु मोक्षपन्थ जानका।
यही जु ज्ञान केवला, निकट्ट वेग आनका।।
यही जु तीन रत्न इन्द्र, चन्द्र को नहीं मिलें।
खगा फणीन्द्र चक्रि को, न भूप को धरा तलें।।
मुनी बिना सराग के, न पाइये कभी सही।
जु तीन होय एकठे, जिनेन्द्र के गुणा यही।।

नमों जु ज्ञान दर्शना, चरित्र जो शिवा पथा।
रहे सदा हिये सुभक्ति, मो तने इन्हीं कथा।।
भवान्तरे मिलें सु मोहिं, तीन रत्न आयके।
चाह और मोय ना, सुनो जु अर्ज ध्यायकें।।

गीतिका छन्द

ये तीन रत्न अपार मौलिक, पारखी विरलो सही।
जिये मोह अन्ध न भेद पावे, खेद जो बहुतो लही।।
होवे निकट भव अब्धि जाके, सो लहे सहजहिं भया।
मुनि होय राज्य विहाय पावे, शाश्वती पद इन दया।।
इनही प्रभावै मोक्ष पावे, कर्म नाशे भवकरा।
सुख होय सब दुख खोय, सहजहिं स्वर्ग पावे मनहरा।।
ये ज्ञान सम्यक दर्श चारित, तीन ही सुखदाय हैं।
इन धार जग में पूज्य पदवी, लहे जिनधुनि गाय हैं।।

अडिल्ल छन्द

रत्नत्रय भव हरे, स्वर्ग शिवदाय जी।
रत्नत्रयसम आभूषण, ना दिखलाय जी।।
याकी महिमा देख, इन्द्र से पग परें।
ये त्रय ज्ञान बढ़ाय, सिद्धथल ले धरें।।

चौपाई छन्द

रत्नत्रय बिन भव भरमाय, रत्नत्रय तजि पाप कमाय।
अब हम उर वाञ्छा यों थही, मिले हितू रत्नत्रय सही।।

सोरठा – यह रत्नत्रय सार, शरण मिल्यो हमको सही।
भवधि तारनहार, तातें मैं पल पल नमों।।

दोहा – रत्नत्रय जग में कहा, मुक्ति महा फलदाय।
योग शुद्ध करके नमों, भवतति लेहुँ नसाय।।

अथ समुच्चय पूजा

स्थापना, गीतिका छन्द

सत्य दर्शन ज्ञान चारित, मोक्ष मारग जिन कहे।
मोक्षाभिलाषी धरें इनको, इन बिना शिव ना लहे।।
यों जानि तीनों रत्न पूजों, ध्याय के इसही धरा।
उर भक्ति धर मन वचन काया, ता फलें सब अघ हरा।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्ररूपरत्नत्रयधर्म! अत्र अवतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्। पुष्पाञ्जलिं क्षिपामः।

अष्टकम् (चाल मुनियानन्दी)

नीर निरमल पदम, कुण्ड को सार जी।
उज्ज्वलो क्षीरसम, सरस या धार जी।।
रत्नझारी विषें, लेय गुण गाय के।
जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः जलम्।

बावनों चन्दना, अगर शुभ लाइये।
नीर निरमल थकी, घसि सुरभि लाइये।।
कनक पियाले विषें, धरि सुगुन गाय के। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः सुगन्धम्।

श्वेत अक्षत सुभग, शुद्ध नख सिख सही।
गन्धधर यों यथा, फूल कुन्दा कही।।
धार पातर विषें, आप कर लायके। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः अक्षतान्।

फूल कल्पवृक्ष के, रंग नाना धरें।
गन्ध आपनो थकी, भ्रमर मन वश करें।।
पुष्प ऐसे तनी, माल कर लाय के। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः पुष्पम्।

सुभग नैवेद्य जो, भले रस धार जी।
सद्य मोदक घने, स्वाद करतार जी।।
यों चरू कंचन के, पात्र धर लाय के।
जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के ।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः नैवेद्यम्।

दीप मणिमय महा, ज्योतिकर्त्ता सही।
तेज ताके कने, ध्वान्त भागे सही।।
धार शुभपात्र में, दीप कर लाय के। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः दीपम्।

धूप दशधा महा, गन्ध पूरित कही।
बहु चन्दनादि शुभ, द्रव्य संयुत सही।।
लेय कर धूप यों, अगनि में लाय के। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः धूपम्।

लोंग खारक भले, श्रीफला सार जी।
सुभग बादाम पुँगी, फलाधार जी।।
इन आदि लेय फल, आप कर लायके। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः फलम्।

नीर चन्दन अक्षत, फूल चरु जानिये।
दीप अरु धूप फल, अर्घ्य कर आनिये।।
धारि उर भक्ति गुन, गाय सुख पाय के। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः अर्घ्यम्।

दरश ज्ञान वृत्त ये, रत्न शुभ हैं सही।
यही तीन रत्न शिव, लोक को दें मही।।
जान यों अर्घ्य ले, आय उमगाय के। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः महार्घ्यम्।

जयमाल

तीन रत्न मुनिराज धन, अविनाशी विन छेह।
इन्द्र स्तुतिवाँछा करे, कवि मांगत है येह।।

त्रिभंगी छन्द

सम्यक दृग जाके, हो शिव ताके,
दोष न बाके होय कदा।
सम्यक् शुध जानो, हो भ्रम हानो,
तत्त्व पिछानो, मोक्ष पदा।।
चारित शुध धारे, सम्यक लारे,
भवदधि तारे नाव जिसो।
यह तीनों रत्ना कर इन यत्ना,
गुरुवच इतना पूज तिसो।।
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा,
अघ तैं न्यारा धर्म धरे।
शुभ ज्ञान उपावा सो शुध भावा,
शिवमग धारा कर्म हरे।।
शुध चारित नीका, सुखदा जियका,
शिवतिय पियका मीत जिसो । यह०
तिस सम्यक् पाया दोष उड़ाया,
जिनगुण गाया, ज्ञान धरं।
ले सम्यक् ज्ञानी, अम्मृत पानी,
भवतप हानी, पुष्ट करं।।
चारित भवसागर, नाव उजागर,
पार उतारन, जान तिसो। यह०

सुध सम्यक् सारं, भविजिय धारं,
है भव तारं, सिद्ध थलं।
यह सम्यक् ज्ञानं, भ्रमतम हानं,
सब विध जानो, युक्तकलं।।
चारित शुध सोई, शिवमग जोई,
तारक जो हो, नाव जिसो। यह०
सम्यक् परभावा, नहिं भवदावा,
मरण मिटावा, सुखकारी।
जो सम्यग्ज्ञानी, दया–निधानी,
सब विधिजानी, गुणधारी।।
सम्यक् चारित्ता, जग जिय मित्ता,
सज्जन चित्ता, मित्र जिसो। यह०
सम्यक् धन जाके, सुर नत बाके,
कभी न वाके धन–धारी।
जे सम्यग्ज्ञानी, मिथ्याभानी,
ज्ञान पिछानी, सुखकारी।।
चारितधर जोगी, शिवतिय भोगा,
मोक्षनियोगी, जीव जिसो।
यह तीनों रत्ना कर इन यत्ना,
गुरु वच इतना पूज इसो।।
सम्यक् सुध सो ही, लखे न मोही,
सत्य जु सो ही, कर्म हरे।
जिन भाषित ठाने, निज पर जाने,
सम्यग्ज्ञान सोहि धरे।।

जो चारित धारे, कर्म निवारे,
आत्म सुधारे, ध्यान जिसो। यह०
सम्यक् सरधाना, कुगुरु छुड़ाना,
बुध परधाना, मोक्ष चहा।
सो सम्यग्ज्ञानी, जिनध्वनि जानी,
सब विध मानी, और कहा।।
जे चारित धारी, निज अघहारी,
पुण्य भँडारी, जान जिसो । यह०

दोहा – सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित देहु मिलाय।
तीनों शिवमग जिन कहे, जो होते शिवदाय।।

ओ ह्री श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य अर्घ्यम्।

श्री सम्यग्दर्शन पूजा

आडिल्ल छन्द

सम्यग्दर्शन सोय, जहाँ वसुमद नहीं,
शङ्कादिक वसु दोष, रहें जामें नहीं।
नहीं मूढ़ता तीन, अनायतन षट नहीं,
या विध समकित थाप, जजों शुभथल मही।

ओ ह्री श्री अष्टाङ्गसम्यग्दर्शन। अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ। अत्र मम सन्निहित भव भव
वषट् सन्निधापनम् परिपुष्पाञ्जलि क्षिपाम ।

अथ अष्टकम्

गीता छन्द

वर नीर सागर क्षीर जैसो
उज्जवलो सुखदाय जी।
शुभगन्ध निर्मल स्वाद याको,
सद्य शुद्ध सुल्याय जी।।

धरि रतनझारी हाथ ले निज,
भक्ति उर में बहु धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन,
भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय जलम्।

बाबनो चन्दन सुगन्ध सु,
नीर सँग घसि लाय हों।
शुभ अगरं आदि मनोज्ञ गन्ध,
सु तास में मिलवाय हों।।
ले कनक पातर भावशुभ तैं,
भक्ति धन–लक्षहिं धरी ।
मैं जजों सम्यकदरशमल विन,
भावसों थुति उच्चरो ।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय चन्दनम्।

अक्षत अखण्डित बीन नख शिख,
शुद्ध उज्जवल लाय जी।
शुभ गन्धमय अति धोय नीके,
आप कर सुखदाय जी।।
कर भले पातर मांहि तिनको,
भक्ति शुभ फलदा करी। मैं०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय अक्षतान्।

फूल शुभतर वरन नाना,
जाति हू बहुविध सही।
अतिगन्ध युत सुरवृक्ष के शुभ,
जाय उपमा ना कही ।।
कर माल तिनकी हाथ ले निज,
भावना सुध उर धरी। मैं०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय पुष्पम।

नैवेद्य मोदक आदि नीके,
और भी बहुविध कही।
तिन मांहिं नाना मेल रसको,
स्वाद की मानों मही।।
चरु करी या विध धारि पातर
भक्ति मन वच तन धरी।
मैं जजों सम्यकदरश मलबिन,
भावसों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय नैवेद्यम्।

कर दीप मणिमय ज्योति धारो,
नाश – कर तम को सही।
धर मध्य पातर हेम के शुभ,
आरती करनी चही।।
उर भक्ति मनवचकाय धरि करि,
विनय तें मुख थुति करी। मैं०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय दीपम्।

धूप दशधा द्रव्य ले के,
करी है सुखकार जी।
तिस मांहि गन्ध अपार प्रसरत,
भ्रमर शब्द उचार जी।।
इस जाति की शुभ धूप लेकर,
अग्नि में थुति कर धरी। मैं०

ओ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय धूपम्।

श्रीफल सुपारी लोंग खारक,
चोच मोच बदाम जी।
इन आदि और अनेक फल ले,
महाशुभ के धाम जी।
ले भक्ति कर धर सुभग बासन,
आपने कर ले धरी।
मैं जजों सम्यक्दरशमल विन,
भावसों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय फलम्।

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु ले,
दीप धूप सु फल सही।
सब मेल अर्घ्य बनाय नीको,
भले पातर में लही।।
उर भक्ति मन वच काय करके,
एक ध्यान सु तैं करी। मैं०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

प्रत्येकार्घ्य

त्रिभङ्गी छन्द

मम नाना मामा, अतिबल ठामा,
धन के धामा सुखदाई।
तिन राज सुमानें, सब जग मानें,
वचन प्रमानें सब भाई।।
यह 'जाति' सुमद्दा, जानि निषिद्दा,
अघ की हद्दा, जान हिये।
याको जु निवारे, सम्यक् सारे,
शिवपद धारे, जजि थुति ये।।

ओं ह्रीं जातिमदरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

है बाप हमारा, सुत धन वारा,
सब को प्यारा ज्ञानमई।
सुत दारा मेरा, नृप ढिग केरा,
काम करेरा, जान सई।।
यह 'कुलमद' जानो अघ को थानो,
तज वच मानो, बात हिये।
सम्यक् या बिन सो, मोक्ष करन सो,
जजि भाव मन सों, भक्ति दिये।।
ओं ह्रीं कुलमदरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।
मैं बहुत कमाऊँ, द्रव्य उपाऊँ;
सब दिश जाऊँ खेप लई।
मो में बुध नीकी, बनज करे की,
युक्ति धरे को बात सई।।
जँह ही मैं जाऊँ, आदर पाऊँ,
नव–निधि लाऊँ, जान हिये।
यह 'धन' का मद्दा, जान निषिद्दा,
सम्यक् शुद्धा, जजि थुति ये।।
ओं ह्रीं धनमदरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।
जो रूप हमारो, और न धारो,
मोसें हारो, मदर जिसो।
सुर हू लखि लज्जे, यों छवि छज्जे,
बहु कहा कहिज्जे, जान इसो।।
यह 'रूप मदा है' ज्ञान जुदा है,
सम्यक् दाहै आप मई।
तज याको भाई, जजि थुति लाई,
सम्यक् पाई मोक्ष सई।।
ओं ह्रीं रूपमदरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

मैं तपसी भारी, शक्ति अपारी,
वास धरारी वरष मई।
चंचल मन जीत्या, भवभय भीत्या,
नहिं तन मीत्या जान भई।।
यह 'तपमद' जानो, अघ को थानो,
दोष बड़ानो, कर हानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।
ओं ह्रीं तपोमदरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।
हम बहु बनवाना, मल्ल समाना,
गजमद हाना, जोध सही।
मेरे बल आगे, अरिभय लागे,
को मो आगे, धीर कही।।
यह 'बल' को मद है, अघ को हद है,
सब हित रद है करि हानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई मुनि मानी।।
ओं ह्रीं बलमदरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।
मैं बहुश्रुत जोई, भरम न कोई,
चर्चा जोई, बात करो।
मैं षट् मत जोये, पंडित टोये,
सब मत जोये, ज्ञान धरो।।
'विद्यामद' ये ही, तजि भवि जेही,
सरधा ये ही जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानो।।
ओं ह्रीं विद्यामदरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

मोकों नृप जाने, मुखिया माने,
जग सन्माने, हुकुम घनों।
चाहों मैं मारों, तथा उघारों,
वचन उचारों सोइ ठनों।।
यह मद 'अधिकारी' तज भवधारी,
भाव सम्हारी धुनि ठानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।
ओं ह्रीं अधिकारमदरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।
जँह शङ्का आवे, धरम नशाये,
पाप बढ़ावे, दुखदाई।
शङ्का जब होई, सम्यक् खोई,
सरधा वोई मन लाई।।
यह 'शङ्का' मद है, फल अति खल है,
त्याग सु–कल है, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ–खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।
ओं ह्रीं शंकामलरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।
जो वृष–रस चाखे, फल अभिलाखे,
जगसुख भाखे, मोहि मिले।
मैं जिनवृष सेऊँ, खगथल लेऊँ,
सुरसुख वेऊँ, चाह फले।।
यह वाञ्छा जानो, काँक्षा मानों,
तज वच आनो, जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।
ओं ह्रीं काँक्षामलरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पर वस्तु सु जोवे, घिन चित बोवे,
अरति बढ़ोवे, मन माँहीं।
यह वस्तु बुरी है, क्यों जु धरी है,
कौन करी है, दुखदाई।।
यह दोष विचिकित्सा, अघ को अंशा,
त्यागो मनसा, श्रुतज्ञानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।
ओं ह्रीं विचिकित्सामलरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।
जो भेद न पावे, शीश नवावे,
भक्ति बढ़ावे, वेद कही।
सब को गुरु माने, ज्ञान न आने,
धर्म न जाने, शुद्ध सही।।
यह मूढ़ स्वभावा, पाप बढ़ावा,
तज सुख दावा, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।
ओं ह्रीं मूढ़तामलरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।
पर अवगुण जोई, ढके न सोई,
मुख कह कोई, पाप धरा।
पर के छल देखे, कहत विशेखे,
सो अघ भेखे, जान खरा।।
कह दोष पराया, यह अघ भाया,
त्याग सुभाया, बुध आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।
ओं ह्रीं अनुपगूहनमलरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

लख धर्म पराया, दोष बढ़ाया,
पाप उपाया, मन ल्याई।
या धर्म बढ़ाऊँ, सो विधि लाऊँ,
ज्ञान बढ़ाऊँ, चित ल्याई।।
यह अवगुण जानो, अतिथि सुमानो,
तजि हित आनो शुभ जानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं अस्थितिकरणमलरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

धर्मी जन जोवे, हरष न होवे,
समचित सोवे अघ–हारी।
वृषथान निहारे, नेह न धारे,
सकति सम्हारे, अधिकारी।।
यह बत्सल नाहीं, पाप बढ़ाई,
तज मन लाई, बुध आनी।
सम्यक् सुधि सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं अवात्सल्यमलरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

उत्सव नहिं जाने, हरष न आने,
नाहिं सुहाने, मन माँहि।
नहिं ताहि सरावे, जस नहिं गावे,
पाप कमावे, चित ठांही।।
यह दोष बड़ा है, त्याग जुड़ा है,
धर्म बड़ा है, मन आनी।
सम्यक् सुधि सोई, जजि अघ खोई,
जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओ ह्रीं अप्रभावनामलरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

चौपाई छन्द

ना सर्वज्ञ, न तारन हार,
ताको पूजत देव निहार।
सो यह देवमूढ़ता जोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं देवमूढ़तारहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

धर्म दया बिन सो है सही,
धारण करे प्रतीक्षा नहीं।
सो यह धर्ममूढ़ता सोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं धर्ममूढ़तारहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

वीतराग नहिं नगन शरीर,
सेवे कुगुरु राग धर धीर।
सो यह गुरूमूढ़ता जोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।

ओं ह्रीं गुरुमूढ़तारहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

कर्मनाश बिन देव कहाय,
तिनको परशंसै थुति गाय।
यह अनायतन दोष सुजोय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।

ओं ह्रीं कुदेवप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

ताहि कुदेव सेवक हूं जान,
परशंसै मन में हित आन।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।

ओं ह्रीं कुदेवसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनायार्घ्यम्।

दयारहित ही धर्म सु मान,
फिर ताकी परशंसा ठान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।

ओं ह्रीं कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनायार्घ्यम्।

हिंसा धर्म सेवकी जान,
ताको परशंसै शुभ मान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।

ओं ह्रीं कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनायार्घ्यम्।

राग द्वेष धर प्रज्ञावान,
ये गुरु परशंसै बिन ज्ञान।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।

ओं ह्रीं कुगुरुप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनायार्घ्यम्।

कुगुरुन की सेवा जो करे,
ताकी परशंसा चित धरे।
यह अनायतन दोष जु होय,
इस बिन जजि सुध समकित सोय।

ओं ह्रीं कुगुरुसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनायार्घ्यम्।

यह द्यूत व्यसन है पाप–मूल,
यह खेल लहे जिय दुःखशूल।
दे अपयश वध बन्धन सु जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ओं ह्रीं द्यूतव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

आमिष-खाये मन अशुचिवान,
हिंसा या सम होवे न आन।
तिस देखत ही मन मलिन होय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ओं ह्रीं आमिषव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पीके मद्विरा मूर्छा लहाय,
सब सुध बुध अपनी दे गमाय।
यह मदिराव्यसन सुधर्म खोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ओं ह्रीं मदिराव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

गणिका गिन पातल जूंठ जेम,
अति लोकनिन्द्य परसिद्ध येम।
यह व्यसन नरकपद–दाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ओं ह्रीं गणिकाव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

जे जीव घास खा वन वसांय,
तिन को मारे पारधि कुभाय।
यह व्यसन नरक मारग सुजोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ओं ह्रीं आखेटव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

परद्रव्य हरें दुठ चोर जान,
लहि वध बन्धन जगनिन्द्य थान।
यह चौर्यव्यसन दुखदाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ओं ह्रीं चौर्यव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

परनारि व्यसन दुठ जीव धार,
सो लहें नरक दुख पापभार।
यह व्यसन महादुखदाय जोय,
इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।

ओं ह्रीं परनारिव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

चौपाई छन्द

किये दान संक्राती सुजान,
होय सुखी जीव नहिं दुःख मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं कुपर्वदानदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

ग्रह पूजें सुख साता मान,
नहिं पूजें दुख–कूप बखान ।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं चन्द्रसूर्यादिग्रहपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पूजें भूमी भूपति थाय,
इस विधि मिथ्याभाव उपाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं भूमिपूजारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

हिंसामग जो सेव कराय,
मिथ्या मन्त्र जन्त्र पुजवाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं कुधर्मसेवारहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

पर्वत पूजें दीरघ जान,
जाके जजें होय हित मान।।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं पर्वतादिपूजामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

उदधि नदी सपरें अघ जाय,
होय पुण्य जिय को सुखदाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं उदधिस्नानमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

अग्नि मांहि जीवित जर जांय,
देवपना वे जीव लहाँय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं अग्निपातमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

कुगुरु सेवतें साता पाय,
यह दे ऋद्धि परम सुखदाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं कुगुरुसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

अग्नि देव कर मानें सही,
पूजें दीपक हो शुभ कही।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं अग्निसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

गाय मूत्र अति पूत बताय,
या लागे तन निर्मल थाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं गोमूत्रसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

गज घोटक वृष सेव कराय,
इन सेये इन लाभ लहाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं वाहनसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

असि बरछी भाला बन्दूक,
पूजें शक्ति लहें ना चूक।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं शस्त्रपूजामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

बालक पूजें देव सु मान,
सो सब मिथ्यातम मतिमान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं बालकपूजामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

गिरितें पड़तो काय छुड़ाय,
तो वांछित सुख को जन पाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं गिरिपतनमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

हिंसक देव दया बिन जान,
देखत क्रूर, जजें सुख मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय,
इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं हिंसकदेवसेवामलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

निशा अहार करे नहिं जोय,
जाके उर करुणा बहु होय।
माँसाहारी निश को खाय,
या बिन जजि सुध समकित भाय।।

ओं ह्रीं निशाहारमलरहिताय सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

अनगाल्यो जल पीवे नांहि,
दयासहित उर धर्म सुभाय।
ऐसो गुण जाके बहु होय,
सो समकित पूजें सुख होय।

ओं ह्रीं अगालितजलपानमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

इत्यादिक गुणजुत जो होय,
कहे दोष ते एक न जोय।
निश्चय अरु व्यवहार सुधाय,
सो समकित पूजों थुति लाय।।

ओं ह्रीं सर्वदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

जयमाल

समकित सांचा धर्म है, मोक्षवृक्ष को मूल।
श्रद्धा करना गाढ–उर, हरे विषय अघशूल।।

बेसरी छन्द

समकित सार धर्म का बीजा,
यातें पाप–मैल सब छीजा।
याही तें जगपूज्य कहावे,
यो ही जामन मरण मिटावे।।
समकित सो नाहीं धन कोई,
समकित कल्पवृक्ष सम होई
समकित के गुण मुनिगण गावें,
समकित जामन मरण मिटावे।।
समकित ही सब कारज सारे,
समकित मिथ्यारोग निवारे।
समकित शुद्ध धर्म कहलावे,
समकित जामनमरण मिटावे।।
समकित रतन जास मन माहीं,
ता सम अभूषण जग नांही।
समकित सुर–शिव थान दिखावे।। सम०
समकित बिन मुनि को शिव नाहीं,
समकित सहित जीव शिव पाहीं।
समकित देव धर्म बतलावे।। सम०
समकित अग्नि कर्म निज जारे,
समकित मोह–मल्ल को मारे।
समकित ही भ्रम दूर हटावे।। सम०
समकित तें हरि को पद होई,
समकित फल अहिमिन्द्र सु होई।
समकित सहित मुक्तिपद पावे ।। सम०

दोहा समकित मेरे शीश पर, करो वास यह आस।
समकित गुण ही मुख रहे जब तक तन में स्वास।।

ओं ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

श्री सम्यग्ज्ञानपूजा प्रारम्भ

मति श्रुत अवधिज्ञान मन लाय, मनपर्यय केवल समुझाय।
ये ही पांचों सम्यग्ज्ञान, पूजों थाप यहाँ हित आन।।

ॐ ह्रीं अष्टबिधसम्यग्ज्ञान! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट्
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितं
भव भव वषट् सन्निधापनम्।

भुजङ्गप्रयात छन्द

लिया नीर चोखा, पदम कुण्ड केरा।
महा निर्मला गन्ध, जुत मर्म हेरा।।
भर्‍यो स्वर्ण झारी, घनी भक्ति लाई।
जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय जलम्।

भला गन्ध धारी, लिया चन्दना है।
घिसा नीर से फेर, कर वन्दना है।।
धर भक्ति उर में, भले पात्र लाई ।। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय चन्दनम्।

भले तन्दुला ऊजरे खण्ड नाहीं।
धरें गन्ध नीकी भली शोभ मांहीं
लिये हाथ अपने घनी भक्ति भाई।। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय अक्षतान।

भले गन्धयुत फूल ले माल कीनी।
घने वर्ण के कोमला भक्ति चीनी।।
धरे हाथ मांहीं भली भक्ति गाई।
जजों ज्ञान सम्यक घना सौख्यदाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय पुष्पम्।

नैवेद्य नीका हितू जान जिय का।
भले मोदकादी रस डारि नीका।।
धरे पात्र में हाथ ले भक्ति गाई
जजों ज्ञान सम्यक घना सौख्य दाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यम्।

करे दीप तमनाश शुभ रत्न केरा।
धरे थाल मांही खुशी चित्त मेरा।।
करों आरती हर्ष सह भक्ति पाई।। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय दीपम्।

धरी धूप दशधा भली गन्ध धारी।
लिये चन्दनागुरु सुगन्धी है भारी।।
करों व़ीनती अग्नि में खेय भाई।। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय धूपम्।

लिये श्रीफला लोंग खारक बदामा।
इन्हें आदि फल और बहुजात कामा।।
धरे पात्र मांही घनी भक्ति लाई।। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय फलम्।

लियो नीर चन्दन अखत पुष्प जानो।
नैवेद्य फल दीप अरु धूप मानो।।
करों अर्घ्य सुन्दर घनी भक्ति गाई।। जजों०

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

(प्रत्येकार्घ्य बेसरीछन्द)

सपरस इन्द्रिय तें सब जाने।
विषय आठ ताकी विधि माने।।
सम्यक – सहित ज्ञान जो होई।
सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।

ओं ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

रसना तें जो विषय पिछाने।
पांच भेद सब अंश सु आने।।
सम्यक – सहित ज्ञान जो होई।। सो०

ओं ह्रीं रसनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

घ्राणेन्द्रिय जाने जो भाई।
दोय भेद ताकी विधि गाई।।
सम्यक – सहित ज्ञान जो होई।। सो०

ओं ह्रीं घ्राणेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

चक्षू विषय पञ्चविध जाने।
लाल पीत श्यामादिक माने।।
सम्यक – सहित ज्ञान तें होई।। सो०

ओं ह्रीं नेत्रेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

श्रोत्रेन्द्रिय तैं शब्द पिछाने।
तीन भेद ताके पहिचाने।।
सम्यक – सहित ज्ञान तैं होई।। सो०

ओं ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

जो जो मन विकल्प तें जोवे।
भई होयगी अब जो होवे।।
सम्यक सहित ज्ञान तें होई।
सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।

ओं ह्रीं श्रीमनोद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

चौपाई छन्द

ग्यारह अँग पूर्वादि सु जान।
अङ्ग बारहों सुरतिं बखान।।
ये सब सम्यक सहित सुभाय।
सो श्रुतज्ञान जजों हर्षाय।।

ओं ह्रीं श्रीअंगपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

खावें जतन जतन तें चले।
बोले जतन जतन तें हले।।
अचाराङ्ग क्रिया यों कही।
सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं आचाराङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

अध्ययन विधि विनयादिक और।
निज परिणति वेदन जग मौर।।
सूत्रकृताङ्ग विषें यों कही।। सो श्रुत०

ओं ह्रीं श्रीसूत्रकृताङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जीव थान उन्नीस बताये।
तथा चार सौ षट् श्रुत गाये।।
अङ्ग स्थानम मांहिं यों कही।
सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीस्थानाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

होवें जो जो धर्म समान।
द्रव्य क्षेत्र कालादिक मान।।
समवायाङ्ग यथाविधि कही।। सो०

ओं ह्रीं श्रीसमवायाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

अस्ति नास्ति आदिक स्याद्वाद।
एकानेक करे जो वाद।।
व्याख्याप्रज्ञप्ति अँग यों कही।। सो०

ओं ह्रीं श्रीव्याख्याप्रज्ञप्तिश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जिन अतिशय जिनध्वनि प्रगटाय।
समवसरण आदिक गुण गाय।।
ज्ञातृकथा अँग में यों कही।। सो०

ओं ह्रीं श्रीज्ञातृकथाश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

एकादश प्रतिमा विधि जोय।।
और बहुत श्रावक विधि होय।।
अँग उपासक में यों कही।। सो०

ओं ह्रीं श्रीउपासकाध्ययनाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

एक एक जिन समय मँझार।
अन्तःकृत केवलि षट् चार।।
अन्तः कृताङ्ग माँहि यों कही।
सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीअन्तःकृतदशाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

एक एक जिन वारें सोय।
दश दश मुनि अहमिन्द्र जु होय।।
अङ्ग अनुत्तर में यों कही।। सो०

ओं ह्रीं श्रीअनुत्तरोत्पादकदशाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

गई वस्तु लिख मूठी माँहि।
पूंछे प्रश्न कहे मुनि ठाँहि।।
प्रश्न व्याकरण अंग यों कही।। सो०

ओं ह्रीं श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

शुभ अरु अशुभ कर्मफल जान।
तीव्र जु मन्द विपाक बखान।।
सूत्रविपाक अङ्ग यों कही।। सो०

ओं ह्रीं श्रीविपाकसूत्राङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

अडिल्ल छन्द

व्यय ध्रौव्य अरु उत्पाद द्रव्यलक्षण सही।
गुण पर्यय द्रव माँहि, और बहुविध कही।।
यह पूरब उत्पाद, माँहि व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यक ज्ञान, जजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीउत्पादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जामें दुर्नय तथा, सुनय व्याख्यान है।
अस्तिकाय अरु द्रव्य, तत्त्व शुभ ज्ञान है।।
अग्रायण पूरब में, यों व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आम है।।

ओं ह्रीं श्रीअग्रायणीपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

द्रव्य आत्म पर वीर्य, काल वीरज सही।
वीरज उभय अपार, तपो वीरज कही।।
वीरज गुण अनुवाद, माँहिं यों ज्ञान है।। सो०

ओं ह्रीं श्रीवीर्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

अस्ति नास्ति वस्त्वादि, स्वभाव विषें सही।
नित्यानित्य अनेक, एक आदिक कही।।
अस्ति नास्ति पूरब में, ऐसो ज्ञान है।। सो०

ओं ह्रीं श्रीअस्तिनास्तिप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

आठ ज्ञान फल विषय, नाम वर्णन सही।
और अवान्तर भेद, ज्ञान के सब कही।।
ज्ञानप्रवाद सु पूरब, में व्याख्यान है।। सो०

ओं ह्रीं श्रीज्ञानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

भेद वचन सत असत, उभय अनुभय सही।
वचनगुप्ति अरु भाषा, द्वादश जो कही।।
सत्प्रवाद सु पूरब, इहविध ज्ञान है।। सो०

ओं ह्रीं श्रीसत्प्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

निश्चय आत्म अभेद, भेद व्यवहार है।
जीव पूज्य वा नहीं, पूज्य निर्धार है।।
इस विधि आत्मप्रवाद, पूर्व में ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जाजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

कर्मभेद तिन नाम, बन्ध चवविध सही।
उदय सत्त्व को आदि, कर्मरचना सही।।
पूरब कर्म प्रवाद, मांहि व्याख्यान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जाजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीकर्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जामें समिति गुप्ति, अनुप्रेक्षादिक कही।
पाप त्यागविधि और, महातप अघ नहीं।।
प्रत्याख्यान सु पूरब, इस विधि ज्ञान है।। सो०

ओं ह्रीं श्रीप्रत्याख्यानपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

विद्या–साधन मन्त्र, जन्त्र विधि जानिये।
स्वर लक्षण अरु स्वप्न, आदि विधि मानिये।।
पूरब यह विद्यानुवाद, शुभ थान है।। सो०

ओं ह्रीं श्रीविद्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जिन कल्याणक उत्सव, त्रेसठ पद सही।
ज्योतिषि गमन विचार, शकुन आदिक कही।।
यों पूरब कल्याण, वाद में ज्ञान है।। सो०

ओं ह्रीं श्रीकल्याणानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

आयुर्वेद सु मन्त्र, जन्त्र तन्तर घने।
इन साधन की कला, और महिमा भने।।
पूरब प्राणानुवाद, मांहि बहु ज्ञान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीप्राणानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

छन्द तथा व्याकर्ण, सङ्गीत कला सही।
चौंसठ तिय की कला, काव्य की विधि कही।।
क्रियाविशाल सु पूरब, मति को थान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीक्रियाविशालपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

तीन लोक का कथन, मोक्ष व्याख्या सही।
गणितशास्त्र के सूत्र, और सब विधि कही।।
त्रिलोकबिन्दु यह पूर्व, महासुख थान है।
सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीत्रिलोकबिन्दुपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जोगीरासा छन्द

समताभाव सकल जीवन पै, सम दम संयम भावे।
आरत रौद्र ध्यान निरवारै, धर्म शुक्ल उर लावे।।
ऐसो कथन कियो जिस माहीं, सो सामायिक जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीसामायिकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जामें चौबीसों जिन स्तवन, अतिशय की विधि गाई।
गर्भ जन्म तपज्ञान मोक्ष की, और घनी विधि आई।।
अंग चतुर्विंशति स्तवन में, जिनचर्चा पहिचानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतिस्तवप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जिन प्रतिमाजिन मान लीजिये, भक्ति घनी मन लाई।
तीर्थङ्कर इक को सिर नावत, हाथ जोड़ि कर भाई।।
वन्दनाङ्ग ये नाम जास को तामें या विधि जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीवन्दनाप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जा परमाद थकी अघ उपजे, ताके मेंटन भाई
पश्चात्ताप विधी ईर्यापथ, पाक्षिक वार्षिक गाई।।
कहा अङ्ग प्रतिक्रमण प्रभू ने, दोषहरण को थानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीप्रतिक्रमणप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

दर्शन ज्ञान चरित्र सुतप की, विनय कीजिये भाई।
गुरुजन गुणिजन को भी कीजे, विनयभाव शुभ लाई।।
इत्यादिक इस विनय अङ्ग में, विनयाचार बखानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीविनयप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

नरदेवों के वन्दन की विधि, नति आवर्त सु भाई।
परदक्षिण शुद्धी आदिक भी, श्रुति जैसी बतलाई।।
क्रम–क्रम सकल कही है यामें, शुभदायक सुखदानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीकृतिकर्मप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

मुनि यों भोजन पानी लेवें, यों चालें यों सोवें।
ऐसे वचन कहें मुख सेती, ऐसे अघमल धोवें।।
मुनि आचार भनी इस मांही, दश वैकालिक मानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीदशवैकालिकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

मुनी सहें वावीस परीषह, तिन फल सकल जताये।
देव अचेतन नर तिर्यक्कृत, जो उपसर्ग बताये।।
उत्तराध्ययन प्रकीर्णक मांहीं, सकल शुभाशुभ जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीउत्तराध्ययनप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

यह आचार मुनीश्वर जोगा, यह जोगा है नाहीं।
हो अयोग्य आचरण कभी तो, दण्डयोग मुनि माहीं।।
इत्यादिक अँग कल्पविहारैं, कहो सकल चित मानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर,-पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीकल्पव्यवहारप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

मुनि की किरिया द्रव्यक्षेत्र पुन, काल भाव यों जागा।
सो ही विधि योगीश्वर ठाने, उपजे आत्म-प्रयोगा।।
कल्पाकल्प प्रकीर्ण अंग में, ऐसी वार्ता जानों।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीकल्पाकल्पप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जिनकल्पी अरु स्थविरकल्पी, शिक्षा दीक्षा दानी।
पोषण आतम शुद्धि समाधी, किरियासकल बखानी।।
उत्तमचर्या या आराधन, और घनीविध जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीमहाकल्पप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

चतुर्निकाय देवकुल में ज्यों, पावे सुरतन भाई।
पूजा ज्ञान तपस्या समकित, निर्जर हेतु बताई।।
पुण्डरीक अँग मांहि कह्यो यह, कथन जीव सुखदानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीमहापुण्डरीकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

किस तप ध्यान थकी मुनि उपजे, अहमिन्दर पद पाई।
किस तपतैं वा कौन ध्यानतैं, इन्द्रादिक हों भाई।।
इत्यादिक विधि जामें गाई, पुण्डरीक सो जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीमहापुण्डरीकप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जो जो अघ परमाद बढ़ावे, ता नाशन विधि गाई।
जो जो पाप मिटे या विधितें, सो सो सकल बताई।।
नाम निषिधिका कहातास का, ज्ञानागार बखानों।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीनिषिद्धिकाप्रकीर्णकाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

गीतिका छन्द

हैं आठ भेद निमित्त के सो, ज्ञान अद्भुत है सही।
तिसज्ञानकी महिमा लखतही, भाव मिथ्या ना रही।।
यह भलो ज्ञान अनूप फलदा, होय सम्यक सहित जो।
सो जजों मन काय यह श्रुत, अरघ तें थुति कहत जी।।

ओं ह्रीं श्रीअष्टाङ्गनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

आकाश में रवि चन्द्र तारा, मेघ–पटलादिक सही।
सन्ध्या समय के चिन्ह और, अनेक बातन को कही।।
जो होय इनके निमित्त सेती, शुभाशुभ सो जानिये।
अन्तरीक्ष हेतुक ज्ञान पूजों, श्रेष्ठ सम्यक मानिये।।

ओं ह्रीं श्रीअन्तरीक्षनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

भूमि में रत्नादि कंचन, धातु खानि सुजान है।
इन आदि और अनेक रचना, भूमि की पहिचान है।।
सो लखे ऐसो निमित्त ज्ञानी, शुभाशुभ जाने सही।
भौमको यह निमित लखि करि, जजों सम्यक श्रुत सही।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यग्भौमनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

मनुज तिर्यक देह के शुभ, अशुभ चिन्ह सु जानिये।
नख सुकेशादिक सुलखि कर, इष्ट अनिष्ट बखानिये।।
यह अङ्ग निमित्त ज्ञान अद्भुत, महासुखदा जोय जी।
मैं जजों अङ्ग निमित्त सम्यक, ज्ञान श्रुत सो होय जी।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यग्निमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

सुन शब्द नर तिर्यञ्च के जो, शुभाशुभ जाने सही।
खर शब्द घूघू काक श्याल, सु सेहिका की ध्वनि कही।।
इन आदि वच सुन कहै सुखदा, निमित्तस्वरजोजिनकही।
मैंजजों यह श्रुतज्ञान सम्यक, अर्घ्य मन वच काय ही।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यक्स्वरनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

तिल मसा भौंरी गांठ रेखा, पांव कर में जोय है।
तिस निमित्तज्ञानसुसकलजानें, शुभाशुभ जो होय है।।
यह ज्ञान व्यंजन निमितनीको, शुभाशुभ निर्धार जी।
मैं जजो यह श्रुतज्ञान सम्यक, अर्घ्य मन वच काय जी।।

ओं ह्रीं सम्यग्व्यञ्जननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

तन वृषभ स्वस्तिककलशवज्र, सुमच्छ इन आदिक सही।
सब जोय लक्षण देखि इनको, शुभाशुभ भाषे यही।।
यह ज्ञान लक्षण निमित आछो, भले फल को दाय है।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक, अरघ ले सुख पाय है।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यग्लक्षणनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

तहँ पट सु भूषण शीश के कर, वर पगों के जान जी।
तिनकों जु काटें मूषाकादिक, भेद तिनको आन जी।।
यह भेद शुभ अर अशुभ भाखै, देखि के सुख दुख सहे।
यह छिन्न निमित्त सुज्ञान नीको, पूज्यमन वचतन चहे।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यक्छिन्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

जो लखे सुपना शुभाशुभ को, भेद सुख दुख आन जी।
इन आदि अङ्ग अनेक समझे, सकल भेद सु आज जी।।
यह ज्ञान निमित्तनिमित्तजीको, बड़े अतिशय धार जी।
सो जजों सम्यक सहित मनवच, श्रुतज्ञान सु सार जी।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यक्स्वप्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

ये ही आठों निमितज्ञान हैं, जग में अचरजकारी।
तिनको देखि भरम सब जावे, और घने गुण धारी।।
सम्यक जुत यह महाज्ञान नद, याको मुनि अवगाहैं।
ऐसो लखि के मैं भी मन वच, अर्घ्य जजों हरषाहैं।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यङ्निमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम्।

लोक असंखे क्षेत्र सुजाने, काल असंखो भाई।
द्रव्य लखे परमाणू, सूक्षम, गांव आदि अधिकाई।।
ऐसो सर्वावधो ज्ञान लखि, मुनि बिन और न पावे।
तातें मैं या ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीसर्वावधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

लोक असंख्यो जाने क्षेत्रो, वरष असंख्यो कालो।
कार्माण तन सुख में जोवे, द्रव्य अपेक्षा बालो।।
परमावधि सु ज्ञान बड़ा है, सर्वावधि लघु पावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं परमावधिसम्यज्ञानाय अर्घ्यम्।

तीनों लोक क्षेत्र की जाने, काल पल्य परिमाने।
द्रव्य अपेक्षा कार्माण तन, भाव यथावत् जाने।।
अति उत्तम यह ज्ञान विषय है, देशावधी जनावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीदेशावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

उपजे जबतें अवधिज्ञान उर, आप महा सुखदाई।
तबही तैं यह बढ़े आयु लों, नाहीं कबहुं घटाई।।
वर्धमान यह अवधिज्ञान है, समकित जुत मुनि पावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं वर्धमानसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

हीयमान जो अवधि कह्यो है, ताको यह सोभावा।
उपजे तब ही तें घटवो कर, अंश सकल निरदावा।।
याका अंश बढ़े नहिं कबहूं, जिनवानी यों गावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीहीयमानसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

उपजे जा भव में उर आवे, अवधिज्ञान सुखकारी।
आयु अन्त तक रहे साथ में, पीछे परभव लारी।।
अनुगामी है नाम इसी का, अवधिज्ञान कहलावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीअनुगामिसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

जब जिस क्षेत्र रमें उपजे उर, ज्ञान अवधि सुखदाई।
तिसही थानक में थिति जाकी, और क्षेत्र नहिं जाई।।
अवधिज्ञान यह अननुगामिनी, परभव संग न जावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीअननुगामिसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

जितने अंशों में पैदा हो, उतना ही प्रिय भाई।
आयु अन्त लों तहाँ रहे थिर, घट बढ़ हो न कदाई।।
ज्ञानअवधियहजानअवस्थित, सम्यक रूप लहावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीअवस्थितसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

अवधिज्ञान उपजे जबतें उर, कबहूं घट बढ़ जाई।
अंश बढ़े कबहूं बहु जानो, कबहूं अंश घटाई।।
यह अनवस्थितअवधिज्ञान है, सम्यक जुत फल पावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीअनवस्थितसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम्।

सरलभाव मन विकल्प जाने, कुटिलभाव नहिं जाने।
उत्तम सात आठ योजन भव, क्षेत्र काल की जाने।।
ऋजुमति मनपर्यय यों जाने, मनचिन्तित प्रिय भाई।
पर मन के विकल्प जो जाने, ताहि जजों सुखदाई।।

ओं ह्रीं श्रीऋजुमतिमनःपर्ययसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

विपुलमती मनपर्यय ज्ञानी, पर के मन को पावे।
सरल गूढ़ जो मनके विकल्प, सारे भेद लखावे।।
क्षेत्र अढ़ाई द्वीप काल भी, पल्य असंखो जानो।
ऐसे विकल्प जाने पर मन, ज्ञान पूज्य सो जानो।।

ओं ह्रीं श्रीविपुलमतिमनःपर्ययसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

तीनलोकनिःसीम अलोक की, काल तीन की जाने।
जीव अजीव तत्त्व बरतेंगे, वर्तें बरतत जाने।।
गुणपर्याय लसें सो सो तब, जो जो स्वांग बनाये।
इत्यादिक सब जाने केवल, ज्ञान जजों थुति लाये।।

ओं ह्रीं श्रीकेवलज्ञानाय अर्घ्यम्।

ऐसे मतिश्रुत अवधिज्ञान लखि, मनपर्यय सुखदाई।
केवलज्ञान अनादि अपारी, जानत खेद न पाई।।
याविध पाँचों ज्ञान सुसम्यक, पूज्य कहे जिनवानी।
तातें अर्घ्य बनाय जजों ये मोहि मिलें सुखदानी।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम्।

जयमाल

दीखे ज्ञान थकी सकल, ज्ञानभानु सो जान।
मैं पूजों मन वचन तन, मो उर प्रकटो आन।।

चाल मुनियानन्दी

ज्ञानी की आन सब लोक परमान जी,
ज्ञान ही कर्म को मूल तें ढाय जी,
ज्ञान पुण्य पाप की राह बतलाय है,
ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञान ही देय शिव स्वर्ग थानक मही,
ज्ञान तैं चक्रधर अर्धचक्री कही।
ज्ञान ही लोक में सर्व सुखदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।

ज्ञान तैं कर्म अरि जीतना जान है,
ज्ञान तैं आपने पाप जिय हान है।
ज्ञान ही लोक का गुरु हितदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।
ज्ञान तें वृत्त तप ध्यान शुभ होय जी,
ज्ञान ही सकल उर भरम को खोय जी।
ज्ञान अधमैल को धोय सुध लाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।
ज्ञान चक्षू भले गूढ़ अर्थ जानिये,
ता थकी भेद शुभ वा अशुभ जानिये।
ज्ञाननदवारि तें पापमल जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।
ज्ञान ही लोक का श्रेष्ठ रत्न जानिये,
ज्ञान ही धर्म सब जीवहित आनिये।
ज्ञानगज कर्मवन नाश करताय है।
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।
ज्ञान तें लोकदुःख जाय भव आन की,
ज्ञान तें मोक्षतिय वरत है जान जी।
ज्ञानरवि होय मिथ्यात्वतम जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।
ज्ञानसम कर्मक्षयकर नहीं जानिये,
मोहमदहरन को भलो भट मानिये।
ज्ञान सों सकल उर दुःख मिट जाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।

ज्ञान जगभेद सब जान भ्रम भान जी,
ज्ञान तें मिटै उर क्रोध छल मान जी।
ज्ञान उर होय तब धर्म मन भाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।
ज्ञान मति भेद शत तीन छत्तीस जी,
ज्ञान श्रुत अंग पूर्व भेद सर्व ईश जी,
अवधि के भेद त्रय तथा बहु थाय हैं,
ज्ञान यों जजों उर वसो मम आय है।।
मनपर्यय ज्ञान के भेद दो जानिये,
ज्ञान शुद्ध केवला एकविध मानिये।
इन विषैं गुन घना भलो फलदाय है,
ज्ञान यों जजों उर वसो मन आय है।।

दोहा

देव धर्म गुरुज्ञान तैं, पाये जिय शिवधाम।
तातें मैं शुध ज्ञान को, मन वच करों प्रणाम।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय जयमालार्घ्यम्।

।। इति सम्यग्ज्ञानपूजा समाप्ता।।

सम्यक्चारित्र पूजा प्रारम्भ

(अडिल्ल छन्द)

पंच महाव्रत सार समिति पाँचों सही,
गुप्ति तीन मिल तेरहविध जिनध्वनि कही।
यो ही शुभ चारित्र भवोदधि नाव है,
सो मैं पूजों थाप यहां कर चाव है।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर सम्वौषट आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितं भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

जोगीरासा की चाल

क्षीरसमान मनोज्ञ सुनिर्मल, त्रस जीवन बिन जानो।
उज्ज्वल क्षीरोदधिको जल ले, देखत उर हरषानो।।
कनकझारि में धरकर लायो, भक्ति धार सुखदाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय जलम्।

बावन चन्दन अगर मिलायो, नीर सुसंग घिसायो।
ताकी गंध मत्त हो अलिगण, चउ–दिस से उड़ आयो।।
ऐसो चन्दन गन्धसहित जो, कनकपात्र धरि लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय चन्दनम्।

अक्षत उज्ज्वल मुक्ताफल से, खण्ड बिना चुनवाये।
श्रेष्ठ सुगन्धित विविध जातिके, जो मन अति हरषाये।।
ऐसे अक्षत कनकथाल धरि, प्रचुरभक्ति उर लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अक्षतान्।

फूल मनोहर अति सुखदाई, नाना–रँग के प्यारे।
गन्ध महा जिन माँहि घनी है, धार सुभग आकारे।।
तिन फूलन की माला करि मैं, भक्ति घनी मन लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय पुष्पम्।

नानारस मिलवाय बनाये, चरु अति ही सुखदाई।
मोदक आदि मनोहर जानो, ज्यों नैवेद्य सुगाई।।
सो हम नीके पातन में धरि, विनयसहित पुनदाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय नैवेद्यम्।

दीपक रतन तने करि लीने, घनी ज्योति बहु धारी।
कनकथाल भरि निजकर लायो, करन आरती भारी।
मन वच तन शुभ भावन से मैं, भक्ति हिये बहु लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय दीपम्।

धूप भली दाहे तन बह्नी, तातें भगति पियारी।
नानागँध तिस मांहि मेलि के, कीनी अति सुखकारी।।
ऐसे दशधा धूप हाथ ले, अग्नी मांहि जलाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय धूपम्।

श्रीफल लोंग बदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानो।
और अनेक भले फल करले, आयो अति हरषानो।।
नीके पात्र धार के तन मन, भाव भक्ति सब लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय फलम्।

जल चन्दन अक्षतसुपहुप चरु, दीप धूप फल प्यारे।
मिला सर्व को अर्घ्य बनायो, सुन्दर पात्र पसारे।।
अपने कर ले करों आरती, नानाविध गुण गाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अङ्ग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

प्रत्येकार्घ्य (चाल जोगीरासा)

जिन आज्ञाजुत मुनि वच बोलें, सुन सब जिय सुख पावें।
हिंसावचन नहीं ऋषि भाखें, करुणा अति मन ल्यावें।।
शुद्ध अहिंसा व्रत तब होवे, वच अपने वश राखें।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं वचनाहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मन से हिंसाभाव निवारे, करुणाजुत मन धारी।
महावरत तब होय अहिंसा, मन राखें हितकारी।।
मुनि किरपानिधिसबजगबंधू, मन तें दोष न भाखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं मनोहिंसारहिताहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
षट्कायिक जीवन पीड़ाहर, मारग देख सु चालें।
सूक्षम बादर सब पर करुणा, चार हाथ लखि हालें।।
शुद्ध अहिंसा व्रत तब होवे, यह जिनवाणी भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं ईर्यासमितिसहिताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
पिछीकमंडलुपुस्तक निजकर, जोवें धरें उठावें।
दयाभाव सब जीवन ऊपर, तातें यह विधि लावें।।
महावरत तब शुद्ध अहिंसा, त्रस थावर की राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितियुताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
जीवदया के हेतु महामुनि, दोष हटाकर खावें।
समतासागर सब जियबन्ध, खान पान सुध पावें।।
तबहिं अहिंसाव्रत की शुद्धी, होय इसी विधि राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखें।।
ओं ह्रीं एष्णसमितिसहिताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
प्रथम महाव्रत जान अहिंसा, सो या विधि समझायो।
पांच भावना ताकी ऐसी, इनसे शुद्ध बतायो।।
यही अहिंसा महासुव्रत है, सब जीवन पत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं पञ्चभावनायुताहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम।

क्रोधसहित वच असत कहा है, करे प्रतीति न कोई।
तातें क्रोध बिना सच भाषे, वचन महाशुभ होई।।
ऐसो सत्य–महाव्रत धारी, जग गुरुराज सुभाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं क्रोधरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

लोभ तनें वश सांच न बोले, ना परतीति शुभाई।
लोभ बिना परमारथ भाषे, सत्य–वचन सुखदाई।।
या विध सत्य महाव्रत उत्तम, भवदधि परता राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं निर्लोभभावनायुतसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भयजुत प्राणी सांच न बोले, कहे झूठ उकताई।
भय से भीत अन्यथा भाषे, यह निश्चय लखि भाई।।
भीति बिना जो होय महाव्रत, सो जिय का सत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं भयरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

हास्य विषें सब सांच न जाने, हास्य सत्य को घाते।
हास्य तहां सतवैन न उपजे, हास्य बिना सत पावे।।
तातें हास्य बिना जु महाव्रत, शुद्ध होय जिन भाखें।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं हास्यरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वच शास्त्रानुकूल ही कहना, वच अनुवीचि प्रमानो।
शास्त्रविरुद्ध कहे नहिं कबहूं, सत्य–विरतधर मानो।।
जो अनुवीचि वच प्रिय होवे, सत्य–महाव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं अनुवीचिभाषणयुतसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पाँच भावना सत्य विरत को पाल कहे सच वचना।
सत्यमहाव्रत–सहित भावना, पाप हरे सुख झरना।।
ऐसे सत्य–महाव्रत की जो, पल पल महिमा राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं अनुवीचिभाषणयुतसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
सूने घर में नाहीं जावे, जाने चोरी त्यागी।
भूमि परी विसरी परवस्तू, लेय नहीं विन रागी।।
सो अचौर्य महाव्रतधर यति, भाव प्रतिज्ञा राखे।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं शून्यगृहप्रवेशरहिताचौर्यमहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
ऊजड़गृह में वास करे तो, चोरी दूषण पावे।
तातें छोड़े घर के माँही, मुनि नहिं ध्यान लगावे।।
व्रत अचौर्य यह जान महाव्रत, निजमन वश में राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं निर्जनगृहवासरहिताचौर्यमहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
निजथल पर का आना रोके, सो चोरी अघ पावे।
व्रत अचौर्य में यातें यतिजन, औगुण मोटो लावे।।
शुद्ध अचौर्य महाव्रत जानो, जो यह दोष न राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं परोपरोधाकरणयुताचौर्यमहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
दाता दे सो भोजन ले मुनि, आप न सेन बतावे।
देय इशारा भोजन ले तो , चोरी दूषण पावे।।
दोष बिना लीय शुद्ध भोजन, सो अचौर्यव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।
ओं ह्रीं भैक्ष्यशुद्धियुताचौर्यमहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

आपस मांहो धर्मी जनसों, विसम्बाद ना करहीं।
समता धार त्याग यह दूषण, व्रत अचौर्य मन धरहीं।।
धर्मी से गोवत्सप्रीतिसम, प्रीति किये सुख चाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं सधर्माविसंवाददोषरहिताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पंच भावना ऐसी इन जुत, वृत्त अमल सु कहावे।
इन्हें भुलाये चोरि दोष हो, नाहिं निमित्त मिलावे।।
दोष गये सुध होय अचोरी, महाविरत ध्वनि भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं पंचभावनायुताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

नारिकथा सुनके जो मनमें, तिय अनुराग बढ़ावे।
ताको शील लहे दूषण को, या बिन शील रहावे।।
रामाराग कथा से वर्जित, ब्रह्मचर्य शुभ भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्त्रीरागकथाश्रवणदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अति सुन्दर नारी तन देखे, वार वार धरि रागा।
ताके शील सुरत्न विरत को, मोटो अवगुन लागा।।
ऐसे दोष बिना सुशील व्रत, भवदधि परता राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्त्रीमनोहराङ्गनिरीक्षणदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रत सहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनिपद पहले राजसमय में, भोग किये ये भारी।
तिनकी याद किये से दूषण, शील लहे दुखकारी।।
पूर्वरतानुस्मरण रहित यों, शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्त्रीमनोहराङ्गनिरीक्षणमलदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन नाहिं गरिष्ट करें मुनि, शील सुरक्षा काजे।
दधि घृत मेवादिक के खाये, ब्रह्मचर्य व्रत लाजे।।
तातें ऐसा भोजन तजि के, शील महाव्रत राखे
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं वृष्येष्टरसभोजनदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अपने तन के मंजन चूरन, न्हवन धोवना लावे।
ऐसी किरिया जो मुनि राखे, शीलदोष को पावे।।
तातें तन श्रृङ्गाररहित जो, शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्वशरीरसंस्कारत्याग महाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पंच भावना ऐसी पालें, शील करन शुभ भावे।
ताको मुक्ति मनोहर रमणी, वेगहिं पास बुलावे।।
ऐसो शील महाव्रत नीको, जो मुनि दृढ़ करि राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं पञ्चभावनायुक्त ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

कोमल कठिन चीकनी रूखो, लघु शीतोष्ण महानो।
ऐसे आठ विषय सों विकरत, परिग्रहत्याग सुजानो।।
आतम के अनहित के कारण, तामें मन नहिं राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रत
सहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

खट्टा मीठा कडुआ जानो, अरु कषायलो भाई।
और चरपरा पाँच विषय में, रसना बहु ललचाई।।
ये रसना के भाग शुभाशुभ, भोग परिग्रह राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं रसनेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्याग–
महाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

नासा इन्द्रिय विषय शुभाशुभ, भोग परिग्रह सोई।
गंध विषय ललचांय जीव ते, परिग्रही अतिमोही।।
तातैं इनके त्यागि भये जे, परिग्रहत्यागी भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं घ्राणेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्याग–
महाव्रतसहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

नेत्र सुजाने लाल पीत वा, श्याम सब्ज अरु श्वेता।
तामें राग द्वेष उपजावे, परिग्रही जनचेता।।
इनि को त्याग सुत्याग परिग्रह, मन वच तन कर राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं नेत्रेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रत
सहितसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

तीन शब्द हैं सचित अचित अरु, मिश्र शब्द सुखदाई।
इनमें राग रु द्वेष करे मुनि, सोइ परिग्रह भाई।।
तातें इनके त्यागे परिग्रह, त्याग महाव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्याग
महाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पांच भावना पंचम व्रत की, त्याग कहो इन मांही।
इन जुत परिग्रहत्याग महाव्रत, शुद्ध होत शक नाहीं।।
पांच भावना सहित होय जो महाव्रती मुनि भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं पंचभावनायुतपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

(अडिल्ल छन्द)

चार हाथ भू शोध, पांव मुनिवर धरें।
इत उत देखन त्याग, कायनिज वश करें।।
सो शुध ईर्यासमिति, महा सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं यत्रतत्रावलोकनदोषरहितेर्यासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जब मुनि करें विहार, दयानिधि सार जी।
चाले नहीं सुताव, बड़े डग धार जी।।
ऐसो दोष निवार, समिति पग धार है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं शीघ्रगमनदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

रागवचन सुन यतो, राह चलते नहीं।
राग द्वेष कर चंचल, चित करते नहीं।।
तातें ईर्यासमिति, शुद्ध सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं पथिगमनकालरागवचनश्रवणचित्तचांचल्यदोषरहितेर्या समितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

राह चलत वच दुष्ट, श्रवण करके सही।
द्वेषभाव करि करे, चित्त को चल नहीं।।
तब शुभ ईर्यामिति, होय हितदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं मार्गगमनकालदुष्टवचनश्रवणदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

राह चलत श्री मुनिवर, कबहुँ न यों करें।
पड़ी वस्तु पग कर तें, कबहुँ न ले धरें।।
सो यह दोष निवार, समिति सुध लाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं मार्गस्थवस्तुग्रहणदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

सर्व दोष तें रहित, मुनी मग जाय हैं।
जूना के परमान, भूमि दिखवाय हैं।।
ऐसी समिति दयालु, भाव कर लाय हैं।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।
ओं ह्रीं सर्वदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो जिस देश मँझार, वस्तु को नाम है।
सो ही कहना सत्य, वचन शुभधाम है।।
जनपद सत् कथनीय, समिति सुखदाय है।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।
ओं ह्रीं जनपदसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

रौढ़िक जाको नाम, सकल जन यों कहे।
सोई कहना संवृति, सत सुधि में रहे ।।
ऐसो भी वच भाषा, समिति सु जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।
ओं ह्रीं संवृत्तिसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

चित्र मनुज हय हाथी, वृष के कीजिये।
फिर तिनको नर पशू, नाम रख लीजिये।।
यही थापना सत्य, समिति वच जानिये। या०।
ओं ह्रीं स्थापनासत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जाको जग में नाम, प्रसिद्ध सुगाइये।
सोई कहना नाम, दोष नहिं पाइये।।
नामसत्य यह सार, समिति वच जानिये। या०।
ओं ह्रीं नामसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

यह रँग काला पीला, लाल हरा सही।
ऐसा कहना रूप, सत्य भाषा सही।।
ये ही भाषा सत्य, वचन मन आनिये। या०।
ओं ह्रीं रूपसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

यहै पदारथ बड़ा, यहै छोटा सही।
कहे अपेक्षा वचन, घने परगट मही।।
यही सत्य परतीति, समिति वच जानिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये।।
ओं ह्रीं प्रतीत्यसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
नैगमनय की रीति, वचन सो भाषिये।
कर मन ठीक जू वस्तु, हिये में राखिंये।।
सत् है सो व्यवहार, समिति वच आनिये। या०।
ओं ह्रीं व्यवहारसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
शक्र विषें बल ऐसा, भू उल्टी करे।
भूमी जान अनादि, नाहिं कबहूँ टरे।।
ऐसा कहना संभावित, सत जानिये। या०।
ओं ह्रीं संभावनासत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
मेरु असंखे द्वीप, नरक सुर थल सही।
कंदमूल में जीव, अनन्ते जिन कही।।
भावसत्य संजोय, समिति वच जानिये। या०।
ओं ह्रीं भावसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
का को किसकी उपमा, देकर भाषिये।
ज्यों दानी सुरवृक्ष, जगत में आँकिये।।
सो उपमा सत जान, समिति वच ठानिये। या०।
ओं ह्रीं उपमासत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
प्राण जांय तो जांय, असत भाषें नहीं।
भाषें तो सत्य बैन, जिसे जिनध्वनि कही।।
सो ही भाषासमिति, भव्य उर आनिये।
या जुत सम्यग्वृत्त, पूज्यतम मानिये।।
ओं ह्रीं भाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पात्रमिमित्त सु भोजन, जो दाता पचे।
तो यह दोष 'उद्देशिक', दाता सिर रचे।।
सो भोजन मुनि तजें, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी।।

ओं ह्रीं औद्देशिकदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पात्र जनों को देख, रसोई जो करे।
दाता 'अध्यदि' दोष, आपने सिर धरे।।सो०

ओं ह्रीं दोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि को दे भोजन, अचित मिलायकें।
'पूतिकर्म' य़ह दोष, सुदातृ उपाय के।।सो०

ओं ह्रीं पूतिकर्मदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनि को भोजय देय, असंयमि साथ जी।
तो दाता के दोष, 'मिश्र' विख्यातजी।।सो०

ओं ह्रीं मिश्रदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

थानान्तर भोजन दे, मुनि को लायकें।
तो 'स्थापित' ले दोष, दातृ अधिकाय के।।सो०

ओं ह्रीं स्थापितदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

देव पितर कों कियो, मुनी को दे सही।
तो दाता 'बलि दोष, आप सिर ले सही।।

ओं ह्रीं बलिदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वेग बेग वा धीरे, मुनि को आहार दे।
'प्रावर्तित' अघ सोय, दातृ के सिर बँदे।।सो०

ओं ह्रीं प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनिभोजन का थान, प्रकाशित जो करे।
'प्राविष्करण' सु दोष, दातृ निजशिर धरे।।सो०

ओं ह्रीं प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

विद्या–क्रीत अहार, मुनी को दान दे।
'क्रीतदोष' तब दाता, के ही शिर बँदे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी।
या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय जी।।

ओं ह्रीं क्रीतदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

ऋण कर कृत आहार, मुनी को दे सही।
सो दाता 'ऋण' दोष, आप सिर ले कही।।सो०

ओं ह्रीं प्रामृष्यदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

निजी अन्न बदलाव, दान मुनि को करे।
'परिवर्तन' अघ सोय, दातृ सिर पर धरे।।सो०

ओं ह्रीं परिवर्तनदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अन्य ग्राम तें आय, दान मुनिको करे।
'अभिघट' कहिअघसोय, आप सिरपर धरे।।सो०

ओं ह्रीं अभिघटदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

बँधी वस्तु मुख खोल, दान दे लाय जी।
'उद्भिन' अघ सिर दातृ, लेय अति भाय जी।।सो०

ओं ह्रीं उद्भिनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

ऊपर खन की वस्तु लाय मुनि दान दे।
'मालारोहण' नाम, दातृ अघ सिर सु ले।।सो०

ओं ह्रीं मालारोहणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

त्रास और भयकार, दान मुनि को करे।
दोष 'अच्छेद्य' सुनाम, आपने सिर धरे।।सो०

ओं ह्रीं अच्छेद्यदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जाको धनी न होय, दान दे और जी।
अनीशार्थ' अघ दातृ, लहे तिस ठौर जी।।सो०

ओं ह्रीं अनीषार्थदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

षोडश दोष सुजान, मुनी आहार में।
दाता पालें जान, सोय बुध सार में।।सो०

ओं ह्रीं षोडशोद्गमनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

चाल जोगी रासा

जाय यती दाता के घर में, बालक नाहिं खिलावे।
नहिं श्रृङ्गारे नहिं पुचकारे, बालक को न रमावे।।
'धात्री' दोष तजें मुनिवर यह, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं धातृदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

दाता के घर जाय यतीश्वर, इत उत बात बतावे।
देशान्तर की कहे वार्ता, तो मुनि दोष बढ़ावे।।
'दूत' दोष यह तजे महामुनि, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं दोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

निमित्तज्ञानकी बात कहे मुनि, दाता को सुखदाई।
भोजन फेर गहे घर बाके, तो सिर दोष चढ़ाई।।
निमितदोष ऋषिराज तजे यह, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं निमित्तदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

दाता के घर जाके मुनिवर, कह प्रभुता की बातें।
इस विधि से सुन्दरतमभोजन, कबहुं यतीजन पाते।
यह 'आजीवक' दोषतजें यति, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं आजीवकदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि दाता को सुसुहावन, बात कहे घर जाई।
भोजन ताके आप करे ऋषि, तो अघ लेय उपाई।।
दोष 'वनीपक' तजिमुनि याको, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं वनीपकददोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि दाता के घर जाकर, औषधि–भेद बतावे।
नाड़ी देख सुरोग बतावे, फिर भोजन को खावे।
दोष 'चिकित्सा' त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं चिकित्सादोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि भोजन लेय क्रोधयुत, दाता के घर जाई।
तो मुनि के शिर दोष चढ़त है, सो भोजन दुखदाई।।
'क्रोध' दोष यह तजे मुनीश्वर, समिति एषणा पाले। या०

ओं ह्रीं क्रोधदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

हम तपसी दीरधकुल धारी, ज्ञान धरें अधिकाई।
यों कह भोजन ले दाता घर, मानसहित हो भाई।।
'मानदोष' यह तज के मुनिवर, समिति एषणा पाले। या०

ओं ह्रीं मानदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजनको मुनि जाय नगर में, दाता के घर जाई।
भोजन लेय कपटकर चित्त में, नाना छल दिखलाई।।
'मायादोष' तजे इसको मुनि, समिति एषणा पाले। या०

ओं ह्रीं मायादोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

लोभविवश हो दाता के घर, ले भोजन यति जाई।
स्वादलम्पटी रसना पोड़्यो, तो शिर दोष चढ़ाई।।
लोभ दोषको तज के यतिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सेा मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं लोभदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन पहले दाता की थुति, जो मुनिराज उचारे।
तो अपने तप संयम माहीं, दूषण ही निरधारे।
पूरबथुति अघ को तजके यों, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन दाता के घर ले मुनि, पीछै यह विधि लावे।
दाता की थुति करके भारी, आप दोष लिपटावे।।
पीछे थुति यह दोष त्याग मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनिभोजन ले जिस दाता घर, ता प्रसन्नता काजे।
अपनी विद्याएँ दिखला के दोष आपको साजे।।
विद्यादोष त्याग यह मुनिवर, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं विद्यादोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मन्त्र तन्त्र जंत्रादिक अतिशय, चमत्कार बतलावें।
पीछे भोजन लेय यतीश्वर, तो शिर पाप बँधावें।।
मन्त्रदोष यह तज के योगी, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं मन्त्रदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि काजल नेत्रनि कों दे, चूरन आदि बतावे।
यों कर भोजन ले दाता घर, तो सिर दोष बँधावे।।
'चूरण' अघ को छोड़ महामुनि, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं चूर्णदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वशीकरण आदिक की युक्ति, गृहियों को दिखलावे।
पीछे से मुनि भोजन लेवे, तो संयम मल पावे।।
'मूलकर्म' दूषण तज के यह, समिति एषणा पाले।
ओं ह्रीं मूलकर्मदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन भक्ष्य अभक्ष्य कियो है, यों शंका करि खाये।
तो मुनि अपने संयम में यों, शंकित दोष लगावे।।
ऐसो 'शंकित' दोष त्याग मुनि, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं शंकितदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

दाता के कर चिक्ने होवे; चिकने वासन जोवें।
तामें भोजन जो मुनि लेवें, तो सदोष वे होवें।।
मृक्षितदोष तजें यह मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं मृक्षितदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

सचित वस्तुपर रक्खा भोजन, मुनिवर कबहुँ न खावे।
अपने संजम भार लाभ या, सावधान चित लावें।।
यह निक्षिप्त दोष तजिके मुनि, समिति एषणा पाले। या०

ओं ह्रीं निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन ढाँके सचित वस्तु सों, तो यति नाहीं खावे।
ऐसो कारण आय मिले तो, भोजन ही तज जावे।।
'पिहित' दोष को छोड़यतीश्वर, समिति एषणा पाले। या०

ओं ह्रीं पिहितदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पूरब नेह थकी भोजन लें, तो मुनि दूषण पावे।
हारदोष यह त्याग यतीश्वर, समिति एषणा पाले।।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले। या०

ओं ह्रीं हारदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

सूतक रोगी वृद्ध बाल जो, जलती अग्नि बुझावे।
गर्भवती तिय होय नपुँसक, इनि कर मुनि नहिं खावे।।
दायकदोष तजे मुनिनायक, समिति एषणा पाले। या०

ओं ह्रीं दायकदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

आँचल सों बालक तज नारी, जो मुनि को पड़गाहे।
तो ताके कर को भोजन ऋषि, आय कबहुँ नहिं खाहे।।
सम्व्यवहरण दोष तजिके मुनि, समिति एषणा पाले। या०

ओं ह्रीं संव्यवहरणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वस्तु सचित्तअचित्त मिली जो, भोजन मैं मुनि खावे।
तो उसके अतिदूषण लागे, जग में निन्दा पावे।।
मिश्रदोष यह तजे मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं उन्मिश्रदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जली और अधपक्की चीजें, वा अप्रासुक लाई।
भोजन में यतिवर को देवे, तो लेवें न कदाई।।
दोष अपरिणत को मुनि त्यागें, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं अपरिणतदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पात्र खड़ी हड़ताल गेरु से, यदि लिपटा हो भाई।
भाजी खिचड़ी कड़ी आदि या, लिपटी देय दिखाई।।
'लिप्तदोष' माने सत साधू, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं लिप्तदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

वस्तु हात से द्रवित होय जो, या प्रदत्त तज खावे।
तो मुनिनायक अपने संयम, माहीं दोष लगावे।
त्यजनदोषयहतजकें मुनिवर, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं परित्यजनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

उष्ण मांहिं शीतल शीतल में, उष्ण मिलाकर खावें।
तो अपनो सत संजम नीको, ताके दोष लगावें।
दोष सँयोजन नाम त्याग गुरु, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं संयोजनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

बत्तिस ग्रास मुनी का भोजन, सो ही उत्तम होई।
यासें अधिक न मुनिवर खावें, आज्ञा भंग न सोई।
अप्रमाण इस अघ को छोड़े, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं अप्रमाणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मीठो भोजन रुचि से खावे, दाता को जु सरावे।
बहु आसक्त होय भोजन ले, सो सिर दोष मड़ावे।।
दोष अँगार तजें गुरु याको, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं अङ्गारदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो भोजन मन चाहत नाहीं, खावत अरुचि कराहे।
दाता की निन्दा फिर ठानें, तो निज संयम दाहे।।
धूमदोष याको मुनि त्यागें, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं धूमदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

दोहा – ऐसे तेइस दुगुन मल, टालत हैं मुनिराय ।
तब भोजन करते सही, ते गुरु जजों सुभाय।।

ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशद्दोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मुनि के भोजन रते नभ से, काक वीट कर जावे।
देखे, मुनि तो भोजन छाँड़े, हिये खेद ना लावे।।
काकदोश यह तजें यतीश्वर, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं काकान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अपने पग जो अशुचि वस्तु से, लिपटे होंय कदाई।
देखे मुनि तो भोजन छाँड़े, अन्तराय गिन भाई।।
दोष अशौच्य तजे मुनि याको, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं अशौच्यान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जो मुनि भोजन को मग जाते, करता वमन निहारे।
तो तादिन आहार तजे यह, अन्तराय सु विचारे।।
छर्दि दोष को तज के मुनिवर, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं छर्दिदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

रुदन करन्ते परको देखे, भोजन–बेला कोई।
अन्तराय तो होय मुनी को, भोजन करे न सोई।।
'रुदनदोष' यह तजे महामुनि, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं रुदनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

निज पर को मुनि लोहू देखें, भोजन बेला कोई।
अन्तराय तो लहें सुगुरुवर, समताधर जित सोई।।
'रुधिरदोष' यह तजे मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं रुधिरदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

अश्रुपात निज पर के देखें, भुक्तिकाल मुनिराई।
अन्तराय तो गिनें जगद्गुरु, करुणासागर भाई।।
'अश्रुपातदूषण' यह तज के, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं अश्रुपातान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजनहेतु पात्र को जङ्घा, ऊपर गेहि चढ़ावे।
तो मुनिनाथ तजें भोजन को, अन जल पियें न खावें।।
'जङ्घानाम' दोष तजकें यति, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं जंघास्पर्शान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

साधु हाथ यदि घुटने नीचे, का इस्पर्श लहावे।
अन्तराय तो माने यतिवर, भोजन–गृद्धि हटावे।।
तज 'प्रावृत्यदोष' कोनिश्चय, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं प्रावत्यान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

सिर नाभीतल नीचा करके, द्वार निकाल बुलावे।
अन्तराय तो माने यतिवर, आगमविधि को ध्यावे।।
'नाभ्यधोनिर्गमन' दोष तजि, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं नाभ्यधोनिर्गमनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

तजी वस्तु भोजन में आई, निश्चय से जब जाने।
अन्तराय माने सत्साधू, आकुलता नहिं आने।।
'प्रत्याख्यान' जु दोष तजेयह, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं प्रत्याख्यनान्तरायदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जीवघात निज परकर सेती, भोजन–बेला होई।
तो मुनि देख तजे भोजनको, दयाभाव धर सोई।।
'जन्तूवधदूषण' तजके मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं जन्तुवधान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते हाथों में से, काक ग्रास ले जावे।
तो मुनिनाथ तजें भोजनको, ता दिन फेरि न खावें।।
काकपिंड यह दोष तजे मुनि, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं काकपिंडान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते ग्रास पड़े भू, दातृ पात्र कर सेती।
तो मुनि भोजन नाहिं करे फिर, है मर्यादा येती।।
पाणिपात दूषण तजके मुनि, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं पाणिपातान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते पाणिपात्र में, जीव मरे यदि आई।
तो ऋषिराज तजें भोजनको, करुणाभाव उपाई।।
पाणिपात्र जियघात दोष तज, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं पाणिपात्रजन्तुधातान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजनबेला आमिष देखें, तो भोजन गुरु छांड़ें।
तन विरकत संयम के लोभी, भुक्ति–राग ना माँड़े।।
आभिषदर्शन दोष त्याग के, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं आमिषदर्शनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजनबेला जगद्गुरू को, होय उपद्रव आई।
अन्तराय माने जीमन में, समताभाव समाई।।
दोषोपसर्ग त्याग के मुनिवर, समिति एषणा पाले। या०
ओं ह्रीं उपसर्गान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते पगों बीच से, पञ्चेन्द्रिय निकसावे।
तो आहार न लेवें गुरुवर, संयम नाँहि गमावें।।
पादान्तरजियगमन दोषतजि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पादान्तरजीवगमनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते दाता कर से, पात्र यी गिर जावे।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, संयम भाव लियावे।।
पात्रसम्पतन दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं भोजनपात्रसम्पतनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते अपने तन से, मुनि जो मल निकसावे।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, जिन आज्ञा उर ध्यावे।।
दोष उचार त्याग वृषलोभी, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं उच्चारत्यागान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते अपने तन से, निकले मूत्र अजाने।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, जिनधुनि रहस पिछाने।।
दोष प्रसार त्याग के मुनिवर, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं प्रसारान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजनहेतु भूलसे यदि मुनि, शूद्र–गेह में जावे।
तो गुरुदेव तजें जीमन को, तिस दिन अनशन लावें।
दोष अभोजनगृह प्रवेश तज, समिति एषणा पाले।या०

ओं ह्रीं अभोजनगृहान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

मूर्छा खाय गिरे यति अथवा, पर को मूर्छित देखे।
भवसागर के तीर गये यति, भोजन भक्ष्य न लेखे।।
पतनदोष को त्याग मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पतनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन करते कर्मयोग भू, बैठ जांय मुनिराजा।
अन्तराय माने भोजन में, वास करें हित काजा।।
उपवेशन यह दोष त्याग गुरु, समिति एषणा पाले।या०
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टालें।।
ओं ह्रीं उपवेशनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
कूकर आदिक हिंसक प्राणी, दंश करत यति जोवें।
अन्तराय माने गुरुनायक, कायर चित ना होवें।।
श्वादिदंश यह दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं स्वादिदशान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
भोजनबेला सिद्धभक्ति को, कर मुनि शीश नवावे।
कर से यदि भूमि छू जावे, अन्तराय तब ध्यावे।।
भूमिस्पर्शदोष तज करके, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं भूमिस्पर्शान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
भोजन बिरियां अपना परका, यदि खकार लख लेई।
अन्तराय माने गुरु ज्ञानी, जिनवाणी जिन सेई।।
निष्ठीवन यह दोष छांड़ मुनि, समिति एषणा पालें।या०
ओं ह्रीं निष्ठीवनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
भोजनकाल निजोदर से यदि, कृमि निकली यतिजाने।
अन्तराय भोजन में माने, खेद नहीं उर आने।।
उदरकृमीनिर्गमन दोष तज, समिति एषणा पालें।या०
ओं ह्रीं उदरकृमीनिर्गमनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
दाता के बिन दीनें भोजन, मुनि चाहे मनमाहीं।
अङ्गीकार करें तन मन से, तो शिर दोष बढ़ाही।।
दोष अदत्तग्रहण तज के मुनि, समिति एषणा पालें।या०
ओं ह्रीं अदत्तान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजनबेला यति वा पर पै, वार करे यदि कोई।
तोमुनि तादिन अनशन धारे, कर्मविजय–हित सोई।।
दोष प्रहार तजें मुनिनायक, समिति एषणा पालें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, जो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं प्रहारान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
भोजन को जाते यदि पुर में, अग्नि लगी हो भाई।
अन्तराय तो गिनें यतीश्वर, भोजन नाहिं कराई।।
ग्रामदाह यह दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं ग्रामदाहान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
मार्ग पड़ी पगअड़ी वस्तु जो, ले मुनिराज उठाई।
तो उनके वर संयम माँही, दोष लगे अधिकाई।।
पादपग्रहण यह दोष दूर कर, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं पादपग्रहणान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
राह पड़ी जो वस्तु आप कर, लें मुनिराज उठाई।
अन्तराय तो गिनें जैन गुरु, लोभ धरें न कदाई।।
करग्रहण यह दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।या०
ओं ह्रीं करग्रहणान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
ऐसे वत्तिस अन्तराय जो, भोजन कालिक पाले।।
तो मुनि संयम पाले अपने, गुणलोभी अघ टाले।।
समिति एषणा ताके शुध हो, स्वर्ग मोक्ष सुखदाई।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, जो मेरे मन भाई।।
ओं ह्रीं द्वात्रिंशदन्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

चौपाई छन्द

भोजन में नख निकले सोय, अन्तराय तो गुरु को होय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारितपूज्यसुमान।।
ओं ह्रीं नखमलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

केश नीसरे भोजन माँय, अन्तराय तो यती मनांय।
समिति एषणा तब शुधजान, या जुत चारितपूज्यसुमान।।
ओं ह्रीं केशमलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
मृतप्राणी भोजन में जोय, तो मुनि भोजन छाँड़े सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।
ओं ह्रीं मृतजीवदर्शनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
भोजन समयअस्थि यदि जोय, तो यति भोजन त्यागे सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं कीकशदोषदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
जीमत राध नजर जो आय, तो योगी आहार न पांय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं पूयामलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
भोजन करत चर्म दिखलाय, तो योगी आहार न पांय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं चर्मदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
जीमत यदि रुधिर अवलोय, तो आहार तजे यति सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं रुधिरदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
भोजन बेला आमिष जोय, तो मुनि भोजन नाहीं होय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं आमिषदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
भोजनमें यदि कणा दिखाय, तो मुनि भोजन नाहीं खांय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं कणदर्शनमलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
जीमत तिल के अंश दिखाय, तो मुनिवर आहार न पांय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं तिलकणदर्शनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

भोजन में यदि बीज दिखाय, तो भोजन नाहीं यति खाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं बीजदर्शनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
साबित फल भोजन में आय, ऋषि अनशन धारे हरषाये।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं फलदर्शनदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
कन्दवस्तु भोजन में आय, अन्तराय माने मुनिराय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।
ओं ह्रीं कन्ददर्शनदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
वस्तु देख के यती उठाव, समिति एषणा शुद्धिकराय।
या जुत सम्यक्चारित सोय, मैं पूजों वसु द्रव्य सँजोय।।
ओं ह्रीं आदानसमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
मुनि जो वस्तु भूमि में धरे, जियरक्षा तब चित में धरे।
निक्षेपणसमिती चितलाय, या जुतचारित जजोंसुखदाय।।
ओं ह्रीं निक्षेपणसमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
तनमल जहँ भू क्षेपे यती, भूशुद्धी देखें शुभमती।
यह व्युत्सर्ग समिति मनलाय, या जुतचारितपूज्यसुभाय।।
ओं ह्रीं व्युत्सर्गसमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
मनविकल्प जिनध्वनिसम करें, और ठौर नांही मन धरें।
मनोगुप्ति धारे मुनिराज, याजुतवृत्तजजों सतभाय।।
ओं ह्रीं मनोगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
मुनिवच जिन आज्ञा समहोय, तातें पाप लगे ना कोय।
वचनगुप्ति पालें मुनिराज, या जुत वृत्त जजों शिर नाय।।
ओं ह्रीं वचनगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।
तनको मुनि वश राखें सोय, बिना प्रयोजन चलना होय।
कायगुप्ति सो जानो सही, याजुत वृत्तजजों शुभ मही।।
ओं ह्रीं कायगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

पांचमहाव्रत समिति जु पांच, तीन गुप्ति मिलचारित साँच।
यों तेरहविध चारित जान, पूजों मनवच अर्घ्य सुआन।।

ओं ह्रीं श्री त्रयोदशप्रकार सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम्।

जयमाला

दोहा

सम्यक्चारित मोक्ष को, कारण और न कोय।
पापपन्थ तज सर्व ही, चारित की विधि जोय।।

बेसरी छन्द

सम्यक्चारित भवदधिनावा, सिद्धक्षेत्रधरि देनस्वभावा।
परिग्रहधारि लहे ना याको, मैं पूजों मन वचतन ताको।।
मोहराय जीतन को जावे, जो चारित्र कवच तन लावे।
ध्यावत हैं सुर खग नरयाको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
सम्यक्चारित मोक्ष निशाना, या बिन होय न कर्मन हाना।
या बिन मोक्ष न होवे काको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चरितग्रहण वीर का कामा, कायर पै न सधे गुणधामा।
निर्मोही धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
शंकासहित जोव बलहीना, ते कँह धार सकें यह दीना।
महापुरुष धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
कामीजन तो देखत लज्जैं, शीलवान धर्मी जन सज्जें।
चारित उपमा दीजे काको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित को चक्रीधर चाहें, सुर खग इन्द्र भावना भाहें।
निकटभव्यधारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित चरमशरीरी धारें, चारित से कर्मारि विदारें।
कामदेव से धारत याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।

चारित नाम सुनत हरषावे, सो जिय चारित महिमा पावे।
चारित धारत है धनि वाको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
यह चारित पीड़ाहर भाई, धारक शक्रविभव को पाई।
शिववांछक सेवत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित सर्वहितू लखि भाई, चारित सर्वोत्तम सुखदाई।
मुनिजन पूजत ध्यावत याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित को हम भी ललचावें, क्या जाने किस भव में पावें।
इस भव करत भावना याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित का शरणा जिन पाया, ताने निजभव सफल बनाया।
शक्तिप्रद हितकर गिन याको, मैं पूजत मन वच तन याको।।

सुर नर पूजत ताहि को, जो चारित्र लहाय।
सो चारित महिमा अतुल, नमों सदा शिर नाय।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय जयमालार्घ्यम्।

समुच्चय जयमाला

दोहा

सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित लेहु मिलाय।
मोक्षमार्ग ये तीन ही, मैं पूजों शिर नाय।।

चौपाई

रत्नत्रय शिवमारग जान, या बिन मोक्षमार्ग ना आन।
ये ही शिवदायक मन लाय, मोकों भवहर होय सहाय।।

चाल मुनियानन्दी की

भुवन त्रय मुकुट शुभ, रतन त्रय जानिये।
तीन जग जीव थुति, करें हित मानिये।।
तास फल पापमल, धोय निज शुध करें।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।। 4।।

तीन जग भ्रम्यो बिन, रतनत्रय पाय जी।
मिली नहिं सेवकी, कहुँ सुखदाय जी।।
अब शुभ दिन भयो, भक्ति इनकी करें।
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरें।। 2।।
चक्रि नरराज से, रतनत्रय काज जी।
तजें सब जगत सुख, दाय बहुराज जी।।
छोड़ि सब परिग्रह, वास वन में करें।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।। 3।।
बिना रतनत्रयी, तीर्थंकर देव जी।
सिद्ध पद्र ना लहें, करें बहुसेव जी।।
तास तें रतन त्रय, एक शिवफल करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।। 4।।
भये रतन त्रय पाय, देव गणधर सही।
रतनत्रय लाभ तैं, पदविमुनिकीलही।।
सकल सुख देय कर, रतनत्रय अघ हरे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।। 5।।
रतनत्रय तीर्थसम, जगत में सार जी।
रतनत्रय देय भव, तार अधिकार जी।
रतनत्रय गुरू हम, पाय तप को करें।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।। 6।।
रतनत्रय धर्म सब, हरे सब कर्म जी।
रतनत्रय ज्योति तैं, मिटे बहु भर्म जी।।
रतनत्रय रूप लखि, मुकतिनार वर करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।। 7।।

रतनत्रय छत्रता, शिर फिरे आय जी।
जीव सो जगत तजि, मुक्तिराज पाय जी।।
रतनत्रय लक्ष्मि की, चाह हरि सुर करे।
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरें।। 8।।
रतन त्रय रविसदृश, रागतम नाशि है।
रतन त्रय नेत्र तैं, तत्त्व सुप्रकाश है।।
रतन त्रय मुकुट शिव, नार बल्लभ करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।। 9।।
रतन त्रय राह को, नग्न जावे सही।
किन्तु जो परिग्रही, तास निभती नहीं।।
रतनत्रय देहि भजि, आपसम जो करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।10।।
रतन त्रय एक जग, मांहि है सार जी।
कीजिये कहा कहों, और निरधार जी।।
रतन त्रय नाव भव, अब्धि पारे करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।11।।
विरत यह रतन त्रय, करे धन्य सोय जी।
या थकी फेर ना, जन्म मृत्यु होय जी।।
विरत यह रतनत्रय, मोक्ष दे हित करे।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।12।।
करो भवि रतनत्रय, विरत मन लाय जी।
समय यह कठिन कर, मिलोशुभआय जी।।
मनुषतन उच्चकुल, याहि सो ही करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।13।।
विरत की विधी या, आर्ष बतलाय जी।
वासत्रय आदि अन्त, एकभुक्ति पाय जी।।
रीति उत्कृष्ट सो, भव्य मन में धरे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।14।।

होय ना शक्ति उत, कृष्ट की तो सुनो।
आदि जुग मान इक, पारणा दिन गुनो।।
नांहि मध्य शक्ति अंत, आदि अनशन करे।
मैं जजों भाव तैं, कर्म वांछित सरे।।15।।
होय अल्पशक्ति तो, वह करे येम जी।
मध्य इक वास अन्त, पारना जीम जी।।
वास ना शक्ति तो, अल्प भोजन करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।16।।
विरत ऐसे करे, वर्ष तेरह सही।
तथा वर्ष नौ त्रय, विरतकर ध्वनि कही।।
अन्त उद्यापना, या दुगुन व्रत करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।17।।
शक्तिसम द्रव्य ले, फेरि जिन पूजिये।
दीजिये दान पर, भावना कीजिये।
और घनी विधि जिन, वानि लखि के धरे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।18।।
विरत ऐसे किये, कर्म अरि को हरे।
भव्य व्रत धार यों, भावना मन धरे।।
रत्नत्रय विरत की, सेव शिवसुख करे।।
मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।19।।

दोहा–रत्नत्रय की सेव कर, रत्नत्रय गुण भाव।
रत्नत्रय की भावना, कर पल पल शिर नाव।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्राय महाअर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इति रत्नत्रयविधानं समाप्तम्।

महामृत्युञ्जय पूजा विधान

(श्री पण्डित प्रवर आशाधर जी कृत)

अथ महामण्डलाराधना

स्नानादिसिद्धस्तवनावसानं पूजा मुखं तद्विधिना विधाय।
निःश्रेयसस्याभ्युदयस्य चांगं, श्रीयन्त्र पूजोत्सवमारभेऽहं ।। 1 ।।

प्रस्तावना पुष्पाञ्जलिः। (पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

जिनानामपि सिद्धानां महर्षीणां समर्चनात्।
पाठात्स्वस्त्ययनस्यापि, मनः पूर्वं प्रसादये।।

मनः प्रसत्ति सूचनार्थं अर्चनापीठाग्रतः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्हंत पूजा

आहूता भवनामरैरनुगता यं सर्व देवास्तथा,
तस्थौ यस्त्रिजगत्समांतरमहापीठाग्रसिंहासने।
यं हृद्यं हृदि संन्निधाप्य सततं ध्यायन्ति योगीश्वराः,
तं देवं जिनमर्चितं कृतधियामावाहनाद्यैर्भजे।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं! अत्र एहि-एहि संवौषट्।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्।
(तीर्थोदकैर्जिनपादौ प्रक्षाल्य तदग्रे पृथगिमान्मन्त्रानुच्चारयन् पुष्पाञ्जलिं प्रयुञ्जीत)

अथाष्टकं

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये चरूं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये मंगलद्रव्यार्चनं करोमि स्वाहा।
। शान्तये शान्तिधाराः। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अथः स्तुतिः

तुभ्यं नमो दशगुणोर्जित दिव्यगात्र!
कोटि–प्रभाकर–निशाकर–जैत्रतेजः।
तुभ्यं नमोति चिरदुर्जय घातिजात–
घातोपजात–दशसार–गुणाभिराम।। 1 ।।
तुभ्यं नमः सुरनिकाय कृतैर्विहारे,
दिव्यैश्चतुर्दश विधातिशयेरुपेत।
तुभ्यं नमस्त्रिभुवनाधिपतित्वचिह्न–
श्री प्रातिहार्याष्टक (र्यप्रवराष्टक) लक्षितार्हन्।। 2 ।।
तुभ्यं नमः परमकेवलबोधवार्धे,
तुभ्यं नमः समसमस्त–पदावलोक।
तुभ्यं नमो निरुपमान निरन्तवीर्य,
तुभ्यं नमो निजनिरंजन नित्यसौख्य ।। 3 ।।
तुभ्यं नमः सकल–मंगलवस्तु–मुख्य,
तुभ्यं नमः शिवसुखप्रद पापहारिन्।
तुभ्यं नमस्त्रिजगदुत्तम लोकपूज्य,
तुभ्यं नमः शरणभूत्रय रक्ष–रक्ष ।। 4 ।।
तुभ्यं नमोस्तु नवकेवल पूर्वलब्धे,
तुभ्यं नमोस्तु परमैश्वर्योपलब्धे।
तुभ्यं नमोस्तु मुनिकुञ्जर यूथनाथ,
तुभ्यं नमोस्तु भुवनत्रितयैकनाथ ।। 5 ।।
। इति जिनार्चाभिमुखं स्तुतिं पठेत्।

अथातः सिद्धार्चन विधानं

आहूता इव सिद्धिमुक्तिवनितां मुक्तान्यसंगा ययुः,
तिष्ठन्त्यष्टमभूमिसौधशिखरे सानन्त सौख्यास्पदाः।
साक्षात्कुर्वत एव सर्वमनिशं सालोकलोकं समं,
तानद्धेद्ध विशुद्धसिद्धनिकरा–नावाहनाद्यैर्भजे ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र एहि–एहि संवौषट्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट।

अथाष्टकं

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये चरूं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं जलादि यज्ञांग दूर्वादधि सिद्धार्थादि मंगलद्रव्य विनिर्मित महार्घ्यं निर्व०।

एव अर्हत्प्रतिमाग्रे सिद्धानभ्यर्च्य भक्त्या स्तुवीत।

अथ स्तुतिः

नमस्ते पुरुषार्थाय, परां काष्ठां अधिष्ठित।
सिद्ध भट्टारकस्तोम, निष्ठितार्थ निरञ्जन ।। 1 ।।

स्वप्रदाय नमस्तुभ्यं, अचलाय नमोस्तु ते।
अक्षयाय नमस्तुभ्यं, अव्याबाधाय ते नमः ।। 2 ।।

नमस्तेऽनन्तविज्ञान–दृष्टि–वीर्यसुखास्पद।
नमो नीरजसे तुभ्यं, निर्मलाय तु ते नमः ।। 3 ।।
अच्छेद्याय नमस्तुभ्यं, अभेद्याय नमो नमः।
अक्षयाय नमस्तुभ्यं; अप्रमेयाय ते नमः ।। 4 ।।
नमोस्त्वगर्भवासाय, नमो गौरवलाघव।
अक्षोभ्याय नमस्तुभ्यं, अविलीनाय ते नमः ।। 5 ।।
नमः परमकाष्ठांत्म – योगरूपत्वमीयुषे।
लोकाग्रवासिनेतुभ्यं, नमोनन्त गुणाश्रय ।। 6 ।।
निःशेषपुरुषार्थानां, निष्ठां सिद्धिमधिष्ठित।
सिद्ध भट्टराकब्रात, भूयो भूयो नमोस्तु ते ।।7 ।।
विविधदुरितशुद्धान्, सर्वतत्त्वार्थ बुद्धान,
परमसुखसमृद्धान युक्तिशास्त्राविरुद्धान्।
बहुविध–गुणवृद्धान्, सर्वलोक–प्रसिद्धान्,
प्रमितसुनयसिद्धान्, संस्तुवे सर्वसिद्धान्।।

।इति सिद्ध भक्ति–विधानम्।

अथ महर्षि पर्युपासन विधिः

ये येऽनगारा ऋषयो यतीन्द्रा, मुनीश्वरा भव्य भवद्व्यतीताः।
तेषां समेषां पदपंकजानि, सम्पूजयामो गुणशीलसिद्धयै।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र पवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षगुण–गणधरचरणाः! आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र पवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षगुंण–गणधरचरणाः! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र पवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षगुण–गणधरचरणाः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टकं

ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः चरूं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं गणधर चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ स्तुति

ये सर्वतीर्थप्रभवा गणेन्द्राः सप्तर्द्धयो ज्ञानचतुष्टयाढ्याः।
तेषां पदाब्जानि जगद्धितानां, वचोमनोमूर्धसु धारयामः ।। 1 ।।
तपोबलाक्षीण रसौषधर्द्धीन, विज्ञानऋद्धीनपि विक्रियर्द्धीन।
सप्तर्द्धि–युक्तानखिलानृषीन्द्रान, स्मरामि वन्दे प्रणमामि नित्यम्।।
सर्वेषु तीर्थेषु तदन्तरेषु, सप्तर्षयो ये महिता बभूवुः।
भवाम्बुधेः पारमिताः कृतार्थाः, भवन्तु नस्ते मुनयः प्रसन्नाः ।। 3 ।।
ये केवलीन्द्राः श्रुतकेवलीन्द्रा, ये शिक्षकास्तुर्यतृतीयः बोधाः।
सविक्रिया ये वरवादिनश्च, सप्तर्षिसंज्ञानिह तान् प्रवन्दे ।। 4 ।।
प्रमत्त मुख्येषु पदेषु सार्ध–द्वीपद्वये ये युगपद् भवन्ति।
उत्कर्षतस्तान्नवकोटि संख्यान्, वन्दे त्रिसंख्यारहितान् मुनीन्द्रान्।।

। इति महर्षिपर्युपासन विधिः।

अथातः स्वस्त्ययन विधानं

श्री पञ्चकल्याणमहार्हणार्हा, वागात्मभाग्यातिशयैरूपेताः।
तीर्थंकराः केवलिनश्च शेषाः, स्वस्तिक्रियां नोभृशमावहन्तु ।। 1 ।।
ये शुद्धमूलोत्तरसद्गुणानां, आधारभावादनगारसंज्ञाः।
निर्ग्रंथवर्या निरवद्यचर्याः स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 2 ।।

ये चाणिमाद्यष्ट सविक्रियाढ्याः, तथाक्षयावासमहानसाश्च।
राजर्षयस्ते सुरराजपूज्याः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 3 ।।
ये कोष्ठबुद्ध्यादि चतुर्विधर्द्धि–रवापुरामर्ष महौषधर्द्धीः।
ब्रह्मर्षयो ब्रह्मणि तत्परास्ते, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 4 ।।
जलादिनानाविधचारणा ये, ये चारणाग्र्यंबर चारणाश्च।
देवर्षयस्ते नतदेववृन्दाः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 5 ।।
सालोकलोकज्वलनैकतानं, प्राप्ताः परमज्योतिरनन्तबोधम्।
सर्वर्षिवंद्याः परमर्षयस्ते, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 6 ।।
श्रेणिद्वयारोहण सावधानाः, कर्मोपशान्तिक्षपणप्रवीणाः।
ये ते समस्ता मुनयो महान्तः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 7 ।।
समग्रमध्यक्षमिताश्च देश, प्रत्यक्षमत्यक्षसुखानुरक्ताः।
मुनीश्वरास्ते जगदेकमान्याः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 8 ।।
उग्रं च दीप्तं च तपोभितप्तं, महच्च घोरं च तरां चरन्तः ।
तपोधना निर्वृति साधनोक्ताः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 9 ।।
मनोवचः कायबलप्रकृष्टाः, स्पष्टीकृताष्टांगमहानिमित्ताः।
क्षीरामृतास्त्राविमुखा मुनीन्द्राः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 10 ।।
प्रत्येकबुद्ध प्रमुखा मुनीन्द्राः, शेषाश्च ये ये विविधर्द्धियुक्ताः।
सर्वेऽपि ते सर्व जनीनवृत्ताः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः ।। 11 ।।
शापानुगृह शक्तितताद्यतिशयैरुच्चावचैरंचिताः,
ये सर्वे परमर्षयो भगवतां तेषां गुणस्तोत्रतः।
एतत्स्वत्स्ययनादपैति सकलः संक्लेशभावः शुभः,
भावः स्यात् सुकृतं च तच्छुभविधेरादाविदं श्रेयसे ।।12 ।।

।इति स्वस्त्ययनं मनः प्रसादन विधानम्।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जयं नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
णमो अरहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं।
णमो उव्वज्झायाणं। णमो लोएसव्वसाहूणं।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चत्तारिमंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धस मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि–अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मसरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्चनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचि।।

अपराजित मन्त्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः।।

एसो पञ्चणमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवइ मंगलं।।

अर्हमित्यक्षरब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी–भूत–पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुलें जिनंगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवज्जिन गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान–निर्वाण कल्याणकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहं यजे।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथमवलय पूजा

(जहां प्रथम वलय में 10 कोष्ठ बनाये गये हैं, वहीं एक–एक कोष्ठ में शतनाम मन्त्रों से अर्घ्य समर्पित करते हुए क्रमशः भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्रनाम के मन्त्रों से अर्घ्य चढ़ावें।

एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधीः।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्त्रं पापशान्तये।।

इति प्रथमवलये मण्डलोपरि पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्।

अथ प्रथम वलये प्रथमकोष्ठे श्रीमदादि शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं शंभवाय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं शंभवे नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं भोक्त्रे नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने
13. ॐ ह्रीं अर्हंविश्वलोकेशाय नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुषे नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनये नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं अनश्वराय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वने नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं विभवे नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं विश्लोचनाय नमः

25. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिने नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं विधये नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं वेधसे नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जेष्ठाय नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमूर्तये नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृशे नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिषे नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशाय नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतजिते नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मने नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यबंधवे नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं अबंधनाय नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिपुरुषाय नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयाय नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं परतराय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं ज्योतिषे नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं अजाय नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मने नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजाय नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं मोहारिविजयिने नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं जेत्रे नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रिणे नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांतारये नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं योगिने नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्त्वाय नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविदे नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वराय नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्मने नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थाय नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धशासनाय नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धान्तविदे नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयाय नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाध्याय नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धिताय नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णवे नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं अच्युताय नमः

85. ॐ ह्रीं अर्हं अनंताय नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं अजर्याय नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वराय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययाय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं विभावसे नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं असंभूष्णवे नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णवे नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं पुरातनाय नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं परमज्योतिषे नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः

श्रीमत्प्रभृति सन्नाम–शतकेन विशोभितम्।
धर्मतीर्थस्यकर्तार–माद्यमर्चाभि चाष्टधा ।। 1 ।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामसहिता वृषभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथम वलये द्वितीय कोष्ठे दिव्यभाषापति शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यभाषापतये नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं पूतशासनाय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं परज्योतिषे नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं दमेश्वराय नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं भगवते नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं शुचये नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं अमलाय नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदीप्तये नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्मने नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धाय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये नमः
25 ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताय नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं शक्ताय नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वराय नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं निरंजनाय नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्ज्योतिषे नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्ये नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं निरामयाय नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्थितये नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्याय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नमः

37. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्यै नमः
40 ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्यै नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृते नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकाय नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्य–नाभये नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं भूतमृते नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावनाय नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवाय नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं भवाय नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भाय नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवाय नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मने नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्प्रभवे नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृशे नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं सार्वाय नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शनाय नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मने नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशाय नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविदे नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजिताय नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुताय नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुते नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं सुवाचे नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं सूरये नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुताय नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुताय नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतःपादाय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षाय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्रशीर्षाय नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञाय नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्राक्षाय नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्रपादे नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं भूत–भव्य–भवद् भर्त्रे नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्या महेश्वराय नमः

दिव्यभाषापतिं नाम, प्रारभ्य शतकप्रभैः।
नामभिर्वन्दितं देवं, नाभिजं पूजयेऽष्टधा।। 2 ।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतिप्रभृति शतनामांकित वृषभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथवलये तृतीयकोष्ठे स्थविष्ठादि शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं ज्येठष्ठाय नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठाय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठाधिये नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं बंहिष्ठाय नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं मणिष्ठाय नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठगिरे नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुटे नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजे नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेट नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुजे नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिषे नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं विजितांतकाय नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं वीराय नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं विजराय नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं जरते नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं विरताय नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं बिनेयजनताबंधवे नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेष कल्मषाय नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं विदुषे नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिभाजे नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं पृथिवीमूर्तये नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिभाजे नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं सलिलात्मकाय नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं वायुमूर्तये नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं असंगात्मने नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं वह्निमूर्तये नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मधके नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने नमः

51. ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं सुत्रामपूजिताय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञांगाय नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं व्योममूर्तये नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं सोममूर्तये नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाय नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रविदे नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रकृते नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रिणे नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रमूर्तये नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगाय नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं स्वतंत्राय नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं तंत्रकृते नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं स्वान्ताय नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं कृतांताताय नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं कृतांतकृते नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं कृतिने नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृतये नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं अमृत्यवे नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतात्मने नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं परब्रह्मणे नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मात्मने नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसंभवाय नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपतये नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेटे नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्म पदेश्वराय नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नात्मने नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानधर्म–दमप्रभवे नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमात्मने नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांतात्मने नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः

स्थविष्ठादीनि नामानि शतं यस्य लसन्त्यहो।
वृषभं नाभिसूनुं तं सततं चाष्टधा यजे ।। 3 ।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठप्रभृतिशतनामाङ्कित वृषभाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथमवलये चतुर्थकोष्ठे महाशोकध्वजादि शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजाय नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं काय नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टे नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मविष्टराय नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसंभूतये नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभये नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनये नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हाय नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियाय नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रण्यै नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधये नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकाय नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरिणे नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नः
35. ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासनाय नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मरामाय नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्य निरोधकाय नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं विपात्मने नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं शांताय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय नमः

59. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनसे नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूतागसे नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं निरास्त्रवाय नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं विशालाय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतिषे नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं अतुलाय नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्यवैभवाय नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृत्ताय नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मने नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं सुभृते नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्त्वविदे नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं एकविद्याय नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्याय नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढ़ाय नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं पतये नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं धीशाय नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधये नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिणे नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं विनेत्रे नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं विहतांतकाय नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं पित्रे नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं पितामहाय नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं पात्रे नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं पावनाय नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं गतये नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं त्रात्रे नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वराय नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं वर्याय नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं वरदाय नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं पुंसे नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं कवये नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषाय नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयसे नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभाय नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं पुरवे नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठा-प्रसवाय नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं हेतवे नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैक-पितामहाय नमः

महाशोक ध्वजादीनां शतकं यस्य शोभते ।
नाम्नां तं प्रथमं देव-मष्टधा पूजयाम्यहम् ।। 4 ।।

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादि शतनाम धारक वृषभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथमवलये पञ्चमकोष्ठे श्रीवृक्षलक्षणादि शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्षणाय नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्याय नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं पुंडरीकाक्षाय नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षाय नमः

9. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पाय नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधनाय नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्याय नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधये नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानाय नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं महर्द्धिकाय नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाय नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं विदांवराय नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं वदतांवराय नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं अनादि–निधनाय नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाचे नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासनाय नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृते नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं युगाधाराय नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं युगादये नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजाय नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियाय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्राय नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्राय नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं अनिंद्रियाय नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्याय नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्र–महिताय नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं भवतारकाय नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं अगाह्याय नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं पराध्यार्य नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतर्द्धये नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धये नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यर्द्धये नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्राय नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्राय नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्राय नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रयाय नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमाय नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजाय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं महातपसे नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं महातेजसे नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्काय नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं महायशसे नमः

69. ॐ ह्रीं अर्हं महाधाम्ने नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं महासत्वाय नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतये नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्याय नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं महासंपदे नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं महाबलाय नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्तये नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिषे नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतये नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं महाद्युतये नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं महामतये नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं महानीतये नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं महाशांतये नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं महादयाय नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्राज्ञाय नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं महाभागाया नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं महानंदाय नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं महाकवये नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं महामहसे नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तये नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं महाकांतये नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं महावपुषे नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं महादानाय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञानाय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगाय नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाय नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं महामहपतये नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तमहापंच–कल्याणकाय नम
98. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभवे नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रातिहार्याधीशाय नम.
100. ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय नमः

श्रीवृक्षलक्षणादीनि शतं नामानि नित्यशः।
यो विभर्ति जिनं चाद्य–मर्ययामि तमष्टधा।। 5 ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणादि शतनामांकित वृषभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथमवलये षष्टमकोष्ठे महामुन्यादि शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं महामुनये नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानिने नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं महादभाय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं महाकांतिधराय नम
12. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्रीभयाय नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं महोभयाय नमः

17. ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुण्यकाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रे नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं महामन्त्राय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं महायतये नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं महानादाय नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषाय नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं महसांपतये नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधराय नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं धुर्याय नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं महौदार्याय नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं महेष्टवाचे नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं महसांधाम्ने नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं महर्षये नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं महितोदयाय नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशांकुशाय नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं शूराय नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतपतये नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं गुरवे नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमाय नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं अनंताय नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपवे नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं वशिने नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धि संतारिणे नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रिसूदनाय नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकराय नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं शांताय नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वराय नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं शमिने नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतये नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यातमहाधर्मणे नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं महाकर्मारिघ्ने नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञाय नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहाय नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषहराय नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वराय नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्याय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवसे नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं दमतीर्थेशाय नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानसर्वगाय नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबंधाय नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः

77. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवाय नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणताय नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणाय नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वराय नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं आनंदाय नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दनाय नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं वंद्याय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्याय नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं अभिनंदनाय नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं अरिञ्जयाय नमः

महामुन्यादिनामानि शतं यस्य लसन्त्यहो।
तमहं प्रथमं देवं पूजयामि जलादिभिः ॥ 6 ॥

ॐ ह्रीं महामुन्यादि शतनामधारक वृषभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथमवलये सप्तमकोष्ठे असंस्कृतसुसंस्कारादि शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृताय नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं सुसंस्काराय नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं प्राकृताय नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं वैकृतान्तकृते नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृते नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं कांतगवे नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं कांताय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं चिंतामणये नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं जितकामारये नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं अमितशासनाय नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्रोधाय नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं जितामित्राय नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं जितांतकाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं परमानंदाय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्राय नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभि-स्वनाय नम
22. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रवंद्याय नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनंदनाय नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय नमः

27. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं जातसुव्रताय नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं मनवे नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं अनत्ययाय नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वसे नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं सुगिरे नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधसे नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभुजे नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं कामनाय नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिणे नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकराय नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय्याय नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपतये नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिणे नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानानिग्राह्याय नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानगम्याय नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्तराय नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतिने नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं धातवे नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिवासाय नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्वक्त्राय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं चतुरास्याय नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखाय नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यविज्ञानाय नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं सत्य–शासनाय नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशिषे नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसंधानाय नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं सत्य परायणाय नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयसे नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनाय नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं अणोरणीयसे नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं अनणवे नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं गरीयसामाद्यगुरवे नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं सदायोगाय नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं सदातृप्ताय नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं सदाशिवाय नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं सदागतये नमः

87. ॐ ह्रीं अर्हं सदासौख्याय नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं सदाविद्याय नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं सदोदयाय नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं सुहृदे नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ताय नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिमते नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्त्रे नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं दमेश्वराय नमः

असंस्कृतसुसंस्कार–मारभ्य शतकप्रमैः।
नामभिः राजमानं तं नाभिजं चाष्टधा यजे ।। 7 ।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामधारक वृषभाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथमवलये अष्टमकोष्ठे बहद्बृहस्पत्यादि शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं बृहते नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं बृहस्पते नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं धिषणाय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं नैकरूपाय नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुंगाय नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृतये नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं कृतलक्षणाय नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गर्भाय नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं दृढीयसे नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं ईशित्रे नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञाय नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरशासनाय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमये नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः
ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः

41. ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलामोघशासनाय नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं सुरूपाय नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थ्यभाजे नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं वशेन्द्रियाय नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं विमुक्तात्मने नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं निःसपत्नाय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांताय नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतधामर्षये नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं उपमाभूताय नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं दैवाय नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्ताय नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं एकस्मै नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं नैकस्मे नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं नानैकतत्त्वदृशे नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्मगम्याय नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यात्मने नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं योगिवंदिताय नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभाविने नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं शवदाय नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं दांताय नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं दमिने नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं क्षांतिपरायणाय नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं परमानंदाय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद्वल्लभाय नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्चाय नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्रशिक्षामणये नमः

बृहद् वृहस्पतिमुख्यै–र्नामभिः शतकप्रभैः।
शोभमानं जिनं वन्दे राजमानं जलादिभिः ॥ 8 ॥

ॐ ह्रीं बृहद् बृहस्पत्यादि शतनामधारक वृषभाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथमवलये नवमकोष्ठे त्रिकालदर्शितादि शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्शिने नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़व्रताय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिगाय नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथये नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांगविस्तराय नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं आधिदेवतायै नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थिति देशकाय नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणलक्षणाय नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण प्रकृतये नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तकल्याणात्मने नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बंधवे नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विभवे नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं चराचरगुरवे नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़ात्मने नमः
41 ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़गोचराय नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्जवलनसप्रभाय नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः
47 ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं संध्याभ्रबभ्रवे नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय नमः

58. ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरच्छवये नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं कनत्कांचनसन्निभाय नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यवर्णाय नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं शातकुंभनिभप्रभाय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाभाय नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तजांबूनदद्युतये नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं सुधौतकलधौतश्रिये नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्तांय नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं हाटकद्युतये नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्ते नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं शासित्रे नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिनिष्ठाय नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं शिवतातये नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिदभ्रे नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं शांतिकृते नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तये नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं कांतिमते नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयोनिधये नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठाय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठिताय नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिराय नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथीयसे नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे नमः

त्रिकालदर्शि प्रमुखै–र्नामभिः शतकप्रभैः।
शोभमानं जिनं ह्याद्य–मर्चयामि जलादिभिः ॥ 9 ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शितादि शतनामधारक वृषभाय पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

अथ प्रथमवलये दशमकोष्ठे दिग्वासादि अष्टोत्तर शतनाम प्रत्येकार्घ्यं

1. ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वाससे नमः
2. ॐ ह्रीं अर्हं वातरशनाय नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रंथेशाय नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं निरंबराय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं निःकिंचनाय नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचक्षुषे नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय नमः

9. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तौजसे नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाब्धये नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं शीलसागराय नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं अमितज्योतिषे नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिमूर्तये नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूड़ामणये नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ताय नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं शंवते नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं विघ्नविनायकाय नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकप्रकाशकाय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालवे नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं अतन्द्रालवे नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं जागरूकाय नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमामयाय नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीपतये नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जोतिषे नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजाहिताय नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं बंधमोक्षज्ञाय नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं जितमन्मथाय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तरसशैलषाय नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यपेटकनायकाय नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकर्त्रे नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं अखिलज्योतिषे नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्यान नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकारणाय नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तवाचे नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं वचसामीशाय नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं मारजिते नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभाववित्रे नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं सुतनवे नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं तनुनिर्मुक्ताय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं सुगताय नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं हतदुर्नयाय नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं वीतभिये नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्नदोषाय नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं निश्चलाय नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं लोकवत्सलाय नमः
63. ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तराय नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं लोकपतये नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं लोकचक्षुषे नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं अपारधिये नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं धीरधिये नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धसन्मार्गाय नमः

69. ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं सूनृतपूतवाचे नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापारमिताय नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं प्राज्ञाय नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं यतये नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं नियमितेन्द्रियाय नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं भदन्ताय नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं कल्पवृक्षाय नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलितकर्मारये नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेयविचक्षणाय नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तशक्तये नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजेत्राय नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यंबकाय नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षाय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं समन्तभद्राय नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तारये नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं दयानिधये नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिने नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं जितानंगाय नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं कृपालवे नमः
101. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकाय नमः
102. ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे नमः
103. ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूताय नमः
104. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशये नमः
105. ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय नमः
106. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय नमः
107. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय नमः
108. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः

दिग्वासः प्रमुखैर्नित्यं, राजमानं सुनामभिः।
शतप्रभैर्जिनं चाद्य–मष्टधाहं सदा यजे ।। 10।।

ॐ ह्रीं दिग्वासादि अष्टोत्तरशतनामधारक वृषभाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

श्रीमज्जिनेन्द्र–मभिवन्द्य जगत् त्रयेशम्,
स्याद्वाद–नायक–मनन्त–चतुष्टयार्हम।
श्रीमूल–सङ्घ–सुदृशां सुकृतैकहेतु–
र्जैनेन्द्र–यज्ञ–विधि–रेष मयाऽभ्यधायि ।। 1 ।।

स्वस्ति त्रिलोक–गुरवे जिन–पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव–महिमोदय–सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश–सहजोर्जित–दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न–ललिताद्भुत–वैभवाय ।। 2 ।।
स्वस्त्युच्छलद् विमल–बोध–सुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव–परभाव–विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक–विततैक–चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल–सकलायत–विस्तृताय ।। 3 ।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपम्,
भावस्य शुद्धि–मधिका–मधिगन्तु–कामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन,
भूतार्थ–यज्ञ–पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ।। 4 ।।
अर्हत् पुराण–पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनून–मखिलान्यय–मेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्–विमल–केवल–बोध–वह्नौ,
पुण्यं समग्र–मह–मेकमना जुहोमि ।। 5 ।।

। इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजित :।
श्री सम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांस स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।

श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरहनाथ।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रत।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति श्री जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानम् (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

नित्याप्रकम्पाद्भुत–केवलौघाः, स्फुरन्–मनःपर्ययः–शुद्ध–बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान–बल–प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। 1 ।।
कोष्ठस्थ–धान्योपम–मेकबीजं, संभिन्न · संश्रोतृ–पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिं बलं दधाना, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 2 ।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा–दास्वादन–घ्राण–विलोकनानि।
दिव्यात् मतिज्ञान–बलाद्–वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।3 ।।
प्रज्ञा–प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक–बुद्धा दश–सर्व–पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग–निमित्त–विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।4 ।।
जङ्घावलि–श्रेणि–फलाम्बु–तन्तु–प्रसून–बीजाङ्कुर–चारणाह्वाः ।
नभोऽङ्गण–स्वैर–विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।5 ।।
अणिम्नि–दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि–शक्ताः कृतिनो गरिम्णिः।
मनो–वपु–र्वाग्–बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।6 ।।
सकाम–रूपित्व–वशित्व–मैश्यं, प्राकाम्य–मन्तर्द्धि–मथाप्ति–माप्ताः।
तथाऽप्रतीघात–गुण–प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 7 ।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर–पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर–गुणं चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 8 ।।
आमर्ष–सर्वौषधय–स्तथाशीं–र्विषं विषा दृष्टि–विषाविषाश्च।
सखिल्ल–विड्–जल्ल–मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो, मधु–स्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीण संवास–महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।1 0।।

। इति परमर्षि–स्वस्ति–मंगल–विधानम्।

अथ चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रय पूजा

चन्द्रपुराम्बुधि चन्द्रं, चन्द्राङ्कं चन्द्रकान्त कीर्ति संकाशम्।
चन्द्रप्रभ जिनमर्चनं, चन्द्रेन्दु स्फारकीर्ति कान्ताकान्तम्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक

करोम्यर्चनं भक्त्या, शीतलै शुभ वारिभिः।
चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य, तापत्रय विनाशने।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।। 1 ।।

रचयाम्यर्चनं भक्त्या, चन्दनैश्चित्त नन्दनैः।
चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य, भवाताप निवारणे।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपा० स्वाहा ।। 2 ।।

शाल्याक्षत भरैः पुञ्जै, अखण्डैः सुवासितै।
चन्द्रनाथं यजे नित्यं, अक्षयपद कारणे।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्व०।। 3 ।।

निर्मिताभ्यर्चनं भक्त्या, जुही पाटलमल्लिकैः।
चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य, कामशत्रु विनाशने।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व०।। 4।।

अर्चाकरोम्यहं भक्तया, घृतपूरित सुव्यञ्जनैः।
चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य, क्षुधारोग निवारणे।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य निर्व०।। 5।।

करोम्यर्चनं भक्त्या, रत्नपुञ्जक दीपकैः।
चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य, मोहतमाप हारणे।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व०।। 6।।

करोम्यर्चनं भक्त्या, दशाङ्ग शुद्ध धूपेन।
चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य, अष्टकर्म निवारणे।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व०।। 7।।

नारिकेलः लवंगादि, पिस्ता आम्र खर्जूरभिः।
चन्द्रनाथं पूज्यामि, मोक्षफल सुसाधने।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व०।। 8।।

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैः दीपधूप फलादिभिः।
चन्द्रनाथं करोम्यर्चां, अनर्घ्यपदहेतवे।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ् जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व०।। 9।।

जयमाला

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महातामृषीन्द्रं जिनं जितस्वान्तकषायबन्धम्।। 1।।
यस्याङ्ग लक्ष्मी परिवेषभिन्नं तमस्तमोरेरिव रश्मिभिन्नम्।
ननाश बाह्यं बहुमानसं च, ध्यानप्रदीपातिशयेनभिन्नम्।। 2।।
स्वपक्षसौस्थित्यमदावलिप्ता, वाक् सिंहनादैर्विमदाबभूवुः।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा, गजा यथा केशरिणो निनादैः।। 3।।
यः सर्वलोके परमेष्ठिताया:, पदं बभूवाद्भुतकर्मतेजाः।
अनन्तधामाक्षर विश्वचक्षुः समस्तदुःखक्षयशासनश्च ।। 4।।

स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां, विपन्नदोषाभ्रकलङ्कलेपः।
व्याकोशवाङ्न्यायमयूखमालः, पूयात् पवित्रो भगवान् मनो मे ।। 5 ।।

परमचन्द्रनाथसच्चरणपङ्कजद्वयं।
स्मरतघस्मरस्मय, स्मरशरासनापहं।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ् ज़िनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसाराम्बुधिपारदं जिनपतिं चन्द्रप्रभं मोक्षदं,
सुग्रीवाभिधभूपजं गणपतिं सल्लक्षणानन्दनं।
शुभ्रांशुच्छविराजितं वरशिवयोषारतं निर्मलं,
वन्दे चापशतैक चार्द्धप्रमकं वर्ष्म मृगाङ्काङ्कितं।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नव देवता—अर्घ्य

जल गन्ध अक्षत पुष्पचरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले,
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह बस अर्घ्य से पूजत मिले।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें,
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकान्ता वरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीय वलय पूजा

द्वितीय वलय में वर्तमान चौबीस तीर्थंकर एवं शासन यक्ष–यक्षियों के अर्घ्य चढ़ावें।

स्थापना

ये जित्वा निजकर्मकर्कश रिपून् कैवल्यमाभेजिरे,
दिव्येन ध्वनिनावबोध्य निखिलं चक्रम्यमाणं जगत्।
प्राप्ता निर्वृतिमक्षयामतितरामंतातिगामादिगां,
यक्ष्ये तान् वृषभादिकान् जिनवरान् वीरावसानानहं।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानपर्यन्त चतुर्विंशत् जिनेन्द्राः! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानपर्यन्त चतुर्विंशत् जिनेन्द्राः! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानपर्यन्त चतुर्विंशत् जिनेन्द्राः! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

जिनशासनदेवा ये चतुर्विंशतयो स्मृताः।
गोमुखाद्याः समायान्तु जिनभक्तिपरायणाः।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गोमुखाद्याः चतुर्विंशतिप्रमाः जिनशासनदेवाः! अत्र आगच्छ आगच्छ।

ॐ आं क्रों ह्रीं गोमुखाद्याः चतुर्विंशतिप्रमाः जिनशासनदेवा.! स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ।

ॐ आं क्रों ह्रीं गोमुखाद्याः चतुर्विंशतिप्रमाः जिनशासनदेवाः! अत्र मम सन्निहितो भव-भव।

चक्रेश्वर्यादयो देव्यः तीर्थकृद् भक्तवत्सलाः।
जिनयज्ञे समायान्तु, सर्वविघ्नोघ शान्तये।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रेश्वर्यादि चतुर्विंशति जिनशासनदेव्यः! अत्र आगच्छ आगच्छ।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रश्वर्यादि चतुर्विंशति जिनशासनदेव्यः! स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रश्वर्यादि चतुर्विंशति जिनशासनदेव्यः! अत्र मम सन्निहितो भव भव।

अथाष्टक

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपा० स्वाहा।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपा० स्वाहा।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपा० स्वाहा।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपा० स्वाहा।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपा० स्वाहा।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपा० स्वाहा।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपा० स्वाहा।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फ़लं निर्वपा० स्वाहा।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपा० स्वाहा।

अथ प्रत्येकार्घ्यं

आवाहनादिपुरःसर प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनाय द्वितीयवलये पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्

मनुनाभिमहीधरजन्मभुवं, मरूदेव्युदरावतरन्तमहम्।
प्रणिपत्य शिरोऽभ्युदयाय यजे, कृतमुख्य जिनं वृषभं वृषभम्।। 1 ।।

ॐ ह्रीं वृषभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

वामान्योर्ध्वकरद्वयेन परशुं धत्तेऽक्षमालामधः,
सव्यासव्यकरद्वयेन ललितं यो बीजपूरं वरम्।
तं मूर्ध्ना कृतधर्मचक्रमनिशं गोवक्त्रकं गोमुखं,
श्रीनाभेय जिनेन्द्रपादकमला लोलालिमालापये ।। 1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वृषभजिनस्य शासनयक्ष गोमुखाय इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

या देव्यूर्ध्वकरद्वयेन कुलिशं चक्राण्यधः स्थैः करैः,
अष्टाभिश्च फलं वरं करयुगे–नाधत्त एवाथवा।
धत्ते चक्रयुगं फलं वरमिमां दोर्भिश्चतुर्भिःश्रिताम्
तार्क्ष्यं तां पुरुतीर्थपालनपरां चक्रेश्वरीं संयजे ।। 1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वृषभजिनस्य शासनयक्षि चक्रेश्वरीदेव्यै इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

जितशत्रुगृहं परिभूषयितुं, व्यदहार दिशातनुभूप्रभवम्।
नय निश्चयतः स्वयमेव भुवं, अजित जिनमर्चतु यज्ञधरम् ।। 2 ।।

ॐ ह्रीं अजित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चक्रं त्रिशूलं कमलं सृणिं वै, खड्गं च दण्डं परशुं प्रधानं।
विभ्राणमिष्टाजितनाथपादं, यजे महायक्ष चतुर्मुख त्वां ।। 2 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अजितजिनस्य शासनयक्ष महायक्षाय इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

उर्ध्वद्विहस्तोद्धृतचक्रशंखां अधोद्विहस्ता भयदानमुद्रा।
प्रभावयन्तीमजितेश तीर्थं, यजेऽरिधिक्कारिणि रोहिणि त्वाम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अजितजिनस्य शासनयक्षि रोहिणिदेव्यै इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

दृढराजसुवंशनभोमिहिरं त्रिजगत्त्रयभूषणमभ्युदयम्।
जिनसम्भवमूर्ध्वगतिप्रदम–र्चनया प्रणमामि पुरस्कृतया ।। 3 ।।

ॐ ह्रीं सम्भव जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सव्यैः करैश्चक्रमसिं सृणिं यो, दण्डं त्रिशूलं सितकर्त्रिकां च ।
अन्यैर्बिभर्ति श्रितसम्भवं तं, यजे त्रिनेत्रं त्रिमुखाख्य यक्षं ।। 3 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सम्भव जिनस्य शासनयक्ष त्रिमुखाय इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

धत्तेर्धचन्द्रं परशुं फलं वै, कृपाणपिंडीवरमादधानाम्।
यजामहे सम्भवनाथ यक्षीं, प्रज्ञप्तिसंज्ञां क्षपितारिशक्तिम्।। 3 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सम्भव जिनस्य शासनयक्षि प्रज्ञप्तिदेव्यै इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कपिकेतनमीश्वरमर्थयतो, मृतिजन्मजरापरिनोदयतः।
भविकस्य महोत्सव सिद्धिमिया–दतएव यजे ह्यभिनन्दनकम्।।4।।

ॐ ह्रीं अभिनन्दन जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

कोदण्ड सत्खेटक वामहस्तं, वामान्यहस्तोद्धृतबाणखड्गं।
यक्षेश्वर त्वामभिनन्दनार्हत् पादाब्जभृंगं प्रयजे प्रसीद ।। 4 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अभिनन्दन जिनस्य शासनयक्ष यक्षेश्वराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

या नागपाशं फलमक्षसूत्रं वरं बिभर्ति प्रवरप्रभावा।
यजे यजन्तीमभिनन्दनेश–मुच्छृंखलर्द्धि पविशृंखलां ताम् ।। 4 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अभिनन्दन जिनस्य शासन यक्षि वज्रश्रृंखलादेव्यै इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

सुमतिं श्रितमर्त्यमतिप्रकरा–र्पणतोऽर्थकराख्यमवाप्तशिवम्।
महयामि पितामहमेतदधि–जगतीत्रयमूर्जितभक्तियुतः ।। 5 ।।

ॐ ह्रीं सुमति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उर्ध्वस्थिताभ्यां फणिनौ कराभ्यां, अधः स्थिताभ्यां दधतं प्रदानम्।
फलं प्रयक्ष्ये सुमतीशभक्तं, श्री तुम्बरुं सर्पमयोपवीतम् ।। 5 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुमति जिनस्य शासन यक्ष तुम्बुराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वज्रं फलं सव्यकरद्वयेन, चक्रं वरं चान्यकरद्वयेन।
समुद्वहन्तीं सुमतीश यक्षीं, यजामहे पूरुषदत्तिकाख्याम् ।। 5 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुमति जिनेन्द्रस्य शासन यक्षि पुरुषदत्तादेव्यै इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

धरणेशभवं भवभावमितं जलजप्रभमीश्वरमानमताम्।
सुर सम्पदियर्ति न केति यजे चरुदीपफलैः सुरवासभवैः।। 6 ।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

खेटोभयोद्भासितसव्यहस्तं कुन्तेष्टदानस्फुरितान्यपाणिम्।
पद्मप्रभश्रीपदपद्मभृंगं पुष्पाख्ययक्षेश्वरमर्चयामि ।। 6 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मप्रभ शासन यक्ष पुष्पाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

फलकं फलमुग्रासिं वरं वहति दुर्जया।
पद्मप्रभस्य या यक्षी मनोवेगां महामिताम् ।। 6 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मप्रभ शासन यक्षि मनोवेगादेव्यै इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

शुभपार्श्व जिनेश्वरपादभुवां रजसां श्रयतां कमलाततयः।
कति नात्र भवन्ति न यज्ञभुवि, नयितुं महयामि महध्वनिभिः ।। 7 ।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

यमोग्रदण्डोपमचण्डदण्डं सव्येन चासव्यकरेण शूलम्।
विभ्राणमर्चामि सुपार्श्वभक्तं मातङ्गयक्षं कुटिलाननोग्रम् ।। 7 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मातंगयक्षाय.....०।

आरभ्य वामोपरि हस्ततो या घटां फलं शूलमभीष्टदानम्।
दधाति काली कलितप्रसादा सपर्यया सास्तु सुपार्श्वयक्षी ।। 7 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कालिदेव्यै.....०।

मनसा परिचिन्त्य विधुः स्वरसात् ममकान्तिहृतिर्जिनदेहघृणेः।
इतिपादभुवं श्रितवानिव तं, जिनचन्द्रपदाम्बुजमाश्रयत ।। 8 ।।

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सव्येन धत्ते परशुं फलं य–स्तथाक्षमालां च वरं परेण।
करद्वयेन प्रयंजे त्रिनेत्रं श्यामं तमिन्दु प्रभभक्तिभारम् ।। 8 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्याम यक्षाय.....ो।

चक्रं चापमहीश पाशफलके सव्यैश्चतुर्भिः करै–
रन्यैः शूलमिषुं झषं ज्वलदसिं धत्तेऽत्र या दुर्जया।
तामिन्दुप्रभ देवसेवनपरा–मिष्टार्थसार्थप्रदाम्,
ज्वालामालकरालमौलिकलितां देवीं यजे ज्वालिनीम् ।।8 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ज्वालामालिनि देव्यै.....ो।

सुमदन्तजिनं नवमं सुविधि–तिपराह्नमखण्डमनङ्गहरम्।
शुचिदेहततिप्रसरं प्रणुतात् सलिलादिगणैर्यजतां विधिना ।। 9 ।।

ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

यजामहे शक्तिफलाक्षमाला–वरांकवामेतरहस्तयुग्मम्।
पुष्पेषु निष्पेषक पुष्पदन्त, श्रीपादभक्ताजितयक्षनाथम्।। 9 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अजितयक्षाय.....ो।

या वज्रमत्यूर्जितमातुलिंगं धत्ते स्फुरन्मुद्गरमिष्टदानम्।
तां पुष्पदन्त प्रभुपादसेवा–सक्तां महाकालिमिमां महामि।। 9 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महाकालि देव्यै.....ो।

धनधान्य समृद्धिरतीव यतो यजतां भवतीह सुरेन्द्रधरा।
दशमं प्रशमं भवशान्तिकरं सुयजामि महध्वनिना प्रमुदा।। 1 0 ।।

ॐ ह्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सचापदण्डोर्जितखेटवज्र सव्योद्धपाणिं नुतशीतलेशम्।
सव्यान्यहस्तेषु परश्वसीष्ट–दानं यजे ब्रह्मसमाख्ययक्षम् ।।1 0 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ब्रह्मयक्षाय.....ो।

उर्ध्वद्विहस्तोद्धृतमत्स्यमालां, अधोद्विहस्तात्तफलप्रदानाम्।
वामादितः शीतलनाथ यक्षीं महर्द्धिकां मानविमानये त्वाम् ।।1 0 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मानविदेव्यै.....ो।

श्रेयोजिनस्य चरणौ परिधार्य चित्ते,
संसारपञ्चतयदुर्भ्रमणव्यपायः।
श्रेयोऽर्थिनां भवति तत्कृतये मयापि –
सम्पूज्यते यजनसद्विधिषु प्रशस्यः ।। 1 1 ।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सव्यान्यहस्तोद्धृत सत्त्रिशूल दण्डाक्षमाला फलमीश्वराख्यम्।
यक्षं त्रिनेत्रं परितर्पयामि श्रेयोजिन श्रीपददत्तचित्तम् ।। 1 1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ईश्वरयक्षाय..... ०।

दोर्भिश्चतुर्भिर्द्रुघणं पयोजं त्वां बिभ्रतीं कुम्भमभीष्टदानाम्।
श्रेयोजिनश्रोपदपद्मभृंगीं गौरीं यजे विघ्नविघातकारीम् ।। 1 1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गौरिदेव्यै.....०।

इक्ष्वाकुवंशतिलको वसूपूज्यराजो,
यज्जन्मजातकविधौ हरिणार्चितोऽभूत्।
तद् वासुपूज्य जिनपार्चनया पुनीत–
स्यामद्य तत्प्रतिकृतिं चरुभिर्यजामि ।। 1 2 ।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्तैर्धनुर्बभृफलानि सव्यै–रन्यैरिषुं चारुगदां वरं च।
धरन्तमर्चामि कुमारयक्षं त्रिविक्रमाराधित वासुपूज्यम् ।। 1 2 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कुमार यक्षाय.....०।

लीलाम्बुजां कोपरि हस्तयुग्मा–मधोद्विहस्ते मुसलेष्टदानाम्।
त्वां वासुपूज्य प्रसितान्तरंगां गान्धारि मान्ये बहु मानयामि ।।1 2 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गान्धारि देव्यै.....०।

काम्पिल्यनाथ कृतब्रर्मगृहावतारं,
श्यामा जयाह्व जननी सुखदं नमामि।
कोलध्वजं विमलमीश्वरमध्वरेऽस्मि–
न्नर्चे द्विरुक्तमलहापनकर्मसिद्धयै ।।1 3 ।।

ॐ ह्रीं विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उर्ध्वाष्टहस्त विलसत्परशुं चतुर्भिः,
खड्गामलाक्ष मणिखेटकदण्डमुद्राः।
शेषैः करैश्च दधत विमलेशभक्तं,
नाम्नोर्थतः षण्मुखमर्चयामि ।। 13 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षण्मुखयक्षाय.....ठ।

उर्ध्वेन हस्तद्वितयेन सर्पा–वधः स्थितेनोर्जितचापबाणौ।
यजे वहन्तीं विमलेश यक्षीं वैरोटिकां त्रोटितविघ्नकोटिम् ।। 13 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वैरोटिदेव्यै.....ठ।

साकेतनामकनृपस्य च सिंहसेन–
नाम्नस्तनूजममरार्चितपादपद्मम्।
संपूज्यामि विविधार्हणया ह्यनन्त–
नाथं चतुर्दशजिनं सलिलाक्षतौघैः ।। 14 ।।

ॐ ह्रीं अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सव्यैः कशाहलफलान्यपसव्यहस्तै–
र्बिभ्राणमंकुश सशूल सरोरुहाणि।
पातालकं त्रिफणनागशिरस्त्रिवक्त्र–
मर्चाम्यनन्तजिनमादरतोर्चयन्तम् ।।14 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पातालयक्षाय.....ठ।

अधिज्यधन्वोत्तममातुलुंगं, निशातबाणं दधीष्टदानम्।
समर्चितानन्तमतिप्रसन्ना, भूयादिहानन्त जिनेशयक्षी ।।14 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अनन्तमति देव्यै.....ठ।

धर्मंद्विधोपदिशता सदसीन्द्रधार्ये,
किं किं न नाम जनताहितमन्वदर्शि।
श्रीधर्मनाथ भर्मंतेति सदर्थनाम–
संप्राप्तयेऽर्चन विधिं पुरतः करोमि ।।15 ।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

चक्रं पविं चांकुशमुद्वहन्तं सव्यैः परैर्मुद्रमक्षमालाम्।
वरं च संसेवित धर्मनाथं त्रिवक्त्रकं किन्नरमर्चयामि ।।1 5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं किन्नरयक्षाय.....०।

अम्भोरुहं कार्मुकमिष्टदानं धत्तेऽङ्कुशं मार्गणमुत्पलं च।
दधाति वै धर्मजिनेशयक्षी या मानसीमां बहुमानयामि ।।1 5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मानसिदेव्यै.....०।

श्री हस्तिनागपुर पालकं विश्वसेनः,
स्वाङ्के निवेश्य तनयामृतपुष्टितुष्टः।
ऐरापि सा सुकुरुवंशनिधानभूमि–
र्यस्माद् बभूव जिनशान्तिमिहाश्रयामि ।।1 6।।

ॐ ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

पद्मं फलं संदधतं कराभ्यां, अधः स्थिताभ्यामुपरिस्थिताभ्याम्।
वज्रं च चक्रं गरुड़ाह्वयं त्वां अर्चामि शान्तिश्रित वक्रवक्त्र ।।1 6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गरुड़यक्षाय.....०।

रथाङ्गपाणिं फलपूरहस्ता–मीडीशयां दानकरामजेयाम्।
शान्तीशपादाम्बुजदत्तचित्तां कान्तां महामानसि मानये त्वाम् ।।1 6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामानसिदेव्यै.....०।

श्रीकुन्थुनाथ जिनजन्मनि षट्निकाय–
जीवाः सुखं निरुपमं बुभुजुर्निशङ्कम्।
किं नाम तत्स्मृति निराकुलमानसोऽहं,
भोक्ष्ये न सत्वमतोऽर्चनमारभेय ।।1 7।।

ॐ ह्रीं कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

उर्द्धद्विहस्तोद्धृतनागपाश – मधोद्विहस्तस्थितचापबाणम्।
गन्धर्वयक्षेश्वर कुन्थुनाथ सेवोत्थितानन्दथुमर्चये त्वाम् ।। 1 7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गन्धर्वयक्षाय.....०।

चक्रं समाक्रान्तविरोधिचक्रं शंखं स्वभुङ्कारकृतारि भीतिम्।
अत्युग्रखड्गं वरमादधानां यजे जयां कुन्थुजिनेन्द्रयक्षीम् ।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं जयादेव्यै.....ठ।

सद्दर्शनप्लुतसुदर्शनभूपपुत्रं,
त्रैलोक्य जीववररक्षण हेतुमित्रम्।
श्री मित्रसेन जननी खनिरत्नमर्चे,
श्रीपुष्पचिन्हमरनाथ जिनेन्द्रमर्घ्यम् ।।18।।

ॐ ह्रीं अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सव्यैः करैरिह शरासन वज्रपाश,
संमुद्गरांकुशवरानपरैर्धरन्तम्।
बाणाम्बुजोरुफलमाल्य महाक्षमाला–
लीला यजाम्यरमितं त्रिंदशं च खेन्द्रं ।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं खेन्द्रयक्षाय.....ठ।

स्वर्णाभां हंसगां सर्प–मृगवज्रवरोद् धुराम्।
चाये तारावतीं त्रिंशत्–चापोच्चप्रभु भाक्तिकाम् ।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं तारावत्यै.....ठ।

कुम्भोद्भवं धरणिदुःखहरं प्रजाव–
त्यानन्दकारकमतन्द्रमुनीन्द्रसेव्यम्।
श्रीमल्लिनाथ विभुमध्वर विघ्नशान्त्यै,
सम्पूज्ये जलसुचन्दन पुष्पदीपैः ।।19।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सव्यैः करैः फलककार्मुकदण्डपद्मा–
नन्यैः कृपाणशरपाशवरान् दधानं।
दुर्वारवीर्य चतुरानन पूजये त्वां,
श्रीमल्लिनाथपदभक्त कुबेरयक्षम् ।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कुबेरयक्षाय.....ठ।

हस्तद्वयेनोपरिमेनखेटं, कृपाणमन्येन फलं प्रदानम्।
उद्विभ्रती मल्लिजिनेन्द्रयक्षी, गृण्हातु पूजामपराजितेयम्।।1 9।

ॐ आं क्रों ह्रीं अनजात देव्यै.....ο।

राजत्सु राजहरिवंशनभोविवस्वान्–
वप्राम्बिका प्रियसुतो मुनिसुव्रताख्यः।
सम्पूजये शिवपथ प्रतिपत्तिहेतु–
र्यज्ञे मयाविविधवस्तुभिरर्हणेऽस्मिन् ।। 2 0।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

यजे जटाजूट तिरीटजुष्ट–विशिष्ट भावाष्टमुखं त्रिनेत्रम्।
सखेटखड्गं सफलेष्टदानं श्रीसुव्रतेशो वरुणाख्ययक्षम्।। 2 0।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वरुणयक्षाय.....ο।

या खेटकं मंगलमातुलुंगं, कृपाणमुग्रं वरमादधाति।
सा नःप्रसन्न मुनिसुव्रतार्हद् भक्तास्तु भव्या बहुरूपिणीष्ट्या।। 2 0।।

ॐ आं क्रों ह्रीं बहुरूपिणि देव्यै.....ο।

सन्मैथिलेश विजयाह्व गृहेऽवतीर्णा,
कल्याणपञ्चकसमर्पितपादपद्मम्।
धर्माम्बुवाह परिपोषित भव्यसस्यं,
नित्यं नमिं जिनवरं महसार्चयामि ।।2 1 ।।

ॐ ह्रीं नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

यः खेट खड्गौ दृढचापबाणौ, सृण्यंबुजे चक्रवरौ दधानः।
हस्ताष्टकेनोग्र चतुर्मुखं तं नमीशयक्षं भृकुटिं यजामि।। 2 1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं भृकुटीयक्षाय.....ο।

इष्ट्यास्तु तुष्टा धृतयष्टिखेट–सव्यद्विहस्तान्यकरद्वयेन।
दिव्याक्षमालामसिमादधानां, चामुण्डिकां श्रीनमिमानमन्तीम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चामुण्डिका देव्यै.....ο।

द्वारावतीपतिसमुद्रजयेशमान्यं,
श्रीयादवेशबलकेशव पूजिताङ्घ्रिम्।
शङ्खाङ्कमम्बुधरमेचकदेहमर्चे,
सद्ब्रह्मचारिमणि नेमिजिनं जलाद्यैः ॥ 22 ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

घनं कुठारं च बिभर्ति दण्ड सव्यैः फलैर्वज्रवरौ च योऽन्यैः।
हस्तैस्तमाराधितनेमिनाथं गोमेधयक्षं प्रजयामिदक्षम् ॥ 22 ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं गोमेधयक्षाय.....०।

धत्ते वामकटौ प्रियंकरसुतं वामे करे मंजरी–
माम्रस्यान्यकरे शुभंकरतुजो हस्तं प्रशस्ते हरौ।
आस्ते भर्तृचरे महाम्रविटपि–च्छायं श्रिताभीष्टदा,
याऽसौ तां नुतनेमिनाथ पदयो–र्नम्रामिहाम्रां यजे॥ 22 ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं कुष्माण्डिनी देव्यै.....०।

काशीपुरीश नृपभूषण विश्वसेन,
नेत्रप्रियं कमठशाठ्यविखण्डनेनं।
पद्माहिराज विबुधब्रज पूजनाङ्कं,
वन्देऽर्चयामि शिरसा नतमौलिनीतः ॥ 23 ॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सव्यै तराभ्यामुपरि स्थिताभ्यां, यो वासुकीपाशवरौ पराभ्याम्।
धत्तेतमेनं फणिमौलिचूलं, पार्श्वेशयक्षं धरणं धिनोमि ॥ 23 ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पार्श्वजिनस्य शासनयक्ष धरणेन्द्राय इदं गृहाण गृहाण स्वाहा।

पाशाद्यन्विषड्भुजारिजयदा, ध्याता चतुर्विंशतिं,
शंखास्यादि युवान्करांस्तु दधती, या क्रूरशान्त्यर्थदा।
शान्त्यै सांकुशवारिजाक्षमणिसद्दानैश्चतुर्भिः करै –
र्युक्ता तां प्रयजामि पार्श्वविनतां पद्मस्थ पद्मावतीम् ॥ 23 ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पार्श्वजिनस्य शासनयक्षि पद्मावतीदेव्यै इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

सिद्धार्थभूपतिगणेन पुरस्क्रियाया–
मानन्द ताण्डवविधौ स्वजनुः शशंसे ।
श्री श्रेणिकेन सदसि ध्रुवभूपदाप्त्यै,
यज्ञेऽर्चयामि वरवीरजिनेन्द्रमस्मिन् ।। 24 ।।

ॐ ह्रीं महावीर जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिभर्त्ति यो मूर्धनि धर्मचक्रं, फलं च वामेन वरं परेण।
करेण तं सेवितवर्धमानं, मातंगयक्षं महितं महामि ।। 24 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महावीरजिनस्य शासनयक्ष मातंगाय अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

बिभर्ति या पुस्तकमिष्टदानं सव्यापसव्येन करद्वयेन।
भद्रासनामाश्रितवर्धमानां सिद्धायिकां सिद्धिकरीं यजे ताम् ।। 24 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महावीर जिनस्य शासयक्षि सिद्धायिनिदेव्यै इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

अथ तृतीय वलय मध्ये पंचदशतिथिदेवाः–नवग्रहाऽर्चनम्

आवहनादि पुरःसर तिथिदेवताः, नवग्रहदेवता प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनाय तृतीयवलये पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्।

स्थापना

नन्दां च भद्रां च जयां च रिक्तां,
पूर्णां च भूयो भुवि वर्तयन्ति।
ये तानेकान्त सुपक्षपक्षा–
न्नयक्षेण यक्ष प्रमुखान्प्रयक्ष्ये।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पञ्चदश तिथि देवाः! अत्र आगच्छ–आगच्छ।
ॐ आं क्रों ह्रीं पञ्चदश तिथि देवाः! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः।
ॐ आं क्रों ह्रीं पञ्चदश तिथि देवाः! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट्।

अथ प्रत्येकार्घ्यं

यक्षं यजेऽहं सगतं सुपक्षं, पक्षे च पक्षे प्रतिपद्दिनेशम्।
कोदण्डबाणा भयदानपाशं, पद्मांकहस्तं धवलोज्ज्वलांगम्।। 1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं प्रतिपदयक्षाय इदं अर्घ्यं गृहाण–गृहाण स्वाहा।

यजामि वैश्वानरमर्कभासं, त्रिशूलदानाभयमक्षमालं।
कपालमज्वं दधतं करीन्द्र–वाहं द्वितीया दिवसाधिनाथम्।। 2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वैश्वानराय .....ο।

सृणिं सरोजं मुसलासिखेट–खट्वाङ्गमप्युज्वलमादधानं।
शितिं यजे राक्षस देवमश्व–यानं तृतीया दिवसाधिनाथम्।। 3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं राक्षसाय.....ο।

गारुत्मताभं जलजा भयासि–खेटं फलं दानमुपादधानम्।
व्याघ्राधिरूढ़ं नधृतं यजामि, यज्ञे चतुर्थी दिवसाधिनाथम्।। 4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नधृताय.....ο।

कान्त्या शरीरस्य शरद्दिनेश, कान्तिं हसन्तं श्रृणिपाशहस्तम्।
सर्पासनं पन्नगदेवमर्चे, जिनक्रतौ वांछित पञ्चमीशम्।। 5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पन्नगाय.....ο।

खड्गं फरीमं कुशमक्षमाला, कशांकदानं डमरूं तथैव।
यजेसुरं कुञ्जर शत्रुपत्रं, द्वितीय नन्दाधिपतिं सुनीलं।। 6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं असुराय.....ο।

पाशांकुशांभोजफलप्रदाना, भयांकहस्तं तुरगाधिरूढ़ं।
वेणुप्रकाशं वरसप्तमीशं, सन्तर्पयामः सुकुमारदेवं।। 7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुकुमाराय.....ο।

कृपाणमेकत्रफलं च खेटं, हस्ते प्रशस्ते नियतं दधानः।
पितार्च्यते वा जगतः पतिर्वा, सत्वस्य पातानिशमष्टमीशः।। 8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पितृदेवाय.....ο।

शूलं कपालं च दधत् त्रिनेत्रः, सिंहाधिरूढ़ो नवमीदिनेशः।
बालार्कसंकाशतनु प्रकाशः श्रीविश्वमाली भवतु प्रपूज्यः।। 9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वमालिदेवाय.....ο।

कपाल खड्गोज्वल खेटबाण, चापाभयाम्भोरुहमुद्वहन्तम्।
द्वितीय पूर्णाधिपमिन्दुगौरं, मयूरवाहं चमरं समर्चे।। 10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चमरदेवाय.....ο।

शरासबाणोग्रकृपाणखेट – दानाङ्कुशैरुल्लसितोग्रहस्तः।
वैरोचणो वेणुनिभोऽस्तु पूज्य, एकादशीशः पृथु पोत्रिवाहः।। 11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वैरोचनाय.....ο।

बाणं शराशं च कृपाणपूत्रीं, खेटं च हस्तैर्दधतं चतुर्भिः।
यजे महाविद्युतमिन्दुवर्णं, तं द्वादशेशं वर हंसवाहं।। 12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महाविद्युत्देवाय.....ο।

मारः फरी खड्गधनुः शशांक–हस्तस्त्रयोदश्यधिपः प्रवीरः।
गवेन्द्रवाहः शुभनीलवर्णो, जिनेन्द्रयज्ञे परिपूज्यतेऽद्य।। 13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मारदेवाय.....ο।

गदाकुठारीफलमुद्गरांक–हस्तं चतुर्दश्यधिपं महान्तम्।
विश्वेश्वरं विश्वदृशो जिनस्य, यजे सुवर्णप्रभमर्चयामि।। 14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वेश्वराय.....ο।

पिण्डाशिनं पञ्चदशातिथीशं, कोदण्डबाणाभयपाशहस्ताम्।
वेदण्डपत्रं कमनियगात्रं, शशांकवर्णं महयामि यज्ञे।। 15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पिण्डाशिन्देवाय.....ο।

स्थापना

मेरुं परीत्यैव चरन्ति नित्यं, ये निग्रहानुग्रहदानृलोके।
अवस्थिता ये बहिरर्कमुख्याः, सर्वान्समाहूय समर्चये तान्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नवग्रह देवाः! अत्र आगच्छ–आगच्छ।
ॐ आं क्रों ह्रीं नवग्रह देवाः! स्वस्थाने तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः।
ॐ आं क्रों ह्रीं नवग्रह देवाः! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट्।

अथ प्रत्येक पूजा

तापप्रकाशप्रतिभासमान – मधीशयन्तं सततं विमानम्।
उत्कृष्ट पल्यस्थितिमब्जहस्तं, महामहं तं प्रयजामि सूर्यम् ।। 1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं आदित्य महाग्रहाय.....ο।

सल्लक्षसम्वत्सरपल्यवृत्तिं, बलक्षरोचिः प्रतिभासमानम्।
स्फुरन्महारत्नकृतोद्घवेषं, ग्रहाधिपं सोममिहार्चयामि ।। 2 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सोम महाग्रहाय.....ο।

मृगाधिपाकार सुरोह्यमानं, क्रोशार्धमात्रं श्रितमुद्विमानम्।
कुमारयक्षाश्रित पूजनोक्तं, पल्यार्धवृत्तिं कुजमर्चयामि ।। 3 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं भौम महाग्रहाय.....ο।

केन्द्रत्रिकोणे जनसौख्यकारी, मृगेन्द्रसत्त्वोहितलोकपूज्यः।
बलिप्रदानेन सुपुष्टिकर्ता, तं सोमपुत्रं परिपूजयामि ।। 4 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं बुध महाग्रहाय.....ο।

यः स्वर्गलोके सुरराजमन्त्री पयः प्रपूरादिघृतैः सुतुष्टः।
वियद्विहारी बलिभक्षकः सन् बृहस्पतिं तं परिपूजयामि ।। 5 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गुरु महाग्रहाय.....ο।

यः सव्यपाणै शुचिदण्डधारी सुवामहस्ते च कमण्डलुं श्रित्।
सुधौतवस्त्रं कविराजमुख्यं, तं शुक्रदेवं परिपूजयामि ।। 6 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुक्र महाग्रहाय.....ο।

छायासुतः सूर्यखचारिपुत्रो, यः कृष्णवर्णो रजनीशशत्रुः।
अष्टारिगः सज्जनसौख्यकारी शनीश्वरं तं परिपूजयामि ।। 7 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शनि महाग्रहाय.....ο।

निजेन बिम्बेन दिने–दिने च, षष्ठे च मासे शशिनो विमानम्।
प्रच्छादयन्तं परितर्पयामि, राहुं स्वभावात्परितुष्यमाणम् ।। 8 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं राहु महाग्रहाय.....ο।

कृष्णध्वजो कृष्णसुवर्णधारी, छायाग्रहो पुण्यवियद्विहारी।
एकादशस्थः सभवन्प्रपूज्यः, केतुग्रहं तं परिपूजयामि ।। 9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं केतु महाग्रहाय.....०।

अथ चतुरस्रवलये मृत्युञ्जयस्य द्वादश बीजाक्षराऽर्चनम्

अथ समुदाय पूजा

स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां, विपन्नदोषाभ्र कलंकलेपः।
व्याकोशवाङ्न्यायमयूखमालः, पूयात् पवित्रो भगवान् मनो मे।।
सबिन्दु जातोदरजं वरं परं, सहोममर्हं लपहाः पहश्च।
क्ष बीजपूर्वं स्वरटान्तवेष्टितं, स्वरावृतं द्वादशपद्मपत्रतः।।
शान्तं द्वादश सत्कलान्वितपदं पीयूष पञ्चाक्षरं,
क्ष्वीं ह्वीं क्षिं सपरं च बिन्दुसहितं साहोममग्रे लिखेत्।
बाह्ये सान्तसुसंघटं परिवृतं मृत्युंजयाख्यैः पदै–
स्तद्बाह्यै जलसम्पुटं क्षितिभृतं मृत्युंजयेनार्चये।।

इति पठित्वा यन्त्रोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

समस्तचक्रान्वित दिव्यचक्रं, रक्षादिमृत्युञ्जयनामधेयम्।
शान्तिप्रदं मृत्युविनाशहेतु, भजामि मृत्युञ्जययन्त्रमन्त्र।।
अकारबीजाक्षरमातृकादि–प्रसिद्धसन्मण्डलबीजमन्त्रं ।
न्यसामि मन्त्रैः स्वपदप्रशस्तं, प्रसिद्धमृत्युञ्जययन्त्रमर्चे।।
सर्वोपमृत्योश्च निवारहेतुं, सर्वप्रदाभीष्टफलप्रपूतम्।
सर्वामरेन्द्रं क्षितिदिव्यचक्रं, नमामि मृत्युञ्जय नामधेयम्।।
चंचत्काञ्चन भूतप्रेतपिशाचराक्षसगणप्रत्यूह विध्वंसकम्।
शान्तं सर्वरुजापहं सुखकरं मृत्युञ्जयं संयजे।।

। इति पठित्वा नमस्कारं कुर्यात्।

स्थापना

गंगाम्बु स्वच्छ शीतेन, वारिणा तापहारिणा।
अभिषिञ्चामि यन्त्रेशं, मृत्युञ्जयमहं यजे।।
वार्गन्ध तण्डुलैः पुष्पै–र्दीपनैवेद्यधूपकैः।
फलैश्चाम्रादिभिः पक्वै–मृत्युञ्जयमहं यजे।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेव सर्वयन्त्रमन्त्र सिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झं वं ह्रः पः हः हं झं ध्वीं ध्वीं हं सः अ सि आ उ सा.....नामधेयस्य. ..सर्वापमृत्युविनाशनं कुरु–कुरु। मृत्युञ्जययन्त्राधिपतिः! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ नमोऽर्हते ..... मृत्युञ्जययन्त्राधिपतिः! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ नमोऽर्हते ..... मृत्युञ्जययन्त्राधिपतिः! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट्।

अथाष्टकम्

नानामणिप्रचयभासुरकण्ठयुक्तं,
भृंगारतालकलितामलदिव्यतोयैः।
संसारतापविनिवारण हेतु भूतं,
मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 1 ।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाकाङ्गनाकरसरोरुहमध्यमूर्ति–
कर्पूरकुङ्कुमविमिश्रित दिव्यगन्धैः।
मुक्तोपमानवरगन्धरमासमेतं,
मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 2 ।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धान्धषट्चरणझंकृत झंवितांगैः,

कल्याणकीर्तिसदृशैः कलमाक्षतौघैः।

अक्षुण्ण मोक्षसुखसाधन हेतुभूतं,

मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 3 ।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कंकेलिकुण्डकुटजोत्पलकेतकीनां,

पुष्पैरनल्पतरगन्धसबन्धुराङ्गैः।

दिव्यांगनामुकुटमाल्यमरीचिभिस्तन्,

मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 4 ।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संसारभावितधृतोज्ज्वलशाकपिण्डै–

नैवेद्यकैरमृतपिण्डविडम्बिभक्षैः।

कान्ताविडम्बरकृतक्षम पल्यवक्त्रं,

मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 5 ।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किं गांगुदीप्तिपरितर्जित भानुचन्द्रै–

रुन्मुद्रिताब्जमुकुलैरिवरत्नदीपैः।

तेजः प्रभापटलगुम्फित भानुचन्द्रं,

मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 6 ।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालेयकादिवरवस्तुवितानजातै–

र्गन्धावतीवसगताग्निनिनीन्दधूपैः।

चञ्चद्द्युतिप्रखरनिर्जित भास्करेन्द्रै–

र्मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 7 ।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नानारसप्रवरगन्धसुवर्णपूण–

जम्बूकपित्थपनसाम्रपटोलपूगैः।

द्राक्षासुदाडिममनोरमसत्फलौद्यै–

र्मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 8 ।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पयः सुगन्धाक्षत पुष्पहव्य–प्रदीप धूपादि फलार्घ्यदानैः।

स्वर्मोक्षदं भव्यसुखैकबीजं, मृत्युञ्जयं परमयन्त्रमहं यजामि ।। 9 ।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेवाय यन्त्रमन्त्रसिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झौ वं पः हः हं झं ह्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा ..... नामधेयस्य ... ...सर्वशान्तिं कुरु–कुरु, तुष्टिं–कुरु–कुरु, सिद्धिं कुरु–कुरु, वृद्धिं कुरु–कुरु, समस्तक्षामडामरभयविनाशनं कुरु–कुरु सर्वशान्तिकराय, रक्षापमृत्युअयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाकिनी डाकिनी भूतव्यन्तरग्रहपन्नगाः।

किन्नरादिकृतोत्पात–शान्तिं कुर्वन्तु शाश्वतीम्।।

। शान्तये शान्तिधाराः। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ॐ शान्तिरस्तु। समस्तव्याधिभीतिविषनाशनमस्तु।

तुष्टिपुष्टिबलायुर्विभूतिवर्धनमस्तु सततं वरयन्त्रात्।

इत्याशीर्वादः

अथ स्तोत्रम्

यः पूर्वव्याधितं येन सन्तानं व्याधिरूपताम्।
पीडानामुपशान्त्यर्थं मृत्युञ्जयमहं यजे ।। 1 ।।

यद् गर्भावतरे गृहे जनयितुः प्रागेव शक्राज्ञया,
षण्मासान्नवचारुरत्नकनक वित्तेश्वरो वर्षति।
भात्युर्वीमणिगर्भिणीसुरसरित् नारीक्षिता षोडश,
स्वप्नेक्षामुदितां भजन्ति जननी श्रीदिक्कुमार्योऽपिताम् ।। 2 ।।

प्रच्छन्नं जननीमुपास्य शयनादानीय शच्यार्पितं,
यं नत्वा सचतुर्णिकायविबुधाः श्रीमत्करीन्द्राश्रितः।
सौधर्मोऽङ्कनिवेशितं सुरगिरिं नित्वाभिषिच्याम्बुना,
संयोज्योपचरत्यजस्रमसमै–र्भोगैः सभाग्भिः पुनः ।। 3 ।।

किं कुर्वाणसुरेनद्रवृन्दविषयानन्दाद् विरक्तः स्तुतो,
यो लोकान्तिक नाकिभिः शिविकया निष्क्रम्य गेहान्महैः।
दिव्यैः सिद्धनतीद्धया वनतरुं पूत्वा परं दीक्षया,
भुङ्क्ते शुद्धनिजात्मसंविदमृतं स त्वं स्फुरस्येव नः ।। 4 ।।

सम्यग्दृष्टिकृशाकृशव्रतशुभो–त्साहेषु तिष्ठन् क्वचिद्,
धर्मध्यान बलादयत्नगलिता आयुस्त्रयः सप्तमे।
दृष्टिघ्ना प्रकृतिः समातपचतुर्जातित्रिनिद्रा द्विधा,
श्वभ्रस्थावर सूक्ष्मतिर्यगुभयो–द्योतं कषायाष्टकम् ।। 5 ।।

क्लेव्यं स्त्रैणमथादिमेन नवमे हास्थादिषट्कं वृतं,
क्षिप्तोदीचपृथक्कृतादिदशमे लोभं कषायान्तकम्।
निद्रां सप्रचलामुपान्त्यसमये दृग्विघ्नविघ्नं चतु–
र्वीर्यं च क्षिपते परेण चरमे शुक्लेन सोऽर्हन्नसि ।। 6 ।।

द्रव्यं भावमथादि सूक्ष्ममधियन्, नुक्तावितर्कैः स्फुर–
न्नर्थव्यञ्जनमङ्गलैरपि पृथक्त्वेनापि संक्रामता।
कर्मांशाशनवस्थितेन मनसा प्रौढार्भकोत्साहको–
त्कण्ठेन द्रुमबाणसं परशुभिश्छिन्दन्यतीष्वध्यसि ।। 7 ।।
क्षुण्णे मोहरिपौ भजन्नुरू यथा ख्याताधिराज्यश्रियं,
शुद्धस्वात्मनि निर्विचार विलसत्पूर्वोदितार्थश्रितः।
स्वच्छन्दोच्छलदुज्ज्वलोज्ज्वलचिदा–नन्दैक भावोद्गल–
च्छेषारिव्रजवैभव स्फुटमसि त्वं नाथ निर्ग्रन्थराट् ।। 8 ।।
विश्वैश्वर्यविघातिघातिसहजो–च्छेदोद्भतान्तदृक्,
संविद्वीर्यसुखात्मिकस्त्रिजगता–कीर्णे सदयास्थितः।
जीवन्मुक्तिमृषीन्द्र चक्रमहित–स्तीर्थं चतुर्स्त्रिंशता,
कुर्वाणोऽतिशयैः पुरास्यपि पशून् सम्प्रातिहार्याष्टकैः ।। 9 ।।
देवाव्यक्तिविशेषसंव्यवहृते व्यक्तोल्लसल्लाञ्छनं,
श्रीमत्त्वत्क्रम पद्मयुग्मसततो–पास्तौ नियुंक्ते शुभैः।
यक्षद्वन्द्वमवश्यमेतदुचितैः प्राचैरिदानीन्तनै–
देवेन्द्रैरपि मान्यशैशवमुदोऽप्येष्यद्धिरीशिष्यसि ।। 10 ।।
द्वौ गन्धौ रसवर्णबन्धनवपुः संघातकान्पञ्चशः,
षट् षट् संहननाकृतीः सुरगती सस्वानुपूर्व्या मुखे।
खव्रज्ये परघातकागुरुलघू–च्छ्वासोपघातायशोऽ–
नादेयः शुभसुस्वर स्थिरयुगं स्पर्शाष्टकं निर्मितम् ।। 11 ।।
त्र्यङ्गोपांगमपूर्वदुर्भगयुते, प्रत्यकेनीचैः कुले,
वेद्यं चान्यतम् द्विसप्ततिमुपान्तेऽमूरयोगक्षणे।
आदेयं सनिजानुपूर्विनृगती–पञ्चाक्षजा यशः,
पर्याप्तित्रसबादराणि सुभगं मर्त्यायुरुच्चैः कुलम् ।। 12 ।।
वेद्येनान्यतरेण तीर्थकृदिमास्त्र्यग्रादशाप्यन्तिमे,
निष्कृत्य प्रकृतीरनुत्तमसमु–च्छिन्नक्रियाध्यानतः।
यः प्राप्तो जगदग्रमेकसमये–नोर्ध्वंगमात्माष्टभिः,
सम्यक्त्वादिगुणैर्विभाति भगवा–नत्रार्पितो व्याजगात् ।। 13 ।।

मुक्तिश्रीपरिरम्भनिर्भरचिदा–नन्देन येनोज्झितं,
देहं द्राक् स्वयमस्थिसंहतिछटं निर्माय मायामयम्।
कृत्वाग्नीन्द्र किरीटपावकयुतैः श्रीचन्दनाद्यैर्मुदा,
संस्कृत्याभ्युपयान्ति भस्म भुवना–धीशाः स जीयात्प्रभुः।।14।।
इत्थं बाह्यमथान्तरं जिनपते रूपं शिलादौ शुभे,
साकारे यदि वा परत्र विधिवत् संस्थाप्य नित्यं महेत्।
दीर्घं जीवितमुद्घमर्थममित सन्तानमुद्यत्सुखं,
व्याप्ताशाधरमश्नुतेऽत्र च यशो दिव्याः श्रियोऽमुत्रतः ।।15।।
श्रेयोमार्गानभिज्ञा–निह· भवगहने–जाज्वलद्दुःखदाव–
स्कन्धे चंक्रम्यमाणा–नतिचकितमिमा–नुद्धरेयं वराकान्।
इत्येवार्हत्पदानु–ग्रहरसविलसद् भावनोपात्तपुण्यान्,
प्रक्रान्तैरेव वाक्यैः शिवपदमुचितैः शास्ति योऽर्हन् सनोऽव्यात्।।16।।

। इति स्तोत्रं।

अथ प्रत्येक पूजा

अवर्ण प्रभृतिं सर्व–बीजाक्षरमनुक्रमात्।
पूजयामि महामन्त्रै–र्वारिगन्धाक्षतैर्मुदा।।

अवर्णादि बीजाक्षर प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनार्थं पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्।

"अ" वर्णपूजा

जटामुकुटधारिणं द्विजकुलोद्भवं पूरुषं
सुगन्ध चतुराननं कनककुण्डलोल्लासिनम्।
विशालवरलक्षयोजनमनून कूर्माङ्गकम्,
अवर्णमिति चिन्त्यसत्सकलसिद्धि सिद्धिच्य भजे ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण अत्र एहि–एहि संवौषट्।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट्।

अथाष्टकं

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण–चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय जलं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण–चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण–चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय अक्षतान् निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण–चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण--चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय चरूं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण–चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय दीपं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण–चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय धूपं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण–चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय फलं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण–चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सुवर्ण वस्त्रान्वितशस्त्रहस्तं–विभूषणाङ्गं निजवाहनस्थम्।
समस्त विघ्नौघ निवारणार्थं, नीरादिभेदैः प्रयजे अ वर्णम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

इत्याह्वानादिकं कर्म–क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति, शान्तिकान्तिभिरादरात्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश अवर्ण.....नामधेयस्य.....सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा।
। शान्तिधारा।

"ध" वर्ण पूजा

चतुर्भुजं विद्रुमभूषिताङ्गं त्रिलोचनं गुग्गुलगन्धदेहम्।
कृष्णाननं वश्यहनं भजामि, हेमप्रभं भूतहरान्धकारम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण! एहि–एहि संवौषट्।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट्।

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय जलं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय चरूं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय दीपं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय धूपं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय फलं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

सुवर्णवस्त्रान्वितशस्त्रहस्तं विभूषणांगं निजवाहनस्थं।
समस्तविघ्नौघ निवारणार्थं, नीरादिभेदैः प्रयजे ध वर्णम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।। 2 ।।

इत्याह्वानादिकं कर्म–क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति, शान्तिकान्तिभिरादरात्।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश ध वर्ण ..... नामधेयस्य ..... सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

। शान्तिधारा।

"ठ" वर्ण पूजा

विस्तीर्णं शतयोजनं शशिशिखा–चूडं किरीटोज्ज्वलं,
विप्रत्र्यम्बकमुग्रगन्धमिनस–त्केतुं च रक्ताम्बरम्।
श्वेतांगं पुरुषं मयरगगनं, पाशाङ्कुशाद्यायुधं,
विघ्नघ्नं भवभीति नाशनविधौ दक्षं ठकारं भजे।।

ॐ आं क्रों ह्रों शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण! एहि–एहि संवौषट्।

ॐ आं क्रों ह्रीं शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रों ह्रीं शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट्।

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय जलं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अक्षतान् निर्व० स्वाहा।

ॐ आ क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय पुष्पं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय चरू निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय दीपं निर्व०-स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय धूपं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय फलं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा॥

सुवर्णवस्त्रान्विशस्त्रहस्तं, विभूषणाङ्गं निजवाहनस्थम्।
समस्तविघ्नौघ निवारणार्थं, नीरादिभेदैः प्रयजे ठ वर्णम्॥

ॐ आ क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा॥ 3॥

इत्याह्वानादिकं कर्म क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति शान्तिकान्तिभिरादरात्॥

ॐ आ क्रों ह्रीं शशिधरवर्णा मायूरस्थिता ठ वर्ण द्वितीयस्थानस्थिता ठ बीज ..... नामधेयस्य ..... सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा॥

॥शान्तिधारा॥

"ह" वर्ण पूजा

सर्वाभरणभूषाढ्यं प्रसन्नहृदयं पुनः।
स्तम्भस्तोभनदक्षं तं ह वर्णं प्रयजाम्यहम्॥

ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण!! अत्र एहि-एहि संवौषट्॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण!! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापन॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण!! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्॥

अथाष्टक

ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय जलं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय चन्दनं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय पुष्पं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय नैवेद्यं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय दीपं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय धूपं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय फलं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आ क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा॥

सुवर्णवस्त्रान्वितशस्त्रहस्तं, विभूषणांगं निजवाहनस्थं।
समस्त विघ्नौघ निवारणार्थं नीरादिभेदैः प्रयजे ह वर्णम्॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभाय वज्राभरणभूषिताय ह वर्णाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा ॥ 3 ॥

इत्याह्वानादिकं कर्म क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति शान्तिकान्तिभिरादरात्॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह बीज.....नामधेयस्य.....सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा॥

॥ शान्तिधारा॥

अथ "क्ष" बीज पूजा

खड्गं खेटाब्जबाणं हलमुसलगदां शंख चक्रं त्रिशूलं,
पाशं कोदण्डशक्त्यां-ङ्कुशवरविपुलं वज्रघोऽशबाहुम्॥
हेमाङ्गं भानुतेजं झटपुकुटकिरी-टान्वितं वनतोया-
रूढं राजान्वयस्थं त्रिभुवननिलयं प्रार्चयेऽहं क्ष बीजम्॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णा वारुडपृष्ठाधिष्ठिता षोड्शा भुजालंकृता क्ष बीजा!! अत्र एहि-एहि सर्वौषट्॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णा वारुडपृष्ठाधिष्ठिता षोड्शा भुजालंकृता क्ष बीजा!! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापना॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णा वारुडपृष्ठाधिष्ठिता षोड्शा भुजालंकृता क्ष बीजा!! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्॥

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय चरुं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णाविभूषिता क्ष बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सुवर्णवस्त्रान्वितशस्त्रहस्तं, विभूषणांगं निजवाहनस्थं।
समस्त विघ्नौघ निवारणार्थं नीरादिभेदैः प्रयजे क्ष बीजम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।। 5।।

इत्याह्वानादिकं कर्म क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति शान्तिकान्तिभिरादरात्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण षोडशभुजालंकृत क्ष बीज.....नामधेयस्य.... सर्वशान्ति विधेहि स्वाहा।

।शान्ति धारा।

अथ सकल स्वर पूजा

कुदोद्रहिस्थानगतं प्रशस्तं,
शान्तं समस्तं शरदिन्दुवर्णम्।
दुष्टग्रहोच्चाटन दक्षबीजं,
संस्थापयेऽहं सकलं स्वरं तम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर! अत्र एहि–एहि संवौषट्।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ ठ स्थापन।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट्।

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्णाय सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षराय सकल स्वराय जलं निर्व० स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं " " " चन्दनं " "
ॐ आं क्रों ह्रीं " " " अक्षतान् " "

ॐ आं क्रों ह्रीं	"	"	"	पुष्पं	"	"
ॐ आं क्रों ह्रीं	"	"	"	चरूं	"	"
ॐ आं क्रों ह्रीं	"	"	"	दीपं	"	"
ॐ आं क्रों ह्रीं	"	"	"	धूपं	"	"
ॐ आं क्रों ह्रीं	"	"	"	फलं	"	"
ॐ आं क्रों ह्रीं	"	"	"	अर्घ्यं	"	"

सर्वकर्म समर्थं यं सर्वव्याधिविनाशनम्।
सर्वभूतारिमारिघ्नं नमस्कुर्वे स्वरं परम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्णाय सर्वाभरणभूषिताय शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षराय सकल स्वराय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।। 6 ।।

इत्याह्वानादिकं कर्म क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति शान्तिकान्तिभिरादरात्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर..... नामधेयस्य.....सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा।

। शान्तिधारा।

अथ ॐकार पूजा

पद्मासनं पद्मनिभं सुगन्धं, प्रकृष्टवर्णं परमात्मरूपम्।
कोट्यर्क चन्द्रोज्ज्वल चारुदेहं, स्वाभीष्टसिद्धयै प्रणवं भजामि।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐ कार बीज! अत्र एहि–एहि संवौषट्।
ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐ कार बीज! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः।
ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐ कार बीज! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट्।

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय जलं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय चन्दनं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय अक्षतान् निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय पुष्पं निर्व० स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय चरूं निर्व० स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं परज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय दीपं निर्व० स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं परज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय धूपं निर्व० स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं परज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय फलं निर्व० स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं परज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।

नीरैर्नीरजवासितै: सुरभिसद्–गन्धै: सितैरक्षतै:,
पुष्पैश्चारूचरू प्रदीपनिकरैर्धूपै: फलैश्चार्घ्यकै:।
शुभ्रं सूज्ज्वलचारूदेहममृतं शान्तं त्रिलोकेश्वरं,
पञ्चब्रह्ममयं समस्तवदनं तेजो मयाराध्यते।।

ॐ कार बीजं सुखसार्थसिद्ध–महेन्मुखाद्यक्षरमन्त्ररूपम्।
कामस्वरं कामहरं नमामि, ध्येयं सदा योगिगणेन्द्रमर्घ्यं:।

ॐ आं क्रों ह्रीं परज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।। 7 ।।

इत्याह्वानादिकं कर्म क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति शान्तिकान्तिभिरादरात्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परज्योति: स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकार.....नामधेयस्य..... सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तिधारा ।।

अथ क्षी बीज पूजा

यक्षराक्षसगन्धर्व ब्रह्मराक्षसमर्दकम्।
क्षितिमण्डलमध्यस्थं क्षी बीजं प्रयजाम्यहम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज! अत्र एहि–एहि संवौषट्।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज! तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज! अत्र मम सान्निहितो भव–भव वषट्।

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय चरुं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सुवर्णवस्त्रान्वितशस्त्रहस्तं-विभूषणाङ्गं निजवाहनस्थं॥
समस्तविघ्नौघ निवारणार्थं नीरादिभेदैः प्रयजे क्षी बीजम्॥॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णाय क्षी बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥॥ ४ ॥॥

इत्याह्वानादिकं कर्म, क्रियते श्रेयसे मया॥
तत्सर्वं पूर्णतामेति, शान्तिकान्तिभिरादरात्॥॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्णे क्षी बीजे .....नामधेयस्य..... सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा॥

॥ शान्तिधारा॥

अथ ल बीज पूजा

सम्भाव्य कृष्णदक्षं सु-ललक्षं योजनादर्घ्यकम्॥
क्षितिमण्डल कोणस्थं ल बीजं प्रयजाम्यहम्॥॥

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजं!! अत्र एहि एहि सर्वौषट्॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजं!! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजं!! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्॥

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय जलं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय चन्दनं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय अक्षतान् निर्व० स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय पुष्पं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय चरुं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय दीपं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय धूपं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय फलं निर्व० स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णे चतुर्भुजालंकृता ल बीजाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा॥

सुवर्णवस्त्रान्वितशस्त्रहस्तं विभूषणाङ्गं निजवाहनस्थं।
सम्स्तविघ्नौघ निवारणार्थं, नीरादिभेदैः प्रयजे ल बीजम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय अर्घ्यं निर्व० स्वाहा।। 9।।

इत्याह्वानादिकं कर्म, क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति, शान्तिकान्तिभिरादरात्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश ल वर्ण.....नामधेयस्य..... सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा।

। शान्तिधारा।

अथ व बीज पूजा

कलायुतं कोमलकायकान्तिं, विणूषणांगं विहितोग्रशक्तिम्।
अनन्तकर्मादिपतिं समर्थं द्विरष्टपत्रं प्रयजे वकारम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीज! अत्र एहि एहि संवौषट्।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीज! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीज! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय चरूं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाभरण भूषाढ्यं प्रसन्नहृदयं पुनः।
सर्वविघ्नप्रशान्त्यर्थं व बीजं प्रयजाम्यहम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। 10।।

इत्याह्वानादिकं कर्म, क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति, शान्तिकान्तिभिरादरात्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीज.....नामधेयस्य.....सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा।

। शान्तिधारा।

अथ र बीज पूजा

कलायुक्तं कोमलकायकान्तिं, विभूषणांगं विहितोग्रशक्तिम्।
अनन्तकर्मादिपतिं समर्थं, द्विरष्टपत्रं प्रयजे र बीजम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज! अत्र एहि एहि संवौषट्।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र् बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय चरूं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाभरण भूषाढ्यं प्रसन्नहृदयं पुनः।
सर्वविघ्नप्रशान्त्यर्थं र बीजं प्रयजाम्यहम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। 1 1 ।।

इत्याह्वानादिकं कर्म क्रियते श्रेयसे मया।
तत्सर्वं पूर्णतामेति, शान्तिकान्तिभिरादरात्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज.....नामधेयस्य.....सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा।

। शान्तिधारा।

अथ फ बीज पूजा

कलान्वितं कोमलकायकान्तिं, विभूषणांगं विहितोग्रशक्तिं।
अनन्तकर्मादिपतिं समर्थं, द्विरष्टपत्रं प्रयजे फकारम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज! अत्र एहि–एहि संवौषट्।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट।

अथाष्टक

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय चरुं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सर्वाभरण भूषाढ्यं, प्रसन्नहृदयं पुनः।
सर्वविघ्न प्रशान्त्यर्थं, फकारं प्रयजाम्यहम्॥

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 1 2 ॥

इत्याह्वानादिकं कर्म, क्रियते श्रेयसे मया॥
तत्सर्वं पूर्णतामेति, शान्तिकान्तिभिरादरात्॥

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज.....नामधेयस्य.....सर्वशान्तिं विधेहि स्वाहा॥

॥ शान्तिधारा॥

अथ मण्डलोपरि दिग्पालार्चनम्

ततो बहिश्चापि सुरेन्द्रमग्नि-यमं तथा नैऋतिमम्बुधिं च॥
मरुत्कुबेरौ सशेखरं च, दिशाधिनाथान् क्रमतो यजामि॥

दिग्पाल पूजाविधानाय पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्॥

जब पूर्वस्यां दिशि शक्र पूजनमाह-

भास्वन्तमैरावणवारणेन्द्र-मारूढमिन्द्राण्यधिराजमिन्द्रम्॥
हस्तैर्विराजक्षत कोटिशस्त्रं? सम्पूजये प्राग्जिनराजयज्ञे॥ 1 ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे इन्द्र देव!! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि॥
ॐ आं क्रों ह्रीं इन्द्राय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृह्णाण-गृह्णाण स्वाहा॥

अथाग्नेय्यामग्निदिक्पालाह्वानाद्याह–

वेदीप्यमानानल कील जाला,, स्फुटं स्फुलिंगात्मक शक्तिहस्तम्।
प्रशस्तवस्तारुहमग्निदेवं,, स्वाहा समेतं परिपूजयामि ॥ 2॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे आग्नेय देव!! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि॥

ॐ आं क्रों ह्रीं आग्नेयाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा॥

अथ दक्षिणास्यां दिशि यमयजनमाह–

प्रचण्डचण्डान्वित बाहुदण्ड,, मुद्दण्डकोदण्डभटैः परीतम्।
छायाकटाक्षद्यति भासमानं,, लीलायवाहं यममर्चयामि ॥ 3॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे यमदेव!! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि॥

ॐ आं क्रों ह्रीं यमाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा॥

अथ नैऋतकोणे नैऋतदेवार्चनमाह–

ऋक्षाक्षतं व्याञ्जित वृक्षदेहं,, ऋक्षाधिरूढं दृढमुद्गरास्त्रम्।
भास्वत्तिरीटोज्वल रत्नकान्तिं,, नैऋत्यधीशं निरृतं यजामि ॥4॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे नैऋत देव!! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि॥

ॐ आं क्रों ह्रीं नैऋताय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा॥

अथ पश्चिमायां दिशि वरुणार्चनमाह–

भीमाहिपाशं मकरादिरूढं,, मुक्तामयाकल्पविराजमानं।
मनोरमस्त्रापरिवेष्ट्यमानं,, जिनाध्वरेऽस्मिन् वरुणं समर्चे ॥5॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरुण देव!! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि॥

ॐ आं क्रों ह्रीं वरुणाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा॥

अथ वायव्यकोणे पवनार्चनमाह–

महामहीजायुध शोभिहस्तं,, तुरंगमारूढमुदारशक्तिं।
विलाशभूषान्वित वायुवेगी,, सहासमेतं पवनं यजामि ॥ 6॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पवनदेव!! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पवनाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा॥

अथ उत्तरदिशि कुबेरपूजनमाह–

अनेनरत्नोज्वल पुष्पकाख्यं, विमानमारूह्य विभासमानं।
धनादिदेवीसहितं वहन्तं, करेणशक्तिं धनदं यजामि ।। 7 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुबेर देव! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि।

ॐ आं क्रों ह्रीं कुबेराय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा।

अथ ऐशानकोणे ईशानदेवार्चनमाह–

जटाकिरीटं वृषभादिरूढं, त्रिशूलहस्तं धवलोज्वलागम्।
ललाटनेत्रं गिरिराजपूत्री, समेतमीशानमिहार्चयामि ।। 8 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ईशानदेव! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि।

ॐ आं क्रों ह्रीं ईशानाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा।

अथाधरस्यां दिशि धरणेन्द्रार्चनमाह–

स्वकीय वेगार्जित वायुवेग–मारूढमुत्तुंग कठोरकूर्मम्।
पद्मावतीशं धरणेन्द्रमत्र, यजामि धात्रीं धरण प्रकीर्तिम् ।। 9 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र देव! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि।

ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा।

अथोर्ध्वायां दिशि सोम सन्मानमाह–

विदारितास्यं विकरालमूर्तिं, चलच्चटाटोपमुदारसौर्यम्।
सिंहं समारूढमदभ्रकान्तिं, सोमं समर्चाम्यथ रोहणीशम् ।। 10 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमदेव! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि।

ॐ आं क्रों ह्रीं सोमदेवाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा।

अथ चतुः द्वारपालार्चनं

कोदण्डकाण्डस्फुटदृष्टिमुष्टि, मरुद्भटोद्भव्यकथानुरक्तम्।
वेद्याः पुरोद्वारमिमामवन्तं सोमोप गृण्हाभ्युचितैर्भवन्तम् ।। 1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं धनुर्धराय अर–अर त्वर–त्वर हूं सोम! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि।

ॐ आं क्रों ह्रीं सोमाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा।

यो दण्डितारांति समस्तदण्डं, दण्डंधरंश्चण्डसुरैः परीतः।
रक्षत्यपाच्यं जिनयज्ञवेद्या द्वारं तमेनं यममर्चयामि ।। 2 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं दण्डधराय अर–अर त्वर–त्वर हूं यम! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि।

ॐ आं क्रों ह्रीं यमाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा।

हालाहलज्वालजटालभाला, भीलाहिपाशं सुरवीरसैन्यम्।
द्वारं प्रतीच्यं परिपालनन्तं दुर्वारवीर्यं वरुणं वृणोमि ।। 3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पाशधराय अर–अर त्वर–त्वर हूं वरुण! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं वरुणाय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा।

गदाभ्रमाकम्पित वैरिलोकं, लोकाक्रमोत्तालसुरैः परीतम्।
उदग्भवद्वारमवन्तमेनं कुबेरवीरं बलिना धिनोमि।। 4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गदाधराय अर–अर त्वर–त्वर हूं कुबेर! अत्र आगच्छ–आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं गदाधराय कुबेराय इदं अर्घ्यं पाद्यं.....गृहाण–गृहाण स्वाहा।

जाप्य

ॐ ह्रीं अर्हं झं वं व्हः पः हः मम सर्वापमृत्युजय कुरू–कुरू स्वाहा।

अनेनमन्त्रेण लवंगेण–पुष्पेण वा अष्टोत्तरशत जपं कुर्यात्।

अथ जयमाला

जय प्रथम जिनेश्वर महिपरमेश्वर,
जय ईश्वर गुणगण महितसदन जय।
जय नमित सुरासुर सकल सुखाकर,
जय जय जनतामरणहरण जय ।। 1 ।।
जय आदिजिनेन्द्र विशालरूपजय,
जय पूजित चन्द्रसुरेन्द्रभूपजय।
जय नाभिनरेश्वर पुत्रसार जय,
जय मरुदेवीसुत धर्माकार जय ।। 2 ।।
जय प्रथमधर्म प्रकाशवीर जय,
जय प्रथम योगीश्वर प्रथमधीर जय।
जय सेवित व्यन्तर नागराज जय,
जय नमित सुरासुर भानुराज जय ।। 3 ।।

जय ज्ञानरूप जय शर्मरूप जय,,
जय चन्द्रवदन अकलंक रूप जय॥
जय भव्यदयाकर भव्यहंस जय,,
जय प्रकटित शुभंकर चारुवंश जय ॥ 4 ॥
जय प्रथम प्रजापते प्रथम ईश जय,,
जय प्रथम यतीश्वर प्रथमाधीश जय॥
जय गणधर यतिपति सेव्यपाद जय,,
जय शारद नीरद दिव्यनाद जय ॥ 5 ॥
जय पापतिमिर हर पूर्णचन्द्र जय,,
जय दोष निवारक नाभितनुज जय॥
जय प्रथम तीर्थंकर प्रथमदेव जय,,
जय प्रथम पुरुष प्रविनष्टक्रोध जय ॥ 6 ॥

घत्ता=पुरुजिनसारं,, दर्शनसारं,, सारं केवलबोधमयम्॥
वन्दतभक्तारं,, रहितविमारं शान्तिदास ब्रह्मकृतसुदयम्॥

ॐ नमोऽर्हतो भगवतो देवाधिदेवाय यन्त्राण-त्रसिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं क्रौं क्रौं ॐ ॐ ह्रौं व प: ह: ह ह्रा ह्रीं क्ष्वीं ह स: आ सि आ उ सा .....नामधेयस्य .....सर्वशान्तिं कुरु-कुरु॥ तुष्टिं कुरु-कुरु॥ सिद्धिं कुरु-कुरु॥ वृद्धिं कुरु-कुरु॥ सप्तशतक्षामडामरभयविनाशनं कुरु-कुरु सर्वशान्तिकराय स्वाहामृत्युञ्जयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सम्यग्धीरगुणैरनन्तगुणितै-युक्ताः सुमाद्याधवाः,,
ये सिद्धा मलनाशका वसुगुणः कार्योद्भवैः साप्तभिः॥
सार्धं श्रीविजयादिभिः सुखकरैः सेव्यैस्तरां निर्मला,,
जाताः श्री गजपन्तके च गुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥

इत्याशीर्वादः

अथ आनन्द स्तवन

जय जय जिनराज ध्वस्तदुर्मोहराज,,
प्रह्लादनराज प्रह्लतद्देवराज॥
रुचिरतरविराज स्तुत्यशक्तावहिराज,,
प्रचूरसुगुणराजन्नच्युताधीशराज ॥ 1 ॥
जय जय जिनधीर,, प्राप्तजन्माब्धिपार,,
प्राभितविभवसार प्रौढ़ तीर्थावतार॥
प्रहृताहृतकमार प्रोद्गतानन्दपूर,,
प्रहसितशतसूर प्रप्रकृष्टांशुभार ॥ 2 ॥
जय जय जिनमित्र ध्वान्तविध्वंस मित्र,,
स्वातिशयगुणगात्र ज्ञानविस्फूर्तिपात्र॥
परमपदपवित्र प्रोल्लसद्देवयात्र,,
प्रवर शरण चात्र प्राणिनामप्यमुत्र ॥ 3 ॥
जय जय जिनजैत्र क्ष्मात्र यारामचैत्र,,
त्रिदशविधृतवेत्र श्वेतचित्रातपत्र।
निरतिशय चरित्र श्रीमदर्थोक्तसूत्र,,
स्वदुरघतरुदात्र श्रायस श्रीकलत्र ॥ 4 ॥
जय जय जिनतात त्रातरत्यन्तपूत,,
स्थिरतरसुखदात कर्मसंघातघात।
कुमत जलदवात ज्ञेयजात प्रमात,,
प्रवचनरथसूत ख्यातदेवाभिनूत ॥ 5 ॥
जय जय जिनचन्द्र छिन्नदुर्मोहतन्द्र,,
प्रणतनरसुरेन्द्र स्वात्मलक्ष्मीन्युनीन्द्र।
स्वतिशयगुणरुद्र प्रीणित प्राणिभद्र,,
प्रवचन सरिदिन्द्र स्फीत भासान्द्रवन्द्र ॥ 6 ॥

जय जय जिनसेव्य त्रातसुप्रीत भव्य,
त्रिभुवन महितव्य स्वाप्ति संभावितव्य।
वरद नमसितव्य प्रत्यहं कीर्तितव्य,
स्मृतिपथ निहितव्य श्रेयसे भावितव्य ।। 7 ।।
जय जय जिननाथ ज्ञात सम्पत्सनाथ,
प्रतिहतरतिनाथ प्राप्त मोहापनाथ।
नतसुरनरनाथ श्रीमद्लोकाधिनाथ,
श्रुतिक जदिननाथ श्रीवधू प्राणनाथ ।। 8 ।।
नमद निमिषखण्डं खण्डितानंगकाण्डं,
हसित लसित तुण्डं ध्यानधीराग्नि कुण्डम्।
सुगुणमणिकरण्डं जन्मवार्द्धौ तरण्डं,
विनमितचिदखण्डं श्रायसानन्दपिण्डम् ।। 9 ।।

इत्यानन्द स्तवनेन वेद्यास्त्रिवार प्रदक्षिणं कृत्वा पंचांग प्रणामं कुर्यात्।

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ।। 1 ।।
आह्वानं नैवं जानामि नैव जानामि पूजनं।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।। 2 ।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।। 3 ।।
आहूता ये पूरा देवाः लब्धभागा यथाक्रमं।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वेयान्तु यथास्थितिं ।। 4 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अस्मिन् मृत्युअय महामण्डल विधानसमये आगन्तुक सर्वेदेवा स्वस्थाने गच्छतः गच्छतः जः जः जः।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

। इति मृत्युञ्जय पूजा विधान सम्पूर्णः।

हवन की विधि

मण्डप में वेदी के सम्मुख चौकोर, गोल और त्रिकोण ऐसे तीन कुण्ड बनाऐं । यदि तीन कुण्ड बनवाने की असुविधा हो तो एक चौकोर कुण्ड बनाकर शेष दो कुण्डों की उसी में स्थापना कर ले । यदि हवन में बैठने वालों की संख्या अधिक हो तो अलग से स्थण्डिल बना लेना चाहिये । कुण्डपर इन्द्र, इन्द्राणी और जप करने वाले बैठें । अन्य लोग स्थण्डिलों पर बैठ जावें । हवन के लिए साकल्य और सुविधाएँ पहले से तैयार कर लें । हवन में बैठने वाले एक वस्त्र पहिनकर न बैठें । प्रारम्भ में सब लोग अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर मंगलाष्टक पढ़ते हुए कुण्ड पर पुष्प छोड़ें । तदन्तर-

'ओं ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा' ।

(यह मन्त्र पढ़कर कुण्ड की भूमि में पुष्प छोड़ें तथा दर्भ की कूची से भूमिका मार्जन करें)

'ओं ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं ह्रं सं तं पं स्वं झं यं क्षः फट् स्वाहा' ।

(यह मन्त्र पढ़कर हवन की भूमि-कुण्ड पर जल सींचे)

'ओं ह्रीं अग्निकुमाराय ह्याभल्र्ब्यूं ज्वलय ज्वलयतेजापतये अमित तेज से स्वाहा'

(यह पढ़कर कपूर जलाकर भूमि को संतप्त करे)

'ओं ह्रीं अर्हं क्षं वं वं श्री पीठस्थापनं करोमीति स्वाहा'

(यह पढ़कर होम कुण्ड के पश्चिम में पीठ स्थापन करे)

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वशान्ति कुर्वन्तु श्री पीठयन्त्रस्थापनं करोमति स्वाहा ।

(यह पढ़कर पीठ पर विनायक यन्त्र विराजमान करें) तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्रों से यन्त्र की पूजा करे, अर्घ चढ़ावे ।

ओं ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हं नमः परमात्मभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हं नमो नृसुरासुरपूजितेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तवीर्येभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ओं ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तसुखेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तदन्तर-

ओं ह्रीं धर्मचक्रायाप्रतिहततेजसे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर धर्मचक्र के लिये अर्घ चढ़ावे ।)

ओं ह्रीं श्वेतछत्रयश्रियै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर छत्रत्रय को अर्घ देवे)

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ह्रं सौं ह्रौं सर्वशास्त्रप्रकाशिनि वद वद वाग्वादिनि अवतर अवतर, तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट् ।

(यह मन्त्र पढ़कर सरस्वती का आह्वान करते हुए कुण्ड में लौंग स्थापित करें)

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर सरस्वती जिनवाणी को अर्घ देवे)

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रपवित्रतरगात्र, चतुरशीतिलक्षोत्तर गुणाष्टदश सहस्त्रशील धरगणधरचरण ! आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट् ।

(यह पढ़कर निर्ग्रन्थ गुरु का आह्वान कर कुण्ड में लोंग स्थापित करें)

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर निर्ग्रन्थ गुरु को अर्घ चढ़ावे)

ओं ह्रीं स्वस्तिविधानाय पुण्याहवाचनार्थं च कलशं स्थापयामीति स्वाहा।

(यह पढ़कर चाँवला से बने स्वस्ति पर जल भरा एवं श्रीफल तथा तूल आदि से सुशोभित कलश स्थापित करे)

ओं ह्रीं ह्रों ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंच्छकेसरि पुण्रीकमहापुण्डरीकगंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीन रकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजलसुवर्णघटप्रक्षालितनवरत्नगन्धाक्षत पुष्पोर्जितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं ह्रौं ह्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा' ।

(यह पढ़कर कलश पर थोड़ा प्रासुक जल डाले)

ओं ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर घृत से प्रज्वलित कर चारों दिशाओं में चार दीपक रखे)तदन्तर-

(नीचे लिखे मन्त्र बोलकर क्रम से जल आदि आठ द्रव्य चढ़ावे)

ओं ह्रीं नीरज से नमः (जलम्)
ओं ह्रीं शीलगन्धाय नमः (चन्दनम्)
ओं ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतम्)
ओं ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पम्)
ओं ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यम्)
ओं ह्रीं ज्ञानद्योतनाय नमः (दीपम्)
ओं ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपम्)
ओं ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः (फलम्)
ओं ह्रीं परमसिद्धाय नमः (अर्घम्)

तदन्तर-

ओं ह्रीं होमार्थं अग्नित्रयाधारभूता समिधां स्थापयामि ।

(यह पढ़कर कुण्ड में समिधाएँ स्थापित करे)

ओं ओं ओं रं रं रं रं अग्निं स्थापयामि ।

(यह पढ़कर कपूर जलाकर कुण्ड में अग्नि स्थापन करे)

जिनेन्द्रवाक्यैरिव सुप्रसन्नैः संशुष्कदर्भाग्रधृताग्निकीलैः ।
कुण्डस्थिते सेन्धनशुद्धवह्नौ संधुक्षणं संप्रति संतनोमि ।।

ओं ह्रीं श्रीं रं रं रं रं दर्भपूलेन ज्वलय ज्वलय नमः फट् स्वाहा ।

(यह पढ़कर डाभ के फूल से अग्नि का संधुक्षण करे)

श्रीतीर्थनाथ परिनिर्वृतिपूतकाले ह्यागत्य वन्हिसुरपामुकुटोल्लसद्भिः ।
वन्हिव्रजैर्जिनपदेहमुदार भक्त्या देहुस्तदग्निमहमर्चयितुं दधामि ।।

ओं ह्रीं चतुरस्रे तीर्थंकरकुण्डे गार्हपत्याग्नौ कृतसंस्काराय तीर्थंकरपरमदेवायार्घं स्वाहा । (यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावें)

गणाधिपानां शिवयातिकालेऽ ग्नीन्द्रौत्तमागस्फुरदुग्ररोचिः ।
संस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो विघ्नौघशान्त्यै विधिना हुताशः ।।

ओं ह्रीं श्रीं द्वितीयगणधरकुण्डे आहुनीयाग्नौ कृतसंस्काराय गणधरदेवायार्घं निर्वपामीति स्वाहा । (यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावे)

श्री दक्षिणाग्नि: परिकल्पितश्च किरीटदेशात्प्रणताग्निदेवै:।
निर्वाणकल्याणकपूतकाले तमर्चये विघ्नविनाशनाय ।।

ओं ह्रीं श्रीं त्रिकाणे तृतीयसामान्यकेवलिकुण्डे दक्षिणाग्नौ कृतसंस्काराय सामान्यकेवलिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा । (यह पढ़कर कुण्ड में अर्घ चढ़ावे)

तदन्तर- शुद्ध घी से निम्नलिखित आहुतियाँ देवें ।

ओं ह्रीं अर्हद्भ्य स्वाहा । ओं ह्रीं सिद्धेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं सूरिभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं पाठकेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं साधुभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं जिनधर्मेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं जिनागमेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं जिनबिम्बेभ्य: स्वाहा । ओं ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्य स्वाहा । ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नम: । ओं ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम: । ओं ह्रीं सम्यक् चरित्राय स्वाहा ।

(साकल्य से आहुतियाँ देवें । मन्त्र के बाद स्वाहा शब्द उच्चारण स्पष्ट करें) ।

पीठिकामन्त्रा:

ओं सत्यजाताय नम: स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय नम: स्वाहा । ओं परम जाताय नम: स्वाहा । ओं अनुपमजाताय नम: स्वाहा । ओं स्वप्रधानाय नम: स्वाहा । ओं अचलाय नम: स्वाहा । ओं अक्षयाय नम: स्वाहा । ओं अव्याबाधाय नम: स्वाहा । ओं अनन्तज्ञानाय नम: स्वाहा । ओं अनन्तदर्शनाय नम: स्वाहा । ओं अनन्तवीर्याय नम:स्वाहा । ओं अनन्त सुखाय नम: स्वाहा । ओं नीरज से नम: स्वाहा । ओं निर्मलाय नम: स्वाहा । ओं अच्छेद्याय नम: स्वाहा । ओं अभेद्याय नम: स्वाहा । ओं अजराय नम: स्वाहा । ओं अमराय नम: स्वाहा । ओं अप्रमेयाय नम: स्वाहा । ओं अगर्भवासाय नम: स्वाहा । ओं अक्षोभाय नम: स्वाहा । ओं अविलीनाय नम: स्वाहा । ओं परमधनाय नम: स्वाहा । ओं परमकाष्ठा योगरूपाय नम: स्वाहा । ओं लोकाग्रनिवासिने नमोनम: स्वाहा । ओं परमसिद्धेभ्यो नम: स्वाहा । ओं अर्हत्सिद्धेभ्यो नम: स्वाहा । ओं ह्रीं केवलिसिद्धेभ्यो नमोनम: स्वाहा । ओं अन्त:कृतसिद्धेभ्यो नमोनम: स्वाहा ।

ओं परम्परासिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा । ओं अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा । ओं अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्यनिर्वाणपूजार्हअग्नीन्द्राय स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

(यह काम्यमन्त्र पढ़कर प्रतिष्ठाचार्य हवन करने वालों पर पुष्प फेंके। अथवा जल के छीटें देवे)

जातिमन्त्राः

ओं सत्यजन्मन शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं अनादिगमनस्य शरण प्रपद्ये स्वाहा । ओं अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! ज्ञानमूर्ते ! ज्ञानमूर्ते ! सरस्वति ! सरस्वति ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

निस्तारकमन्त्राः

ओं सत्यजाताय स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय स्वाहा । ओं षट्कर्मणे स्वाहा । ओं ग्रामपतये स्वाहा । ओं अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा । ओं स्नातकाय स्वाहा । ओं श्रावकाय स्वाहा । ओं देवब्राह्मणाय स्वाहा । ओं सुब्राह्मणाय स्वाहा । ओं अनुपमाय स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! निधिपते ! निधिपते ! वैश्रवण ! वैश्रवण ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

ऋषिमन्त्राः

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा । ओं निर्ग्रन्थाय नमः स्वाहा । ओं वीतरागाय नमः स्वाहा । ओं महाव्रताय नमः

स्वाहा । ओं त्रिगुप्ताय नमः स्वाहा । ओं महायोगाय नमः स्वाहा । ओं विविधयोगाय नमः स्वाहा । ओं विवद्धये नमः स्वाहा । ओं अंगधराय नमः स्वाहा । ओं पूर्वधराय नमः स्वाहा । ओं गणधराय नमः स्वाहा । ओं परमर्षिभ्यो नमो नमः स्वाहा । ओं अनुपमजाताय नमः स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! भूपते ! भूपते ! नगरपते ! नगरपते ! कालश्रमण ! कालश्रमण ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

सुरेन्द्रमन्त्राः

ओं सत्यजाताय स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय स्वाहा । ओं दिव्यजाताय स्वाहा । ओं दिव्यार्चिजाताय स्वाहा । ओं नेमिनाथाय स्वाहा । ओं सौधर्माय स्वाहा । ओं कल्पाधिपतये स्वाहा । ओं अनुचराय स्वाहा । ओं परम्परेन्द्राय स्वाहा । ओं अहमिन्द्राय स्वाहा । ओं परमार्हताय स्वाहा । ओं अनुपमाय स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! कल्पपते ! कल्पपते ! दिव्यमूर्ते ! दिव्यमूर्ते ! वज्रनामन् ! वज्रनामन् ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युनिाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

परमराजादिमन्त्राः

ओं सत्यजाताय स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय स्वाहा । ओं अनुपमेन्द्राय स्वाहा । ओं विजयार्च्यजाताय स्वाहा । ओं नेमिनाथाय स्वाहा । ओं परमजाताय स्वाहा । ओं परमार्हताय स्वाहा । ओं अनुपमाय स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! उग्रतेजः ! उग्रतेजः ! दिशाञ्जन ! दिशाञ्जन ! नेमिविजय ! नेमिविजय ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

परमेष्ठिमन्त्रा:

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा । ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा । ओं परमजाताय नमः स्वाहा । ओं परमार्हताय नमः स्वाहा । ओं परमरूपाय नमः स्वाहा । ओं परमतेजसे नमः स्वाहा । ओं परमगुणाय नमः स्वाहा । ओं परमस्थानाय नमः स्वाहा । ओं परमयोगिने नमः स्वाहा । ओं परमभाग्याय नमः स्वाहा । ओं परमर्द्धये नमः स्वाहा । ओं परमप्रसादाय नमः स्वाहा । ओं परमकांछिताय नमः स्वाहा । ओं परमविजयाय नमः स्वाहा । ओं परमविज्ञानाय नमः स्वाहा । ओं परमदर्शनाय नमः स्वाहा । ओं परमवीर्याय नमः स्वाहा । ओं परमसुखाय नमः स्वाहा । ओं परमसर्वज्ञाय नमः स्वाहा । ओं अर्हते नमः स्वाहा । ओं परमेष्ठिने नमः स्वहा । ओं परमनेत्रे नमो नमः स्वाहा । ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! त्रैलोक्यविजय ! त्रैलोक्यविजय ! धर्ममूर्ते ! धर्ममूर्ते ! धर्मनेमे ! धर्मनेमे ! स्वाहा ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

तदन्तर- जिस मन्त्र का जितना जप किया हो उसको दशांश आहुतियाँ देना चाहिये । यह मन्त्र प्रतिष्ठाचार्य मन में बोलकर स्वाहा शब्द का उच्चारण करे और तदनन्तर हवन करने वाले सब महाशय स्वाहा बोलकर आहुति देवें ।

हवन समाप्त होने पर जो घट स्थापित किया था, उसे हाथ में लेकर इन्द्र बृहच्छान्तिधारा दे । उसके बाद निम्नलिखित पुण्याहवाचन करे।

पुण्याहवाचन

ओं पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागरप्रभृतयश्चतुर्विंशतिपरमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

ओं सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशतिपरमजिनेन्द्रा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

ओं भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मादिचतुर्विंशतिभविष्यत्परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

ओं त्रिकालवर्ति परमधर्माभ्युदय सीमन्धरप्रभृतयः विदेहक्षेत्र विरहमाण विंशति परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

ओं वृषभसेनादिगणधरदेवा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।(धारा)

ओं सप्तर्द्धिविशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणा वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् । (धारा)

इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु । दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु । सर्वेजिनधर्मभक्तानां धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्तन्ताम् ।

तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, इष्टसम्पत्तिरस्तु, काममांगल्योत्सवाः सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यं वर्धताम्, कुलं गोत्रं चाभिवर्धेताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, ह्रीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा । श्री मज्जिनेन्द्रचरणारविन्देष्वानन्दभक्तिः सदास्तु ।

(इसके बाद शान्ति पाठ विसर्जन कर सबके मंगल हेतु आशीर्वाद दें।)

॥ इति विधान संग्रह (प्रथम भाग) सम्पूर्णम् ॥

मुद्रक :-
अरिहन्त ऑफसैट प्रिंटर्स
सैल सागर, टीकमगढ़ (म. प्र.) 472001
फोन : (07683) 32592